रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 2] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 9—जनवरी 15, 2016 (पौष 19, 1937)

No. 2] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 9—JANUARY 15, 2016 (PAUSA 19, 1937)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं.	3
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	17
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	1
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं.	91
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम.	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ.	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं).	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं.	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं).	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश.	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	101
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	*
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं.	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं.	1
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस.	13
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक.	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	3
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	17
PART I—SECTION 3—Notifications relating to resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	91
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministriess of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	101
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	13
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I — खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 3 दिसम्बर 2015

सं. 112–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जाकिर हुसैन, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

02. मोहेश चंद्र बोरा, उप निरीक्षक — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

03. भुगेश्वर सैकिया, कांस्टेबल — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 02.06.2011 को एक सूचना प्राप्त हुई थी कि भारी अत्याधुनिक हथियारों से लैस उल्फा उग्रवादियों के एक बड़े समूह ने डिगबोई पुलिस स्टेशन के अधीन आने वाले काकूजान सुरक्षित वन क्षेत्र से सटे हुए तामुली बोगांव नामक गांव में अपना शिविर स्थापित किया है और वे उस क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं। तदनुसार, डिगबोई पुलिस स्टेशन प्रभारी एवं अन्य सुरक्षा बलों के साथ श्री जाकिर हुसैन, एपीएस, एसडीपीओ, मारघेरिटा के नेतृत्व एवं नियंत्रण के अधीन अपराह्न चार बजे एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया। अभियान वाले दल को छोटे हिस्सों में विभाजित किया गया और उक्त क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में अभियान चलाया गया। श्री जाकिर हुसैन, एपीएस और अपने पुलिस स्टेशन के कार्मिकों के साथ डिगबोई पुलिस स्टेशन के प्रभारी उप निरीक्षक मोहेश चंद्र बोरा के नेतृत्व वाले एक पुलिस दल ने अचानक देखा कि जंगल के सामने से एक मोटर साइकिल पर सवार दो युवक उनकी ओर आ रहे थे। पुलिस दल को देखकर मोटर साइकिल सवार युवकों ने अपनी मोटरसाइकिल वापस मोड़ ली और उन्होंने वहां से भागने की कोशिश की। फौरन श्री जाकिर हुसैन, एपीएस ने अपने दल को उनका पीछा करने का आदेश दिया। जैसे ही पुलिस उस मोटर साइकिल का पीछा करने लगी मोटरसाइकिल सवार युवकों ने अभियान दल को निशाना बनाते हुए अपने स्वचालित अत्याधुनिक हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री जाकिर हुसैन, एपीएस और उप निरीक्षक मोहेश चंद्र बोरा ने पीएसओ के साथ मिलकर अपनी आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की और उन्होंने स्वयं अपने जीवन को भारी खतरे में डालते हुए भी बेहद सूझबूझ से उनका पीछा करना जारी रखा और वे पुलिस दल के किसी भी सदस्य के हताहत हुए बगैर ही मोटरसाइकिल के साथ दोनों युवकों को दबोचने में कामयाब हो गए। दोनों ओर से हुई गोलीबारी के दौरान दोनों उग्रवादी गोलियां लगने से घायल हो गए। उनके पास से भारी मात्रा में हथियार/गोलाबारूद, विस्फोटक आदि बरामद किए गए। इस अभियान में उल्फा के शिविर को ध्वस्त कर दिया गया।

जांच के दौरान गोलियां लगने से घायल हुए उग्रवादियों की पहचान (1) सार्जेंट मेजर अकोन बरगोहाइन उर्फ सुनामी, पुत्र श्री भुबोन बरगोहाइन, निवासी–कोलकाता गांव, पुलिस स्टेशन–सापेखाती, जिला–शिवसागर और (2) सार्जेंट मेजर तिकशू बरूआ उर्फ अभय गोगोई, पुत्र श्री मोदीन बरूआ, निवासी–अपर मामोरोनी गांव, पुलिस स्टेशन–डिगबोई, जिला–तिनसुकिया के रूप में की गई। दोनो युवक म्यांमार में प्रशिक्षण प्राप्त उल्फा के कट्टर काडर हैं।

की गई बरामदगी:–

1. 1 (एक) ए.के. 56 राइफल
2. 02 (दो) ए. के. सीरीज मैगजीन
3. ए.के. सीरीज के 25 (पच्चीस) राउंड गोलाबारूद
4. मैगजीन के साथ 9 एमएम की (एक) पिस्तौल

5. 9 एमएम की पिस्तौल के 4 (चार) गोलाबारूद

6. 3 (तीन) चीनी बोतल हथगोले

7. 2 (दो) डेटोनेटर

8. पंजीकरण सं. एएस–23–डी–2663 वाली एक मोटर साइकिल।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री जाकिर हुसैन, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, मोहेश चंद्र बोरा, उप निरीक्षक और भुगेश्वर सैकिया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 02.06.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 113–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01 उत्पल बोरा,
उप निरीक्षक

02. लर्निश पेगू,
उप निरीक्षक

03. भूपेन हातीमुरिया,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 09.05.2012 को लगभग 0900 बजे, सादिया पुलिस स्टेशन के अधीन बासकोटा चुक और मिशिंग बोरगोरा के आम क्षेत्र में सुरक्षा बलों के विरुद्ध विध्वंसक गतिविधियों की तैयारी कर रहे 5/6 संदिग्ध माओवादी कार्यकर्ताओं की गतिविधियों के संबंध में एक गोपनीय सूचना प्राप्त होने पर, सादिया पुलिस स्टेशन प्रभारी उप निरीक्षक उत्पल बोरा, उप निरीक्षक (पी) लर्निश पेगू और असम पुलिस बटालियन के कार्मिक फौरन उस गांव की ओर रवाना हो गए। उस स्थान पर पहुंचकर, पुलिस दल ने छोटे–छोटे समूहों में बंट कर तलाशी अभियान शुरु कर दिया। तलाशी अभियान के दौरान, उप निरीक्षक उत्पल बोरा और उप निरीक्षक (पी) लर्निश पेगू के नेतृत्व वाले अभियान दल ने मिशिंग बोरगोरा के बाल बहादुर लिंबू और जश बहादुर लिंबू के घर में कुछ व्यक्तियों को आते–जाते देखा। वे पेड़ों के पीछे छिप गए और बेहद सावधानीपूर्वक उस घर की ओर बढ़ने लगे। जैसे ही अभियान दल उस घर के निकट पहुंचा, उस घर के अंदर शरण लिए हुए उग्रवादियों ने पुलिस दल के ऊपर एक हथगोला फेंका। उसके तत्काल बाद भारी हथियारों से लैस माओवादी उग्रवादियों ने घनी झाड़ियों की आड़ लेते हुए उस घर से बाहर निकलने की कोशिश की और उन्होंने पुलिस दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी।

पुलिस दल ने भी आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की। दोनों ओर से हो रही इस गोलीबारी में कांस्टेबल अचिंता दास घायल हो गए लेकिन उन्होंने अपनी जान को खतरे की परवाह किए बगैर गोलीबारी करना जारी रखा। उप निरीक्षक उत्पल बोरा ने सच्ची नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को कवर प्रदान किया और उन्होंने उप निरीक्षक (पी) लर्निश पेगू को उग्रवादियों की गोलीबारी के आक्रमण से कांस्टेबल अचिंता दास को बचाने का निर्देश दिया। उप निरीक्षक (पी) लर्निश पेगू अपने दल का नेतृत्व करते हुए रेंगते हुए आगे बढ़े और आत्मरक्षा में निरंतर गोली चलाते हुए अचिंता दास को एक सुरक्षित दूरी पर ले आए। कर्तव्य की राह पर अपने निजी जीवन को गंभीर खतरे की परवाह किए बगैर उप निरीक्षक उत्पल बोरा और उनके दल ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और सीधी गोलीबारी में 04 (चार) सशस्त्र माओवादी उग्रवादियों को मार गिराया, बाद में जिनकी पहचान (1) सिद्धार्थ बर्गोहाइन, उम्र–30 वर्ष उर्फ चंद्र बरुआ उर्फ लाठी, पुत्र रंगमन बर्गोहाइन, तेलीकोला गांव पुलिस स्टेशन–सादिया, कमांडर सीपीआई (माओवादी), अपर असम लीडिंग कमिटी, (2) राजीब गोगोई, उम्र–35 वर्ष उर्फ मेडंग उर्फ वास्तव बरुआ उर्फ मिशन उर्फ चांगमई, पुत्र–प्रोदून्य गोगोई, गांव–तुपसिंगा, पुलिस स्टेशन–सादिया, (3) अरुप चेतिया, उम्र–26 वर्ष उर्फ इयान, पुत्र श्री कुमुद चेतिया, टोकजान अहोमगांव, पुलिस स्टेशन–सादिया और (4) कमला बर्गोहाइन, उम्र–24 वर्ष, पुत्र बुद्धेश्वर बर्गोहाइन, गांव–गोरचिंगा, मेकुरीचुक, पुलिस स्टेशन–सादिया के रूप में हुई। उप निरीक्षक उत्पल बोरा ने ऐसी स्थिति में असाधारण साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया और उन्होंने अपने दल का मनोबल बढ़ाया। अभियान में उनकी ओर से थोड़ी भी चूक हो जाती, तो उससे उन्हें और उनके दल को अपूरणीय क्षति हो सकती थी।

उपर्युक्त तथ्यों और परिस्थितियों से यह स्पष्ट है कि सर्व/श्री (1) उप निरीक्षक उत्पल बोरा, (2) उप निरीक्षक (पी) लर्निश पेगू और (3) यूबीसी भूपेन हातीमुरिया ने तत्परता के साथ कार्रवाई की और उन्होंने सामने से अभियान का नेतृत्व करते हुए उत्कृष्ट बहादुरी एवं शौर्य का प्रदर्शन किया और उग्रवादियों को ढ़ेर करने में अदभुत साहस का प्रदर्शन किया।

की गई बरामदगी :

1. एके–47 सीरीज राइफल–02

2. एके–56 सीरीज राइफल–01

3. मैगजीन–06

4. जिंदा गोलाबारुद–एके सीरीज–104 राउंड

5. खाली कारतूस–44

6. हथगोला–03

7. डेटोनेटर–01

8. मांग पत्र–27

9. मोबाइल हैंडसेट–04

10. पॉकेट डायरी–05

11. मोबाइल सिम कार्ड–16

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री उत्पल बोरा, उप निरीक्षक, लर्निश पेगू, उप निरीक्षक और भूपेन हातीमुरिया, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.05.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 114–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अरबिंदा कलिता ,
पुलिस अधीक्षक

02. शीलादित्य चेतिया,
अपर पुलिस अधीक्षक

03. राजू बहादुर छेत्री,
उप निरीक्षक

04. सोरेन उजीर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.09.2013 को लगभग 7.30 बजे अपराह्न में पुलिस स्टेशन चारीद्वार, सोनितपुर के अंर्तगत 12 मील क्षेत्र से एनडीएफबी (एस) के उग्रवादियों द्वारा श्री अनिल कुमार अग्रवाल, महाप्रबंधक, एनएचपीसी, तवांग का अपहरण कर लिया गया था। इसकी जांच से यह खुलासा हुआ कि श्री अग्रवाल को लेकर आ रहे वाहन के चालक की इस अपहरण में मिलीभगत थी। कुछ समय के बाद असम पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने एनडीएफबी (एस) समूह के उन बीस से अधिक सदस्यों में से चार काडरों को अपने साथ मिलाने में कामयाबी पाई, जिन्होंने एनएचपीसी के महाप्रबंधक को बंधक बना रखा था।

दिनांक 11.11.2013 को लगभग 3 बजे अपराह्न में पुलिस उप महानिरीक्षक (उत्तरी रेंज), असम के अधीन असम पुलिस द्वारा सुनियोजित और अत्यंत सतर्कतापूर्वक पूर्वाभ्यास के साथ बंधक–मुक्ति अभियान शुरू किया गया। इसके लिए एक हमला दल, दो सहायक दल और एक बाहर निकालने वाले दल का गठन किया गया। 15 सदस्यों वाले हमला दल का नेतृत्व श्री अरबिंदा कलिता, आईपीएस, पुलिस अधीक्षक, सोनितपुर द्वारा किया जा रहा था और श्री शीलादित्य चेतिया, आईपीएस, अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय), सोनितपुर द्वितीय कमान अधिकारी थे।

हमला दल ने जंगली हाथियों और अन्य जंगली जानवरों वाले जंगल के रास्ते से भालुकपुंग रेलवे स्टेशन से पैदल दुर्गम भू–भाग में (कभी–कभी रस्सियों का प्रयोग करते हुए) चार घंटे लंबी खड़ी चढ़ाई वाली यात्रा की। अंत में वह दल चारीद्वार पुलिस स्टेशन के अधीन असम–अरुणाचल सीमा पर मालडांग क्षेत्र में पहाड़ की चोटी के समीप उस स्थान पर पहुंचा, जहां अपहृत व्यक्ति को रखा गया था। वहां पर दल का नेतृत्व कर रहे श्री अरबिंद कलिता, आई पी एस और श्री शीलादित्य चेतिया, आई पी एस ने उस स्थान की स्थलाकृति के त्वरित आकलन के बाद बंधक को छुड़ाने की अंतिम रणनीति बनाई।

बंधक को मुक्त करवाने के अंतिम अभियान के लिए 15 व्यक्तियों के हमला दल में से दो सहयोगी जोड़ों को तैयार किया गया, जिसमें–(क) श्री अरबिंदा कलिता, आई पी एस के साथ उप निरीक्षक (यूबी) राजू बहादुर छेत्री और (ख) श्री शीलादित्य चेतिया, आई पी एस के साथ कांस्टेबल सोरेन उजीर शामिल थे। इन चार व्यक्तियों ने दल के शेष 11 सदस्यों को वहीं छोड़ दिया जो बंधक को मुक्त करवाकर बाहर लाने के समय सहायता प्रदान करने के लिए उग्रवादियों के कैंप से 30 मीटर की दूरी पर इंतजार करते रहे।

लगभग 7.30 बजे अपराह्न में, श्री कलिता और श्री चेतिया ने अपने–अपने सहयोगी के साथ मिलकर उग्रवादी कैंप के सुरक्षा प्रहरी के नाक के ठीक नीचे से संकरी गहरी घाटी से रेंग कर चढ़ाई करते हुए उग्रवादी कैंप की ओर बढ़ना शुरू किया। योजनानुसार, बंधक श्री अनिल कुमार अग्रवाल दल से तोड़कर मिलाए गए एक काडर के साथ शौच के बहाने कैंप से बाहर आ गए। जब उक्त चारों पुलिस कार्मिकों ने बंधक को अपने कब्जे में ले लिया, तभी एनडीएफबी (एस) के उन उग्रवादियों की ओर से उनके ऊपर भारी गोलीबारी की जाने लगी जिन्होंने यह भांप लिया था कि बंधक को मुक्त करवाया जा रहा है। चारों पुलिस कर्मियों ने स्वयं कवच बनकर गोलीबारी से बंधक को कवर प्रदान करते हुए उसे वहां से निकालने के मार्ग से ले जाते समय बेहद सूझबूझ से गोलीबारी का जवाब दिया।

चूंकि तब तक उग्रवादी लगातार पुलिस दल के ऊपर हथगोले फेंकने लगे इसलिए श्री शीलादित्य चेतिया, आई पी एस और कांस्टेबल सोरेन उजीर के किनारे से गोलीबारी करके जवाबी कार्रवाई की और उग्रवादियों के हमले को स्वयं अपनी ओर मोड़ दिया। इससे श्री कलिता और श्री छेत्री को पीड़ित व्यक्ति श्री ए. के. अग्रवाल को शिविर से सुरक्षित रिहा करवाने और अपने दल के शेष सदस्यों के पास पहुंचने में कामयाबी मिली। दल के पास पहुंचकर श्री कलिता ने उग्रवादी कैंप के ऊपर भारी गोलीबारी कम कर दी और पीड़ित को कुछ दूरी पर तैनात सहायता एवं वहां से बाहर निकालने वाले दलों को सुरक्षित सौंपने के लिए वे आगे बढ़ने लगे। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पीड़ित को पूरी तरह से सुरक्षित आगे ले जाया जा सके, श्री चेतिया और कांस्टेबल उजीर ने तब उग्रवादियों के ऊपर मोर्टार से गोला दागते हुए पीछे से प्रहरी की कार्रवाई जारी रखी। यह कार्रवाई बीस मिनट से अधिक समय तक तब तक चली जब तक कि उग्रवादी अपने कैंप को ध्वस्त देखकर अंधेरे का लाभ उठाकर वहां से भाग नहीं गए।

इस अत्यंत साहसिक एवं समन्वित प्रयास के परिणामस्वरूप, पुलिस श्री अनिल कुमार अग्रवाल, महाप्रबंधक, एनएचपीसी, तवांग को सुरक्षित मुक्त करवा सकी और उन्हें उसी रात भालुकपुंग (राज्य राजमार्ग) तक ले गई। तथापि, इस प्रक्रिया में श्री कलिता, श्री चेतिया, श्री छेत्री और कांस्टेबल उजीर छर्रे लगने से घायल हो गए।

इस सफल अभियान में, श्री अरबिंदा कलिता, आई पी एस और श्री शीलादित्य चेतिया, आई पी एस., श्री राजू बहादुर छेत्री, उप निरीक्षक और कांस्टेबल श्री सोरेन उजीर ने कर्तव्य की राह में सर्वोच्च स्तर के साहस का प्रदर्शन किया। मौत को चुनौती देने वाली बहादुरी और कर्तव्य के प्रति समर्पण, वर्दीधारी उपर्युक्त चार लोगों के कृत्य के गौरवशाली स्तर का बखान करती है। उन्होंने न सिर्फ उग्रवादियों के गढ़ वाले भू–भाग में चार घंटे तक पैदल चलने के अदम्य साहस का प्रदर्शन किया, बल्कि भारी हथियारों से लैस तथा लाभप्रद, सुरक्षित एवं बारूदी सुरंग वाले स्थान में मौजूद उग्रवादियों का सामने से मुकाबला किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अरबिंदा कलिता, पुलिस अधीक्षक, श्री शीलादित्य चेतिया, अपर पुलिस अधीक्षक, राजू बहादुर छेत्री, उप निरीक्षक एवं सोरेन उजीर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.11.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 115–प्रेज/2015—राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुशील खोपड़े,
उप महानिरीक्षक

02. उपेन्द्र कुमार सिन्हा,
पुलिस अधीक्षक

03. अरविन्द कुमार गुप्ता,
सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी

04. संजय कुमार सिंह,
उप पुलिस अधीक्षक

05 मृत्युंजय कुमार सिंह,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बक्सर, रोहतास और कैमूर के जिले, गांव इटवा, पुलिस स्टेशन राजपुर, जिला बक्सर के सुरेश राजभर एवं बिहार तथा उत्तर प्रदेश के दुर्दांत रिकार्ड वाले 10–12 अपराधियों के उसके गैंग द्वारा त्वरित निरंतरता के साथ छिप कर की जा रही आपराधिक गतिविधियों से त्रस्त थे। वह बक्सर तथा बिहार एवं उत्तर प्रदेश के, उसके साथ लगे जिलों में कम से कम 46 जघन्य आपराधिक मामलों में आरोपी था, जिसमें हत्या, डकैती एवं फिरौती के लिए अपहरण के मामले शामिल थे। वह आम लोगों के साथ–साथ अनेक पुलिसकर्मियों की हत्या करने एवं उन्हें घायल करने के लिए भी जिम्मेदार था। वह 1979 से भगोड़ा था। बिहार सरकार द्वारा उसकी गिरफ्तारी पर रू.25000/– का इनाम घोषित किया गया था।

दिनांक 24.06.2010 को लगभग 12.35 बजे अपराह्न में उप–पुलिस निरीक्षक एवं राजपुर पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी, रघुनाथ सिंह अपने मातहत पुलिसकर्मियों के साथ राजपुर पुलिस स्टेशन के अधीन मिट्टी के सिर्फ आठ घरों वाले लक्ष्मणपुर डेरा नामक एक छोटे गांव में सुरेश राजभर एवं उसके साथियों के छिपे होने की एक गोपनीय सूचना की जांच कर रहे थे। उन लोगों ने संदिग्ध घर को घेर लिया और उसकी ओर बढ़ने लगे। उस घर से अचानक गोलियों की बौछार शुरु हो गई जिसमें एसएपी जवान अवधेश प्रसाद साह को भी गोली लग गई। इस अचानक हमले और एसएपी जवान को गोली लगने से सभी पुलिसकर्मी तत्काल हिल गए। मोटी दीवारों वाली मिट्टी के घर में पोजीशन लिए हुए अपराधी लाभप्रद स्थिति में थे, जबकि खुले में होने के कारण पुलिसकर्मी स्वयं को बगैर किसी बचाव की स्थिति में पा रहे थे।

अपने जीवन को अत्यधिक जोखिम में पाने की स्थिति को नजरअंदाज करते हुए पुलिस दल ने अदम्य साहस एवं दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन किया। अपने रास्तों को बदलते हुए वे घर के निकट पहुंच गए और जवाबी हमला करते हुए उन्हें आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। अपराधियों ने चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए अपनी गोलीबारी तेज कर दी। स्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए रघुनाथ सिंह, उप–निरीक्षक ने अपने उच्चाधिकारी को मौजूदा परिस्थिति की सूचना दी और उन्होंने अतिरिक्त बल की मांग की। घटनास्थल पर अपने बल के साथ एसपी, बक्सर, एसडीपीओ, बक्सर और एसडीपीओ, डुमरांव के आगमन से अत्यंत हिंसक अपराधियों के साथ पूरी ताकत से मुकाबला कर रहे पुलिस दल का उत्साह बढ़ गया। स्थिति के मूल्यांकन के बाद नजदीकी घरों से भयभीत ग्रामीणों को बाहर निकाला गया। सभी प्रकार के उठाए गए एहतियाती कदमों के बावजूद पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपराधियों के भागने के सभी संभावित मार्गों पर तैनात कर दिया गया, जबकि दोनों ओर से गोलीबारी जारी थी। स्थिति बेहद तनावपूर्ण एवं दिल दहला देने वाले जोखिम से भरी हुई थी। पुलिस की कार्रवाई एवं उनकी सचलता को अवरुद्ध करने के लिए अपराधियों ने पुलिस की दो जीपों को एवं उसकी हेडलाइटों को भारी गोलीबारी से क्षतिग्रस्त कर दिया था। इन सभी अवरोधों के बावजूद पुलिस दल उन्हें सौंपे गए कार्य को करने के लिए दृढ़ एवं प्रतिबद्ध था।

उप पुलिस अधीक्षक के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर उप पुलिस महानिरीक्षक, साहाबाद रेंज ने सफलतापूर्वक अभियान संचालित करने के लिए आगे की रणनीतिक योजना पर विचार–विमर्श किया। भागने के सभी संभावित मार्गों पर अवरोधों को और मजबूत किया गया। नजदीकी घरों की छतों के ऊपर एसटीएफ के जवानों को तैनात किया गया। हठी एवं दुर्दांत अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए दो छापामार–सह–हमला दल गठित किए गए। पहले दल में उप पुलिस महानिरीक्षक, साहाबाद के नेतृत्व में संजय कुमर सिंह, उप पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण), भोजपुर, मृत्युंजय कुमार सिंह, उप पुलिस निरीक्षक (एसओजी), एसटीएफ, एससी, संतोष कुमार सिंह और जेसी, संजय कुमार सिंह शामिल थे। दूसरे हमला दल में उपेंद्र कुमार सिन्हा, पुलिस अधीक्षक, बक्सर के नेतृत्व में अरविन्द गुप्ता, एसडीपीओ, बक्सर, रघुनाथ सिंह, उप निरीक्षक–सह–प्रभारी अधिकारी, राजपुर पुलिस स्टेशन और जेसी, बैजनाथ कुमार, एसटीएफ शामिल थे। सभी प्रकार के एहतियाती कदम उठाते हुए दोनों दल सुनियोजित तरीके से अपराधियों के ठिकाने की ओर बढ़े। संजय कुमार सिंह, उप–पुलिस अधीक्षक, अरविन्द कुमार गुप्ता, एसडीपीओ, मृत्युंजय कुमार सिंह, उप–पुलिस निरीक्षक और एसटीएफ के उप–निरीक्षक रघुनाथ सिंह को उप–पुलिस महानिरीक्षक के द्वारा अभियान में नजदीकी कार्रवाई का आदेश दिया गया था। अपराधियों को गोलीबारी बंद करने और आत्मसमर्पण करने की लगातार चेतावनी दी जा रही थी लेकिन वे गाली–गलौज की भाषा में ललकारते हुए पुलिस दल के ऊपर भारी गोलीबारी करते रहे और पुलिस के विनाश की धमकी देते रहे। जवाबी कार्रवाई में पुलिस दल की ओर से भारी गोलीबारी की गई और हथगोलों का विस्फोट किया गया। इसके बाद भी घर की मजबूत मिट्टी की दीवारों के भीतर मौजूद अपराधी बेखौफ एवं बेपरवाह थे। उप–पुलिस महानिरीक्षक, उप–पुलिस अधीक्षक, संजय कुमार सिंह, उप–निरीक्षक मृत्युंजय कुमार सिंह, एससी संतोष कुमार सिंह और जेसी, संजय कुमार सिंह उत्तर की ओर से अपराधियों के ठिकाने की ओर आगे बढ़े, जबकि, पुलिस अधीक्षक, बक्सर, एसडीपीओ, बक्सर, अरविन्द कुमार गुप्ता, उप–निरीक्षक रघुनाथ कुमार सिंह और जेसी, बैजनाथ कुमार के साथ दक्षिण–पश्चिम की ओर से बढ़ रहे थे। इसी बीच, अपराधियों ने पुलिसकर्मियों के बीच भ्रम पैदा कर चुपचाप वहां से निकल कर भागने के इरादे से एक रणनीति के तहत अपने छिपने के ठिकाने के एक हिस्से में आग लगा दी। दोनों पुलिस दलों द्वारा स्थिति को नियंत्रण में रखा गया था। भ्रम को दूर करने के लिए जिप्सी कार और लैंडमाइन्स वाहन की हेडलाइटों को जलाकर मुठभेड़ स्थल के ऊपर केंद्रित रखा गया था। जब पुलिस दल स्थिति को नियंत्रित करने में लगा हुआ था, उसी समय अपराधियों के स्थानीय समर्थकों ने पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशाओं से गोलीबारी शुरु कर दी। उप–निरीक्षक, उदय शंकर के नेतृत्व में वहां उपलब्ध एसएपी जवानों और एसटीएफ, कैमूर के अतिरिक्त बल ने उनका सामना किया और बाहरी घेरे में स्थिति को नियंत्रण में किया। यह सिलसिला पूरी रात जारी रहा। जब भी पुलिस ने नजदीक जाने की कोशिश की, अपराधी रुक–रुक कर गोली चलाते रहे।

अंतिम उपाय के रूप में उप महानिरीक्षक एवं पुलिस अधीक्षक ने पुनः स्थिति का मूल्यांकन कर दलों का समूह पुनः तैयार किया और नई रणनीति की योजना बनाई। उन्होंने भारी गोलीबारी के कवर के अधीन अपराधियों के घेरेबंदी वाले ठिकाने के निकट पहुंचने की भरपूर कोशिश की। जवाबी हमला करने में अपराधी ऊंचाई वाले स्थान पर थे। यह अत्यंत परिवर्तनशील स्थिति थी। यह लड़ाई बड़े पैमाने के युद्ध में तब्दील हो गयी। उप महानिरीक्षक, साहाबाद और पुलिस अधीक्षक, बक्सर ने अपराधियों को पुनः आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी। इस पर गोलियों की बौछार के बीच उन्होंने एक बार पुनः पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में भागने की कोशिश की। तथापि उनके प्रयास विफल कर दिए गए।

एक रणनीति के रूप में एसडीपीओ, बक्सर के मोबाइल फोन पर एक अपराधी ने सुरेश राजभर के रूप में अपना परिचय देते हुए आत्मसमर्पण करने की इच्छा जताई। इसी बात पर उप महानिरीक्षक द्वारा पुलिस की ओर से गोलीबारी रुकवा दी गई और अपराधियों के आत्मसमर्पण के लिए उप महानिरीक्षक और पुलिस अधीक्षक दोनों निकल कर सामने आ गए। लेकिन पुलिस दल के लिए घोर आश्चर्य पैदा करते हुए अपराधी दक्षिण पूर्व की दिशाओं से दो समूह में बाहर निकल कर आए और उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर भागने की कोशिश की। इस तीव्र गोलीबारी के दौरान, जेसी संजय कुमार के पैर में गोली लग गई। दोनों छापामार दलों द्वारा की गई जवाबी गोलीबारी में भाग रहे चार अपराधियों को गोली लगी और वे अपने हथियारों के साथ पूर्व की ओर मैदान में गिर पड़े।

कमरे में घुसने के क्रम में किसी अतिरिक्त आपराधिक हमले की आंशका को टालने के लिए पुलिस दल ने हथगोलों का विस्फोट किया जिसके परिणामस्वरूप तीन अपराधी उस स्थान पर मारे गए। वे घर के आंगन में मृत पाए गए। कुल मिलाकर सात अपराधी मारे गए जिनमें से दो पुलिस की वर्दी में थे।

यह भयावह मुठभेड़ 23 घंटे तक जारी रही जिसमें अपराधियों ने लगभग 500–600 राउंड फायर किए और उनके पास से बड़ी मात्रा में आग्नेय अस्त्र बरामद किए गए। इस बड़े अभियान में तैनात पुलिस अधिकारियों एवं पुलिस कर्मियों की संख्या 181 थी। पुलिस द्वारा कुल 1280 राउंड फायर किए गए और इसके अतिरिक्त 11 हथगोले और 2 टीयर गैस का इस्तेमाल किया गया। यह उनके आपराधिक उतावलेपन, आश्चर्यजनक गोलीबारी क्षमता के साथ हिंसा के लिए उनकी ओर से चुनौती और प्रवृत्ति का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अपराधियों के समर्थकों द्वारा पुलिस दलों के ऊपर बाहर से सभी दिशाओं से गोलीबारी इस तथ्य की पुष्टि करती है कि सुरेश राजभर ने अपराधियों का एक मजबूत समूह तैयार किया था। महत्वपूर्ण क्षण में उत्पन्न होने वाली ऐसी गंभीर स्थिति में पुलिस द्वारा गोलीबारी उचित रूप से आवश्यक, न्यूनतम और पूर्णतः न्यायोचित भी थी।

मामले के पर्यवेक्षण के दौरान यह पता चला कि अपराधियों के छिपने का स्थान ऐसी स्थिति में था कि किसी भी प्रकार की प्रभावी गोलीबारी अभियान के अंत तक अपराधियों को हतोत्साहित नहीं कर सकती थी। यह भी पाया गया कि सभी दिशाओं से पुलिस को निशाना बनाने के लिए अपराधियों के छिपने के घर की मोटी दीवारों में अनेक छेद किए गए थे। उन्होंने उन छेदों के द्वारा पुलिस के हमले की रणनीतियों और उनकी गतिविधियों को देखा।

सेवा की सर्वोत्तम भावना का निर्वहन करते हुए पुलिस दल के साथ मिलकर उप–पुलिस महानिरीक्षक, साहाबाद रेंज ने उन सबकी जान पर आसन्न जोखिम के बीच भी स्थिति को भली–भांति संभाला।

अपनी जान के अत्यधिक जोखिम को नजरअंदाज करते हुए पुलिस दल ने अपने कार्य में प्रशंसनीय धैर्य एवं कर्तव्य के प्रति असाधारण समर्पण का प्रदर्शन किया है। अपनी सकारात्मक एवं त्वरित प्रतिक्रियात्मक कार्रवाई, अटल निश्चय, सामर्थ्य तथा युद्धप्रिय भावना के द्वारा उन्होंने सुरेश राजभर एवं उसके गैंग के सदस्यों जैसे हठी अपराधियों के साथ लगातार लगभग 23 घंटे तक सामने से मुकाबला किया। उनसे (अपराधियों से) आत्मसमर्पण करने की अपील करते समय पुलिस ने अत्यधिक धैर्य बनाए रखा। पुलिस दल को आत्म रक्षा में तथा सरकारी हथियारों एवं गोलाबारुद की सुरक्षा के लिए गोलीबारी करने के लिए तभी मजबूर होना पड़ा जब अपराधियों ने दहला देने वाले स्तर तक अपनी गोलीबारी को बढ़ा दिया।

की गई बरामदगी :

1.	3006 यूएस माडल सेमी ऑटोमैटिक राइफल	–01
2.	3006 प्रतिबंधित बोर रेगुलर राइफल	–01
3.	.315 बोर रेगुलर राइफल	–06
4.	डीबीबीएल गन 12 बोर 4057/3764	–01
5.	.315–179 राउंड जिंदा कारतूस	
6.	.3006–102 राउंड जिंदा कारतूस	
7.	7.62 एमएम–3 राउंड जिंदा कारतूस	
8.	12 बोर–40 राउंड जिंदा कारतूस	
9.	.315–56 एम टी	
10.	3006–12 एमटी	
11.	बिंडोलिया–07	
12.	मोबाइल–3	
13.	मोबाइल सिम–4	

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुशील खोपड़े, उप महानिरीक्षक, उपेन्द्र कुमार सिन्हा, पुलिस अधीक्षक, अरविन्द कुमार गुप्ता, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, संजय कुमार सिंह, उप पुलिस अधीक्षक और मृत्युंजय कुमार सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.06.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 116–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :––

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. प्रमोद खेस,
निरीक्षक

02. मनोहर प्रदीप केरकेट्टा,
कंपनी कमांडर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस निरीक्षक, सारंगगढ़, प्रमोद खेस को एक सूचना प्राप्त हुई कि सीपीआई (माओवादी) के कुछ काडरों ने एक बैठक की है जिसमें वे गांव परधियापली के लोगों को सरकार के विरुद्ध भड़काने की योजना बना रहे हैं। वे नए सदस्यों को शामिल करने और डोंगरीपाली पुलिस चौकी पर हमला करने की भी योजना बना रहे थे। अपनी बैठक के बाद वे कारामल जंगल की ओर गए और बूटीपानी तालाब के निकट ठहरे हुए थे। 27.01.2012 को इस सूचना के प्राप्त होने के पश्चात उस भू–भाग और स्थलाकृति के आवश्यक विवरण जुटाने के साथ उग्रवादियों को पकड़ने की एक रणनीति तैयार करके एक अभियान चलाने की योजना बनाई गई। उन्होंने दो दल तैयार किए और उन्हें संबंधित निर्देश दिए।

निरीक्षक जेस के नेतृत्व में पहला दल नक्सलियों के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए कारामल जंगल की ओर रवाना हो गया। कंपनी कमांडर केरकेट्टा के नेतृत्व वाला दूसरा दल गोमारडा पहुंचा। उस क्षेत्र की घेराबंदी के लिए दूसरा दल 3 हिस्सों में विभाजित हो गया। लगभग 12 बजे नक्सलियों ने दूसरे दल के ऊपर भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

एके 47 लिए हुए एक नक्सली अपने साथियों का नेतृत्व कर रहा था। कंपनी कमांडर केरकेट्टा ने स्वयं को रणनीतिक रूप से पोजीशन किया और वे गोली चलाकर उसे घायल करने मे सफल रहे। उसके बाद नक्सलियों की ओर से गोलाबारी की मात्रा बढ़ गई। प्रमोद खेस ने अपनी एके 47 से गोलीबारी की और उसी स्थान पर नक्सली को मार गिराया। अन्य नक्सली शव और गोलाबारुद को अपने कब्जे मे लेने वहां आए और उन्होंने फिर हथगोलों से हमला किया। निरीक्षक खेस और कंपनी कमांडर केरकेट्टा ने सही तरीके से अपने सहकर्मियों का मार्गदर्शन किया और उन्होंने स्थिति को पूर्ण नियंत्रण में रखा। दोनों ओर से एक घंटे तक गोलीबारी हुई। नक्सली पीछे हटने के लिए मजबूर हो गए। कुछ नक्सली चीख रहे थे और कुछ नक्सली मारे गए नक्सलियों के शवों को अपने कंधों पर रखकर भागते हुए दिखाई दे रहे थे। पुलिस दल ने वहां से 30 वर्ष की आयु के नक्सली का शव हथियार एवं गोलाबारुद सहित बरामद किया।

पुलिस निरीक्षक प्रमोद जेस और कंपनी कमांडर मनोहर प्रदीप केरकेट्टा ने सफलतापूर्वक इस योजना का नियोजन एवं निष्पादन किया। उन्होंने पुलिस दलों के सामने रह कर नेतृत्व करने और किसी पुलिस कार्मिक को घायल होने दिए बगैर नक्सलियों को भारी संख्या में हताहत करने में अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया।

की गई बरामदगी :––

1. 01 एके 47 राइफल
2. एके 47 के 39 जिंदा राउंड।
3. एके 47 के 05 खाली खोखे।
4. इनसास राइफल के 02 खाली खोखे।
5. 303 का 01 जिंदा राउंड।
6. एके 47 के 3 मैगजीनें।
7. काले रंग का 01 मैगजीन पाउच।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री प्रमोद खेस, निरीक्षक और मनोहर प्रदीप केरकेट्टा, कंपनी कमांडर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.01.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 117–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मनीष कुमार शर्मा,
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक

02. उदय भान सिंह चौहान,
पुलिस अधीक्षक

03. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

वर्ष 2007–08 में जब रायपुर और दुर्ग पुलिस ने नक्सलियों के कुछ प्रमुख काडरों को गिरफ्तार किया और शहर में हथियार एवं गोलाबारूद का बड़ा जखीरा बरामद किया, तब छत्तीसगढ़ पुलिस ने सभी मोर्चों पर नक्सलियों के राष्ट्र–विरोधी एजेंडे के खुलासे के अपने मिशन को जारी रखने का निर्णय लिया। तब से दुर्ग पुलिस सीपीआई (माओवादी) के शहरी नेटवर्क के दुर्भावपूर्ण योजनाओं का पता लगाने के लिए अथक रूप से कार्य कर रही है।

दिनांक 14 अक्तूबर, 2010 को लगभग 11 बजे एक मुखबिर ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) दुर्ग, श्री मनीष शर्मा को सूचित किया कि नागेश नामक एक दुर्दांत नक्सली अपने 2 या 3 साथियों के साथ उसी रात शहर के पुलिस स्टेशन जमूल के अधीन बोगड़ा पुलिया के निकट कारतूस प्राप्त करने के लिए सौदेबाजी की योजना बना रहा है। नागेश, जो उत्तरी बस्तर–माद डिवीजन का एक अत्यंत दुर्दांत डिवीजनल समिति का सदस्य था, अपने विवेकहीन निर्दयता के लिए काफी बदनाम था। उसने सुरक्षा कार्मिकों सहित आम लोगों की जघन्य हत्याओं को अंजाम दिया था। वह हत्या एवं मतदान दलों के साथ लूटपाट करने के अस्सी से अधिक जघन्य आपराधिक मामलों में वांछित था। उस पर भारी नगद इनाम भी घोषित था।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक द्वारा प्राप्त सूचना पर विश्वास करते हुए, उन्हें पुलिस अधीक्षक ने नक्सलियों को दबोचने के लिए आवश्यकतानुसार अधिकारियों एवं कार्मिकों के दल का गठन करने का निर्देश दिया। श्री मनीष शर्मा और यूबीएस चौहान, नगर पुलिस अधीक्षक, छावनी, जिला दुर्ग ने अतिरिक्त समय गंवाए बगैर मुखबिर के साथ संदिग्ध क्षेत्र की टोह ली। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, नगर पुलिस अधीक्षक और थाना प्रभारी, जमूल के नेतृत्व में दलों का गठन किया गया।

श्री मनीष शर्मा, श्री यूबीएस चौहान और थाना प्रभारी, श्री आर.पी. शर्मा ने अत्यंत सतर्कतापूर्वक संपूर्ण अभियान की योजना बनाई और गिरफ्तारी सहित अभियान में पहली पंक्ति में रहने का निर्णय लिया। दल के अन्य पुलिस कार्मिकों को उपयुक्त रूप से जानकारी दी गई और यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया कि अभियान के दौरान नक्सली वहां से भाग नहीं पाएं और इसलिए बल को तदनुसार रणनीतिक रूप से जगह–जगह पर तैनात कर दिया गया।

जब पुलिस दल अपने स्थान पर तैनात हो चुके थे और संदिग्ध व्यक्तियों की प्रतीक्षा कर रहे थे, तभी 14 और 15 तारीख की बीच की रात्रि में लगभग 1.20 बजे पूर्वाह्न में बोगडा पुलिया से शिवपुरी चौक की ओर दो पुरूष और एक महिला को एक थैला लेकर जाते हुए देखा गया। जैसे ही वे शिवपुरी चौक पर पहुंचकर एसीसी मैगजीन की ओर जाने वाली सड़क पर रुके, मुखबिर ने उनमें से एक की पहचान नागेश के रूप में की। अगली पंक्ति में मुस्तैद अधिकारी श्री शर्मा और श्री चौहान, जो उनकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखे हुए थे, उनको अपने वश में करने के लिए बेहद सतर्कतापूर्वक उन संदिग्ध व्यक्तियों की ओर बढ़ने लगे। उन्हें अपनी ओर आते देखकर अपराधियों ने पुलिस–पुलिस चिल्लाना शुरू कर दिया और अचानक उनके ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस अधिकारियों ने तत्काल पोजीशन ले ली और अपनी जान की परवाह किए बगैर आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। कुछ समय तक गोलीबारी होती रही। जब संदिग्ध व्यक्तियों की ओर से गोलीबारी रुक गई, तब पुलिस दल बेहद सावधानी से आगे बढ़ा और उन्हें घटना स्थल से दो पिस्तौल, दो बैग, पानी की दो बोतलों और जमीन पर खून के धब्बों के साथ एक महिला का शव मिला। उस क्षेत्र की गहन तलाशी लेने पर वहां झाडियों के अंदर से एक अन्य व्यक्ति का शव मिला, जिसकी पहचान दुर्दांत नक्सली नागेश के रूप में की गई। तीसरा अपराधी अंधेरा का लाभ उठाकर वहां से भागने में सफल हो गया।

पुलिस दल ने आत्मरक्षा में कुल 14 राउंड गोलिया चलाईं और नक्सलियों के विरूद्ध जमूल पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 307, 34 तथा आयुध अधिनियम की धारा 25 एवं 27 के अंतर्गत मामला दर्ज किया गया था। आगे की जांच के दौरान मृतक महिला की पहचान दुर्दांत नक्सली नागेश की पत्नी ताराबाई उर्फ उर्मिला के रूप में की गई, जो छत्तीसगढ़ के उत्तरी बस्तर डिवीजन की क्षेत्रीय समिति की सदस्य थी। उसके विरुद्ध जिला कांकेर के विभिन्न पुलिस स्टेशनों में हिंसा के 32 आपराधिक मामले दर्ज थे।

संपूर्ण अभियान बेहद सफल रहा जिसने पुलिस बल के मनोबल को बढ़ाने का काम किया। यह केवल अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री मनीष शर्मा, सीएसपी श्री यूबीएस चौहान और निरीक्षक श्री आर.पी. शर्मा तथा संपूर्ण दल द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस, काबिल नेतृत्व एवं उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्य के कारण ही संभव हो पाया।

की गई बरामदगी :

पुलिस दल ने घटना स्थल से मैगजीन तथा दो राउन्ड के साथ 9एमएम की एक पिस्तौल, मैगजीन तथा दो राउंड के साथ 7.65 एमएम की एक पिस्तौल, 2 वाकी–टॉकी (मोटरोला कंपनी), 2 कम्पास, ढेर सारी दवाइयां, पॉकेट डायरी, नक्सल साहित्य, नकद 49,000/– रु. डिजिटल डायरी (कैशियो कंपनी), दैनिक उपयोग की ढेर सारी वस्तुएं बरामद कीं।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मनीष कुमार शर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, उदय भान सिंह चौहान, पुलिस अधीक्षक, और राजेन्द्र प्रसाद शर्मा निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.10.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 118–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	कैलाश सिंह बिष्ट, निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
02.	सतेंदर कुमार, हेड कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
03.	राजीव कुमार, हेड कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
04	बिरेंदर सिंह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

स्पेशल सेल द्वारा तैयार की गई सूचना के आधार पर स्पेशल सेल का एक दल मेंढर गया और वहां उन्होंने उस स्थान और घर की पहचान की जहां जैश–ए–मोहम्मद का डिवीजनल कमांडर, पाकिस्तानी आतंकवादी उमर खिताब छिपा हुआ था। जिला पुंछ, जम्मू एवं कश्मीर के मेंढर पुलिस स्टेशन में इस संबंध में आयुध अधिनियम की धारा 7/27 और भारतीय दंड संहिता की धारा 120ख/212 के अंतर्गत दिनांक 05.09.2010 को प्राथमिकी सं. 166/2010 के माध्यम से एक मामला भी दर्ज किया गया था और हथियारों तथा बुलेट प्रूफ जैकेट से लैस दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल, 37 आरआर, एसओजी मेंढर और पुलिस स्टेशन मेंढर के एक संयुक्त दल ने आतंकवादियों को पकड़ने के लिए जुबैर, पुत्र–खालिक, निवासी–मोहल्ला ठेरा जट्टा, भट्टीडार, मेंढर, जम्मू एवं कश्मीर के घर की घेराबंदी की। लगभग 6.15 बजे पूर्वाह्न में सुरक्षा बलों को देखकर वहां छिपे हुए आतंकवादियों ने पुलिस दल और सुरक्षा बलों के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी और 37 आरआर के लांस नायक सज्जन सिंह को घायल कर दिया। जैश–ए–मोहम्मद के आतंकवादियों द्वारा चलाई गई गोली स्पेशल सेल, दिल्ली पुलिस के दल के सदस्यों के बेहद नजदीक से निकली। वहां युद्ध जैसे हालात थे और यह घनघोर मुठभेड़ दो घंटे तक चली। दोनों ओर से हुई इस गोलीबारी में पाकिस्तान निवासी उमर खिताब नामक जैश–ए–मोहम्मद के डिवीजनल कमांडर को ढ़ेर कर दिया गया और जुबैर, पुत्र–खालिक, निवासी–मोहल्ला ठेरा जट्टा, भट्टीडार, जम्मू एवं कश्मीर नामक एक आतंकवादी को गिरफ्तार कर लिया गया। इस मुठभेड में अपनी–अपनी ए.के. असाल्ट राइफलों से निरीक्षक कैलाश सिंह बिष्ट ने 20 राउन्ड गोली चलाई, सहायक उप निरीक्षक विक्रम ने 20 राउंड गोली चलाई, हेड कांस्टेबल सतेंदर कुमार ने 14 राउंड गोली चलाई, हेड कांस्टेबल निसार अहमद शेख ने 10 राउन्ड गोली चलाई, हेड कांस्टेबल राजीव ने 16 राउन्ड गोली चलाई, कांस्टेबल अमर सिंह ने 10 राउंड गोली चलाई और कांस्टेबल बिरेंदर सिंह नेगी ने 13 राउंड गोली चलाई।

की गई बरामदगी :

1. 2 ए.के.–47 असाल्ट राइफलें।
2. 7.62 कैलीबर वाली 1 चीनी पिस्तौल।
3. 1 चीनी हथगोला।
4. 60, 610 रु. नकद।
5. 35 पेंसिल सेल।
6. 3 नोकिया बैटरी।
7. 2 मोबाइल फोन, 1 सिम कार्ड के साथ।
8. 9 एमएम के 5 राउन्ड गोलाबारूद।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री कैलाश सिंह बिष्ट, निरीक्षक, सतेंदर कुमार, हेड कांस्टेबल, राजीव कुमार, हेड कांस्टेबल और बिरेंदर सिंह कांस्टेबल, ने अदम्य/वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.09.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 119–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शबीर नवाब,
अपर पुलिस अधीक्षक

02. मोहम्मद रफी मलिक,
हेड कांस्टेबल

03. मोहम्मद अमीन रेशी
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.01.2014 को यह विशेष सूचना प्राप्त होने पर कि जावेद अहमद मीर उर्फ सैफी, पुत्र मोहम्मद मकबूल मीर, निवासी बुलबुल, नौगाम, अनंतनाग नामक हिजबुल मुजाहिद्दीन के एक आतंकवादी ने श्रीनगर–जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग पर कुछ आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए अपने बेस कैम्प का स्थान अनंतनाग से कुलगाम में गांव शेमपुरा, काजीगुंड में परिवर्तित कर दिया है, पुलिस द्वारा एक अभियान चलाने की योजना बनाई गई और अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब तथा उप पुलिस अधीक्षक फिरोज अहमद, एसडीपीओ सदर की निगरानी में और निरीक्षक रियाज अहमद/एनजीओ, हेड कांस्टेबल मोहम्मद रफी मलिक, हेड कांस्टेबल मोहम्मद अमीन रेशी, कांस्टेबल गुल मोहम्मद सहित ईएसयू दक्षिण श्रीनगर से पर्याप्त कार्मिकों वाले दल को उक्त स्थान की ओर तत्काल रवाना किया गया। इस अभियान के शुरु किए जाने से पूर्व, कुलगाम पुलिस और 09 आरआर की सहायता भी मांगी गई। अभियान दल को तीन समूहों में विभाजित किया गया। कुलगाम पुलिस और 09 आर आर वाले पहले समूह को लक्षित गांव की बाहरी घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया, जबकि, श्रीनगर पुलिस और 09 आर आर के सदस्यों वाले दूसरे समूह को उस गांव की घेराबंदी करनी थी, जहां वह लक्षित घर स्थित था। अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब, उप पुलिस अधीक्षक फिरोज अहमद, एसडीपीओ सदर, निरीक्षक राशिद अकबर, निरीक्षक रियाज अहमद, हेड कांस्टेबल मोहम्मद रफी मलिक, हेड कांस्टेबल मोहम्मद अमीन रेशी वाले तीसरे समूह को उस घर में अंदर की घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया जिसमें वह आतंकवादी छिपा हुआ था।

दिनांक 20.01.2014 को लगभग 0030 बजे अभियान शुरु किया गया। प्रारंभ में, घिरे हुए आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन उसने इंकार कर दिया और उस घर के मालिक के पारिवारिक सदस्यों को बंधक बना लिया। अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब और उप पुलिस अधीक्षक फिरोज अहमद के नेतृत्व वाले दल के सदस्यों ने अपनी जान की परवाह किए बगैर छिपे हुए आतंकवादी द्वारा की जा रही गोलीबारी के बीच आस–पास के घरों के लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने के अलावा उस परिवार के दो बंधक सदस्यों को वहां से बाहर निकाल लिया। घिरे हुए आतंकवादी को पुनः आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया, लेकिन उसने इंकार कर दिया और अभियान दल के सदस्यों पर गोलीबारी करने लगा। लगभग 0200 बजे उस घर में जबरन दखल देने की योजना बनाई गई। दखल देने वाले दल ने सभी प्रकार का एहतियात बरतने के बाद दखल देने की प्रक्रिया शुरु की। तथापि, जैसे ही दखल देने वाला दल लक्षित घर के निकट पहुंचा, उनके ऊपर फिर से वहां देखे गए आतंकवादी की ओर से भारी गोलीबारी की जाने लगी। आगे बढ़ने वाले दल के प्रभारी, अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब ने दो छोटे दल बना दिए और उस घर में सामने तथा पीछे दोनों तरफ से प्रवेश करने का निर्णय लिया। पहले दल में उप पुलिस अधीक्षक फिरोज अहमद के साथ हेड कांस्टेबल निसार अहमद, एसजीसीटी दीपक भट, कांस्टेबल गुल मोहम्मद थे। अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब के नेतृत्व वाले दूसरे दल ने हेड कांस्टेबल मोहम्मद रफी मलिक और हेड कांस्टेबल मोहम्मद अमीन रेशी के सक्रिय सहयोग से पिछले हिस्से से उस घर में प्रवेश करने की कोशिश की और वे रेंगते हुए उस खिड़की के निकट पहुंच गए जहां से उस आतंकवादी ने उनके ऊपर हथगोले फेंके थे। उस आतंकवादी ने प्रथम तल के मुख्य दरवाजे को खोल दिया और घेराबंदी को तोड़ कर वहां से भागने के प्रयास में उसने वहां से अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। हेड कांस्टेबल मोहम्मद रफी मलिक और हेड कांस्टेबल मोहम्मद अमीन रेशी के सक्रिय सहयोग से अपर पुलिस अधीक्षक शबीर नवाब के नेतृत्व वाले दल ने अपने व्यक्तिगत जीवन की परवाह किए बगैर गोलीबारी का कारगर जवाब दिया और घिरे हुए आतंकवादी को ढ़ेर कर दिया, बाद में जिसकी पहचान हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के आतंकवादी जावेद अहमद मीर उर्फ सैफी, पुत्र–मोहम्मद मकबूल मीर, निवासी–बुलबुल नौगाम, अनंतनाग के रूप में की गई। उस आतंकवादी का मारा जाना पुलिस के लिए बड़ी उपलब्धि थी और हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के नेटवर्क के लिए बड़ा झटका था। वह आतंकवादी जिला अनंतनाग, कुलगाम और शोपियां में काफी लंबी अवधि से सक्रिय था।

यह पुलिस पार्टी के आत्म निश्चय, सर्वोच्च कार्य भावना और अभियान संबंधी क्षमताओं के कारण ही हो सका कि वहां बेहद नजदीकी गोलीबारी हुई और किसी प्रकार की भी सम्पार्श्विक क्षति के बगैर एक लंबे अभियान के बाद छिपा हुआ आतंकवादी मारा गया।

की गई बरामगदी :–

1. 01 एके–47 राइफल।

2. 02 एके मैगजीन।

3. 48 राउंड एके के जिंदा गोलाबारुद।

4. 01 पिस्तौल।

5. 01 पिस्तौल मैगजीन।

6. 01 पाउच

7. भारतीय मुद्रा 1670/–रू.

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री शबीर नवाब, अपर पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद रफी मलिक, हेड कांस्टेबल और मोहम्मद अमीन रेशी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.01.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 120–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. शेख जुल्फकार आजाद,
पुलिस अधीक्षक

02. मोहम्मद अल्ताफ डार,
उप निरीक्षक

03 अथर परवेज,
हेड कांस्टेबल

04 फयाज अहमद खांडे,
कांस्टेबल

05 यशपाल शर्मा,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 05/06.06.2013 को अब्दुल अहद वानी, निवासी–ईचगोजा नामक व्यक्ति के घर में गांव– ईचगोजा में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर पुलिस, 53 आरआर, 44 आरआर और 182 सीआरपीएफ द्वारा एवं संयुक्त अभियान शुरू किया गया और उक्त घर की घेराबंदी की गई। शुरूआत में उक्त मोहल्ला के चारों ओर कड़ी घेराबंदी की गई और उस मोहल्ले से सभी नागरिकों को बाहर निकाल लिया गया। लक्षित घर में छिपे आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन उन्होंने इसकी अनदेखी की और उसकी जगह तलाशी दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षा बलों द्वारा आत्मरक्षा में जवाबी गोलीबारी की गई और वहां मुठभेड़ शुरू हो गई जिसमें लक्षित घर के प्रांगण में एक आतंकवादी को मार गिराया गया, बाद में जिसकी पहचान अल्ताफ अहमद बाबा, निवासी–अगलर कांडी, जैश–ए–मोहम्मद संगठन के दक्षिण कश्मीर के डिवीजनल कमांडर के रूप में की गई। घर के भीतर छिपे दूसरे आतंकवादी ने पूरी रात सुरक्षा बलों के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी की अगले दिन भोर के समय आतंकवादी को पुनः आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया जिसे उसने नहीं माना और सुरक्षा बलों की ओर उसने हथगोले फेंके और उसके बाद अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा जिसके जवाब में सुरक्षा बलों द्वारा भी आत्मरक्षा में गोलीबारी की गई जिसके परिणामस्वरूप दोनों ओर से एक बार फिर गोलीबारी शुरू हो गई, जो लगभग दो घंटे तक चली। उसके बाद आतंकवादियों की ओर से गोलीबारी रुक गई और 30 मिनट तक प्रतीक्षा करने के बाद संयुक्त अभियान दल ने लक्षित घर की तलाशी ली जिसके दौरान उक्त आतंकवादी मृत पाया गया, बाद में जिसकी पहचान मोहम्मद अब्बास नेंग्रू (जेईएम), निवासी–हंजनबाला के रूप में की गई। उक्त अभियान के दौरान, 53 आरआर का एक सैनिक घायल हो गया।

तत्काल चलाए गए इस अभियान में शेख जुल्फकार आजाद, पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), श्रीनगर, उप निरीक्षक मोहम्मद अल्ताफ डार, हेड कांस्टेबल, अथर परवेज, कांस्टेबल, फयाज अहमद और कांस्टेबल यशपाल शर्मा ने समर्पण के साथ और कुशल

तरीके से उक्त मुठभेड़ में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप ऊंचे दर्जे वाले दो आतंकवादियों का सफाया किया जा सका। इसके अलावा इन पुलिस अधिकारियों द्वारा अपने जीवन की परवाह किए बगैर दोनों ओर से गोलीबारी में फंसे काफी नागरिकों और बच्चों को वहां से निकाला गया।

की गई बरामदगी :

1.	ए.के. 47/56 राइफल	—	02
2.	ए.के. 47 की मैगजीन	—	03
3.	ए.के. 47 के राउंड	—	60

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री शेख जुल्फकार आजाद, पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद अल्ताफ डार, उप निरीक्षक, अथर परवेज, हेड कांस्टेबल, फयाज अहमद खांडी, कांस्टेबल और यशपाल शर्मा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 06.06.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 121—प्रेज/2015——राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. मोहम्मद शफीक,
उप पुलिस अधीक्षक

02. मोहम्मद सलीम,
उप निरीक्षक

03 मन्जूर अहमद मीर,
सार्जेंट कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 08.06.2014 को पुलवामा पुलिस को रेशीपुरा काकापुरा गांव में एलईटी संगठन के आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना प्राप्त हुई। श्री मोहम्मद शफीक—केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेन्शस, पुलवामा ने 50 आरआर और सीआरपीएफ की 182 तथा 183 बटालियन के साथ उस सूचना को साझा किया और छिपे हुए आतंकवादियों को दबोचने/ढ़ेर करने के लिए वे उक्त स्थल की ओर फौरन रवाना हो गए। किसी भी प्रकार की सम्पार्श्विक क्षति अथवा नागरिकों के हताहत होने की स्थिति को टालने के लिए श्री मोहम्मद शफीक—केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेन्शस, पुलवामा ने पेशेवर तरीके से पुलिस, आरआर और सीआरपीएफ की तैनाती की योजना बनाई और उन्हें लक्षित स्थल के आस—पास विभिन्न दिशाओं में फैला दिया। उप निरीक्षक मोहम्मद सलीम, सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद मीर एवं अन्य कार्मिकों सहित उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन्स, पुलवामा के नेतृत्व में एक दल ने लक्ष्य के आस—पास घेरा को मजबूत बनाते हुए घर—घर की तलाशी शुरू की। वहां अभियान दल की मौजूदगी को देखते हुए मोहल्ला में छिपे आतंकवादी अचानक बाहर आ गए और उन्होंने बेहद करीब से अभियान दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। तथापि, उप निरीक्षक मोहम्मद सलीम, सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद मीर के साथ श्री मोहम्मद शफीक—केपीएस, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेन्शस, पुलवामा ने अनुकरणीय साहस, सूझ—बूझ और उच्च स्तर के युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए तत्काल अपनी—अपनी पोजीशन संभाल ली तथा गोलीबारी का प्रभावी जवाब दिया और घेराबंदी तोड़कर उस स्थल से भागने के आतंकवादियों के प्रयास को विफल कर दिया। दोनो ओर से हो रही गोलीबारी के बीच उप निरीक्षक मोहम्मद सलीम और सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद मीर के साथ श्री मोहम्मद शफीक, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन्स ने अपने व्यक्तिगत जीवन की परवाह किए बगैर मुठभेड़ स्थल से सभी नागरिकों को बाहर निकाला और छिपे हुए आतंकवादियों पर अंतिम हमला शुरू कर दिया। तत्पश्चात उप निरीक्षक मोहम्मद सलीम और सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद मीर के साथ श्री मोहम्मद शफीक, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन्स के नेतृत्व वाले अभियान दल ने छिपे हुए आतंकवादियों पर अंतिम धावा बोल दिया और वे लगभग डेढ़ घंटे तक बहादुरीपूर्वक तब तक लड़ते रहे, जब तक कि उन्होंने छिपे हुए दोनों आतंकवादियों को ढेर नहीं कर दिया। बाद में मारे गए आतंकवादियों की पहचान दक्षिण कश्मीर के डिवीजनल कमांडर बिलाल अहमद भट उर्फ साद, पुत्र—अब्दुल रशीद भट, निवासी लेल्हर, पुलवामा और मुदासिर अहमद शेख उर्फ मुन्ना, पुत्र—मोहम्मद जबार शेख, निवासी—किसरीगांम, पुलवामा के रूप में की गई। मारा गया आतंकवादी बिलाल अहमद भट उर्फ साद लगभग 4 वर्षों से जिला पुलवामा में सक्रिय था और वह सिल्वर स्टार होटल, बाईपास नौगाम पर हमला करने (19.10.2012) और सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. जलालदीन और उनके रक्षक की हत्या करने समेत आतंकवाद संबंधी अनेक मामलों में शामिल था। मारा गया दूसरा आतंकवादी मुदासिर अहमद शेख उर्फ मुन्ना दिनांक 29.03.2014 को काकापुरा में पुलिस दल के ऊपर हमले में शामिल था। लश्कर—ए—तैयबा के दोनों आतंकवादियों का सफाया दक्षिण—मध्य कश्मीर में लश्कर—ए—तैयबा संगठन के लिए भारी झटका था।

संपूर्ण अभियान के दौरान, श्री मोहम्मद शफीक, उप पुलिस अधीक्षक, ऑपरेशन्स, पुलवामा ने उप निरीक्षक मोहम्मद सलीम और सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद मीर के साथ मिलकर उत्कृष्ट वीरता, अद्वितीय साहस और उच्च स्तर की कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया और नागरिकों को सुरक्षित बाहर

निकालना सुनिश्चित किया। इन अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रदर्शित निरूस्वार्थ कर्तव्यपरायणता और अद्वितीय साहस के परिणामस्वरूप लश्कर–ए–तैयबा के दक्षिण कश्मीर के डिवीजनल कमांडर दो दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया हो सका।

बरामदगी :

1.	बलोरियन राइफल	–	01
2.	ए.के. मैगजीन	–	04
3.	ए.के. 47 के राउंड	–	42
4.	पिस्तौल (चीन में निर्मित)	–	01
5.	मैगजीन (पिस्तौल)	–	01
6.	राउंड (7.2 चीन में निर्मित)	–	01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री मोहम्मद शफीक, उप पुलिस अधीक्षक, मोहम्मद सलीम, उप निरीक्षक और मन्जूर अहमद मीर, सार्जेंट कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.06.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 122–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. परवेज अहमद डार,
सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी

02. ऐजाज रसूल मीर,
उप पुलिस अधीक्षक

03 परवेज अहमद डार,
सार्जेंट कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

एक विशिष्ट सूचना के आधार पर दिनांक 01.07.2013 को गांव मुंडरा त्राल में पुलिस और सीआरपीएफ की 185वीं बटालियन द्वारा एक घर के चारों ओर एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया। अब्दुल वाहिद, पुलिस अधीक्षक, अवंतीपुरा द्वारा दो तलाशी दलों का गठन किया गया, जिसमें से एक का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) त्राल, ऐजाज रसूल द्वारा और दूसरे दल का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक परवेज अहमद, एसडीपीओ, अवंतीपुरा द्वारा किया जा रहा था। स्थिति को भांपते हुए, घर के भीतर छिपे आतंकवादियों ने तीन कमरों के भीतर से तलाशी दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप सार्जेंट कांस्टेबल मंजूर अहमद गोली लगने से घायल हो गए और उन्होंने प्रांगण के भीतर एक पेड़ के पीछे आश्रय ले लिया। बाहरी घेराबंदी में शामिल उप निरीक्षक जसवंत सिंह और कांस्टेबल मनोज राम नामक दो सीआरपीएफ कार्मिक भी घायल हो गए। आत्मरक्षा में सुरक्षा बलों द्वारा गोलीबारी का जवाब दिया गया और आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने तथा एक कमरे में बंद रखे गए परिवार के सदस्यों को घर से बाहर निकलने देने के लिए कहा गया जिससे उन्होंने मना कर दिया। घायल पुलिस कार्मिकों को वहां से निकालने के बाद, जैसे ही पुलिस दल ने घर के प्रांगण में प्रवेश किया, उनके ऊपर 02 भिन्न दिशाओं से भारी गोलीबारी की जाने लगी। उप पुलिस अधीक्षक ऐजाज रसूल ने अन्य पुलिस कार्मिकों के साथ आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा, जबकि सार्जेंट कांस्टेबल परवेज अहमद सहित अन्य अधिकारियों ने घायल पुलिस कार्मिकों को सहारा देकर बाहर निकाला।

घायल पुलिस कार्मिकों को वहां से बाहर निकाले जाते देख कर, एक आतंकवादी तेजी से निकल कर घर से बाहर आ गया और अपने घायल साथियों को बाहर निकालने में लगे पुलिस दल के ऊपर गोली चलानी शुरू कर दी। इस विशिष्ट समय पर भारी नुकसान उठाने से पहले कांस्टेबल मुश्ताक अहमद ने, जो अपने घायल सहकर्मियों को बाहर निकालने वाले दल का हिस्सा थे, पुलिस की ओर से फिदायीन के रूप में कार्य किया, जिन्होंने एक ओर पुलिस दल को सुरक्षा कवच प्रदान किया और दूसरी ओर अपने जीवन की परवाह किए बगैर बहादुरी से आतंकवादियों का मुकाबला किया। उस आतंकवादी ने पुलिस दल की ओर एक हथगोला फेंका, तथापि, एक सेकेंड में ही कांस्टेबल मुश्ताक अहमद ने पुलिस दल के पास से अपने पैर से टक्कर मारकर उस हथगोले को दूर फेंक दिया जो कुछ गज की दूरी पर जाकर फट गया। अब आतंकवादी और पुलिस दल एक–दूसरे पर गोली चलाते हुए कुछ गज की ही दूरी पर रह गए थे और इस प्रक्रिया के दौरान कांस्टेबल मुश्ताक अहमद गंभीर रूप से घायल हो गए, और घायल होने के कारण बाद

में वीरगति को प्राप्त हो गए। भारी गोलीबारी के बीच पुलिस दल ने घर के दरवाजे को तोड़कर कमरे में प्रवेश किया ओर वहां फंसे सदस्यों को मुक्त करवा लिया। 03 दुर्दांत आतंकवादियों के सफाए के साथ यह अभियान भारी गोलीबारी के बीच समाप्त हुआ।

की गई बरामदगी :

1.	ए.के. राइफल–	–	02 (एक क्षतिग्रस्त)
2.	ए.के. 56 राइफल	–	01 (रजि. सं. 8114004 असेंबली के बगैर)
3.	ए.के. राउंड	–	03
4.	ए.के. मैगजीन	–	06
5.	ए.के. गोलाबारूद	–	90 राउंड
6.	पाउच	–	03
7.	पिस्तौल	–	01 (क्षतिग्रस्त)
8.	शेलिंग	–	03
9.	चीन में निर्मित हथगोला(जिंदा)	–	05 (मुठभेड़ स्थल में क्षतिग्रस्त)
10.	मैगजीन स्प्रिंग	–	02
11.	वायर कटर	–	01
12.	कैंची	–	01
13.	हेडफोन	–	01
14	टार्च	–	01 (क्षतिग्रस्त)
15.	डेटोनेटर	–	01 (उसी स्थान पर क्षतिग्रस्त)
16.	चाकू	–	01
17.	थैला	–	01
18.	आरआर बैज	–	01
19.	पोस्टर आदि	–	03
20.	1000 रु. का नोट	–	02 (कटे–फटे हुए)
21.	500 रु. का नोट	–	08 (कटे–फटे)
22.	100 रु. का नोट	–	01 (कटा–फटा)

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री परवेज अहमद डार, सब डिवीजनल पुलिस अधिकारी, ऐजाज रसूल मीर, उप पुलिस अधीक्षक और परवेज अहमद डार, सार्जेंट कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.07.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 123–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. चौथे मनोज रतन,
अपर पुलिस अधीक्षक

02. सदानंद सिंह,
कांस्टेबल

03. प्रमोद कुमार राय,
कांस्टेबल

04. रविन्द्र राम,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

घातक हथियार रखने वाले एक प्रतिबंधित संगठन, पी.एल.एफ.आई. (पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया) के सब–जोनल कमांडर बैजनाथ यादव उर्फ सुधीरजी, सब–जोनल कमांडर अशोक यादव उर्फ स्मार्टजी, सब–जोनल कमांडर अनिल कुमार यादव और उनके सहयोगियों द्वारा व्यापारियों एवं ठेकेदारों से जबरन पैसे की उगाही करने और ग्रामीणों के बीच आतंक पैदा करने के संबंध में दिनांक 08.06.2012 को 14.00 बजे उप निरीक्षक जितेंद्र कुमार आजाद द्वारा प्राप्त की गई एक अत्यंत विश्वसनीय सूचना के पश्चात उसी दिन 15.15 बजे उपर्युक्त अधिकारियों द्वारा वीरतापूर्ण कार्रवाई को अंजाम दिया गया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को सूचित करने के बाद उपर्युक्त अधिकारियों ने प्राप्त सूचना का विस्तृत विश्लेषण किया और उसके बाद उन्होंने पांकी–बालूमठ मार्ग के निकट परसावा गांव के दक्षिण में करमाडीह टांड़ जंगल के निकट युक्तिपर्वूक एक अभियान चलाने की योजना बनाई। इस अभियान में जिला पुलिस के अधिकारी और जवान शामिल थे।

अंतत : 15.15 बजे उपर्युक्त स्थान पर पहुंचने पर बल को दो दलों में विभाजित कर दिया गया और उन्हें उग्रवादियों को गिरफ्तार करने के लिए दो भिन्न दिशाओं से आगे बढ़ने के लिए कहा गया। अधिकारियों ने चिल्लाकर पुलिस के रूप में अपनी पहचान बताते हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। आत्मसमर्पण करने के बजाय आतंकवादियों के एक संतरी ने पुलिस अधिकारियों और जवानों की हत्या करने के इरादे से अद्यतन आधुनिक हथियारों से उनके ऊपर गोलियों की भारी बौछार शुरू कर दी। उसके सहयोगियों द्वारा भी उसी कृत्य को दोहराया गया और उन्होंने भी पुलिस बल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। अधिकारी लगातार चिल्लाकर आतंकवादियों से गोलीबारी बंद करके आत्मसमर्पण करने के लिए कहते रहे लेकिन हठी और निश्चय कर चुके आतंकवादियों ने एक नाले की ओर भागते हुए गोलीबारी जारी रखी।

ऐसी स्थिति में मजबूर होकर दल के नायक अपर पुलिस अधीक्षक चौथे मनोज रतन ने सरकारी हथियारों और गोलाबारुद को बचाने और लूट–खसोट करने वाले आतंकवादियों को अपने काबू में करने के लिए बल को आत्मरक्षार्थ गोली चलाने का निर्देश दिया। इसके परिणामस्वरूप गोलीबारी शुरू हो गई। निःसंदेह उपर्युक्त अधिकारियों और कांस्टेबलों ने असाधारण साहस एवं जोश का प्रदर्शन किया जबकि उनके सिर के ऊपर से गोलियां निकल रही थीं। उन्होंने गोलियों की भारी बौछार को चुनौती दी और दुस्साहसी तरीके से युक्तिपूर्वक वे उन आतंकवादियों की ओर बढ़े जो लगातार पुलिस के ऊपर गोलीबारी कर रहे थे। उसी बीच गोलीबारी से एक–दूसरे को आड़ प्रदान करते हुए आतंकवादी नाले के सहारे जंगल के काफी भीतर भागने में सफल हो गए। उस क्षेत्र की सफाई के पश्चात वहां तलाशी अभियान चलाया गया जिसके परिणामस्वरूप वहां से आतंकवादी का शव बरामद हुआ जिसके दाहिने हाथ में एक भरी हुई पिस्तौल थी। उस क्षेत्र की आगे और तलाशी लेने पर वहां से एक और भरी हुई पिस्तौल, पी.एल.एफ.आई. के लेटर पैड (सं. 90), एक लाख पैंतालीस हजार (1,45,000/– रु.) लेवी की उगाही की रसीदें, चार्जरों के साथ मोबाइल सेट, कुछ खाद्य सामग्री एवं एनर्जी ड्रिंक आदि बरामद किए गए। आगे और जांच करने पर मारे गए आतंकवादी की पहचान प्रतिबंधित संगठन पी.एल.एफ.आई. के सब जोनल कमांडर अनिल कुमार यादव के रूप में की गई। सामान्यतः नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में ऐसे अभियानों के दौरान मारे गए आतंकवादी का शव बरामद नहीं हो पाता है, लेकिन यह एक दुर्लभ अवसर था जहां कि उपर्युक्त अधिकारियों द्वारा प्रदर्शित साहस और कुशल नेतृत्व के कारण न सिर्फ मारे गए आतंकवादी का शव बरामद हुआ बल्कि वहां से अनेक हथियार एवं गोलाबारुद भी बरामद किए गए।

इस संबंध में दिनांक 08.06.2012 को पांकी पुलिस स्टेशन में भारतीय दंड संहिता की धारा 47, 148, 149, 307, 353 और आयुध अधिनियम की धारा 25(1–ख) क, 26, 27 तथा दंड विधि संशोधन अधिनियम की धारा 17 के अधीन मामला सं. 53/2012 दर्ज किया गया।

इस अभियान के पांच दिन के भीतर उपर्युक्त पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व वाले दल ने पांकी बैराज के निकट बनखेटा गांव के पास वहां से भागे हुए पांच आतंकवादियों को अनेक हथियारों तथा गोलाबारुद और प्रतिबंधित पी.एल.एफ.आई. के लेटर पैड के साथ गिरफ्तार किया (पांकी पी.एस. मामला सं. 55/2012 दिनांक 13.06.2012), जिसमें सब–जोनल कमांडर अशोक यादव उर्फ स्मार्टजी, कमलेश कुमार सिंह उर्फ गोलू, बिरेनलेटर सिंह, अकलेश संह उर्फ बुटन और संदीप यादव शामिल थे। इन सभी आतंकवादियों ने झारखंड में पलामू और उसके साथ लगे लातेहर, गुमला और खूंटी जिलों में अपने आतंक का साम्राज्य फैला रखा था।

अपर पुलिस अधीक्षक चौथे मनोज रतन और पांकी पुलिस स्टेशन के कांस्टेबल सदानंद सिंह, कांस्टेबल प्रमोद कुमार राय और कांस्टेबल रविन्द्र राम ने युद्ध जैसे हालात वाले अत्यंत जोखिमपूर्ण अभियान में सूझबूझ से काफी कम बल के साथ काम लेने के लिए अनुकरणीय बहादुरी, बुद्धिमतता और क्षमता का प्रदर्शन किया। उनकी साहसिक उपलब्धि का पुलिस दल के मनोबल अत्यधिक उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ा और इससे आतंकवादियों के मनोबल पर भारी आघात पहुंचा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री चौथे मनोज रतन, अपर पुलिस अधीक्षक, सदानंद सिंह, कांस्टेबल, प्रमोद कुमार राय, कांस्टेबल और रविन्द्र राम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 08.06.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 124–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रवि कुमार लोहरा,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 04.02.2011 को पुलिस अधीक्षक, खूंटी को लगभग 2100 बजे यह सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबंधित माओवादी संगठन के आतंकवादी कुंदन पाहन, अनिल जी उर्फ पातीराम मांझी, नवीन मांझी उर्फ भुवन जी, प्रसाद अहीर विशाल उर्फ तुलसीदास, राममोहन मुंडा, जीतलाल अहीर उर्फ मधु अहीर, डिम्बा पाहन, भीम, कृष, श्याम पाहन और 50 अन्य व्यक्ति सरकार के विरुद्ध सशस्त्र बैठक करने और नक्सली गतिविधियों में शामिल होने के लिए लोगों पर दवाब डालने तथा इंकार करने पर उनकी हत्या करने के इरादे से अराकी पुलिस स्टेशन के अधीन मारंगबुरू में इकट्ठा हो रहे हैं। तदनुसार पुलिस अधीक्षक, खूंटी ने एक योजना तैयार की और उन्होंने तीन दलों का गठन किया। पहले दल का नेतृत्व अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) कर रहे थे, जिसमें उप निरीक्षक कृष्ण मुरारी, 203 कोबरा बटालियन के एसी एक्साइड ग्रुप 10–12 और उप पुलिस अधीक्षक, झारखंड जगुआर ए–14 शामिल थे। ए.डी.पी.ओ., खूंटी के नेतृत्व वाले दल में निरीक्षक पी. के. मिश्रा, 203 कोबरा बटालियन और असाल्ट ग्रुप–13 और 15 एवं झारखंड जगुआर ए.जी–06 शामिल थे। सीआरपीएफ 94 बटालियन की बी और सी कम्पनी सहित ओ/सी खूंटी और अराबी के साथ उप पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) तीसरे दल का नेतृत्व कर रहे थे। तलाशी अभियान के लिए पहला दल मारंगबुरू पहाड़ी पर, दूसरा दल मिलेपीड़ी और संदीदीड़ी पर और तीसरा दल बासूडीह और टोनपट टोला में तैनात किया गया। अपर पुलिस अधीक्षक के अंगरक्षक, कांस्टेबल चंदन कुमार, कांस्टेबल रवि कुमार लोहरा, कांस्टेबल मोहम्मद खुर्शीद और अन्य दलों के साथ उप निरीक्षक कृष्ण मुरारी 23.30 बजे रवाना हुए। वाहन द्वारा टायाटोडैंग पहुंचने के बाद, उन्होंने वाहन वहीं छोड़ दिया और मारंगबुरू के लिए पैदल चल पड़े। वे अगले दिन सुबह लगभग 6.20 बजे मारंगबुरू की सबसे ऊंची चोटी पर पहुंच गए और तलाशी अभियान के लिए दो भिन्न दिशाओं से आगे बढ़ने का निर्णय लिया। कोबरा एजी–12 और उप निरीक्षक ऋषिकेश मिंज एक तरफ से और अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) तथा उप निरीक्षक कृष्ण मुरारी तथा अन्य कार्मिक दूसरी तरफ से आगे बढ़े। लगभग 6.24 बजे जब सैन्य दल तलाशी ले रहा था, तब उग्रवादियों ने पुलिस दल पर गोलीबारी शुरू कर दी। अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स) और उप निरीक्षक कृष्ण मुरारी ने चिल्लाते हुए कहा हम पुलिस कार्मिक हैं और तुम लोग गैर कानूनी कार्य कर रहे हो। इसके बाद उन्होंने धमाका करते हुए गोलीबारी शुरू कर दी और चिल्लाते हुए कहा कि तुम लोगों को कुंदन पाहन, अनिल जी और नवीन दा गिरोह द्वारा घेर लिया गया है, इसलिए आत्मसमर्पण कर दो। इस स्थिति में पुलिस बल ने सुरक्षित पोजीशन ले ली और जवाबी गोलीबारी की। फिर नक्सलियों ने धमाके/गोलीबारी के साथ–साथ मोर्टार और ग्रेनेड दागने भी शुरू कर दिए। इस पर पुलिस ने भी मोर्टर, यूबीजीएल और ग्रेनेड का प्रयोग करते हुए जवाबी हमला जारी रखा। एक गोली आतंकवादी के सिर में लग गई। उग्रवादियों ने एलएमजी और मोर्टर से धमाकेदार गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल इससे भयभीत नहीं हुआ और उनके ऊपर निशाना साधते हुए गोलीबारी जारी रखी। इसी बीच पुलिस दल को रोने की आवाज सुनाई दी और उनकी ओर से गोलीबारी भी कम हो गई, तब पुलिस दल ने संपूर्ण पहाड़ी को अपने कब्जे में ले लिया और आतंकवादी वहां से भागने लगे। वे अपने मृतक साथी का शव और घायल साथियों को साथ लेकर भागने में सफल हो गए। इस अभियान के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन्स), अपर पुलिस अधीक्षक के दोनों अंगरक्षक कांस्टेबल चंदन कुमार और कांस्टेबल रवि कुमार लोहरा, कांस्टेबल सी.बी. रविकुमार, कोबरा बटालियन के कांस्टेबल अनंत कुमार और झारखंड जगुआर के अमरदीप कुजुर घायल हो गए। उन सभी को उपचार के लिए हेलीकॉप्टर द्वारा भेजा गया।

कांस्टेबल रवि कुमार लोहरा का यह एक वास्तविक वीरतापूर्ण कृत्य है। वे पुलिस बल के लिए धरोहर हैं और बहादुरी का एक आदर्श उदाहरण हैं। उनके बहादुरीपूर्ण कृत्य/कार्य निष्पादन ने पुलिस बल की ख्याति को बढ़ाया है और पुलिस बल को उनके ऊपर गर्व है।

की गई बरामदगी :

1. एक देशी एसबीबीएल बंदूक।

2. गैर–बिजली चालित डेटोनेटर 10 पीस।

इस मुठभेड़ में श्री रवि कुमार लोहरा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 05.02.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 125–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संचमान तमांग,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 19.07.2012 को, एस पी छत्रा और प्रकाश रंजन मिश्रा, उप कमांडेंट, 203 कोबरा को एक वरिष्ठ माओवादी नेता (क्षेत्रीय कमांडर और बिहार रीजनल मिलिटरी कमीशन का सदस्य) अजय गंजू उर्फ पारस की गतिविधि के बारे में विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। सूचना के अनुसार, अजय गंजू (एक माओवादी दल के साथ) अपने परिवार के सदस्यों से मिलने के लिए पुलिस स्टेशन कुंदा के एक बेहद दूरवर्ती और दुर्गम स्थान पर अपने घर लकरमन्ना आ रहा था। इस सूचना का मानवीय और तकनीकी स्रोतों के माध्यम से सत्यापन किया गया। चूंकि अजय गंजू एक खतरनाक माओवादी था, जो उस क्षेत्र में पिछले 20 वर्षों से कार्य कर रहा था और अपनी सैन्य/लड़ने की क्षमता के कारण उसे क्षेत्रीय कमांडर के रूप में पदोन्नत किया गया था, इसलिए एस पी छत्रा, प्रकाश रंजन मिश्रा, उप कमांडेंट और करूण कुमार ओझा, सहायक कमांडेंट ने सभी संभावनाओं पर चर्चा की। करूण कुमार ओझा, सहायक कमांडेंट और उप निरीक्षक संचमान तमांग, जिला छत्रा जिले के लावलोंग पुलिस स्टेशन के कमांडिंग ऑफिसर के साथ प्रकाश रंजन मिश्रा, उप कमांडेंट की कमान में उप निरीक्षक संचमान तमांग, छत्रा जिले के लावलोंग पुलिस स्टेशन के कमांडिंग ऑफिसर और बी/203 कोबरा के 2 दल सहभागी सैन्य दलों को समुचित सूचना प्रदान करने और विभिन्न दलों को कार्य सौंपने के पश्चात 0845 बजे लक्षित क्षेत्र की ओर आगे बढ़ा। कुंदा तक वाहनों का प्रयोग किया गया। सैन्य दल उस गांव की ओर गया, जो कुंदा से लगभग 20 कि.मी. दूर था। गहरे अंधेरे, दुर्गम क्षेत्र, झाड़ियों, नालों और वर्षो के बावजूद सैन्य दल बड़ी तेजी से आगे बढ़ा और 0345 बजे गांव के नजदीक पहुंच गया। यह गांव जंगल और छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ था। नाइट विजन डिवाइस द्वारा नजदीकी जंगली क्षेत्र का अवलोकन करने के पश्चात, प्रकाश रंजन मिश्रा ने घेराबंदी दल को गांव की घेराबंदी करने का आदेश दिया। जैसे ही घेराबंदी दल ने घेराबंदी शुरू की और उप निरीक्षक संचमान तमांग, लावलोंग के कमांडिंग आफिसर, प्रकाश रंजन मिश्रा, उप कमांडेंट, करूण कुमार ओझा, सहायक कमांडेंट ने कुछ छापामार/तलाशी दलों के साथ घरों के समूह की ओर आगे बढ़ना शुरू किया तभी गांव के भीतर कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया और नजदीकी जंगल से गोलियों की बौछार शुरू हो गई। गोली–बारी की परवाह किए बगैर, संचमान तमांग और प्रकाश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा छापामार/तलाशी दल के साथ अजय गंजू के घर की घेराबंदी और तलाशी करने के लिए तेजी से उसके घर की ओर आगे बढ़े और घेराबंदी दल को तत्काल घेराबंदी करने का आदेश दिया। जब प्रकाश रंजन मिश्रा के साथ संचमान तमांग, अजय गंजू के घर के बहुत नजदीक पहुंचे, तो उन्होंने एक व्यक्ति को जंगल की ओर भागते हुए देखा। उन्होंने प्रकश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल रमन कुमार के साथ उस व्यक्ति का पीछा करना शुरू कर दिया। बचकर भागने वाला व्यक्ति पीछे की ओर मुड़ा और उसने कुछ राउन्ड गोलिया चलाई, परन्तु संचमान तमांग बाल–बाल बच गए किंतु वे पीछा करते रहे। छापामार/तलाशी दल को लक्ष्य बनाकर जंगल से गोलियों की बौछार आ रही थी जिसका हेड कांस्टेबल/आरओ प्रभाकर सिंह, कांस्टेबल एस खालको और कांस्टेबल अजीत राम वर्मा द्वारा पलटकर जवाब दिया गया। इस जवाबी कार्रवाई से छापामार/तलाशी दल को आगे बढ़ने में सहायता मिली। जब उप निरीक्षक संचमान तमांग और प्रकाश रंजन मिश्रा करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल/जीडी रमन कुमार के साथ बचकर भाग रहे व्यक्ति के बिल्कुल नजदीक पहुंच गए तो वह पीछे मुड़ा और उप निरीक्षक संचमान तमांग, प्रकाश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल/जीडी रमन कुमार पर निशाना साधने की कोशिश की और कुछ राउन्ड गोलियां चलाईं परन्तु बहुत कम फासले के बावजूद वे बाल–बाल बच गए। फिर उसने अपनी जेब से कोई चीज निकाली और उसे फेंकने की कोशिश की। वह उस जंगल में प्रवेश करने वाला था, जहां से माओवादी सैन्य दलों पर गोलीबारी कर रहे थे। यदि वह व्यक्ति जंगल में घुस जाता तो, उसे उन माओवादियों का सहारा मिल जाता जो वहां से गोलीबारी कर रहे थे। छापामार/तलाशी दल के पास उस व्यक्ति पर गोली चलाने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था। परिस्थिति का विश्लेषण करते हुए उप निरीक्षक संचमान तमांग, प्रकाश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल/जीडी रमन कुमार ने बचकर भाग रहे व्यक्ति पर गोली चलाई। वह व्यक्ति गिर पड़ा। उप निरीक्षक संचमान तमांग, प्रकाश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल/जीडी रमन कुमार ने कुछ मिनट इंतजार किया और फिर उस व्यक्ति की ओर गए। घेराबंदी दल के कुछ कार्मिक भी वहां पहुंच गए और तलाशी के उपरांत उन्हें एक भरी हुई 9एमएम पिस्तौल के साथ एक व्यक्ति का शव मिला। एक एच ई 36 ग्रेनेड कुछ फीट की दूरी पर पड़ा हुआ था, जिसे उसने पीछा करने वाले दल पर फेंकने की कोशिश की थी। यदि वह अपने प्रयास में सफल हो जाता, तो संचमान तमांग, प्रकाश रंजन मिश्रा, करूण कुमार ओझा और कांस्टेबल/रमन कुमार के बचने का कोई मौका नहीं मिलता। उसकी जेब में एक एच ई 36 ग्रेनेड, एक भरी हुई 9एमएम मैगजीन और 2 मोबाइल मिले। घेराबंदी दल उस क्षेत्र की ओर गया, जहां से माओवादी गोलीबारी कर रहे थे। परन्तु सैन्य दलों के वहां पहुंचने से पहले माओवादी भागने में सफल रहे। उस स्थान से विभिन्न बोर के हथियारों के कुछ खाली खोखे मिले। ग्रामीणों ने मारे गए व्यक्ति की खूंखार नक्सली क्षेत्रीय कमांडर और बिहार रीजनल मिलिटरी कमीशन के सदस्य अजय गंजू उर्फ पारस उर्फ झागू के रूप में पहचान की, जिसका बिहार और झारखंड के कई जिलों में आतंक छाया हुआ था तथा उस पर 7 लाख का इनाम भी रखा हुआ था। बिहार और झारखंड राज्यों के विभिन्न जिलों में 84 मामले लंबित थे। वह पिछले कई वर्षों से बिहार और झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्र में घात लगाकर हमले, बम विस्फोट, हमले और मुठभेड़ की लगभग प्रत्येक नक्सलवादी घटना का मुख्य व्यक्ति था। सैन्य दलों ने वापस कुंदा पुलिस स्टेशन लौटकर माओवादी के शव और सामग्रियों को पुलिस स्टेशन को सौंप दिया। उसके बाद सैन्य दल छत्रा की ओर चले गए।

संपूर्ण अभियान में उप निरीक्षक संचमान तमांग ने अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी साहसिक पहल, बहादुरीपूर्ण त्वरित कार्रवाई और अभियान के दौरान प्रदर्शित असाधारण साहस और वीरता ने अभियान को सफलता में बदल दिया और खूंखार माओवादी क्षेत्रीय कमांडर मारा गया। उप निरीक्षक संचमान तमांग ने अत्यधिक जोखिम उठाते हुए संपूर्ण अभियान में अपने दल की सहायता की। उन्होंने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डाला और संपूर्ण अभियान के दौरान मौत उनके सिर पर मंडराती रही।

इस मुठभेड़ में श्री संचमान तमांग, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.07.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 126–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, झारखंड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	चन्द्र शेखर सिंह, हेड कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
02.	प्रमोद कुमार राय, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
03.	दिनेश महतो, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
04.	लालचिक बराइक, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
05.	राजेश कच्छप, कांस्टेबल	(मरणोपरांत)
06.	जगरनाथ ओरॉन, कांस्टेबल	
07.	मनोज कुमार सिंह, कांस्टेबल	
08.	जमशेद खान, कांस्टेबल	
09.	प्रशान्त कुमार, कांस्टेबल	

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03.05.2011 को लगभग पूर्वाह्न 05.30 बजे, विश्वसनीय आसूचना जानकारी के आधार पर सेनहा और कैरो पुलिस स्टेशन के सैन्य दलों ने सीआरपीएफ के साथ उप निरीक्षक पूरनचन्द्र देवगाम के नेतृत्व में एक संयुक्त उग्रवाद–रोधी अभियान शुरू किया। निर्धारित स्थान पर जाने से पहले सेनहा पुलिस ने सीआरपीएफ के साथ धारधरिया झरने के शिखर पर छापा और तलाशी अभियान चलाने से संबंधित रणनीति के बारे में चर्चा की। जैसे ही सेनहा और कैरो के सैन्य दल माओवादियों के विरुद्ध उपयुक्त कार्रवाई के लिए पठार के एक छोर पर पहुंचे, उसी समय वहां पर कई जोर दार विस्फोट हुए और पूरा क्षेत्र धुंए और धूल से आच्छादित हो गया। जब धुंआ छंट गया, तो यह देखा गया कि एक संकरी गली में लगभग डेढ कि.मी. तक बारूदी सुरंगे फैली हुई हैं। इस विस्फोट में कई पुलिस अधिकारी और जवान संकरी गली के दोनों ओर गिर गए। दूसरी ओर उसी समय, सैन्य दल प्रतिबंधित माओवादी जो पहले से ऊंचाई पर थे, की भारी और अंधाधुंध गोलीबारी में घिर गए। वे उनको सभी हथियारों और गोलाबारूद सहित आत्मसमर्पण करने के लिए लाउडस्पीकरों के माध्यम से घोषणा कर रहे थे और चेतावनी दे रहे थे। तत्काल पुलिस बल हरकत में आ गया और जवाब में गोलीबारी शुरू कर दी। यद्यपि गोलीबारी में कुछ पुलिस अधिकारी बुरी तरह से घायल हो गए, तथापि उन्होंने एक साथ बड़े साहस से माओवादियों का सामना किया। माओवादियों में कुछ महिलाएं भी थीं, जो पुलिस सैन्य दल के नजदीक आने का प्रयास कर रही थीं। गहन जांच करने पर यह पता चला कि कुख्यात माओवादी निशान्त उर्फ अरविन्द कुमार सिंह, नकुल यादव और अन्य माओवादी गुट का नेतृत्व कर रहे थे। गोलीबारी लगभग एक घंटे तक चली, जब माओवादियों की ओर से गोलीबारी थोड़ी कम हुई, तब यह देखा गया कि वे उस जगह से भाग गए हैं और गहरे जंगल में गायब हो गए हैं। पुलिस उप निरीक्षक पूरन चन्द्र देवगाम ने अपने मोबाइल और वायरलेस सेट के माध्यम से पुलिस अधीक्षक लोहारडगा और सेनहा पुलिस स्टेशन को सूचित किया। सूचना प्राप्त होने पर लोहारडगा और गुमला के पुलिस अधिकारी सैन्य दल की सहायता करने के लिए बल के साथ उस स्थान पर पहुंच गए। जब गोलीबारी बंद हुई, तब यह पाया गया कि उस गालीबारी में हेड कांस्टेबल चन्द्रशेखर सिंह, कांस्टेबल, प्रमोद कुमार राय, कांस्टेबल, दिनेश महतो, कांस्टेबल, लालचिक बराइक और कांस्टेबल, राजेश कच्छप शहीद हो गए हैं, जबकि सेनहा पुलिस स्टेशन के

प्रभारी अधिकारी पूरन चन्द्र देवगाम और कैरो पुलिस स्टेशन के प्रभारी अधिकारी कल्याण बिरूली जो सैन्य दल का नेतृत्व कर रहे थे, बुरी तरह घायल हो गए हैं। इन दो अधिकारियों के अतिरिक्त, जगरनाथ ओरॉन, मनोज कुमार सिंह, जमशेद खान और प्रशान्त कुमार भी घायल हो गए। उपयुक्त सभी अधिकारी मुश्किल परिस्थितियों में भी बड़ी बहादुरी से लड़े और अपना साहस दिखाया।

सेनहा पुलिस स्टेशन के उप निरीक्षक तथा प्रभारी अधिकारी पूरनचन्द्र देवगाम और कैरो पुलिस स्टेशन के उप निरीक्षक एवं प्रभारी अधिकारी कल्याण बिरूली ने आसन्न खतरे के समक्ष सशक्त नेतृत्व का प्रदर्शन किया और माओवादियों को चुनौती देने के लिए आगे बढ़ते हुए वे बल को अपने जीतने की क्षमता से प्रेरित करते रहे। उन्होंने न केवल आगे रहकर बल का नेतृत्व किया, बल्कि पुलिस दल द्वारा नियंत्रित गोलीबारी को भी सुनिश्चित किया। उप निरीक्षक पूरनचन्द्र देवगाम ने विशेष रूप से सतर्कता, अभियान संबंधी दक्षता, वीरोनीत साहस, अदम्य वीरता और कार्य के प्रति सर्वोच्च समर्पण एवं विरल सूझ–बूझ का प्रदर्शन किया, जिसके कारण वे बारूदी सुरंगों और माओवादियों की अचानक गोलीबारी से कई पुलिस अधिकारियों की जान बचा सके।

यह वास्तव में सराहनीय है कि प्रतिकूल क्षेत्र होने के बावजूद वीरतापूर्ण कार्रवाई की गई क्योंकि माओवादी काडर सम्पूर्ण दल को उड़ाने के पर्याप्त हथियारों के साथ सुरक्षित ऊंचाई पर थे और बल कर्मी बहुत असुरक्षित थे क्योंकि प्रतिद्वंदी को चुनौती देने के लिए उन्हें ऊपर चढ़ने के लिए कठिनाई हो रही थी। तथापि, बल कर्मी मजबूत इच्छा शक्ति और अपनी पूरी ताकत को झोंकते हुए दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ते रहे और लम्बी थकानपूर्ण यात्रा के बाद ऊंचाई वाले स्थान पर पहुंच गए।

की गई बरामदगी :–

1.	जिंदा गोलाबारूद		
	1 ए.के. 47	–	01
2.	मिसफायर हुई गोलियां		
	1 .303	–	05
3.	खाली खोखे		
	i. 7.62 एम एम	–	01
	i i 7.62 एम एम *39	–	14
	i i i 5.56 एम एम	–	08
	i v .303	–	28
	v .315 बोर	–	20

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री (स्व.) चन्द्र शेखर सिंह, हेड कांस्टेबल, (स्व.) प्रमोद कुमार राय, कांस्टेबल, (स्व.) दिनेश महतो, कांस्टेबल, (स्व.) लालचिक बहराइक, कांस्टेबल, (स्व.) राजेश कच्छप, कांस्टेबल, जगरनाथ ओरॉन, कांस्टेबल, मनोज कुमार सिंह कांस्टेबल, जमशेद खान, कांस्टेबल और प्रशांत कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.05.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 127–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, झारखण्ड पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	सुरेन्द्र कुमार झा, पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
02.	प्रकाश रंजन मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का चतुर्थ बार)
03.	हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.07.2014 को लेंबा के पहाड़ी और जंगली क्षेत्र में कुंदन पाहन उर्फ विकास (रीजनल मिलिटरी कमीशन का सदस्य), तुलसी दास उर्फ विशाल (उप–जोनल कमांडर), चंदन और अर्जुन के साथ सशक्त माओवादियों (15–20 काडर) की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त होने पर, दुर्गम क्षेत्र और पुलिस दल की गतिविधि के दौरान घात लगाकर हमले अथवा आईईडी विस्फोट की संभावना जैसे सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रांची और पुलिस अधीक्षक खूंटी ने सावधानीपूर्वक एक अभियान की योजना बनाई। सूचना के अनुसार, माओवादी उस क्षेत्र में पुलिस के विरुद्ध विध्वंसक गतिविधियों की योजना बना रहे थे। यह स्थान खूंटी जिले के अरकी पुलिस स्टेशन और रांची जिले के तमार पुलिस स्टेशन की सीमाओं पर स्थित है। रात के दौरान अभियान शुरु करने की योजना बनाई गई परन्तु उस माओवादी दल में अनुभवी माओवादी सेना के कमाण्डर मौजूद थे और दोनों तरफ से गोलीबारी होने की संभावना थी, इसलिए रात्रि में मुठभेड़ के दौरान गोलीबारी को नियंत्रित करने के लिए अधिकतम अधिकारियों का दल गठित करने का निर्णय लिया गया। उप कमांडेंट संजय कुमार और सहायक कमांडेंट मनोज कुमार यादव के नेतृत्व में 133 बटालियन, सीआरपीएफ के त्वरित कार्रवाई दल (क्यूआरटी), सहायक कमांडेंट दिलीप कुमार सिंह के नेतृत्व में 133 बटालियन सीआरपीएफ के क्यूएटी और खूंटी जिले के पुलिस अधिकारियों के क्यूएटी के साथ पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) रांची श्री सुरेन्द्र कुमार झा, एएसपी (ऑप.) खूंटी, श्री प्रकाश रंजन मिश्रा और एएसपी (ऑप.) रांची, श्री हर्षपाल सिंह के नेतृत्व में एक संयुक्त दल गठित किया गया और कार्मिकों को उनकी भूमिका के बारे में समुचित रूप से बताया गया। घने अंधेरे, पहाड़ी क्षेत्र और मार्ग में पड़ने वाले अनेक नालों के बावजूद इस दल ने दिनांक 22.07.2014 को 2330 बजे अभियान के लिए प्रस्थान किया। यह दल रात को उस क्षेत्र में पहुंचा, दल को आगे उप दलों में बांट दिया गया और संभावित छिपने के स्थान, जहां माओवादी दल इकठ्ठा हुआ था, को घेरने के लिए लक्षित क्षेत्र की ओर भेजा गया। भोर में क्षेत्र को घेरने और तलाशी करने का निर्णय लिया गया। जब तलाशी शुरु हुई तो माओवादियों को कुछ हलचल होने का संदेह हो गया और उन्होंने पुलिस दल पर गोलीबारी की। पुलिस दल द्वारा आत्मसमर्पण करने और गोलीबारी बंद करने की घोषणा के पश्चात, माओवादियों ने गोलीबारी तेज कर दी जिसमें 203 कोबरा के सहायक कमांडेंट मनोज कुमार यादव घायल हो गए। अब श्री सुरेन्द्र कुमार झा, श्री प्रकाश रंजन मिश्रा और श्री हर्षपाल सिंह के नेतृत्व वाले पुलिस दलों ने उपर्युक्त 3 क्यूएटी की सहायता से तीन दिशाओं से माओवादियों को घेरने का प्रयास किया, परन्तु माओवादी भारी गोलीबारी और झाड़ियों को फायदा उठाकर गांव और स्कूल की ओर भाग गए। कुछ माओवादियों ने स्कूल में पोजीशन संभाल ली और उनका पीछा कर रहे पुलिस दलों पर गोलीबारी शुरु कर दी। इस प्रक्रिया में, श्री सुरेन्द्र कुमार झा, श्री पी.आर. मिश्रा और श्री हर्षपाल सिंह ने आगे और पीछे से माओवादियों की भारी गोलीबारी का सामना किया परन्तु भाग्यवश वे बच गए। जान का जोखिम होने के बावजूद, सभी तीनों कमांडर क्यूएटी के साथ आगे बढ़ते रहे और उन माओवादियों के नजदीक पहुंच गए, जिन्होंने स्कूल में पोजीशन संभाल रखी थी। अन्य माओवादियों ने भी गोलीबारी के दौरान बिखरे हुए अपने काडरों को वापस लाने के लिए इन पुलिस दलों पर गोलीबारी जारी रखी। इन दलों ने कई बार माओवादियों द्वारा आत्मसमर्पण करने के लिए जोर से घोषणा की ताकि वे उनकी आवाज सुन सके परन्तु माओवादियों ने गोलीबारी जारी रखी। माओवादी सुरक्षित स्थिति में थे और पुलिस दल बहुत असुरक्षित थे। स्कूल के नजदीक पहुंचने के बाद कुछ मिनटों के लिए गोलीबारी बंद हो गई, फिर तीनों कमांडर उप कमांडेंट संजय कुमार, सहायक कमांडेंट दिलीप कुमार सिंह, उप निरीक्षक महेश चन्द्र मीणा और कांस्टेबल डीआर विस्वाल के साथ स्कूल की ओर गए और स्कूल की तलाशी करने का निर्णय लिया। इसलिए वे स्कूल में प्रवेश करने के लिए तीन दिशाओं से आगे बढ़े किन्तु माओवादियों ने अचानक तेज गोलीबारी शुरु कर दी और श्री सुरेन्द्र कुमार झा, श्री पी.आर. मिश्रा और श्री हर्षपाल सिंह, जो द्वार के नजदीक खड़े थे, पर दो दिशाओं से गोली की बौछार आई, परन्तु वे बाल–बाल बच गए। श्री सुरेन्द्र कुमार झा, श्री प्रकाश रंजन मिश्रा और श्री हर्षपाल सिंह जो आगे से क्यूएटी का नेतृत्व कर रहे थे, लम्बे समय तक जान को जोखिम में डालने वाली स्थिति में रहे, किन्तु उन्होंने अपना हौसला, वीरतापूर्ण नेतृत्व और धैर्य नहीं छोड़ा। माओवादियों द्वारा उनके ऊपर लगातार गोलीबारी के बावजूद सभी तीनों कमांडर क्यूएटी के साथ माओवादियों के नजदीक पहुंचने के लिए तीन दिशाओं से रेंगकर आगे बढ़े। माओवादियों की ओर बढ़ते समय तीनों अधिकारी भारी गोलीबारी से घिरे हुए थे और आगे बढ़ने के दौरान किसी भी समय अपनी जान गवां सकते थे। अंततः वह आतंकवादी, जिसने पोजीशन संभाल रखी थी, स्कूल में इन पुलिस अधिकारियों, जो बहुत नजदीक पहुंच गए थे, की गोलीबारी द्वारा मार गिराया गया। अपनी हार का अनुमान लगाने के पश्चात अन्य माओवादियों ने पीछे हटना शुरु कर दिया। पुलिस दलों ने उनका पीछा किया, परन्तु पहाड़ियों का लाभ उठाकर वे बचकर निकल गए। तलाशी के पश्चात, एके–47, 161 राउंड के साथ 4 मैगजीन और कॉम्बैट पाउच में छिपाकर रखे हुए 1 ग्रेनेड के साथ एक माओवादी का शव बरामद किया गया। ग्रामीणों द्वारा पहचान के पश्चात, मारे गए माओवादी की पहचान खूंखार माओवादी सब जोनल कमांडर तुलसी दास उर्फ विशाल के रूप में की गई, जो पिछले कई वर्षों से बहुत सक्रिय था और खूंटी–रांची–सरायकेला–चायबासा के सीमावर्ती क्षेत्रों में माओवादियों द्वारा अंजाम दी गई लगभग प्रत्येक घटना में माओवादी दल का हिस्सा था। भारत के माननीय गृह मंत्री द्वारा इस मुठभेड़ की सराहना की गई।

की गई बरामदगी :–

1. एके–47 राइफल–1
2. जिंदा राउंड (एके–47)–161
3. खाली खोखे (एके–47)–83
4. हथगोला–1
5. मैगजीन–4
6. वॉकी–टॉकी (मोटोरोला)–1
7. मोबाइल–3

पूरे अभियान में, माओवादियों की भारी गोलीबारी, माओवादियों के साथ भिड़ंत और अपने जीवन को खतरे की अत्यधिक संभावना के बावजूद उपर्युक्त कर्मियों ने कमांड/नियंत्रण, आदेशों और सौंपे गए कार्य के पालन से संबंधित अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। जान को जोखिम में डालने वाली परिस्थितियों में उनके द्वारा प्रदर्शित संयम न केवल अनुकरणीय है, बल्कि उच्च स्तरीय साहस, शौर्य, निष्ठा, समर्पण और कर्त्तव्य की प्रतिबद्धता का भी द्योतक है। संपूर्ण अभियान के दौरान माओवादियों और गोलीबारी की तीव्रता के बीच बहुत कम दूरी के कारण मौत हमेशा लेशमात्र दूर रही।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुरेन्द्र कुमार झा, पुलिस अधीक्षक, प्रकाश रंजन मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक और हर्षपाल सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्यस वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का चतुर्थ बार/पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 128—प्रेज/2015—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. टी.सी. चाको,
उप पुलिस अधीक्षक

02. प्रोबिंस्टर खारबानी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 07.07.2014 को ओडुग्रे, जेत्राग्रे और जिंगामाग्रे गांव के बीच दुरामा रेंज के दूरवर्ती जंगल में एक जीएनएलए शिविर की मौजूदगी के बारे में स्रोत से सूचना प्राप्त हुई, जहां श्री सोहन डी. शीरा, जीएनएल का सी—एन—सी उपस्थित था।

तदनुसार, मेघालय पुलिस एसडब्ल्यूएटी (स्वैट) दल और कोबरा द्वारा एक संयुक्त अभियान शुरू करने का निर्णय लिया गया। ऑपरेशन विंग से सम्बद्ध श्री टी.सी. चाको, एमपीएस, उप पुलिस अधीक्षक, एसीबी के नेतृत्व में 10(दस) स्वैट कमांडो और कोबरा के 2 (दो) दलों वाले एक दल का गठन किया गया।

समुचित योजना और विचार—विमर्श के पश्चात यह दल दिनांक 08.07.2014 को रात 11.55 बजे विलियमनगर से पैदल निकल पड़ा। दुरामा रेंज के दुर्गम क्षेत्र से होते हुए सामान्य रास्ते को छोड़कर कच्चे रास्ते पर चलने के पश्चात, यह दल तीसरे दिन अर्थात दिनांक 11 जुलाई, 2014 को लगभग सुबह 06.30 बजे लक्षित क्षेत्र में पहुंचा। इस दल ने एक झोपड़ी देखी, जो रसोई की तरह दिखती थी और उसके नजदीक 4—5 सशस्त्र काडर थे। अचानक चारों ओर तैनात संत्रियों द्वारा आधुनिक स्वचालित हथियारों अर्थात एके सीरीज, एचके, पिस्तौल आदि का प्रयोग करके गोलीबारी की गई। पुलिस दल ने भी जवाबी गोलीबारी की और लगभग 10 मिनट तक गोलीबारी चली। पुलिस दल दो भागों में बंट गया और श्री टी.सी. चाको, एमपीएस के नेतृत्व में स्वैट ने दायीं ओर मोर्चा संभाल लिया जबकि उप कमांडेंट श्री राजन सिंह के नेतृत्व में कोबरा ने बायीं ओर मोर्चा संभाल लिया। तेज गोलीबारी के कारण पुलिस दल को आगे बढ़ना पड़ा। श्री टी.सी. चाको, एमपीएस अपने साथी बीएनसी प्रोबिंस्टर खारबानी के साथ दाईं ओर से आगे बढ़े और उनके पीछे स्वैट दल भी गया, जबकि श्री राजन सिंह अपनी साथी के साथ बाकी दल से कवर फायर लेते हुए दायीं ओर से आगे बढ़े। श्री टी.सी. चाको, एमपीएस के आगे बढ़ते हुए साथी ने एक उग्रवादी को गोली से मार गिराया जिसकी बाद में स्वर्गीय तेंरासरांग एम संगमा के रूप में पहचान की गई जो जीएनएलए के श्री सोहन डी. शीरा, सी—एन—सी का भतीजा और अंगरक्षक था। मारा गया उक्त जीएनएलए उग्रवादी जीएनएलए का विस्फोटक विशेषज्ञ भी था। श्री टी.सी. चाको, एमपीएस के नेतृत्व वाला दल, जो आगे से नेतृत्व कर रहा था, पहाड़ी की ओर आगे बढ़ गया, जहां से तेज गोलीबारी जारी थी। यद्यपि सीएनसी की अधिकतम गोलीबारी की ताकत चरम पर थी और इस तथ्य के बावजूद कि पुलिस दल असुरक्षित स्थिति में आगे बढ़ रहे थे, श्री टी.सी. चाको, एमपीएस ने अपने साथी बीएनसी प्रोबिंस्टर खारबानी के साथ पहाड़ी की चोटी तक पहुंचने में दल का नेतृत्व किया जिसने शेष उग्रवादियों को घने जंगल और भारी गोलीबारी का लाभ उठाकर भागने के लिए मजबूर कर दिया।

पहाड़ी की चोटी की स्थिति और पुलिस दल की तुलना में उग्रवादियों की विहंगम दृष्टि की परवाह किए बगैर, श्री टी.सी. चाको, एमपीएस ओर उनका दल जीएनएलए काडरों के शिविर की ओर निडरतापूर्वक आगे बढ़ गया। दूसरी ओर से लगातार गोलीबारी के बावजूद श्री टी. सी. चाको एमपीएस ने अपनी निर्णय लेने की क्षमता और विद्रोह रोधी क्षेत्र में अपने लम्बे अनुभव की वजह से जीएनएलए काडरों की अंधाधुंध गोलीबारी को रोकने में सफलता प्राप्त की और उन्हें सभी सामग्रियों और कीमती सामान को छोड़कर उक्त शिविर से भागने के लिए मजबूर कर दिया। श्री टी.सी. चाको, एमपीएस द्वारा दिनांक 11 जुलाई, 2014 को अभियान में जिसमें एक खूंखार जीएनएलए उग्रवादी मारा गया जान को जोखिम में डालने वाली गंभीर परिस्थिति के दौरान प्रदर्शित असाधारण साहस, धैर्य और दृढ़ निश्चय का सम्मान किए जाने की आवश्यकता है।

की गई बरामदगी :–

- मैगजीन के साथ 7.65 एम एम पिस्तौल – 01
- 7.56 एमएम के जिंदा राउंड – 06
- 09 एम एम के जिंदा राउंड – 13
- 7.65 एमएम का खाली खोखा – 01
- एच ई मोर्टर बम – 05
- आरपीजी बम – 01
- पिस्तौल होल्डर – 13
- 12 बोर की बंदूक के कारतूस – 185
- 12 बोर की बंदूक के खाली खोखे – 23
- तार सहित डेटोनेटर – 14
- आईईडी टाइमर – 07
- सर्किट – 18
- सर्किट प्रोटेक्टर – 02
- तांबे की रोल – 01
- एपिक कार्ड – 04

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री टी.सी. चाको, उप पुलिस अधीक्षक एवं प्रोबिंस्टर खारबानी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 129–प्रेज/2015—राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गोएरा टी. संगमा, उप निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02 ड्रसिंग के. शबोंग, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

03 पाइरखात मिनोत नोंगसेज, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

04 संजय कुमार रे, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

05. सुशील महतो, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

06. तुषार एफ.एन. मारक, कांस्टेबल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 21.08.2014 को लगभग सुबह 6.30 बजे जब स्वैट कमांडो का पुलिस दल और विलियमनगर पुलिस स्टेशन के उप निरीक्षक टी. संगमा, श्री टी.सी. चाको, एमपीएस के नेतृत्व में क्षेत्र में जीएनएलए और उल्फा आतंकवादियों की मौजूदगी की विश्वसनीय सूचनाओं के आधार पर टोमबोलग्रे और सोंगमाएनगोक गांवों की तलाशी करने के लिए आगे बढ़ रहे थे और सोंगमाएनगोक गांव के नजदीक जंगल में पहुंचने पर, बोलकिंग्रे गांव के अंजनमोमिन उर्फ जिम्मी, विलियमनगर के घोषित क्षेत्रीय कमांडर के नेतृत्व में लगभग 20 (बीस) आतंकवादियों के गुट ने पहाड़ी की चोटी से आधुनिक स्वचालित हथियारों से पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस दल ने तेजी से जवाबी कार्रवाई की और लगभग 10 मिनट तक आतंकवादियों के साथ परस्पर गोलीबारी की। उग्रवादी

पहले से ही सुरक्षित स्थान पर थे जिसने पुलिस दल को अलाभप्रद स्थित में कर दिया, तथापि, भारी गोलीबारी के बावजूद उप निरीक्षक गोएरा टी. संगमा और उनका दल नामतः बीएनसी ड्रसिंग के. शाबोंग, बीएनसी पाइरखातमिनोत नोंगसोज, बीएनसी संजय कुमार रे, बीएनसी सुशील महतो और बीएनसी तुषार एफ.एन. मारक अपने दल के सदस्यों, जो साथ–साथ उग्रवादियों के स्थान की ओर बढ़ रहे थे, की कवर फायर के भीतर निडरतापूर्वक पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ा। पुलिस दल ने जिस गति और रणनीति के साथ जवाबी कार्रवाई की और शिविर को नष्ट किया, उसके परिणामस्वरूप 3(तीन) सशस्त्र उग्रवादी मारे गए और अन्य बचे हुए उग्रवादी घने जंगल और लगातार गोलीबारी का फायदा उठाकर भागने पर मजबूर हो गए। गोलीबारी रुकने के पश्चात, घटना स्थल की तलाशी की गई और निम्नलिखित वस्तुएं बरामद की गईं: 5(पांच) मैगजीनों और जिंदा कारतूसों के साथ 1(एक) एसएलआर राइफल, 4 मैगजीनों और जिंदा कारतूसों के साथ 2 (दो) पिस्तौल, 2 (दो) वायरलैस सेट और नान–इलेक्ट्रिक डेटोनेटर तथा अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज और सामग्रियां।

श्री गोयरा टी. संगमा और उनके दल ने दिनांक 21 अगस्त, 2014 के अभियान में जान को गंभीर जोखिम में डालने वाली स्थिति के दौरान असाधारण साहस, धैर्य और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया। क्षेत्र में अत्यधिक खूंखार आतंकवादी गुट के छिपने के स्थान को नष्ट करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी और इससे आतंकवादी संगठन के ढांचे और मनोबल को गहरा आघात पहुंचा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गोएरा टी. संगमा, उप निरीक्षक, ड्रसिंग के शबोंग, कांस्टेबल, पाइरखात मिनोत नोंगसेज, कांस्टेबल, संजय कुमार रे, कांस्टेबल, सुशील महतो, कांस्टेबल और तुषार एफ.एन. मारक, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 130–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री टी.सी. चाको,
उप पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 20.08.2014 को यह सूचना प्राप्त हुई कि विलियमनगर क्षेत्र के स्वघोषित एरिया कमांडर अजय मोमिन ऊर्फ जिम्मी के नेतृत्व में जीएनएलए और उल्फा के लगभग 20(बीस) भारी हथियारबंद उग्रवादियों का गुट सोंगमा एनगोकग्रे गांव और टोंगबोलग्रे गांव के बीच अराबेला रेंज के सामान्य क्षेत्र में छिपे हुए हैं।

उक्त सूचना प्राप्त होने पर, ऑपरेशन विंग से जुड़े हुए श्री टी.सी. चाको, एमपीएस (एसीबी) के नेतृत्व में मेघालय पुलिस के 28 स्वैट (एसडब्ल्यूएटी) कमांडो और उप निरीक्षक जी.टी. संगमा के एक पुलिस दल का गठन किया गया। समुचित योजना और विचार–विमर्श के पश्चात, 30 पुलिस कर्मियों वाला अभियान दल दिनांक 20.08.2014 को लगभग रात्रि 11 बजे विलियमनगर से निकल पड़ा।

इस दल ने उनको सौंपे गए पहले से ही चुनौतीपूर्ण कार्य में उनकी सहायता के लिए किसी भी कृत्रिम रोशनी के बिना रात में लगभग 6 घंटे पैदल चलकर ऊबड़–खाबड़ क्षेत्र और घने जंगल को पार किया। सभी प्राकृतिक खतरों को पार करने के पश्चात दिनांक 21.08.2014 को लगभग सुबह 6.30 बजे सोंगमा एनगोकग्रे गांव के आस–पास अचानक दो हथियार बंद उग्रवादी, जो संतरी की डयूटी पर थे, ने पुलिस दल को देख लिया और लगभग 100 मीटर की दूरी से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद वहां शरण लिए हुए बाकी उग्रवादियों द्वारा उसी दिशा से तेज गोलीबारी की गई। गोलीबारी की आवाज से अभियान दल ने यह सुनिश्चित किया कि उग्रवादी पुलिस दल को अपने स्थान की ओर आगे बढ़ने से रोकने के लिए ए.के सीरीज की राइफल्स, एचएंडके राइफल्स, एसएलआर और इंसास आदि जैसी आधुनिक राइफलों का प्रयोग कर रहे हैं।

यद्यपि पुलिस दल नीचे की ओर था और उग्रवादियों ने पहले से ही सुरक्षित स्थान पर कब्जा कर रखा था, तथापि, उप पुलिस अधीक्षक टी.सी. चाको 8 अन्य कमांडो के साथ उग्रवादियों की ओर से तेज गोलीबारी के हमले के बावजूद बगैर किसी प्राकृतिक आड़ के अपनी जान की परवाह किए बिना उग्रवादियों की ओर आगे बढ़े, जबकि बाकी दल ने कवर फायर प्रदान किया। उनको अपने छिपने के सुरक्षित स्थान से निकालने की आवश्यकता को महसूस करते हुए अधिकारियों तथा पुलिस कर्मियों ने अपने समक्ष आए खतरे का बहादुरी से सामना किया और शिविर के स्थान की ओर बढ़े जहां से वे लगातार उन आतंकवादियों से जूझ रहे थे जो आगे बढ़ रहे पुलिस दल को रोकने की कोशिश कर रहे थे। श्री टी.सी. चाको, ने आगे से दल का नेतृत्व करने में उल्लेखनीय धैर्य और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और उनके व्यक्तिगत प्रयास और नेतृत्व के कारण ही लगभग 20 मिनट चली भयंकर गोलीबारी में 3(तीन) हथियार बंद उग्रवादी अर्थात् 2 (दो) जीएनएलए और 1(एक) उल्फा उग्रवादी घटनास्थल पर मारे गए और कई घायल हो गए। बाद में तकनीकी और मानवीय आसूचना रिपोर्टों से इस बात की पुष्टि हुई कि घायल होने की वजह से 3(तीन) और जीएनएलए उग्रवादियों की जंगल में मौत हो गई थी और 9 अन्य घायल हो गए थे जिसमें से तीन की हालत संभावित रूप से गंभीर है। संपूर्ण घटना स्थल की

भलीभांति तलाशी करने के पश्चात, मारे गए उग्रवादियों और उनके छिपने के स्थान से निम्नलिखित हथियार और गोलाबारूद तथा आपत्तिजनक सामग्रियां बरामद हुईं :–

1. 1 (एक) एसएलआर राइफल।
2. 5 (पांच) एसएलआर मैगजीन (चार अच्छी स्थिति में और एक गोली से क्षतिग्रस्त)
3. 7.62 एम एम के जिंदा गोलाबारूद–49 (उनन्चास)।
4. 1 (एक) मैगजीन के साथ 1 एक पिस्तौल।
5. 3(तीन) मैगजीनों के साथ 1(एक) 7.65 एम एम पिस्तौल।
6. 4(चार) अज्ञात क्षमता के जिंदा गोलाबारूद।
7. 7(सात) 7.65 एम एम के जिंदा गोलाबारूद।
8. 1(एक) अज्ञात क्षमता का जिंदा गोलाबारूद।
9. 3 (तीन) क्षतिग्रस्त खाली खोखे।
10. 2(दो) नान इलेक्ट्रिक डोटोनेटर।
11. एयरटेल सिमकार्ड के साथ 1(एक) नोकिया मोबाइल फोन।
12. एयरटेल सिमकार्ड के साथ 95815561079 1(एक) नोकिया मोबाइल फोन।
13. वोडाफोन और आइडिया सिम कार्डों के साथ 1 (एक) नोकिया मोबाइल फोन।
14. 5(पांच) अतिरिक्त सिम कार्ड (दो एयरसेल, एक रिलाएंस, एक बीएसएनएल और एक वोडाफोन)।
15. 1(एक) वायरलेस हैंडसेट।
16. 1(एक) चीन निर्मित वाकी टॉकी।

उप पुलिस अधीक्षक टी.सी. चाको द्वारा अदम्य वीरता और अनुकरणीय नेतृत्व के उपर्युक्त प्रदर्शन से न केवल 6(छह) उग्रवादी मारे गए और 9(नौ) घायल हुए, बल्कि किसी भी पुलिस कर्मी के घायल अथवा हताहत हुए बिना हथियारबंद उग्रवादियों के अचानक हमले में घिरे पूरे पुलिस दल की कीमती जानों को भी बचाया जा सका।

इस अभियान से जीएनएलए गुट को गहरा आघात पहुंचा और अभियान की सफलता इस तथ्य का पर्याप्त प्रमाण है कि अधिकारी ने अपने निर्धारित कर्तव्य से अधिक नेतृत्व की गुणवत्ता और उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन किया है।

इस मुठभेड़ में श्री टी. सी. चाको, उप पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 131–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री गुरलाल सिंह,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 11.06.2014 को, एक गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि गुरुशरणजीत सिंह उर्फ शेरा पुत्र रूप सिंह जाट, निवासी गांव सेवेवाला, पुलिस स्टेशन जैतू, जिला फरीदकोट और देवेन्द्र सिंह पुत्र श्री इकबाल सिंह निवासी बबीहा भाई का, पुलिस स्टेशन स्मालसर, जिला मोगा, जिसके खिलाफ हत्या और अन्य जघन्य अपराधों के एक दर्जन मामले लंबित हैं और जो गिरफ्तारी से बच रहे हैं, अपने अन्य सहयोगियों से मिलने के लिए लुधियाना बस स्टैंड पर आ रहे हैं। इसलिए श्री सुखदेव सिंह बरार, पीपीएस, डीएसपी (एसडी), जैतू के पर्यवेक्षण में सैन्य बल को लुधियाना भेजा गया। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह भी निरीक्षक लखवीर सिंह प्रभारी, सीआईए स्टाफ, फरीदकोट, जो ए के–47 से सज्जित थे, के साथ लुधियाना बस स्टैन्ड पर तैनात थे। लगभग शाम 5.00 बजे उपर्युक्त अभियुक्त स्लेटी रंग की रिट्ज, जिसे उन्होंने मुक्तसर शहर से छीनी थी, में लुधियाना बस स्टैण्ड पहुंचे। परन्तु जैसे ही वे पहुंचे, उन्होंने पुलिस की

मौजूदगी को भांप लिया और तुरंत भरत नगर चौक, लुधियाना की ओर भाग गए। निरीक्षक लखवीर सिंह और हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने लगभग 1/1.5 कि.मी. तक एक प्राइवेट कार में उनका पीछा किया। अभियुक्तों ने बसरा होटल, लुधियाना के नजदीक जागरॉन रोड़ पर भारी ट्रैफिक के कारण अपनी कार रोक दी और पिस्तौलों के साथ कार से उतर गए तथा हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह और निरीक्षक लखवीर सिंह पर गोलीबारी की। अभियुक्त देवेन्द्र सिंह व्यस्त शॉपिंग मॉल की ओर भाग गया जिसमें उस समय लोगों की भीड़ थी। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने देवेन्द्र सिंह का पीछा किया, देवेन्द्र सिंह ने अपने स्वचालित पिस्तौल से हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह पर गोली चलाई। दो गोलियां हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह के सिर के पास से निकल गईं परन्तु भाग्यवश उन्हें चोट नहीं लगी। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह बिना किसी डर के अभियुक्त का पीछा करते रहे। अभियुक्त एक व्यस्त गली में घुस गया, हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह के पास स्वयं को गोलीबारी से बचाने के दो विकल्प थे अर्थात् या तो अपनी जान बचाना अथवा अभियुक्त को गिरफ्तार करना, परन्तु हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने दूसरा विकल्प चुना। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने बिना किसी डर के, अपने कर्तव्य को ध्यान में रखते हुए और इस बात की परवाह न करके कि वे मारे जा सकते हैं अथवा घायल हो सकते हैं लोगों को बचाते हुए देवेन्द्र सिंह, जो एच सी गुरलाल सिंह पर अंधाधुंध गोलीबारी कर रहा था, के और नजदीक जाकर अपनी एके–47 से जवाबी गोलीबारी की। वे अभियुक्त के नजदीक पहुंचने में सफल हो गए, उसकी बाजू को जख्मी कर दिया और उसे अकेले ही दबोच लिया। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने अपनी जान को जोखिम में डालकर भयभीत हुए बिना अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया और इस प्रकार आम लोगों को बचाया। हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह का यह कार्य अत्यधिक प्रशंसनीय है। निरीक्षक लखवीर सिंह ने उनके बहादुरीपूर्ण कार्य के लिए हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह की पीठ थपथपाई। देवेन्द्र सिंह के पास से .32 बोर के 22 जिंदा कारतूसों के साथ .32 बोर की एक विदेशी पिस्तौल बरामद की गई। देवेन्द्र सिंह से और पूछताछ करने पर भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किया गया जिसमें .32 बोर की 02 पिस्तौलें, .12 बोर के 40 कारतूस, .315 बोर के 30 कारतूस और .32 बोर के 10 कारतूस शामिल हैं। उक्त देवेन्द्र सिंह सुपारी किलर गैंग का सरगना था जो पंजाब के विभिन्न जिलों में अपराधों में संलिप्त था।

हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह यह तथ्य जानकर भी हतोत्साहित नहीं हुए कि अभियुक्त गोलाबारूद से लैस था। इस मुठभेड़ के अंतिम चरण के दौरान उप पुलिस अधीक्षक (एसडी) जैतू श्री सुखदेव सिंह बरार, पीपीएस के नेतृत्व में एक पुलिस दल घटना स्थल पर पहुंचा और हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह की उनके अत्यधिक सफलतापूर्ण कार्य के लिए पीठ थपथपाई।

ऊपर उल्लिखित तथ्यों से, पर्याप्त रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हेड कांस्टेबल गुरलाल सिंह ने भारी हथियारों से लैस अपराधियों के साथ नजदीकी लड़ाई लड़ने में अनुकरणीय साहस, सूझबूझ मजबूत दृढ़ निश्चय, नेतृत्व की उच्च भावना, जिम्मेदारी और उत्कृष्ट कौशल का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में श्री गुरलाल सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.06.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 132–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बलजीत सिंह, (मरणोपरांत)
पुलिस अधीक्षक

02. बलबीर सिंह,
निरीक्षक

03. तारा सिंह,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.07.2015 को लगभग सुबह 5.00 बजे अत्याधुनिक और अत्यन्त परिष्कृत हथियारों के साथ तीन हथियारबंद आतंकवादियों ने सेना की वर्दी में जिला गुरदासपुर के दीनानगर में प्रवेश किया। सर्वप्रथम उन्होंने यात्रियों को मारने के इरादे से पंजाब रोड़वेज की एक बस को निशाना बनाया, लेकिन ड्राइवर वहां से यात्रियों सहित उस बस को सुरक्षित रूप से लेकर निकल गया। फिर इन आतंकवादियों ने एक मारुति कार छीनी और पुलिस स्टेशन दीनानगर पर, वहां उपस्थित पुलिस कर्मियों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए, हमला कर दिया। श्री बलजीत सिंह, एसपी सूचना प्राप्त होने पर अपने पंजाब पुलिस कर्मियों के साथ घटना स्थल पर पहुंचने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने स्थिति का जायजा लिया और आगे का मोर्चा संभाला तथा जवाबी गोलीबारी में आतंकवादियों को उलझा दिया, ताकि आतंकवादी वहां से बच निकलने की कोशिश न करें। दुर्भाग्यवश आतंकवादियों की एक गोली श्री बलजीत सिंह,

पीपीएस, एसपी के सिर में लगी जिसके परिणामस्वरूप वे गिर पड़े और घायल होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। इसी बीच, निरीक्षक बलबीर सिंह सहित कुछ और पुलिस बल घटनास्थल पर पहुंच गए, जिन्होंने अपने पुलिस कर्मियों के साथ एक भवन की छत पर मोर्चा संभाल लिया जो उस भवन के नजदीक था जिसमें आतंकवादी छिपे हुए थे और उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालते हुए आतंकवादियों की गोलीबारी का जोरदार ढंग से जवाब दिया तथा उनको उलझा दिया, ताकि वे उस भवन से बचकर नहीं निकल सकें और घनी आबादी वाले क्षेत्र में प्रवेश न कर सकें। परन्तु जवाबी गोलीबारी के दौरान निरीक्षक बलबीर सिंह की बाई बाजू में गोली लग गई, किन्तु उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा और बहादुरी से आतंकवादियों पर गोलीबारी करते रहे। इसी बीच, उनके पेट के बायीं ओर एक और गोली लग गई, जिसके परिणामस्वरूप, उन्हें उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। उसी समय भारी पुलिस बल घटना स्थल पर पहुंच गया, जिसने पूरे क्षेत्र को घेर लिया। चूंकि अभियान लम्बा होता जा रहा था, अतः सूर्यास्त से पहले इसे समाप्त करना आवश्यक था क्योंकि आतंकवादी अंधेरे का फायदा उठाकर भाग सकते थे। इस बिंदु पर विचार करते हुए पुलिस बल ने अपनी रणनीति बदल ली और लगभग अपराह्न 3.00 बजे जब अंतिम हमले को अंजाम दिया जा रहा था, तब हेड कांस्टेबल तारा सिंह ने एक साहसिक निर्णय लिया और वे एक नजदीकी भवन की छत पर चले गए और आगे मोर्चा संभाल कर उन्होंने आतंकवादियों पर कई हथगोले फेंके। इस कार्रवाई के दौरान, आतंकवादियों का ध्यान भंग करने और हेड कांस्टेबल तारा सिंह को कवर फायर देने के लिए पुलिस बलों द्वारा भारी गोलीबारी की गई। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप, जिस भवन में आतंकवादी छिपे हुए थे, क्षतिग्रस्त हो गया। इससे आतंकवादियों का पूर्ण रूप से सफाया करने में बड़ी सहायता मिली। श्री बलजीत सिंह, पीपीएस, एसपी और निरीक्षक बलबीर सिंह की सूझबूझ, हिम्मत और संगठित प्रयासों के कारण ही आतंकवादी भवन के अंदर घिरे रहे और वहां से बाहर नहीं आ सके, अन्यथा, यह घातक हो जाता और इसके परिणामस्वरूप और पुलिसकर्मी तथा आम लोग मारे जाते। घटनास्थल से 3 एके राइफलें, एके–47 राइफल की 17 मैगजीनें, 85 जिंदा कारतूस, 220 खाली कारतूस, 01 ग्रेनेड लांचर, 01 बगैर फटा ग्रेनेड और 02 जीपीएस डिवाइस बरामद किए गए। इस संबंध में पुलिस स्टेशन दीनानगर में दिनांक 27.07.2015 को भारतीय दंड संहिता की धारा 302, 307, 382, 120–ख/34, आयुध अधिनियम की धारा 25, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4/5, सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम की धारा 3/4 के तहत एक मामला एफआईआर सं. 71 दर्ज किया गया है।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री बलजीत सिंह, पुलिस अधीक्षक, बलबीर सिंह, निरीक्षक और तारा सिंह, हेड कांस्टेबल ने अदम्य1 वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.07.2015 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 133–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, राजस्थान पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री फैज मोहम्मद, (मरणोपरांत)
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 15.11.2014 को फैज मोहम्मद अन्य व्यक्तियों के साथ एक सेंधमारी की घटना की छानबीन के पश्चात पुलिस जीप में भनवाटा गांव से वापस आ रहे थे। एक संकरी सड़क पर वे एक सफेद स्कॉर्पियो से आमने–सामने टकरा गए। स्थिति से अचंभित होकर, पुलिस कर्मियों ने सवारियों को पहचानने की कोशिश की। इसी बीच सफेद स्कॉर्पियो तेजी से चल पड़ी और आमने–सामने टकरा गई तथा उन्होंने पुलिस बलों को चुनौती दी। इसने पुलिस वाहन को टक्कर मार कर बगल में कर दिया और पुलिस जीप पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। जो व्यक्ति सफेद स्कॉरपियो के भीतर थे, वे खूंखार अपराधी विजेन्द्र सिंह और मदन सिंह थे। जीप को कई गोलियां लगीं। पुलिसकर्मी बहादुरी से वाहन से बाहर कूद गए और सफेद स्कॉरपियो पर हमला कर दिया और उनको लाठी तथा हाथों के वार से हतोत्साहित कर दिया। हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद ने बिना डरे अपराधी मदन सिंह को बाहर खींच लिया और उसे अपने हाथों से मजबूती के साथ दबोच लिया। मदन सिंह को बचाने के लिए विजेन्द्र सिंह ने हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद पर हमला कर दिया। उसने हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद के चेहरे और जबड़ों पर गन की बट से जोरदार प्रहार किया। अपराधी को गिरफ्तार करने की भावना बहुत मजबूत थी और हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद ने मदन सिंह को नहीं छोड़ा। इसके बाद हुई लड़ाई में विजेन्द्र सिंह ने हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद के चेहरे पर गोली मार दी, जिसके परिणामस्वरूप वे गिर पड़े। आघात के बावजूद, पुलिस कर्मियों ने अपराधियों को गिरफ्तार करने की कोशिश की, उनका पीछा किया, कई हथियार, गोलियां, वाहन आदि बरामद किए और साथ ही साथ हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद को अस्पताल में पहुंचाया। अपराधी विभिन्न हथियारों से पूरी तरह लैस थे और उन्होंने कई राउंड गोलियां चलाईं।

अतिरिक्त बल और सहायता मांगी गई। भारतीय दंड संहिता की धारा 302, 307, 332, 353, 336, 337, 338, 355, 323, 324, 325, 326, 341, 34, 120ख, पीडीपीपी अधिनियम की धारा 3, आयुध अधिनियम की धारा 3, 7, 25 के तहत एक मामला एफ आई आर 375/14 दर्ज किया गया और अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। हेड कांस्टेबल फैज मोहम्मद के बहादुरीपूर्ण कार्य से पांच आग्नेयास्त्र, सौ से अधिक कारतूस, सैंतालीस मोबाइल फोन, एक सौ दस सिम कार्ड, बुलेट प्रूफ जैकेट, हेलमेट और कई अपराधियों के सुराग जब्त किए गए जिससे कई अपराधियों को गिरफ्तार किया गया और क्षेत्र में शांति और कानून की व्यवस्था सुनिश्चित हुई।

फैज मोहम्मद हेड कांस्टेबल के वीरतापूर्ण कार्य ने पुलिस विभाग के सेवा आदर्श को बरकरार रखा और अपराध तथा अपराधियों से लड़ने में अन्य सभी लोगों का मनोबल बढ़ाया। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान समाज और विभाग की वफादारी से सेवा की और उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक बहादुरी से अपने कर्तव्य का निर्वाह किया।

इस मुठभेड़ में स्वर्गीय श्री फैज मोहम्मद, कांस्टेबल ने अदम्ये वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.11.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 134–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अवनीश गौतम,
उप निरीक्षक

02. अक्षय शर्मा,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री अवनीश गौतम, एस आई सीपी/एस.ओ., पुलिस स्टेशन कविनगर, गाजियाबाद निरीक्षक एसओजी के साथ मिलकर नजदीकी नवनिर्मित जिला पंचशील नगर के औद्योगिक और व्यावसायिक केन्द्र एवं घनी आबादी वाले हापुड़ शहर में दिनांक 18.10.2011 को स्कूल जाते समय एक 09 साल के स्कूली बच्चे, पार्श्व जैन के अपहरण की सनसनीखेज घटना के समाधान से संबंधित कार्य करने में लगे हुए थे। बाद में अपहरणकर्ता 20,00000/– रु. की फिरौती की मांग कर रहे थे, जिससे स्कूली बच्चों के अभिभावकों और आम लोगों में दहशत पैदा हो गई थी। श्री अवनीश गौतम फिरौती की राशि प्राप्त करने अथवा बच्चे को दिल्ली में कहीं स्थानांतरित करने के लिए एक स्कॉरपियो वाहन में ग्राम दसतोई, मुरादनगर क्षेत्र में अपहृत बच्चे पार्श्व जैन के साथ अपहरणकर्ताओं की गतिविधि के बारे में दिनांक 22.10.2011 को निरीक्षक एसओजी से सूचना प्राप्त होने पर तुरंत हरकत में आ गए और अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार करने की रणनीति पर निरीक्षक एसओजी के साथ विचार–विमर्श करते हुए पुलिस दल के साथ पुलिस वाहनों में दसतोई गांव की ओर चल पड़े। जब पुलिस दल ग्राम सदरपुर–दुहाई माइनर कनाल बैंक रोड और बापूधाम आवासीय परियोजना के तिराहे पर पहुंचा, तो उन्होंने वहां रणनीतिक ढंग से पोजीशन ले ली और अपहरणकर्ताओं के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ समय के पश्चात, उन्होंने दुहाई की ओर से संदिग्ध स्कॉरपियो को आते हुए देखा और एक कार गोविन्दपुरम की ओर से भी आती हुई दिखी और दोनों वाहन एक दूसरे के आमने–सामने रुक गए और श्री अवनीश गौतम तथा निरीक्षक एसओजी ने देखा कि स्कॉरपियो में सवार व्यक्ति नीचे उतरा और कार में सवार व्यक्ति बैग के साथ नीचे उतरा तथा इसे सौंपने के लिए स्कॉरपियो की ओर बढ़ा। यह सुनिश्चित करके कि उनके बीच गुप्त डील हुई है, उन्होंने शीघ्र अपना स्थान छोड़ दिया और निडरतापूर्वक आगे बढ़े, परन्तु शातिर और चालाक अपहरणकर्ताओं ने पुलिस को देखकर तुरंत पुलिस दल की ओर लगातार गोलीबारी शुरू कर दी और श्री अवनीश गौतम, हेड कांस्टेबल अक्षय शर्मा और एक कांस्टेबल गंभीर रूप से घायल हो गए। श्री अवनीश गौतम ने अपहरणकर्ताओं की खतरनाक गोलीबारी से विचलित हुए बिना निडरतापूर्वक पुलिस दल का नेतृत्व किया और घायल होने के बावजूद उन्होंने स्वयं घायल हेड कांस्टेबल अक्षय शर्मा के साथ अनुकरणीय साहस और अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण की उच्च भावना का प्रदर्शन किया और रणनीतिक ढंग से उन पर झपटे तथा पुलिस दल ने उनका अनुकरण किया और लगभग सुबह 03.30 बजे बलपूर्वक 06 अपहरणकर्ताओं को जिंदा गिरफ्तार कर लिया। अपहरणकर्ताओं के साथ आमने–सामने की भीषण मुठभेड़ में दो अपहरणकर्ता अंधेरे में बच निकले, यद्यपि उनका पीछा किया गया, परन्तु उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जा सका, जबकि 06 गिरफ्तार किए गए अपहरणकर्ताओं की पहचान ललित, राजकुमार, कन्हैया, शिवराम, पप्पू और इकबाल दोनों टप्पल, अलीगढ़ के निवासी के रूप में की गई और उनके पास से अत्याधुनिक आग्नेयास्त्र और गोलाबारूद, अपहृत बच्चे के पिता श्री अमित जैन द्वारा दी जाने वाली 17,00,000/– रु. की फिरौती की राशि तथा स्कॉरपियो कार मिली और स्कॉरपियो में बंद अपहृत बच्चे पार्श्व जैन को सफलतापूर्वक बचा लिया गया।

की गई बरामदगी :

1. मैगजीन और 7.65 बोर के जिंदा कारतूसों के साथ एक फैक्टरी निर्मित स्वचालित पिस्तौल।

2. मैगजीन और .32 बोर के जिंदा कारतूसों के साथ एक फैक्टरी निर्मित पिस्तौल।

3. मैगजीन, .32 बोर के 3 जिंदा कारतूसों और 01 प्रयुक्त कारतूस के साथ देशी पिस्तौल।

4. मैगजीन, .315 बोर के 09 जिंदा कारतूसों और 03 प्रयुक्त कारतूसों के साथ तीन देशी पिस्तौल।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अवनीश गौतम, उप निरीक्षक तथा श्री अक्षय शर्मा हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.10.2011 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 135–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	विनोद कुमार सिंह, पुलिस महानिरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
02.	अविनाश चन्द्र, पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
03.	अभय कुमार प्रसाद, पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
04.	देवेन्द्र कुमार चौधरी, अपर पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
05.	दिलीप सिंह, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
06.	पन्ना लाल, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी जिले–मिर्जापुर, चंदौली और सोनभद्र वामपंथी उग्रवादियों (एम सी सी और पी डब्ल्यू जी) की आपराधिक गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित हैं। इन जिलों में, नक्सलवादी गुटों ने अनगिनत हत्याओं, फिरौती के लिए अपहरणों, डकैतियों और लूटपाट को अंजाम दिया था। लोग नक्सलवादी समूहों के हमलों से लगातार भय और आंतक में रह रहे थे। दिनांक 09.03.2001 को मुखबिर से यह सूचना प्राप्त हुई कि क्षेत्रीय कमांडरों के नेतृत्व में दर्जनों नक्सलवादी पुलिस स्टेशन मड़िहान, जिला मिर्जापुर के भवानीपुर गांव में मौजूद हैं। वे घातक हथियारों से लैस हैं और जघन्य अपराधों को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। विभिन्न पुलिस स्टेशनों के पुलिस बलों को तत्काल इकट्ठा किया गया। बल ने आसूचना जानकारी को सत्यापित किया और फिर पूरे गांव की घेराबंदी की। स्टेशन अधिकारी, मड़िहान, श्री दिलीप सिंह ने नक्सलवादी गुटों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी जिसका नक्सलवादी गुटों के सदस्यों द्वारा पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी करके जवाब दिया गया। श्री दिलीप सिंह, स्टेशन अधिकारी मड़िहान, कांस्टेबल नामवर सिंह और अन्य कार्मिकों ने आत्मरक्षा में और बदमाशों की गोलीबारी को नियंत्रित करने के लिए गोलीबारी की। इस गोलीबारी में, श्री दिलीप सिंह, उप निरीक्षक और कांस्टेबल नामवर सिंह गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। गोलियां लगने के बावजूद, श्री दिलीप सिंह और कांस्टेबल नामवर सिंह ने घेराबंदी को मजबूत करने तथा नक्सलवादी गुटों को परास्त करने के लिए अपने साथियों को प्रोत्साहित किया। इस संकट की घड़ी में दोनों ने अत्यधिक रक्तसा्व के बावजूद असाधारण साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया। श्री अविनाश चन्द्र, पुलिस अधीक्षक, मिर्जापुर ने तुरंत कार्रवाई की। उन्होंने भारी मात्रा में बल को इकट्ठा किया और स्वयं श्री देवेन्द्र कुमार चौधरी, अपर पुलिस अधीक्षक के साथ मुठभेड़ स्थल की ओर चल पड़े। उन्होंने डेढ़ घंटे के भीतर अपने वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित किया। भवानीपुर गांव की घेराबंदी मजबूत कर दी गई। गांव से लम्बी दूरी तक गोलियों की आवाज सुनाई देती थी। श्री अविनाश चन्द्र ने ऐसी विपरीत परिस्थिति में पूरे अभियान की योजना बनाई, नेतृत्व किया तथा उसे अंजाम दिया, जब दो पुलिसकर्मी पहले ही नक्सलवादी गुटों की गोलियों से गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उन्होंने अपने वाहन के माइक से गांव वालों को गांव से बाहर निकलने की उदघोषणा की। उनके द्वारा सुरक्षा का बार–बार मौखिक आश्वासन दिए जाने पर महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों सहित गांव वाले बाहर आ गए। उन्हें नजदीक से गुजर रही सूखी नहर में सुरक्षित स्थान पर रखा गया। परन्तु नक्सलवादी गुट पुलिस बलों को परास्त करने के लिए लगातार गोलीबारी करते रहे। श्री अविनाश चन्द्र, पुलिस अधीक्षक, मिर्जापुर, श्री वी.के. सिंह, महानिरीक्षक वाराणसी जोन, उप महानिरीक्षक, विंध्याचल रेंज, उप महानिरीक्षक वाराणसी रेंज और श्री अभय कुमार प्रसाद, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के नेतृत्व में विभिन्न दल बनाए गए। ये विभिन्न दल नक्सलवादी गुट के सदस्यों को परास्त और गिरफ्तार करने के लिए अलग–अलग दिशाओं से पूरे गांव को कवर करते हुए घर–घर की तलाशी अभियान के लिए सावधानीपूर्वक निकल पड़े।

पहले पुलिस दल का नेतृत्व श्री अविनाश चन्द्र द्वारा किया गया। इसमें अपर पुलिस अधीक्षक, मिर्जापुर, श्री देवेन्द्र कुमार चौधरी और उप निरीक्षक पन्ना लाल तथा अन्य कार्मिक शामिल थे। ये अधिकारी प्राकृतिक छिपने के स्थानों का सहारा लेकर रेंगकर

घरों की ओर बढ़ रहे थे। उन पर बमों से हमला किया गया तथा राइफलों और बंदूकों से गोलीबारी की गई। इस समय उन्होंने अपने हथियारों से गोलीबारी करके असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। श्री अविनाश चन्द्र, श्री देवेन्द्र कुमार चौधरी और उप निरीक्षक पन्ना लाल ने अपनी राइफलों से गोलीबारी की। इन तीनों अधिकारियों ने एक ओर से नक्सलवादी गुट के हमले को नियंत्रित करने के लिए साहस, बहादुरी और सर्वश्रेष्ठ नेतृत्व का प्रदर्शन किया। श्री विनोद कुमार सिंह, महानिरीक्षक, वाराणसी जोन ने नक्सलवादी गुट के सदस्यों की घेराबंदी, तलाशी और गिरफ्तारी करने के लिए पुलिस दल के साथ एक दल का नेतृत्व स्वयं किया। उन पर आग्नेयास्त्रों से अंधाधुंध गोलीबारी की गई। इस दल ने आत्मरक्षा में और गोलीबारी करने वाले गुट को नियंत्रित करने के लिए गोलीबारी की। वहां पर भीषण मुठभेड़ हुई। श्री सिंह ने सभी दलों को प्रोत्साहित किया और वे अन्तिम रूप से सफल अभियान के लिए हर समय मौजूद रहे। पूरे अभियान के मुख्य योजनाकार वही थे। उप महानिरीक्षक विंध्याचल रेंज ने एक ओर से घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाने के लिए एक दल का नेतृत्व किया। श्री अभय कुमार प्रसाद, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र ने घर–घर की तलाशी करने के लिए एक दल का नेतृत्व किया। जब उन पर गोलीबारी की गई, तो उन्होंने उच्च साहस का प्रदर्शन किया और पुलिस दल को परास्त करने से गुट को रोकने के लिए अपने दल का नेतृत्व किया। संपूर्ण अभियान लोगों की मौजूदगी में छह घंटे तक चला, जिसमें पूरा गांव घिर गया। इस अभियान में पंद्रह नक्सलवादी मारे गए।

बरामदगी :

1. 03 एसबीबीएल गन, 11 जिंदा कारतूस और 12 बोर के 33 खाली खोखे।
2. 02 डीबीबीएल गन, 05 जिंदा कारतूस और 12 बोर के 24 खाली खोखे।
3. 03 देशी पिस्तौल, 06 जिंदा कारतूस और 12 बोर के 16 खाली खोखे।
4. 02 देशी पिस्तौल, 03 जिंदा कारतूस और .315 बोर के 11 खाली खोखे।
5. 02 राइफलें, 08 जिंदा कारतूस और .303 बोर के 50 खाली खोखे।
6. 01 राइफल, 03 जिंदा कारतूस और .315 बोर के खाली खोखे।
7. 02 साकेट बम।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विनोद कुमार सिंह, पुलिस महानिरीक्षक, अविनाश चन्द्र, पुलिस अधीक्षक, अभय कुमार प्रसाद, पुलिस अधीक्षक, देवेन्द्र कुमार चौधरी, अपर पुलिस अधीक्षक, दिलीप सिंह, उप निरीक्षक और (स्वर्गीय) पन्ना लाल, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.03.2001 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 136–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	सुवेन्द्र कुमार भगत, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
02.	विजय भूषण, अपर पुलिस अधीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक का तृतीय बार)
03.	सत्येन्द्र सिंह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अपने शिष्टाचार के लिए विख्यात वाले लखनऊ शहर में उस समय सभ्यता का अजीबो–गरीब पतन देखा गया, जब श्रीमती मेहर और श्री लव भार्गव (कांग्रेस पार्टी के प्रसिद्ध नेता) की पुत्रवधू का सरेआम शीलभंग किया गया और जब छेड़खानी के प्रयास का श्रीमती मेहर भार्गव द्वारा विरोध किया गया तो, निर्दयी अपराधी ने गोली से क्रूरतापूर्वक इसका जवाब दिया, जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई। तथापि, अपराधी उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्य भागों में कानून का उपहास करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा घोषित 50,000/– रू. के इनाम के बावजूद पहुंच से दूर रहा। राजधानी में काफी राजनैतिक हंगामा और प्रदर्शन हुए। खूंखार अपराधी के त्रिवेणी नगर से सीतापुर की ओर जाने की सूचना प्राप्त हुई। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए अपराधी को पकड़ने की कार्य–योजना तैयार की गई जिसमें दो दलों का गठन किया गया, एक दल को एसएसपी एसटीएफ श्री एस.के. भगत, अपर पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ श्री विजय भूषण के अधीन बिठोली तिराहे पर तथा दूसरे दल को एसएसपी लखनऊ श्री आशुतोष पाण्डे के अधीन सीतापुर रोड पर एचआईएम सिटी में तैनात किया गया।

20.05.2006 की सुबह 5.30 बजे अपराधी और उसके तीन साथी दो मोटरसाइकिलों पर मोहिबुल्लापुर से आते हुए दिखाई दिए। श्री आशुतोष पाण्डे ने अपने दल के साथियों के साथ एचआईएम सिटी में उन्हें रोकने का प्रयास किया, परन्तु अपराधियों ने उसका जवाब श्री पाण्डे पर गोलीबारी करके दिया जिसमें वे बाल–बाल बच गए। श्री भगत और श्री भूषण ने दल के अन्य साथियों के साथ डिवाइडर के दूसरी ओर से अपराधियों का पीछा किया। पीछा करने के दौरान अपराधियों की एक मोटर साइकिल फिसल गई और भयभीत अपराधियों ने श्री भगत और श्री भूषण तथा कमाण्डो सत्येन्द्र सिंह, जो उस समय अपराधियों को पकड़ने के लिए लगभग उनके नजदीक पहुंच गए थे, पर गोली चलाई। फिसलकर गिरने वाले तथा दूसरी मोटर साइकिल पर भागने वाले अपराधियों की भीषण गोलीबारी से श्री भगत और श्री भूषण तथा कमाण्डो सत्येन्द्र सिंह बीच में ही फंस गए। भगवान की कृपा से अपराधियों द्वारा चलाई गई कोई भी गोली श्री भगत और श्री भूषण तथा कमाण्डो सत्येन्द्र सिंह को नहीं लगी। तथापि, पुलिस दल ने अपनी जान की परवाह किए बगैर पीछा करना जारी रखा। पुलिस द्वारा उनको दी जा रही चेतावनी को अनसुना करने और अपराधियों की ओर से गोलीबारी तेज हो जाने पर, श्री पाण्डे, श्री भगत और श्री भूषण तथा दल के अन्य साथियों के पास डिवाइडर और वाहन के पीछे आड़ लेकर जबाबी गोलीबारी करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। जब गोलीबारी बंद हुई, तो तीनों अधिकारी तथा उनके दल के साथी सावधानीपूर्वक घायल अपराधियों के पास पहुंचे, उस समय एक अपराधी ने दुबारा गोली चलाई जो, श्री पाण्डे के बगल से निकल गई। रणकौशल का प्रयोग करते हुए सधी हुई जवाबी गोलीबारी से अंततः वांछित अपराधी तथा उसके साथी को मार गिराया गया। बाद में उनकी पहचान अमित उर्फ सचिन पहाड़ी और विकास कन्नौजिया के रूप की गई। इस सरेआम आमने–सामने की भीषण मुठभेड़ में श्री भगत, पाण्डे और विजय भूषण ने अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया। निरीक्षक बृज किशोर सिंह, कांस्टेबल उसमान खान और कमाण्डो सत्येन्द्र सिंह ने भी अपनी जान की परवाह किए बगैर अपराधियों पर गोलीबारी की।

की गई बरामदगी :

01. .315 बोर के कारतूसों और खाले खोखे के साथ एक देशी पिस्तौल।

02. 32 बोर के कारतूसों और खाली खोखे के साथ एक देशी पिस्तौल।

03. एक मोटर साइकिल।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुवेन्द्र कुमार भगत, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, विजय भूषण, अपर पुलिस अधीक्षक और सत्येन्द्र सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का तृतीय बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20.05.2006 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 137–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. गिरजा शंकर त्रिपाठी,
उप निरीक्षक

02. विजय प्रताप सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सतेन्द्र तिवारी एक कुख्यात अपराधी था, जिस पर राज्य पुलिस ने 50,000/– रु. के इनाम की घोषणा कर रखी थी। श्री गिरजा शंकर त्रिपाठी, उप निरीक्षक, प्रभारी एसओजी वाराणसी को अपराधी सतेन्द्र तिवारी के बारे में सूचना प्राप्त हुई, जो क्वालिस गाड़ी में शहर में आने वाला था, वे तत्काल हरकत में आ गए और दिनांक 11.02.2009 को अपने दल को इकट्ठा किया तथा अपराधी को पकड़ने के लिए रणनीति तैयार की और इसे निष्पादित करने के लिए दो दलों का गठन किया। उनके प्रभार के अधीन एक दल तथा दूसरा दल एक अन्य उप निरीक्षक के अधीन निकल पड़ा। श्री गिरजा शंकर त्रिपाठी के नेतृत्व में एक दल मोहन सराय बाई–पास पर पहुंचा और दूसरा दल अमरा–अखरी क्रासिंग पर पहुंचा तथा क्वालिस गाड़ी के आने का इंतजार करने लगा। एक हरे रंग की क्वालिस गाड़ी लगभग 12.35 बजे इलाहाबाद की ओर से मोहन सराय बाई–पास की तरफ आती हुई दिखाई दी जिसे गिरजा शंकर त्रिपाठी, प्रभारी, एसओजी ने रुकने के लिए इशारा किया लेकिन इसके बजाय उपर्युक्त गाड़ी में सवार लोगों ने स्पीड बढ़ा दी और इसे मुगलसराय की ओर मोड़ दिया। प्रभारी एसओजी ने तुरंत रणनीतिक ढंग से उक्त गाड़ी का पीछा किया, परन्तु अपराधी, जो उक्त संदिग्ध गाड़ी में अकेले सवार था, ने पीछा कर रहे पुलिस दल पर गोलिया चलाईं, जो सरकारी बोलेरो गाड़ी से टकराई तथा इसे क्षतिग्रस्त कर दिया और पुलिस दल संयोग से बच गया और प्रभारी एसओजी ने दूसरे दल को सतर्क कर दिया तथा वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित कर दिया। प्रभारी, एसओजी उस अपराधी की लगातार आक्रामक गोलीबारी से विचलित हुए बगैर निकट दूरी से उनका पीछा करते रहे और जब वह अपराधी अमरा–अखरी क्रासिंग के नजदीक पहुंचा, जहां दूसरा पुलिस दल उसे रोकने के लिए

पहले से ही सतर्क था, पुलिस दल को आगे देखते ही, अपराधी ने अपनी क्वालिस गाड़ी को तेजी से शहर की ओर मोड़ दिया और प्रभारी एसओजी ने सावधानीपूर्वक वाहन पर गोली चलाई, जो इस पर टकराई और क्वालिस गाड़ी अनियंत्रित हो गई तथा सड़क के नजदीक नाले में घुसकर रुक गई। मारने के लिए पुलिस दल पर लगातार गोलीबारी करते हुए अपराधी गाड़ी से बाहर निकला और इसके पीछे पोजीशन ले ली। प्रभारी, एसओजी और पुलिस दल भी सावधानीपूर्वक पुलिस वाहनों से बाहर आ गए और उनके पीछे पोजीशन ले ली और अपराधी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, परन्तु इसके बजाय उसने अपनी गोलीबारी और तेज कर दी तथा एक गोली प्रभारी, एसओजी को लगी जो उनके द्वारा पहनी हुई बुलेटब्रूफ जैकेट में घुस गई और वे संयोगवश बच गए।

प्रभारी, एसओजी ने इस 'करो या मरो' की स्थिति में अपराधी के हमले से बिना डरे, पुलिस दल को प्रोत्साहित किया तथा अपराधी के विरूद्ध लड़ाई शुरू कर दी जो पुलिस दल को मारने के इरादे से सामने से लगातार गोलीबारी कर रहा था और फिर भी प्रभारी, एसओजी ने श्री विजय प्रताप सिंह, कांस्टेबल के साथ अनुकरणीय साहस एवं वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया और उन्होंने अपनी जान का अत्यधिक व्यक्तिगत जोखिम उठाते हुए, अपनी जगह छोड़ दी और अपराधी को जिंदा पकड़ने के स्पष्ट इरादे से आगे बढ़ गए और आत्मरक्षा में नियंत्रित गोलीबारी करते हुए अपराधी को चुनौती दी, जिसके कारण अपराधी घायल होकर नीचे गिर गया और उसकी मृत्यु हो गई जिसकी पहचान उक्त कुख्यात अपराधी सतेन्द्र तिवारी उर्फ रिंकू के रूप में की गई।

बरामदगी :

1. खाली कारतूसों के साथ एक फैक्टरी निर्मित .9एमएम बोर की पिस्तौल।

2. खाली कारतूसों के साथ एक फैक्टरी निर्मित .32एमएम बोर की पिस्तौल।

3. अपराधी द्वारा कार्रवाई में प्रयोग की गई एक क्वालिस गाड़ी सं. यूपी–32/एक्स–6558

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री गिरजा शंकर त्रिपाठी, उप निरीक्षक और विजय प्रताप सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.02.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 138–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. नवीन अरोरा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

02. शैलेश प्रताप सिंह, उप निरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यू पी एसटीएफ को गैंगस्टर आशुतोष राय और अजय सिंह, जो वर्ष 2003 में न्यायिक हिरासत से भाग गए थे और जिनमें से प्रत्येक पर 50,000/– रु. का इनाम था, को पकड़ने का कार्य सौंपा गया था।

दिनांक 26.04.2010 को लगभग अपराह्न 12.30 बजे श्री नवीन अरोरा, एसएसपी एसटीएफ को कार्रवाई करने योग्य एक आसूचना प्राप्त हुई कि गैंगस्टर आशुतोष राय और अजय सिंह अपने सहयोगियों के साथ अत्याधुनिक हथियारों की डील करने के लिए एक सनी निसान कार सं. 17 सीडी एएफ में एक्सप्रेस हाई–वे नोएडा पर इकट्ठे हो रहे हैं। श्री अरोरा ने तुरंत बल को तीन दलों में बांट दिया और इसके बारे में जानकारी प्रदान की। वे जल्दी से उस स्थान की ओर गए, संदिग्ध वाहन को पहचाना और इसे रोकने की कोशिश की, जिस पर उन्होंने गोलियां चला दीं। अपराधियों की एक गोली ने नवीन अरोरा को निशाना बनाया, जो संयोगवश उन्हें नहीं लगी। वे वाजिदपुर भूमिगत रास्ते की ओर भाग गए। एसएसपी नवीन अरोरा के निर्देश पर उनका ड्राइवर गढ़ी गांव के नजदीक सर्विस लेन में खतरनाक ढंग से तेजी से मुड़ते हुए उनसे आगे निकल गया। उक्त कार एक ट्री गार्ड से टकरा गई क्योंकि ड्राइवर का वाहन से नियंत्रण हट गया था। अचानक ड्राइवर की तरफ से एक गोली आई और यह गोली टवेरा की खिड़की में लगी, श्री अरोरा स्वयं को बचाने के लिए नीचे झुक गए। अपराधियों ने पुलिस दल को मारने के इरादे से उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री नवीन अरोरा, एसएसपी, एसटीएफ और उप निरीक्षक शैलेश प्रताप सिंह ने अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए अपनी सुरक्षा और संरक्षा की परवाह किए बगैर अनुकरणीय साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया। जब वे बिना आड़ के आगे चल रहे थे, तब उनकी बुलेट प्रूफ जैकेट में गोली लगी। एसएटीएफ दल के पास आत्मरक्षा में गोलीबारी करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा था। परस्पर गोलीबारी में अजय और आशुतोष घायल हो गए और अस्पताल ले जाते समय उनकी मृत्यु हो गई।

नवीन अरोरा के नेतृत्व में एसटीएफ दल ने अपनी जान की परवाह किए बिना अत्यधिक संगठित जवाबी कार्रवाई के दौरान तनावपूर्ण और विपरीत परिस्थितयों में सूझ–बूझ के साथ और निडरता से वीरतापूर्ण कार्रवाई की।

की गई बरामदगी :–

(क)	कारबाइन	–	01
(ख)	जिंदा कारतूस	–	03
(ग)	9 एमएम के खाली खोखे	–	09
(घ)	9 एमएम पिस्तौल	–	01
(ङ)	पिस्तौल	–	01
(च)	.32 बोर के जिंदा कारतूस	–	04

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री नवीन अरोरा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और शैलेश प्रताप सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.04.2010 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 139–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रेशम पाल सिंह,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अक्तूबर, 2014 में, भारत–पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा पर जम्मू के अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्रों में सीमा सुरक्षा बल की 86वीं बटालियन तैनात की गई थी।

दिनांक 06/07 अक्तूबर, 2014 की मध्य रात्रि में, पाकिस्तान की सभी सीमा चौकियों ने सीमा सुरक्षा बल की 86वीं बटालियन की सभी सीमा चौकियों और सीमावर्ती गांवों पर बीएमजी/यूएमजी/एचएमजी/मोर्टर से अकारण भारी गोलीबारी की, जिसका हमारे सैन्य बलों ने 81एमएम मोर्टर/51एमएम मोर्टर/एमएमजी/एलएमजी/एजीएस/सीजीआरएल का उपयोग करके जवाब दिया।

दिनांक 07/08 अक्तूबर, 2014 की मध्य रात्रि में, कंपनी कमांडर ने एएसआई (जीडी) रेशम पाल सिंह को उनके व्यापक अनुभव, व्यावसायिक क्षमता और सीमा चौकी की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए सीमा चौकी (बीओपी) मालाबेला, पूर्व–86 बटालियन, बीएसएफ के नाका संख्या 6 से 10 के नाका कमांडर के रूप में तैनात किया।

लगभग 2000 बजे, अचानक हमारी सीमा चौकियों और सीमावर्ती गांवों को निशाना बनाते हुए पाकिस्तान की ओर से ऑटोमेटिक बन्दूकों और मोर्टर से अकारण भारी गोलीबारी शुरू हो गई। नाका कमांडर, एएसआई (जीडी) रेशम पाल सिंह ने तुरंत वास्तविक स्थिति का आकलन किया और नाका संख्या 6 को 5.56 एमएमआई एनएसएएस (इंसास) एलएमजी और एजीएल से गोलीबारी करने का निर्देश दिया। वे स्वयं एक नाका से दूसरे नाका पर जाते रहे और प्रतिपक्ष की ओर से भारी गोलीबारी के बीच उन्हें विफल करने के लिए अपने सैनिकों को जवाबी कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे।

दोनों ओर से भारी गोलीबारी के दौरान, लगभग 2045 बजे एएसआई (जीडी) रेशम पाल सिंह को उनकी छाती के दाहिनी ओर गोली लगी। अनुकरणीय साहस और मैत्रीभाव का प्रदर्शन करते हुए, वे गोलीबारी जारी रखने तथा प्रतिपक्ष पर और अधिक दवाब बनाने के लिए अपने सैनिकों को प्रेरित करते रहे। प्रत्येक नाका पर मात्र उनकी उपस्थिति ही सैनिकों को वीरतापूर्ण लड़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। दोनों ओर से गोलीबारी 2300 बजे तक जारी रही। बाद में एएसआई (जीडी) रेशमपाल सिंह को जीएमसी, जम्मू ले जाया गया।

एएसआई (जीडी) रेशम पाल सिंह ने गोलियों से घायल होने के बावजूद प्रतिपक्ष की गोलीबारी का जवाब देने के लिए अपने सैनिकों को लगातार प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने लड़ाई लड़ने का साहस, उच्च स्तरीय बहादुरी और अनुकरणीय नेतृत्व गुण का प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप विरोधी को उचित जवाब दिया गया और उन्हें युद्धविराम के लिए मजबूर किया गया।

इस कार्रवाई में श्री रेशम पाल सिंह, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 07.10.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 140—प्रेज/2015——राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अमर पाल सिंह,
हेड कांस्टेबल/ड्राइवर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीएसएफ की 151वीं बटालियन, कश्मीर फ्रंटियर के अंतर्गत निशात (जम्मू एवं कश्मीर) में अपनी बटालियन मुख्यालय के साथ नियंत्रण रेखा पर तैनात है।

151 और 59 बटालियन, बीएसएफ की कंपनियों सहित विभिन्न बटालियनों की कंपनियों वाली एक तदर्थ के—2 बटालियन श्री अमरनाथ जी यात्रा ड्यूटी पर तैनात थी। दिनांक 11 अगस्त, 2014 को, उक्त ड्यूटी के समाप्त होने पर 59 बटालियन की कंपनी पंथाचौक में बीएसएफ मुख्यालय आ रही थी। सैन्य दलों और भंडार को पांच वाहनों में ले जाया जाना था, जिनमें दो भारी वाहन (5 टन), दो टाटा—407 और मिनी बस (स्वराज माजदा) शामिल थी।

सैन्य दलों और भंडारों को ले जाने वाले वाहन श्री बिशन लाल, सहायक कमांडेंट की कमान में लगभग 1915 बजे चंदनवाड़ी से चले। ऑपरेशनल और सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए रात्रि में आवाजाही की योजना बनाई गई। पार्टी कमांडर, श्री बिशन लाल, रक्षा दल के सबसे पीछे वाले वाहन अर्थात पंजीकरण सं. डब्ल्यू बी—23ए—1558 वाली मिनी बस में थे, जिसे कांस्टेबल प्रकाश चन्द्र, 151 बटालियन, बीएसएफ के साथ हेड कांस्टेबल (ड्राइवर) अमर पाल सिंह चला रहे थे।

लगभग 2200 बजे जब रक्षा दल राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्टेडियम के निकट पमपौर नगर क्षेत्र में पहुंचा, तो मिनी बस पर बाईं ओर से, जिस ओर स्टेडियम था, उग्रवादियों के स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध भारी गोलीबारी हुई, जिसके कारण श्री किशन लाल, सहायक कमांडेंट, हेड कांस्टेबल (ड्राइवर) अमर पाल सिंह और मिनी बस में 59 बटालियन, बीएसएफ के अन्य 7 कर्मी गोलियां लगने से घायल हो गए।

हेड कांस्टेबल (ड्राइवर) अमर पाल सिंह के कूल्हे पर चोट लगी जहां से काफी खून निकल रहा था, लेकिन अपनी चोट की परवाह न करते हुए हेड कांस्टेबल (ड्राइवर) ने उच्च स्तर के कौशल ओर सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए वाहन की गति बढ़ाई और 15 मिनट से कम समय में परिसर पहुंच गए। सभी घायल कर्मियों को बीएसएफ अस्पताल, पंथाचौक में प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने के बाद 92 बेस अस्पताल, श्रीनगर भेज दिया गया।

हेड कांस्टेबल (ड्राइवर) अमर पाल सिंह ने अपनी व्यक्तिगत जान की परवाह न करते हुए सूझ—बूझ, धैर्य और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन किया, जिसके कारण उन आठ अधिकारियों की बहुमूल्य जानों को बचाना संभव हो सका, जो गोलियां लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

इस कार्रवाई में श्री अमर पाल सिंह, हेड कांस्टेबल/ड्राइवर ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 141—प्रेज/2015——राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री श्री कृष्ण,
हेड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीएसएफ की 192वीं बटालियन, जम्मू फ्रंटियर के अंतर्गत अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्रों में भारत—पाक अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर तैनात है।

दिनांक 22/23 अगस्त, 2014 की मध्य रात्रि में लगभग 0035 बजे पाकिस्तान की जरवाल और पीएच—5 चौकियों ने हताहत करने के लिए 192वीं बटालियन की सीमा चौकियों (बीओपी) और सीमावर्ती गांवों को लक्ष्य बनाते हुए राइफल/यूएमजी/एचएमजी और

मोर्टर जैसे स्वचालित हथियारों से भारी मात्रा में अकारण गोलीबारी की। हमारे सैन्य दलों ने उचित तरीके से शत्रु की गोलीबारी का जवाब दिया।

संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, हेड कांस्टेबल श्री कृष्ण को 51 एमएम मोर्टर के साथ सीमा चौकी (बीओपी), छावनी पर तैनात किया गया था। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सीमा के काफी निकट पाक रेंजर्स की गतिविधि देखी और हमारे सैन्य दलों को हताहत करने के उनके गुप्त इरादे का सही–सही अनुमान लगाया। वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना भारी गोलीबारी के बीच तुरंत बंकर से बाहर आए और 51 एमएम मोर्टर से प्रभावी गोलीबारी में उन्हें उलझा दिया।

दोनों ओर से भारी गोलीबारी के दौरान हेड कांस्टेबल श्री कृष्ण बांए पैर में घुटने के नीचे स्पिलंटर लगने से घायल हो गए। अत्यधिक खून बहने के बावजूद उन्होंने अनुकरणीय साहस और मैत्रीभाव का प्रदर्शन करते हुए विरोधी को उलझाए रखा, जिसने शत्रु की सैन्य दलों को हताहत करने के उनके खतरनाक इरादे को छोड़ने पर मजबूर कर दिया। हेड कांस्टेबल श्री कृष्ण ने 51 एमएम मोर्टर से 8 एचई बम फायर किए । कार्य पूर्ण होने के बाद, वे सीमा चौकी छावनी आए जहां से उन्हें सरकारी मेडिकल कालेज एवं अस्पताल, जम्मू भेजा गया।

हेड कांस्टेबल श्री कृष्ण ने अपना पैर स्पिलंटर से घायल होने के बावजूद उच्च स्तरीय बहादुरी, युद्ध के साहस और मैत्रीभाव का प्रदर्शन करते हुए 51 एमएम मोर्टर की प्रभावी गोलीबारी से शत्रु को उलझाए रखा जिसके कारण शत्रु को अपने कपटपूर्ण इरादे का परित्याग करना पड़ा और इस प्रकार सैन्य दलों और ग्रामवासियों की बहुमूल्य जानों को बचाया जा सका।

इस कार्रवाई में श्री श्री कृष्ण, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 142–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संजय धर (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

बीएसएफ की 192वीं बटालियन जम्मू फ्रंटियर के अंतर्गत भारत–पाक अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर अति संवदेनशील क्षेत्रों में तैनात है।

दिनांक 16 जुलाई, 2014 को लगभग 1130 बजे पाकिस्तान रेंजर्स ने छोटे हथियारों, यूएमजी और एचएमजी जैसे स्वचालित हथियारों से पाक चौकी जरवाल और पम्प हाउस–5 से हमारी सीमा चौकी पित्तल पर अकारण गोलीबारी आरंभ कर दी। उस समय सीमा चौकी पित्तल पर उपलब्ध सभी कार्मिक डीआईजी, जम्मू क्षेत्र के दौरे के कारण स्टैंड–टू की स्थिति में थे। कांस्टेबल सोमराज, जो सीमा चौकी के अंदर स्थित 80 फुट ऊंचे ओपी टावर पर डयूटी कर रहे थे, को पाक रेंजर्स ने लक्ष्य बनाया। यद्यपि कांस्टेबल सोमराज ने बुलेट–प्रूफ जैकेट पहनी हुई थी, फिर भी गोली उनके बांए कंधे पर बुलेट प्रूफ जैकेट के बिल्कुल ऊपर लगी। गोली से गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, उन्होंने पाक गोलीबारी का जवाब दिया और इसके साथ ही मदद के लिए आवाज लगाई।

मदद के लिए आवाज सुनने पर, सहायक उप निरीक्षक मदन लाल और कांस्टेबल (वाशर मैन) संजय धर भारी गोलीबारी के बीच और अपनी स्वयं की जान की परवाह न करते हुए कांस्टेबल सोमराज को बचाने के लिए ओपी टावर की ओर दौड़े। लेकिन दुर्भाग्यवश बचाने की प्रक्रिया के दौरान सहायक उप निरीक्षक मदन लाल और कांस्टेबल (वाशर मैन) संजय धर पाक रेंजर्स की भारी गोलीबारी के बीच आ गए। सहायक उप निरीक्षक मदन लाल को उनकी कमर पर गोली लगी और कांस्टेबल (वाशर मैन) संजय धर को छाती पर गोली लगी। कांस्टेबल (वाशर मैन) संजय धर जमीन पर गिर गए। लेकिन गिरने से पहले, उन्होंने कांस्टेबल सोमराज को सुरक्षित रूप से पास की एक बैरक तक पहुंचाया।

इसी बीच, निरीक्षक मदन लाल, कार्यवाहक कंपनी कमांडर ने भी बाड़ और अगले समूह (बंच) के बीच पोजीशन संभाल ली, स्थिति को समझा और सैन्य दलों को जवाबी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। इस दौरान घुटने के ठीक ऊपर उनके भी बांए पैर में गोली लगी।

सभी घायल कार्मिकों को यूनिट अस्पताल भेजा गया और इसके बाद जीएमसी एंड एच, जम्मू भेजा गया, जहां कांस्टेबल संजय धर को मृत लाया गया घोषित कर दिया गया।

दोनों ओर से हुई इस गोलीबारी के दौरान, कांस्टेबल (वाशरमैन) संजय धर ने धैर्य और कड़े साहस का प्रदर्शन किया। वे पहले और सर्वप्रमुख व्यक्तियों में से थे, जो कांस्टेबल सोमनाथ को बचाने के लिए ओपी टावर की ओर दौड़े थे। यद्यपि उनका मूल्य कर्तव्य युद्ध की स्थिति में शामिल होना नहीं था, फिर भी उन्होंने वीरता और साहस का उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वर्गीय कांस्टेबल

(वाशरमैन) संजय धर द्वारा समय पर किए गए हस्तक्षेप और उनके द्वारा प्रदर्शित साहस से उनकी अपनी जान की कीमत पर कांस्टेबल सोमराज की जान बचाना संभव हो सका।

इस कार्रवाई में (स्वर्गीय) श्री संजय धर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 143—प्रेज/2015——राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. राजन सिंह,
उप कमांडेंट

02. बबलू कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस अधीक्षक ईस्ट गारो हिल्स से एक अत्यधिक विश्वसनीय गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि जीएनएलए के भारी हथियारबंद कैडरों ने दुरामा हिल रेंज में गांव जिंगमग्रे, रोंगचेकग्रे और मंडलग्रे बंदिग्रे के निकट 03 सामान्य शिविर स्थापित कर लिए हैं। सोहन डी. शीर, सी—इन—सी, जीएनएलएफ का शिविर भी पुलिस स्टेशन विलियम नगर, जिला ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय के अंतर्गत दुरामा रेंज में अदुग्रे, जेट्राग्रे और जिगमग्रे के बीच स्थित था! यह सूचना भी मिली थी कि वही जीएनएलए के लगभग 150 नए रंगरूट और उल्फा के 20 नए रंगरूट हैं जिन्हें एक सामान्य शिविर में वरिष्ठ जीएनएलए और उल्फा कॉडरों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पुलिस महानिरीक्षक, एनईएस, सीआरपीएफ और पुलिस महानिरीक्षक (ऑपरेशन) मेघालय पुलिस के परामर्श से श्री जोसफ किशिंग, कमांडेंट—210 कोबरा और पुलिस अधीक्षक, ईस्ट गारो हिल्स ने "औपरेशन हिलस्टार्म" नामक विस्तृत अभियान की योजना बनाई। योजना के अनुसार, सम्पूर्ण अभियान कोबरा और मेघालय पुलिस के स्वाट कमांडो के 03 हमला दलों और 07 कट—ऑफ दलों द्वारा किया जाना था जिसकी अन्य राज्य और केन्द्रीय बलों द्वारा मदद की जानी थी।

योजना के अनुसार, श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट की कमांड में स्वाट कमांडों के एक दल के साथ डी एंड ई कंपनी, 210 कोबरा के दल नं. 10, 13 और 15 वाले हमला दल सं. 01 को अदुग्रे गांव में जीएनएलए के सोहन—डी. शीरा, सी—आई—सी के शिविर पर धावा बोलने का कार्य सौंपा गया था। सैन्य दल दिनांक 08.07.2014 को लगभग 2300 बजे बेस कैंप से चले और सिमसांग नदी तक वाहन का उपयोग किया। सिमसांग पुल को पार करने के बाद, सैन्य दल पैदल चले और सम्पालग्रे, खाकबाग्रे, रोंगबोकग्रे और नोबोकग्रे तथा सोबाकग्रे बाई पास के रास्ते पर चले। अनेक ऊंची—नीची पहाड़ियों, नदी नालों, घने जंगल और सभी बाधाओं को पार करने के बाद, सैन्य दल कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 10.07.2014 को 1600 बजे बीएआरवी पहुंचे। दिनांक 11.7.2014 की सुबह, सैन्य दल प्रातः लगभग 0510 बजे बीएआरवी से चले। आपरेशन कमांडर, श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट ने आदेश दिया कि दल सं. 15 और स्वाट लक्ष्य पर हमला करेंगे और बायां कट—ऑफ श्री देशराज मीणा, सहायक कमांडेंट की कमांड में दल सं. 10 और दल सं. 13 के भाग—2 द्वारा किया जाएगा, जबकि दायां कट—ऑफ उप निरीक्षक/जीडी, राजू यादव की कमांड में दल सं. 13 के भाग 01 द्वारा किया जाएगा। जब सभी कट—ऑफ लगा दिए गए तब श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट की कमांड में दल सं. 15 और स्वाट वाला हमला दल धीरे—धीरे लक्ष्य की ओर बढ़ा। लगभग 0615 बजे जब सैन्य दल लक्ष्य से लगभग 110 मीटर की दूरी पर था, तो स्काउटों ने हथियारों के साथ कुछ विद्रोहियों के बारे में हाथ से सिग्नल दिया। आपरेशन कमांडर ने अपने सैन्य दल को और सतर्क किया और रेंगकर आगे बढ़े। ऑपरेशन कमांडर ने देखा कि वहां 02 झोपड़ियां है और 01 झोपड़ी में एक व्यक्ति खाना बना रहा है, जबकि दूसरा व्यक्ति जलधारा में अपना चेहरा धो रहा था और दोनों व्यक्ति हथियारबंद थे। आपरेशन कमांडर राजन सिंह, उप कमांडेंट की कमांड में दल सं. 15 बायीं ओर से चला और श्री चाको उप पुलिस अधीक्षक की कमांड में स्वाट को हाथ के इशारे से दायीं ओर से हमला करने का निर्देश दिया। उसी समय उन्होंने कट—ऑफ को लक्ष्य के बायीं और दायीं ओर पोजीशन लेने का भी निर्देश दिया। लगभग 0630 बजे जलधारा में अपना चेहरा धोने वाले व्यक्ति को सैन्य दल की उपस्थिति के बारे में किसी तरह संदेह हो गया और धीरे—धीरे उस पहाड़ी की तरफ बढ़ा जहां खाना बन रहा था। कुछ ही सेकंड में तीन विद्रोही झोपड़ी से बाहर आए और सैन्य दल पर अंधाधुंध गोलीबारी आरंभ कर दी। ऑपरेशन कमांडर के आदेश पर सैन्य दल ने नियंत्रित तरीके से जवाबी कार्रवाई की, उनके साथी कांस्टेबल/जीडी बबलू कुमार ने लक्ष्य पर सटीक यूबीजीएल फायर किया। आपरेशन कमांडर ने अपने साथी के साथ अपनी जान की परवाह किए बिना विद्रोहियों की भारी गोलीबारी के बीच जल धारा के दूसरी ओर लक्ष्य की ओर रेंगना शुरू किया लेकिन विद्रोहियों की भारी गोलीबारी के कारण, आगे बढ़ना काफी कठिन हो गया। सैन्य दल की गोलीबारी और रेंगकर चलने वाले कार्मिकों के लगातार आगे बढ़ने के कारण, विद्रोहियों ने गोलीबारी जारी रखते हुए और पेडों तथा झाड़ियों का सहारा लेते हुए पहाड़ी के दायीं ओर अपनी पोजीशन

बदलना शुरू कर दिया। जल धारा के बीच में पहुंचने पर ऑपरेशन कमांडर राजन सिंह उप कमांडेंट ने झाड़ियों और पेड़ों के पीछे छिपे हुए विद्रोहियों पर गोली चलाई और एक विद्रोही की बायीं जांघ पर गोली मारी जो नीचे गिर गया। घायल विद्रोही ने सैन्य दल पर गोलीबारी करना जारी रखा, लेकिन श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट, 210 कोबरा बटालियन, श्री टी.सी. चाको, उप पुलिस अधीक्षक के साथ अपनी सटीक गोलीबारी से उसे निष्क्रिय करने में सफल रहे। गोलीबारी कम होने के बाद ऑपरेशन कमांडर ने पूरे टुरुप्स को 360 डिग्री में 120 डिग्री के वृतखण्ड में तीन भागों में बांटा और पूरे क्षेत्र की तलाशी ली और मारे गए विद्रोही से 05 एच.ई. मोर्टर बम, 01 आरपीजी बम, 09 एमएम के 13 राउंड, 14 डेटानेटर और आईईडी टाइमर सहित काक की हुई 7.62 एमएम की एक पिस्तौल, मैगजीन में 5 जिंदा राउंड और चैम्बर में एक राउंड के साथ पिस्तौल बरामद की गई। बाद में शव की पहचान स्वर्गीय तेंगसरांग एम. संगमा, सोहन डी. शीरा, सी–इन–सी, जीएनएलए के भतीजे और विश्वसनीय व्यक्तिगत सुरक्षा अधिकारी (पीएसओ) के रूप में की गई और उसे जीएनएलए का आईईडी विशेषज्ञ माना जाता था।

यह ऑपरेशन सिविलियन और हमारे सैन्य दल को किसी भी प्रकार की क्षति बिना पूरा किया गया। सम्पूर्ण युद्ध के दौरान, श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट, 210 कोबरा बटालियन ने आगे रहकर सैन्य दल का नेतृत्व किया और उत्कृष्ट कोटि के नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उनके साथी कांस्टेबल/जीडी बबलू कुमार ने भी उच्च कोटि के वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया। यद्यपि दोनों अधिकारियों की अपनी जानें काफी खतरे में थीं, फिर भी उन्होंने युद्ध का सामना किया और 01 खूंखार जीएनएलए विद्रोही को मार गिराया और भारी मात्रा में सामान बरामद किया।

की गई बरामदगी :–

- मैगजीन के साथ 7.65 एम एम पिस्तौल – 01
- 7.56 एमएम के जिंदा राउंड – 06
- 09 एम एम के जिंदा राउंड – 13
- 7.65 एमएम का खाली खोखा – 01
- एचई मोर्टर बम – 05
- आरपीजी बम – 01
- पिस्तौल होल्डर – 13
- 12 बोर की बंदूक के कारतूस – 185
- 12 बोर की बंदूक के खाली खोखे – 23
- तार सहित डेटोनेटर – 14
- आईईडी टाइमर – 07
- सर्किट – 18
- सर्किट प्रोटेक्टर – 02
- तांबे की रोल – 01

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री राजन सिंह, उप कमांडेंट एवं बबलू कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 144–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री शिंदे प्रशांत लक्ष्मण,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन मजबात, जिला उदलगुड़ी (असम) के अंतर्गत सोनाईरूपाई वन्य जीव अभ्यारण्य में 6–7 एनडीएफबी/एस (नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड/सोंगबिजीत) कैडरों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने पर, पुलिस अधीक्षक उदलगुड़ी और कमांडेंट, 210 कोबरा द्वारा संयुक्त रूप से तलाशी लेने एवं ध्वस्त करने के एक अभियान की योजना बनाई गई। विस्तृत योजना और ब्रीफिंग के पश्चात, दिनांक 24.3.2014 को लगभग 2230 बजे संयुक्त सैन्य दलों द्वारा अभियान आरंभ किया गया, जिसमें कोबरा का एक दल और छह असम पुलिस कर्मी शामिल थे। सैन्य दलों ने आरंभ में वाहनों का उपयोग किया और एक एकांत स्थान पर उतरने के बाद निवास स्थानों से बचते हुए रणनीतिक तरीके से लक्ष्य की ओर बढ़े। क्षेत्र में घनी हाथी घास थी और छिट–पुट बसी

हुई बस्तियां थीं। घना अंधेरा और कठिन क्षेत्र होने के बावजूद, सैन्य दल ने विस्मय की स्थिति बनाए रखी और लक्ष्य क्षेत्र के निकट पहुंच गए। क्षेत्र में प्रत्येक बस्ती की तलाशी लेने का निर्णय लिया गया। इस प्रक्रिया में, लगभग 0345 बजे जब सैन्य दल एक बस्ती नामतः बॉम्बे सेंटर के पास पहुंचे, तो कांस्टेबल/जीडी शिंदे प्रशान्त लक्ष्मण नामक स्काउट ने अपने नाइट विजन से बस्ती के पास वाले बगीचे में एक व्यक्ति की संदिग्ध गतिविधि को देखा। उन्होंने इसकी सूचना अपने आपरेशनल कमांडर मोहम्मद आरिफ, सहायक कमांडेंट को दी जिन्होंने आगे सभी सैन्य दलों को सतर्क कर दिया और विद्रोहियों को घेरने तथा उन पर हमला करने की रणनीति बनाई। उन्होंने अपने दल को दो भागों में बांटा, जिसमें से एक दल को बस्ती की ओर भेजा गया और दूसरे दल को बगीचे की ओर जाने और संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ने का कार्य सौंपा गया। संदिग्ध व्यक्ति एक मिनट तक बगीचे में रुकने के बाद आगे बढ़ा और पास के हाथी घास वाली झाडियों में घुस गया। दल उसके पीछे गया और जैसे ही दल ने बगीचे में प्रवेश किया, झाड़ी के अंदर से उनकी ओर अंधाधुंध गोलीबारी हुई। ऐसे अचरज और अचानक हमले के लिए तैयार दल ने जवाबी कार्रवाई की और काफी नजदीक से भीषण गोलीबारी आरंभ हो गई। दुर्भाग्यवश इस निकट की मुठभेड़ में 210 कोबरा के कांस्टेबल/जीडी शिंदे प्रशांत लक्ष्मण और 24 असम आईआर बटालियन के कांस्टेबल जयंत राय को गोली लग गई और वे घायल हो गए। अपने दायें हाथ और पेट में बायीं ओर गोली लगने के बावजूद कांस्टेबल/जीडी शिंदे प्रशांत लक्ष्मण बहादुरीपूर्वक रेंगकर पेड़ के पीछे गए और विद्रोहियों को उलझाए रखा। कहीं घनी झाड़ियों के अंदर छिपे विद्रोहियों पर हमला करने के लिए दूरी को और कम करना और उनकी सही–सही पोजीशन का पता लगाना आवश्यक था। लेकिन भारी गोलीबारी के बीच अच्छी पोजीशन लिए हुए शत्रु के और निकट जाने में जान को जोखिम था। शत्रु की गोलीबारी को नियंत्रित करना और कवर फायर के तहत आगे बढ़ना ही एक मात्र संभव तरीका था। कांस्टेबल/जीडी शिंदे प्रशांत लक्ष्मण ने दल अर्थात् स्काउट में अपनी पोजीशन के महत्व को समझा और अपनी चोटों को नजर अंदाज करते हुए कवर फायर के तहत आगे बढ़ने का निर्णय लिया। तेज दर्द और चारों ओर से आती गोलियों के बीच बहादुर सैनिक गोली चलने और आगे बढ़ने की रणनीति अपनाते हुए शत्रु की ओर आगे बढ़ा और हमला कर दिया। उनके भीषण हमले ने विद्रोहियों को अपनी रणनीति को दुबारा बनाने ओर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। बहादुर सैनिक का समर्पण और दृढ़ निश्चय ऐसा था कि जब उन्होंने यह पाया कि चोट के कारण अपने दाएं कंधे से गोली नहीं चला सकते, तो उन्होंने अपने बाएं कंधे का उपयोग किया लेकिन उन्होंने एक बार भी हमला बंद करने के बारे में नहीं सोचा। दल के अन्य सदस्यों की सम्यक सहायता से उनकी सटीक गोलीबारी के कारण घनी हाथी घास में कहीं छिपे विद्रोही टिक नहीं सके और अंधेरे तथा घनी हाथी घास का फायदा उठाकर भाग गए।

बाद में क्षेत्र की अच्छी तरह से तलाशी ली गई और सैन्य दलों ने 09एमएम की एक कारबाईन, कारबाईन की एक मैगजीन, 9एमएम गोलाबारूद को दो राउंड, एके–47 की 4 मैगजीने, 7.62x39 एम एम के 96 राउंड, 04 एचई ग्रेनेड, 03 एचई ग्रेनेड इग्नाइटर सेट, 7.62x39 एम एम का एक खाली खोखा। 04 मोबाइल सेट, 01 कमांडो चाकू, 03 एनडीएफबी/एस डिमांड लैटर, 2170/– रु. नकद के साथ बटुआ, मिरथिंगा बोरा के नाम से 01 पेन कार्ड, 03 डायरी, 03 मोबाइल चार्जर, कुछ जरूरी दवाईयां, 02 टैक्टिकल वेस्ट, 02 टैक्टिकल हैवरसैक और 07 सिमकार्ड बरामद किए गए।

कांस्टेबल/जीडी शिंदे प्रशांत लक्ष्मण यद्यपि आरंभिक गोलीबारी में घायल हो गए थे, लेकिन वे अपने दर्द और बहते खून की परवाह न करते हुए विद्रोहियों की ओर आगे बढ़े। सम्पूर्ण अभियान के दौरान, उन्होंने अग्रिम पंक्ति में विशिष्ट ऑपरेशनल दक्षता के साथ अनुकरणीय साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया। यद्यपि वे गंभीर रूप से घायल थे और घोर संकट में थे, तथापि, ऐसी स्थिति में भी उनकी तत्काल कार्रवाई से न केवल उनके साथियों की जान बची बल्कि शत्रु भी भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद छोड़कर अपनी अच्छी पोजीशन से जान बचाकर भागने के लिए मजबूर हो गए।

इस मुठभेड़ में श्री शिंदे प्रशांत लक्ष्मण, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.03.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 145–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुरेश कुमार,
सहायक कमांडेंट

02. के. वैंकटाचलम,
कांस्टेबल

03. खोट सागर रामचन्द्र,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 01.07.2014 को पुलिस स्टेशन मेंधीपाथर, जिला नॉर्थ गारो हिल्स (मेघालय) के अंतर्गत गांव रोंगामिन्ची के निकट बोलसाल एडिंग की एक पहाड़ी की चोटी पर जीएनएलए के विद्रोहियों के पड़ाव डालने के बारे में पुलिस अधीक्षक, नॉर्थ गारो हिल्स से एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार अपर पुलिस अधीक्षक नॉर्थ गारो हिल्स और श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, 120 बटालियन, सीआरपीएफ द्वारा एक संयुक्त अभियान की योजना बनाई गई। सीआरपीएफ के 20 कर्मियों और एसडब्ल्यूएटी के 16 कर्मियों वाले संयुक्त दल को योजना और बेस कैम्प में उनके कमांडरों द्वारा इसे निष्पादित करने के बारे में बताया गया और संयुक्त दल दिनांक 02.07.2014 को 2355 बजे अभियान के लिए निकला। लुक–छिपकर क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सैन्य दल ने सिविल पद्धति के वाहनों का उपयोग किया और लक्ष्य से 6 किमी. पहले एक एकांत स्थान पर उतर गए। वहां से वे युक्तिपूर्वक पैदल चले। घने अंधेरे और नदियों को पार करते हुए कठिन जंगल क्षेत्र में रातभर चलने के बाद सैन्य दल दिनांक 03.07.2014 को 0400 बजे संदिग्ध स्थल के पास पहुंच गया। संदिग्ध शिविर घने जंगल और अपनी दिन–प्रतिदिन की जरुरतों को पूरा करने के लिए पास की झोपड़ियों से घिरे एक ऊंचे मैदान पर स्थित था। क्षेत्र का सर्वेक्षण करने के बाद, शिविर को दो दिशाओं से निशाना बनाने का निर्णय लिया गया। शिविर पर हमला करने के लिए सीआरपीएफ और एसडब्ल्यूएटी के दो दल बनाए गए। सीआरपीएफ के दल का नेतृत्व श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट कर रहे थे। जैसे ही भोर हुई, श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में हमला दल युक्तिपूर्वक लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ा। यह जानते हुए कि इस प्रकार के कदम में उनकी जान को खतरा है, वे अच्छी पोजीशन लिए शत्रु की ओर आगे बढ़े। श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने हमले का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी ली और अपने–आपको आगे चल रहे स्काउटों के बीच में पोजीशन किया। उनके बायीं ओर कांस्टेबल/जीडी के. वेंकटचलम थे जबकि कांस्टेबल/जीडी खोट सागर ने उनके दायीं ओर पोजीशन ली। शेष दल उनके पीछे था। जैसे ही स्काउट और आगे बढ़े, पेड़ के पीछे छिपे विद्रोहियों के एक पहरेदार ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। स्काउट बड़ी मुश्किल से बचे लेकिन अपनी स्वयं की सुरक्षा की परवाह न करते हुए तीनों हरकत में आए और पहरेदार पर जवाबी गोलीबारी की। शीघ्र ही पास में उपस्थित अन्य विद्रोहियों ने कवर के पीछे पोजीशन ले ली और सैन्य दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। सैन्य दल, जो अब तक खुले क्षेत्र में था, गोलीबारी करते हुए रेंगकर कवर के पीछे गए और कुछ ही दूरी पर भीषण गोलीबारी शुरु हो गई। यह जानते हुए कि विद्रोही अधिक समय तक नहीं लड़ेंगे और एक–एक करके भागने का प्रयास करेंगे, श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने फायर करो और आगे बढ़ो की रणनीति अपनाते हुए सैन्य दल को आगे बढ़ने का आदेश दिया। सैन्य दल को आगे बढ़ता देखकर, विद्रोहियों ने भारी गोलीबारी के साथ–साथ ग्रेनेड फेंकना शुरु कर दिया। विद्रोहियों को निष्क्रिय करने के लिए, श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने सभी दिशाओं से शत्रु पर हमला करने की योजना बनाई। उन्होंने कांस्टेबल/जीडी के. वेंकटचलम और कांस्टेबल/जीडी खोट सागर को अपने साथ लिया और वे सभी भारी गोलीबारी के बीच रेंगकर दायीं दिशा की ओर गए। दायीं ओर पहुचने पर, उन्होंने विद्रोहियों पर भीषण हमला किया, जिसमें दो कैडर घायल हो गए। लेकिन हमले के माहौल में उनसे एक विद्रोही छूट गया जो उनके दायीं और छिपा हुआ था। विद्रोही ने उन पर गोलीबारी की जिसमें कांस्टेबल/जीडी के. वेंकटचलम और कांस्टेबल/जीडी खोट सागर घायल हो गए। श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने भारी गोलीबारी करके विद्रोही पर हिंसक रूप से हमला किया। विकराल स्थिति को देखकर विद्रोही जंगल के अंदर भाग गया। श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने कुछ दूरी तक उसका पीछा किया, लेकिन अपने घायल साथियों को प्राथमिक उपचार देने के लिए वापस लौटना पड़ा। गोली से घायल होने और खून बहने के बावजूद दोनों कांस्टेबल बहादुरी, साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए, वहां पर डटे हुए विद्रोहियों पर अभी भी निडरतापूर्वक गोलीबारी कर रहे थे। श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने और वक्त बर्बाद न करते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना दोनों कांस्टेबलों को खतरे के क्षेत्र से बाहर निकाला। उन्होंने अपने दल से आठ कांस्टेबलों को तैनात किया जिन्होंने पहाड़ी क्षेत्र में 5 किमी. की दूरी तय करने के बाद घायलों को सड़क मार्ग तक पहुंचाया। वे फिर से लड़ाई में शामिल हो गए और उन्होंने अपने दल को आगे बढ़ने का आदेश दिया क्योंकि घायल होने के कारण विद्रोहियों की ओर से गोलीबारी कम हो गई थी। सैन्य दल ने आगे बढ़ना शुरु किया और विद्रोहियों को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। सैन्य दल ने उनका पीछा किया लेकिन वे क्षेत्र का फायदा उठाकर और क्षेत्र की जानकारी होने के कारण घने जंगल में बचकर निकलने में सफल रहे।

श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने अभियान के दौरान सही, शीघ्र और समय पर कार्रवाई करके जबरदस्त साहस और धैर्य तथा अभियान कमांडर की उत्कृष्ट विशेषताओं का प्रदर्शन किया। पहले तो वे विद्रोहियों से भीषणता से लड़े और जब उनके साथी घायल हो गए तो उन्होंने उन्हें गोलीबारी के स्थल से सुरक्षित रूप से हटाया जो मानव जीवन के प्रति उनकी चिंता को दर्शाता है। उन्होंने विशिष्ट सूझ–बूझ और सक्रिय अभियान क्षमताओं का प्रदर्शन किया जिसके कारण विद्रोहियों की काफी क्षति पहुंची और उनका शिविर नष्ट कर दिया गया तथा इसके साथ ही साथ घायल सैनिकों की जान भी बचाई जा सकी।

शिविर की तलाशी के दौरान अन्य आपत्तिजनक और इलेक्ट्रॉनिक सामग्रियों के साथ बड़ी मात्रा में हथियार और गोलाबारुद बरामद हुआ। मुख्य बरामदगी इस प्रकार थीं – 03 पिस्तौलें, 07 मैगजीनें, 01 क्लेमोर माइन, अनेक प्रकार के हथियारों के 144 राउंड, 07 वायरलेस सेट और 19 डेटोनेटर। बरामदगी के अलावा, मुठभेड़ स्थल पर बड़ी मात्रा में खून के धब्बे और हथियारों की मैगजीन पर गोली लगने के निशान से पता चला कि मुठभेड़ के दौरान कुछ विद्रोही गंभीर रूप से घायल हुए थे।

सम्पूर्ण लड़ाई के दौरान, श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट ने आगे रह कर सैन्य दल का नेतृत्व किया और उत्कृष्ट कोटि के नेतृत्व का प्रदर्शन किया। कांस्टेबल/जीडी खोट सागर और कांस्टेबल/जीडी के. वेंकटचलम ने भी गोलियों से गंभीर रूप घायल होने के बावजूद उत्कृष्ट कोटि के साहस और वीरतापूर्ण कार्रवाई का प्रदर्शन किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुरेश कुमार, सहायक कमांडेंट, के. वैंकटाचलम, कांस्टेबल और खोट सागर रामचन्द्र, कांस्टेबल ने अदम्यम वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 146–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. रिनचेन वांगयाल दावा,
कमांडेंट

02. धरमपाल,
सहायक कमांडेंट

03. प्रवीण कुमार,
कांस्टेबल

04. उत्तम कुमार धुर्वे,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

श्री आर.डब्ल्यू. दावा, कमांडेंट, 201 कोबरा ने पुलिस स्टेशन जागरगुंडा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के अंतर्गत एक माओवादी गढ़, पिडिया के जंगलों में व्यापक छानबीन करने के लिए एक अभियान की योजना बनाई। तदनुसार, दिनांक 02.11.2013 को रात में राज्य पुलिस कर्मियों के साथ 201 कोबरा की तीन कंपनियों ने चोरी–छिपे जंगल में प्रवेश किया और दिनांक 03.11.2013 की सुबह क्षेत्र की छानबीन आरंभ कर दी। क्षेत्र की व्यापक तलाशी लेने के बाद, सैन्यदल ने सामरिक रूप से अलग रास्ता अपना कर क्षेत्र से वापस आने की योजना बनाई। लगभग 1630 बजे, जब सैन्य दल गांव कोयम के निकट थे और एक छोटी पहाड़ी को पार कर रहे थे, तो चोटी पर घात लगाकर छिपे माओवादियों ने उन पर भारी गोलीबारी शुरु कर दी। श्री धरमपाल, सहायक कमांडेंट की कमांड में अग्रणी दल ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और उपलब्ध कवर के पीछे पोजीशन ले ली। श्री धरमपाल, सहायक कमांडेंट ने माओवादियों की गोलीबारी का जवाब देते हुए शत्रु की अवस्थिति और उनकी शक्ति का आकलन किया और इसकी सूचना अपने कमांडर श्री आर. डब्ल्यू. दावा को दी। रणनीतिक जवाबी हमला करने के लिए श्री आर.डब्ल्यू.दावा ने तीन दिशाओं से सम्मिलित एक कंपनी को पहाड़ी के बायीं ओर जाने और दूसरी कंपनी को पहाड़ी के दायीं और जाने का आदेश दिया। सैन्य दल को दो दिशाओं में आगे बढ़ने का आदेश देने के बाद, वे स्वयं अपने सैन्य दल की सहायता करने के लिए गोलियों की लगातार बौछार के बीच आगे बढ़े। आगे पहुंचने पर उन्होंने स्थिति का आकलन किया और माओवादियों की ओर से आती गोलीबारी की मात्रा से उन्होंने पता लगा लिया कि माओवादियों की संख्या एक प्लाटून से अधिक नहीं है। सीमित संख्या में शत्रु की मात्रा पर विचार करते हुए, उन्होंने उनका सामना करने का निर्णय लिया और श्री धरमपाल, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी उत्तम कुमार धुर्वे और कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार के साथ कवर और सहायक गोलीबारी के बीच रेंगकर आगे बढ़े। सैन्य दल भी अपने कमांडरों के पीछे आया और दल ने गोलीबारी करो और आगे बढ़ो की रणनीति अपनाकर आगे बढ़ना शुरु किया। सैन्य दल चोटी की ओर मुश्किल से 20 मीटर ही आगे बढ़े थे, जब बायीं और दायीं पहाड़ियों में छिपे माओवादियों ने भी उन पर गोलीबारी आरंभ कर दी। श्री आर.डी. दावा, कमांडेंट को यह समझने में कोई समय नहीं लगा कि यह उनके द्वारा लगाए गए अनुमान से कहीं अधिक घात लगाकर किया गया हमला है। यह माओवादियों की उनके भ्रमित करने वाले दल की ओर बढ़ने और सभी ओर से उन पर हमला करने वाले सैन्य दल को फंसाने की योजना थी। उनकी यह रणनीति किसी अन्य दल और कमांडर पर कार्य कर सकती थी लेकिन श्री आर. डब्ल्यू दावा, कमांडेंट और सैन्य दल के समक्ष उनकी रणनीति सफल नहीं हुई। इस आकस्मिक स्थिति और अचानक हमले के लिए तैयार श्री आर डब्ल्यू. दावा, कमांडेंट ने अपनी दो कंपनियों को तेजी से आगे बढ़ने और बायीं तथा दायीं पहाड़ियों में छिपे माओवादियों पर जवाबी हमला करने का आदेश दिया। दोनों कंपनियां शत्रु की भारी गोलीबारी के बीच कठिन चढ़ाई करते हुए माओवादियों के निकट पहुंची और उन पर हमला कर दिया। दोनों के बीच काफी नजदीक से भीषण गोलीबारी हुई। जैसे ही बायीं और दायीं ओर से गोलीबारी कम हुई, श्री आर.डब्ल्यू. दावा ने अपने दल को आगे बढ़ने और माओवादियों के भ्रमित करने वाले दल पर हमला करने का आदेश दिया। सैन्य दल रेंगकर आगे बढ़ा और देखा कि माओवादी अस्थायी रूप से निर्मित सुरक्षित मोर्चो के पीछे छिपे हैं और वहां से लगातार गोलीबारी कर रहे हैं। लगातार गोलीबारी और बीच–बीच में ग्रेनेड फेंके जाने से सैन्य दल का और आगे बढ़ना असंभव हो गया। इस गतिरोध पर काबू पाने के लिए, श्री आर. डब्ल्यू. दावा ने कांस्टेबल/जीडी उत्तम कुमार धुर्वे को मोर्चों पर यूबीजीएल फायर करने का आदेश दिया, लेकिन शिलाखंडों, पेड़ों और भीषण गोलीबारी के बीच सैन्य दल की सीमित गतिविधि के कारण वह भी प्रभावी साबित नहीं हुआ। रणनीति को काम न करता देखकर श्री आर. डब्ल्यू. दावा ने सामने वाले मोर्चे पर किनारे से हमला करने के लिए दो सहायक समूह बनाने का निर्णय लिया। श्री आर. डब्ल्यू. दावा और कांस्टेबल/जीडी प्रवीण का पहला समूह रेंगकर दायीं ओर गया और धरमपाल, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी उत्तम कुमार धुर्वे का दूसरा समूह रेंगकर बायीं ओर गया। इन समूहों ने अपनी जान की परवाह किए बिना अधिक साहस और अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुए आक्रमण के लिए एक अलग दिशा प्राप्त करने के लिए गोलियों के बीच आगे

बढ़ना जारी रखा। हमले के लिए दिशा मिलने पर, उन्होंने माओवादियों पर भारी गोलीबारी की। तीन दिशाओं से घिरा हुआ जानकर माओवादियों ने ग्रेनेड फेंकने के साथ–साथ अपने शस्त्रागार के सभी हथियारों का उपयोग किया लेकिन शीघ्र ही वे हतोत्साहित हो गए और पीछे हटना शुरू कर दिया। आगे बढ़ने का कुछ स्थान मिलने के बाद, दोनों समूहों ने भारी गोलीबारी और ग्रेनेड के विस्फोटकों की परवाह किए बिना अनुकरणीय साहस एवं वीरता का प्रदर्शन किया और उनकी ओर आगे बढ़ते हुए माओवादियों पर अंतिम हमला शुरू कर दिया। इसमें उनकी जान को जोखिम था, लेकिन इसकी परवाह किए बिना समूह आगे बढ़े और माओवादी समूह के नजदीक आ गए। इसके बाद हुई निकट गोलीबारी में उन्होंने दो माओवादियों को मारा गिराया, जबकि अन्य माओवादियों ने घने जंगल और ऊबड़–खाबड़ क्षेत्र का लाभ उठाकर भागना शुरू कर दिया। श्री आर. डब्ल्यू. दावा, कमांडेंट और उनके तीन बहादूर सैनिक इस अवसर को खोना नहीं चाहते थे और उन्होंने उनका पीछा करना शुरू कर दिया। पीछा करने के दौरान एक माओवादी के टखनों को मोच आ गई और वह गिर गया। जैसे ही श्री आर. डब्ल्यू. दावा उस पर काबू करने के लिए आगे बढ़े, उसने श्री आर. डब्ल्यू. दावा की ओर गोली चलाई लेकिन वे आश्चर्यजनक रूप से बच गए। यह देखकर श्री धरमपाल, सहायक कमांडेंट ने गिरे हुए माओवादी पर तेजी से झपट्टा मारा और उसे पकड़ लिया। तब तक अन्य पहाड़ियों पर भी गोलीबारी बंद हो गई थी, क्योंकि अपनी योजना को असफल पाकर घात लगाकर बैठे माओवादियों ने वहां से सुरक्षित भागना ही सही समझा। बाद में क्षेत्र की तलाशी ली गई और एक इंसास राइफल, दो एसबीएमएल बन्दूक, 48 राउन्ड और अन्य आपत्तिजनक सामग्रियों के साथ माओवादियों के दो शव बरामद हुए। बाद में इस बात की पुष्टि हुई कि इस भीषण मुठभेड़ में 6–7 अन्य माओवादी भी घायल हुए थे लेकिन वे घटना–स्थल से भागने में सफल हो गये।

श्री आर. डब्ल्यू. दावा, कमांडेंट और श्री धरमपाल, सहायक कमांडेंट ने अभियान की योजना बनाने और सामरिक रूप से इसे पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल आगे रहकर व्यक्तिगत रूप से सैन्य दल का नेतृत्व किया बल्कि वीरता से भी लड़े। यह भी उल्लेखनीय है कि माओवादियों के विरुद्ध किसी भी अभियान में आधुनिक हथियारों के साथ शवों की बरामदगी बहुत कम होती है लेकिन इस मामले में यह केवल अनुशंसित व्यक्तियों के वीरतापूर्ण प्रयासों से ही संभव हो सका।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री रिनचेन वांगयाल दावा, कमांडेंट, धरमपाल, सहायक कमांडेंट, प्रवीण कुमार, कांस्टेबल और उत्तम कुमार धुर्वे, कांस्टेबल ने अदम्यक वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 03.11.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 147–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. विकास सडौत्रा,
कांस्टेबल

02. चमचम कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

जिला बीजापुर में पुलिस स्टेशन गंगालूर के अंतर्गत गांव पेडिया के सामान्य क्षेत्र में माओवादियों की उपस्थिति के संबंध में विशिष्ट आसूचना पर, उप महानिरीक्षक (आपरेशन) सीआरपीएफ (बीजापुर) ने पुलिस अधीक्षक, बीजापुर के साथ परामर्श करके एक अभियान की योजना बनाई। दिनांक 18.05.2013 को छह अलग–अलग स्थानों से छह हमला दलों के साथ संयुक्त अभियान आरंभ किया गया। श्री एस. इलांशो, पुलिस उप महानिरीक्षक की कमान में ऐसा ही एक हमला दल दिनांक 17.05.2013 को लगभग 2215 बजे दांतेवाड़ा से चला। इस हमला दल में एसएटी सीआरपीएफ बीजापुर, 170वीं बटालियन, सीआरपीएफ, 199वीं बटालियन सीआरपीएफ और राज्य पुलिस के सैन्य दल शामिल थे। दल रिहाइशी मकानों से बचते हुए सारी रात घने जंगल में चलता रहा और अगली सुबह गांव वेंगपाल के निकट पहुंचा। लगभग 0900 बजे जब सैन्य दल गांव और इसके आस–पास के जंगल की तलाशी ले रहा था, तब जंगल में छिपे माओवादियों ने सैन्य दल पर भारी गोलीबारी शुरु कर दी जिसका जवाब दिया गया। तथापि, माओवादी घने जंगल और क्षेत्र का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे लेकिन जंगल में उनके छिपने के स्थान से बड़ी मात्रा में आपत्तिजनक सामग्री बरामद हुई। माओवादियों के साथ दूसरी मुठभेड़ लगभग 1845 बजे हुई जब सैन्य दल गांव पुरांगल की तलाशी ले रहा था। दो मुठभेड़ों से स्पष्ट था कि क्षेत्र में माओवादी काफी अधिक संख्या में मौजूद हैं। माओवादियों पर जवाबी हमला करने के लिए, कमांडर ने रात्रि में गांव के निकट जंगल में शांति बनाए रखने और माओवादियों के लिए जाल बिछाने का निर्णय लिया। अगली सुबह भोर से पहले सैन्य दल को छोटे दल में विभाजित किया गया और गांव की ओर आने वाले सभी मार्गों पर घात लगाने के लिए भेजा गया। एसएटी सीआरपीएफ के कर्मियों वाला ऐसा एक दल जब गांव के पीछे एक पहाड़ी की ओर जा रहा था, तब घात लगाकर बैठे माओवादियों ने पहाड़ी की चोटी से उन पर भारी गोलीबारी शुरु कर दी। माओवादियों, जिन्हें विश्वास था कि सैन्य दल रात्रि के दौरान वापस नहीं गया है, बल्कि जंगल में छिपा हुआ है, ने घात लगाकर योजनाबद्ध हमला किया। वे गांव के चारों ओर अनुकूल ऊंचाई पर और सैन्य दल की वापसी के प्रत्याशित मार्ग पर थे। माओवादियों पर जवाबी हमला करने के लिए, कांस्टेबल/जीडी विकास सडौत्रा और

कांस्टेबल/जीडी चमचम कुमार ने जबरदस्त साहस का प्रदर्शन किया और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना माओवादियों के निकट पहुंचने और अंतिम हमला करने के लिए पहाड़ी के ऊपर गए। माओवादियों ने घात लगाकर हमले की योजना बारीकी से बनाई थी और सैन्य दल की इस गतिविधि की प्रतीक्षा कर रहे थे क्योंकि पास ही पहाड़ी में छिपे माओवादियों के अन्य समूह ने भी उन पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी। दोनों दो दिशाओं से हुई गोलीबारी में फंस गए और उन पर जान का खतरा मंडरा रहा था। दूसरे दल के हमले का जवाब देने के लिए, कमांडर ने अन्य दल को हमला करने और उन्हें उलझाने का आदेश दिया। इसके साथ–साथ, बढ़ती गोलीबारी और उन पर फेंके जा रहे ग्रेनेडों को देखकर, दोनों कांस्टेबल जो, सबसे आगे थे, ने यूबीजीएल से फायर करने का निर्णय लिया। वे चारों ओर से जमीन पर लगती गोलियों की परवाह किए बिना, वीरतापूर्वक अपने कवर से बाहर आए और खड़े होकर गोलीबारी की क्योंकि लेटकर गोलीबारी करना मुश्किल था। यूबीजीएल की फायरिंग से माओवादियों का आत्मविश्वास हिल गया जिसके परिणामस्वरूप गोलीबारी कम हो गई। इसी प्रकार, माओवादियों के दूसरे दल के साथ उलझने से उस दिशा से गोलीबारी बंद हो गई। इसका लाभ उठाकर, दोनों जांबाज रणनीतिक तरीके से माओवादियों की पोजीशन की ओर बढ़े। नजदीक पहुंचने पर, उन्होंने देखा कि एक माओवादी लगातार सैन्य दल पर गोलीबारी कर रहा है। कीमती समय गवांए बिना, दोनों बहादुर सैनिकों की सटीक और लक्षित गोलीबारी से उसे मार गिराया गया। अपने एक कैडर की यह दशा देखकर माओवादियों ने एक–दूसरे की सहायक गोलीबारी के बीच क्षेत्र से भागना शुरु कर दिया। दोनों ने कुछ दूरी तक उनका पीछा किया तथा कुछ और माओवादियों को घायल कर दिया, लेकिन वे पहाड़ी क्षेत्र, घने जंगल और अपने पहले से निर्धारित बचने के मार्गों का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे। बाद में क्षेत्र की तलाशी लेने पर, एक माओवादी का शव बरामद हुआ। बाद में जिसकी पहचान मुन्डाम मासु (मिलिट्री डिप्टी कमांडर), उम्र 27 वर्ष, एक सक्रिय कैडर के रूप में हुई। क्षेत्र की तलाशी में एयर गन–01, जिलेटिन स्टिक–02 पैकेट, कोरडेक्स तार–15 मीटर, धनुष/बाण–12, बर्तन, किट बैग, वर्दियां, बैनर–03, पैम्फलेट, साहित्य आदि भी मिले।

अनुकूल पोजीशन लिए हुए एवं पहले से घात लगाकार बैठे माओवादियों ने सैन्य दल पर भारी गोलीबारी की, लेकिन 170 बटालियन के कांस्टेबल/जीडी विकास सडौत्रा और 168 बटालियन, सीआरपीएफ के कांस्टेबल/जीडी चमचम कुमार ने विशिष्ट साहस और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और जवाबी हमला किया। इन दोनों कार्मिकों की वीरतापूर्ण और ठीक समय पर की गई कार्रवाई ने माओवादियों की घात को तोड़ दिया, जिससे वे अपने पीछे एक शव, हथियार और अन्य उपकरण छोड़कर भागने पर मजबूर हो गए। यद्यपि वे सीधी गोलीबारी के सामने थे, तथापि, इन दोनों कार्मिकों के वीरतापूर्ण कार्य ने अनेक सैनिकों की जानें बचाई और माओवादियों की घृणित योजनाओं को विफल किया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री विकास सडौत्रा, कांस्टेबल और चमचम कुमार कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.05.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 148–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. हरमिन्दर सिंह,
सेकेन्ड–इन–कमांड

02. नरेन्द्र कुमार,
कांस्टेबल

03. भूदेव सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पृष्ठभूमि :–आसूचना एजेंसियां झारखंड के लातेहार–गढ़वा और छत्तीसगढ़ राज्य के निकटवर्ती बलरामपुर के तिहारे पर बूढ़ा पहाड़ में विभिन्न शिविरों में भारी संख्या में नक्सलियों के एकत्र होने की सूचना उपलब्ध करा रही थीं। सूचना का विश्लेषण करने पर पता चला कि दर्जनों शीर्ष नक्सली नेताओं के साथ देवकुमार सिंह उर्फ अरविंद जी सी/सी सदस्य के नेतृत्व में क्षेत्र में 300–350 नक्सली इकट्ठा हुए हैं। नक्सलियों ने क्षेत्र में कम से कम तीन शिविर लगाए थे और नए भर्ती किए गए सैंकड़ों कैडरों को प्रशिक्षण दे रहे थे। (1) 80+कैडरों के साथ चेनराकोना नाला के निकट पहला शिविर (2) 100–120 कैडरों के साथ चेमो सानिया पहाड़ियों पर दूसरा शिविर और (3) 60–70 कैडरों के साथ बूढ़ा पहाड़ की निचली पहाड़ी पर लातू के निकट तीसरा शिविर । सानिया शिविर इस दूरस्थ क्षेत्र में किसी भी हमले का जवाब देने के लिए सामरिक रूप से स्थित था जहां किसी भी दिशा से पहुंचना कठिन था। इसलिए नक्सली गतिविधियों से बूढ़ा पहाड़ को खाली कराने के लिए सानिया शिविर पर धावा बोलना और इसे ध्वस्त करना सबसे महत्वपूर्ण और सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण कार्य था।

वीरतापूर्ण कार्रवाई का संक्षिप्त विवरण :

तदनुसार पहले सानिया शिविर को ध्वस्त करने और शेष शिविरों पर आगे हमला करने के लिए लिए क्षेत्र को मुक्त कराने की योजना बनाई गई। 203 के 06 दल और 209 कोबरा के 02 दल तथा झारखंड जगुआर के पांच हमला समूह बनाए गए थे और "ऑक्टोपस फेज–।।" में सानिया वन क्षेत्र पर धावा बोलने और मुक्त कराने के उद्देश्य से दिनांक 07–08/04/2012 को मंडल सहायता शिविर में रखा गया था। श्री राजीव राय, कमांडेंट–203, जिनकी कमांड में हमला बलों को नक्सली शिविर पर छापा मारने का कार्य सौंपा गया था, ने सम्पूर्ण दल को ब्रीफ किया और इस दूरस्थ क्षेत्र में नक्सली रणनीति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने अपनाए जाने वाले जवाबी उपायों के बारे में भी बताया। दिनांक 09.04.2012 को लगभग 0030 बजे श्री राजीव राय, कमांडेंट 203 की समग्र कमान में 04 हमला बल (02 दल कोबरा+01 –01 झारखंड जगुआर) चेमो–सानिया धुरी के लिए चले और सुबह होने से पहले पूर्व–निर्धारित स्थान (आरवी) पर पहुंचे। योजना के अनुसार पुनर्गठन किया गया और चूंकि खुफिया सूचनाओं से पता चला था कि नक्सलियों ने छापा मारने वाले दल को पीछे से फंसाने की योजना बनाई है, इसलिए ऐसे किसी प्रयास को रोकने के लिए हमला दल–1 के साथ श्री राजीव राय, कमांडेंट 203 की कमान में मजबूत बैक सपोर्ट को सामरिक तरीके से उत्तर पूर्वी किनारे पर रखा गया और हमला दल–3 को श्री अनिल कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में सानिया पहाड़ी के उत्तर पश्चिमी किनारे पर रखा गया। दो हमला दल, श्री हरमिन्दर सिंह, 2–आई/सी–203 कोबरा की कमान में हमला दल–2 और 2–आई/सी 209 कोबरा श्री विनोद टोप्पो की कमान में हमला दल–4 को नक्सली शिविर की ओर दो स्थानों से आगे बढ़ने के लिए लगाया गया। इशारों में अभियान की योजना बनाई गई (दो हमला दल आगे बढ़ते हुए क्षेत्र पर कब्जा करेंगे, फिर सहायक हमला दल आगे बढ़ेंगे और क्षेत्र को नक्सलियों से मुक्त कराएंगे और कब्जा करेंगे)। लगभग 1030 बजे तक दलों ने आधे सानिया जंगल का निरीक्षण कर लिया और एक समन्वित तरीके से आगे बढ़ने के लिए पुनर्गठित होने के लिए रुके। श्री राजीव राय, कमांडेंट 203, जिन्होंने उन्हें क्षेत्र में बारुदी सुरंगों के लिए अधिक सावधान रहने के लिए सतर्क किया क्योंकि आसूचना से पता चला था कि एक ही बार में अधिकतम क्षति पहुचाने के लिए नक्सलियों ने बारुदी सुरंगों वाला 200'x200' आकार का एक मारक क्षेत्र तैयार किया है। जैसे ही दल रणनीतिपूर्वक आगे बढ़े, नक्सलियों ने बारुदी सुरंग वाले क्षेत्र में विस्फोट कर दिया जिसके कारण दोनों हमला दलों का अगला भाग 200'x200' के क्षेत्र में आच्छादित धूल और धुंए से ढक गया। इस विस्फोट के बाद मशरूम जैसी पहाड़ी के चारों और पोजीशन लिए हुए नक्सलियों ने श्रृंखलाबद्ध आईईडी विस्फोट किए और भारी गोलीबारी की। श्री हरमिन्दर सिंह 2–आई/सी–203 और श्री शैलेश कुमार, सहायक कमांडेंट हमला दल–2 का अग्रिम दल और श्री विनोद टोप्पो, 2–आई/सी और हमला दल–4 का उनका अग्रिम दल आईईडी विस्फोट और नक्सलियों की गोलीबारी के बीच आ गए। श्री हरमिंदर सिंह, 2 आई/सी–203 कोबरा ने धैर्य से काम लिया और श्री विकास सिंह, सहायक कमांडेंट, जो दल सं. 14 को नेतृत्व कर रहे थे, को कवर फायर देने का आदेश दिया। श्री हरमिंदर सिंह, 2 आई/सी, श्री शैलेश कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी हरमिंदर सिंह और छापा मारने वाले दल के अन्य सदस्य सुरक्षित और ऊपर की पोजीशन की ओर रेंगकर पीछे गए और जोरदार जवाबी कार्रवाई की। इसी प्रकार कवर फायर के तहत श्री विनोद टोप्पो, 2–आई/सी और श्री कुमार ब्रजेश, सहायक कमांडेंट और उनका दल भी सुरक्षित रूप से वापस आए और प्रभावी रूप से जवाबी कार्रवाई की। मारक क्षेत्र में बारुदी सुरंगों के विस्फोट से किसी को भी गंभीर चोट नहीं आई। ऐसी प्राण घातक स्थिति में जब नक्सली बीच–बीच में आईईडी का विस्फोट कर रहे थे और हमला दल पर भारी गोलीबारी कर रहे थे, श्री हरमिंदर सिंह, 2 आई/सी, 203, श्री शैलेश कुमार, सहायक कमांडेंट, श्री विकास सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल धरमिंदर द्वारा प्रदर्शित नेतृत्व के स्तर और बहादुरी से न केवल नक्सली हमले को रोका जा सका, बल्कि उन्हें पीछे धकेलने के लिए भीषण जवाबी कार्रवाई भी की गई। दायीं दिशा पूर्ण रूप से कब्जे में थी और इस गोलीबारी में 6–7 नक्सली घायल हुए, जिन्हें गिरते हुए देखा गया। यह भीषण युद्ध दोनों ओर से भारी गोली बारी के साथ जारी रहा। श्री बिनोद टोप्पो, 2 आई/सी, 209, श्री कुमार ब्रजेश और कांस्टेबल नरेन्द्र सिंह बायीं दिशा की ओर गए और वे भी नक्सलियों से बहादुरी और वीरतापूर्वक लड़ रहे थे। इस भीषण गोलीबारी के दौरान कुछ और नक्सली घायल हुए जिन्हें गिरते हुए देखा गया। इससे नक्सली हताश हो गए और उन्होंने आईईडी एवं क्लेमोर सुरंगों का विस्फोट करना और हमला बलों पर देशी ग्रेनेड फेंकना शुरु कर दिया। भीषण मुठभेड़ के बीच सानिया गांव की पश्चिमी पहाड़ियों और जंगल से एक नक्सली दस्ते (35–40) को लड़ाई में शामिल हमला दल को पीछे से घेरने के लिए मुठभेड़ स्थल की ओर आते देखा गया इस गतिविधि को श्री राजीव राय, कमांडेंट–203 कोबरा द्वारा देखा गया जिनके दल को सामरिक रूप से रखा गया था। उन्होंने तुरंत सीजीआरएल तैयार किया और 04 एचई बम फायर किए जिसके बाद तुरंत गोलियां बरसाई, जिसमें दस्ते के अगले भाग में पांच नक्सलियों को उड़ते हुए देखा गया और शेष नक्सली चिल्लाते हुए वापस हटने पर मजबूर हो गए। श्री राजीव राय, कमांडेंट–203 कोबरा नक्सलियों का सामना करने के लिए अपने दल के साथ आगे बढ़े। इधर–उधर स्थित घरों और वन में छिपे नक्सलियों ने सैन्य दल पर भारी गोलीबारी आरंभ कर दी जिसके परिणामस्वरूप कांस्टेबल/जीडी भूदेव सिंह के पैर में गोली लगी। श्री राजीव राय, कमांडेंट, 203 कोबरा ने आगे आकर नेतृत्व करते हुए एवं उच्चस्तरीय नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए सैन्य दल का उत्साह बनाए रखा और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वीरतापूर्वक लड़े। इस लड़ाई में कुछ और नक्सली गोली लगने से घायल हो गए जिससे नक्सली हताश हो गए और वे प्रतिकूल क्षेत्र और घने जंगल का फायदा उठाकर भाग गए। सम्पूर्ण क्षेत्र की पूर्ण तलाशी ली गई और कांस्टेबल/जीडी भूदेव सिंह को तुरंत प्राथमिक चिकित्सा सहायता दी गई। नक्सलियों के साथ सम्पूर्ण मुठभेड़ 06 घंटे से अधिक समय तक चली जिसमें सीजीआरएल, एजीएल और यूबीजीएल सहित सभी प्रकार के हथियारों का उपयोग किया गया। इस मुठभेड़ में नक्सलियों की ओर से गोलीबारी पूर्णतः बंद हो गई और हमला दल 1, 2 और 4 से आठ कार्मिकों के घायल होने की रिपोर्ट प्राप्त हुई। चूंकि नक्सली भाग गए थे, इसलिए घायल कार्मिकों को सूर्यास्त से पूर्व मंडल बेस (जो मुठभेड़ स्थल से 19 किमी. की दूरी पर था) भेजने का निर्णय लिया गया ताकि उन्हें हेलीकाप्टर की मदद से आगे अपोलो हास्पिटल, रांची भेजा जा सके। नक्सली शिविर क्षेत्र की तलाशी बाद में ली जा सकी। सभी घायलों को अस्थायी स्ट्रेचर द्वारा पैदल मंडल बेस भेजा गया जहां से उन्हें हेलीकाप्टर द्वारा अपोलो हास्पिटल, रांची भेजा गया। इस प्राणघातक स्थिति में सैन्य दल ने अपनी रक्षा और संरक्षा की परवाह किए बिना कर्त्तव्य के प्रति उच्चस्तरीय समर्पण को दर्शाते हुए चुनौती पर खरे उतरे और इस प्रकार कभी न लड़े गए ऐतिहासिक युद्ध में सर्वाधिक अजेय नक्सली शिविर को ध्वस्त किया। नक्सलियों ने चार सौ से अधिक बारुदी सुरंगों का विस्फोट किया और हमला दल पर सैंकड़ों गोलियां चलाईं। सानिया शिविर को ध्वस्त करना नक्सलियों के लिए बहुत बड़ा आघात था क्योंकि इससे उन्हें क्षेत्र में अपने सभी शिविरों को बंद करने तथा बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र को पूर्णतः

खाली करने के लिए विवश होना पड़ा। स्थानीय लोगों और मीडिया ने 15–20 नक्सलियों (ईआरबी–1 कंपनी के शिखर 2–आई/सी, बबलू, सरजू, बलबीर, अक्षय कोबरा, गोपाल आदि) के मारे जाने और 20 से अधिक कैडरों के गंभीर रूप से घायल होने की सूचना दी। नक्सलियों पर इस प्रभुत्व के प्रभाव से अनेक नए रंगरूट प्रशिक्षण शिविरों से भागने पर मजबूर हो गए और बाकी नक्सलियों को उनके माता–पिता जबरदस्ती ले गए। इस प्रकार झारखंड और छत्तीसगढ़ सीमा पर सर्वाधिक कठिन और दूरस्थ क्षेत्र, जो नक्सलियों के अधिकार क्षेत्र में था, को सभी नक्सली गतिविधियों से पूर्णतः मुक्त करा लिया गया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री हरमिन्दर सिंह, सेकन्ड–इन–कमांड, नरेन्द्र कुमार, कांस्टेबल और भूदेव सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.04.2012 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं.149–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री परवल परिमल, (मरणोपरांत)
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

सीआरपीएफ की 07वीं बटालियन की एफ कंपनी झारखंड के जिला पूर्वी सिंहभूम में पुलिस स्टेशन गोइलकेरा के अंतर्गत तैनात थी। खुफिया जानकारी के आधार पर दिनांक 08.06.2009 को एक अभियान की योजना बनाई गई और अभियान आरंभ किया गया। निरीक्षक/जीडी परवल परिमल अभियान को कमांड कर रहे थे और क्षेत्र में प्रभावी तलाशी के लिए गांव सेरेगाटा में दो पलाटूनों के साथ एक बेस शिविर स्थापित किया गया था। क्षेत्र की पूर्ण तलाशी ली गई और दो मोटरसाइकिलों के साथ तीन माओवादी पकड़े गए। सैन्य दल ने क्षेत्र में एलयूपी लिया और अगली सुबह वापस जाने का निर्णय लिया।

योजना के अनुसार सैन्य दल सेरेगाटा से तड़के पैदल चले और गांव सारुगाडा पहुंचे, जिसके आगे काली सड़क थी। सैन्य दल वाहनों में चढ़े और आगे बढ़े। लगभग 0610 बजे जैसे ही सैन्य दल ने गांव सारुगाडा को पार किया, माओवादियों ने उन पर घात लगाकर हमला किया। माओवादियों ने पहले एक शक्तिशाली आईईडी का विस्फोट किया, जिसके बाद भीषण गोलीबारी की और उसके बाद अनेक आईईडी का विस्फोट किया। सबसे शक्तिशाली आईईडी टाटा स्पेसियो वाहन के नीचे फटा जिससे वाहन हवा में उड़ गया और उसके टुकड़े–टुकड़े हो गए। इन विस्फोटों में नौ पुलिस कर्मी गंभीर रूप से घायल हुए और घात लगाकार किए गए हमले के प्राण घातक क्षेत्र में फंस गए। निरीक्षक/जीडी परवल परिमल, जो पहले वाहन में थे, ने तुरंत अपना वाहन रोका और अपने सैन्य दल को घायलों को निकालने के लिए विस्फोट स्थल की ओर रणनीतिक तरीके से जाने का आदेश दिया। उस समय मुख्य उद्देश्य माओवादियों की गतिविधि को रोकना था जो पकड़े गए अपने साथियों को छुड़ाने और अंतिम हमला करने के लिए आ रहे थे। निरीक्षक/जीडी परवल परिमल ने अत्यधिक दृढ़ता और सूझ–बूझ का प्रदर्शन करते हुए अपने दल को तुरंत माओवादियों पर भारी गोलीबारी करने का आदेश दिया जिससे उन्हें उनके ट्रैक में रोका जा सके। सैन्य दल ने उनकी कमान में जैसे ही आगे बढ़ना शुरु किया, माओवादी पहाड़ियों के ऊपर अपनी सुरक्षित पोजीशनों पर और अपने सुरक्षित मोर्चों के पीछे वापस चले गए। निरीक्षक/जीडी परवल परिमल ने अपने सैन्य दल को पुनर्गठित किया, उनमें एक नया संकल्प भरा और माओवादियों पर दूसरा जवाबी हमला किया। माओवादियों ने रणनीतिक तरीके से स्थल का चयन किया था क्योंकि इसके चारों और पहाड़ियां थीं और उन्होंने सुरक्षित पोजीशनों के पीछे पहाड़ी के ऊपर अपना ठिकाना बना रखा था और वहां से भारी गोलीबारी कर रहे थे। यह देखकर कि माओवादी सुरक्षित ऊंचाई पर हैं और सैन्य दल की गतिविधि पर नजर रख रहे हैं, उन्होंने क्षेत्र हथियारों से विधिवत समर्थित अलग–अलग दिशाओं से उन पर एक साथ हमला करने की योजना बनाई। उन्होंने हेड कांस्टेबल/जीडी (अब उप निरीक्षक/जीडी) केवलानंद डंगवाल को अपनी टुकड़ी के साथ पीछे से हमला करने का आदेश दिया, जबकि उन्होंने आगे आकर स्वयं हमले का नेतृत्व किया। माओवादियों ने सामने की ओर बारुदी सुरंगों का विस्फोट करने के साथ–साथ अपनी लगभग अजेय सुरक्षा से सैन्य दल को मुसीबत में डाल दिया था। अपनी जान की परवाह न करते हुए निरीक्षक/जीडी परवल परिमल साहसी लड़ाकों के एक छोटे समूह के साथ पहाड़ी की ओर आगे बढ़े। उन्होंने उपलब्ध न्यूनतम कवर का उपयोग करते हुए माओवादियों के निकट पहुंचने के लिए रेंगकर रास्ता पार किया, और उन पर निरंतर गोलीबारी करते हुए भीषण हमला किया। सामने के हमले से लाभ मिला क्योंकि कुछ माओवादी घायल हो गए जबकि अन्य आश्चर्यचकित हो गए और उन्हें पीछे हटना पड़ा। निरीक्षक/जीडी परवल परिमल, जो आगे आकर हमले का नेतृत्व कर रहे थे, इस हमले में गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन उन्होंने इतनी आसानी से हार नहीं मानी। लगातार होती गोलीबारी में फंसे, जहां कवर के रूप में उनके द्वारा उपयोग किए गए शिलाखडों पर गोलियों की बौझार हो रही थी और चारों तरफ मैदान था, निरीक्षक/जीडी परवल परिमल बहते खून और तीव्र दर्द की परवाह न करते हुए फिर से आगे आए और अपने दल को अंतिम हमला करने के लिए मोर्चो पर एक साथ 2" के मोर्टर फायर करने का आदेश दिया। चारों तरफ बरस रही गोलियों का सामना करते हुए दल के सदस्य मोर्टर की सहायक गोलीबारी के तहत रेंगकर आगे बढ़े। जैसे ही मोर्टर बमों का विस्फोट हुआ, माओवादी पूर्णतः उखड़ गए और उन्होंने अपने घायल कैडरों को लेकर एक के बाद एक भागना शुरु कर दिया। दुर्भाग्यवश निरीक्षक/जीडी परवल परिमल, जो

नजदीकी मुठभेड़ में बहादुरी और वीरतापूर्वक लड़े, ने घायल होने की वजह से दम तोड़ दिया और उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने युद्धक्षेत्र में शहादत प्राप्त की।

निरीक्षक परवल परिमल माओवादियों से समर्पण, जोश और साहस के साथ लड़े और कर्मियों, हथियारों और पुलिस कर्मियों के शवों को बचाया। उन्होंने अपनी जान को जोखिम होने पर भी जवाबी हमला करने के लिए सैन्य दल को संगठित किया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सैन्य दल का नेतृत्व किया और मौत को चुनौती देने वाली वीरता का प्रदर्शन किया जिससे माओवादी अपने घायल कैडरों के साथ अपनी सुरक्षित पोजीशनों से भागने पर मजबूर हो गए और इस प्रकार सुरक्षा बलों को बड़ी मात्रा में हताहत करने और माओवादी कैडरों को छुड़ाने की घृणित योजना को विफल किया। गोली लगने से घायल होने के बावजूद निरीक्षक जीडी परवल परिमल ने हमला जारी रखा और इस भीषण युद्ध में उन्होंने स्वयं गोलियां चलाईं और कुछ माओवादियों को घायल किया।

इस मुठभेड़ में (स्वर्गीय) श्री परवल परिमल, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 09.06.2009 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 150—प्रेज/2015—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अमित शर्मा, उप कमांडेंट — (वीरता के लिए पुलिस पदक)

02. कुलदीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट — (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

पुलिस स्टेशन—सोंगसाक, जिला—ईस्ट गारो हिल्स, मेधालय के अंतर्गत गांव नोरेक बोल्लांग्रे के निकट जंगल में जीएनएलए के कैडरों के छिपने के ठिकाने के बारे में पुलिस अधीक्षक ईस्ट गारो हिल्स से प्राप्त अत्यंत विश्वसनीय गुप्त सूचना के आधार पर, कोबरा कमांडों द्वारा एक सतर्क अभियान की योजना बनाई गई जिसमें 210—कोबरा की ऑपरेशनल कमांड में 10 और 12 दल तथा मेघालय पुलिस के स्वाट दल शामिल थे। श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट को ऑपरेशनल—सह—हमला कमांडर बनाया गया और श्री कुलदीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट को सेकन्ड—इन—कमांड बनाया गया। श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट ने कमांडेंट—210 कोबरा श्री जोसफ किशिंग और पुलिस अधीक्षक ईस्ट गारो हिल्स के साथ क्षेत्र, शत्रु, बाधाओं आदि जैसे सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। क्षेत्र का आरंभिक सर्वेक्षण और विश्लेषण करने के बाद, 07 कट—ऑफ के साथ हमला दल दिनांक 22.06.2014 को लगभग 2200 बजे जंगल में गया। सारी रात कठिन और ऊबड़—खाबड़ क्षेत्र में कच्चे रास्ते से लंबी पैदल यात्रा करने के बाद संयुक्त दल दिनांक 23.06.2014 को लगभग 0430 बजे लक्ष्य क्षेत्र के निकट पहुंचे।

भोर में लगभग 0445 बजे, कट—ऑफ को बचने के संभावित मार्ग पर तैनात करने के पश्चात, श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट, 210 कोबरा बटालियन की कमान में हमला दल रणनीतिपूर्वक और चोरी—चोरी छिपने के स्थान की ओर बढ़ा। जैसे ही हमला दल अपने लक्ष्य के नजदीक पहुंचा, झाड़ी के पीछे छिपे और पोजीशन लिए हुए विद्रोहियों के संतरी ने आगे बढ़ रहे सैन्य दल पर स्वचालित हथियारों से अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरु कर दी। हमला दल ने जवाबी कार्रवाई की और गोली चलाओ तथा आगे बढ़ो की रणनीति अपनाकर संतरी की ओर बढ़े। लेकिन, शीघ्र आस—पास में उपस्थित कुछ अन्य विद्रोही भी युद्ध में शामिल हो गए और काफी निकट से भीषण युद्ध शुरु हो गया। श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट ने स्थल का शीघ्र विश्लेषण करने के बाद अपने सैन्य दल को भारी मात्रा में गोलीबारी करने जवाबी कार्रवाई करने का आदेश दिया ताकि शत्रुओं का पता लगाया जा सके और आगे की रणनीति बनाई जा सके। जब गोलीबारी हो रही थी, तब उन्होंने अपने कट—ऑफ दलों से सम्पर्क किया और उन्हें विद्रोहियों और उनकी स्थिति के बारे में सूचित किया। उन्होंने कट—ऑफ सं. 03 पर तैनात श्री कुलदीप दहिया, सहायक कमांडेंट को भी आगे बढ़ने का आदेश दिया ताकि दो दिशाओं से हमला किया जा सके। अपनी व्यक्तिगत जानों की परवाह किए बिना श्री कुलदीप दहिया, सहायक कमांडेंट की कमांड में कट—ऑफ सं. 03 शत्रु की भारी गोलीबारी के बीच रेंगकर चले और श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट के निकट पहुंचे। विद्रोहियों ने सुरक्षित कवर के पीछे पोजीशन ली हुई थी और जब शत्रु अपने स्वचालित हथियार से तीव्रता से गोलीबारी कर रहा था, ऐसे में और आगे बढ़ना सैन्य दल के लिए घातक हो सकता था। विद्रोहियों पर जवाबी हमला करने के लिए, श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट ने श्री कुलदीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट को बांयी ओर जाने और शत्रु की पोजीशन पर एक के बाद एक ग्रेनेड फेंकने का आदेश दिया। लगातार ग्रेनेड फेंकने और यूबीजीएल की गोलीबारी का अच्छा परिणाम निकला और विद्रोही अपनी सुरक्षित पोजीशनों से वापस जाने लगे। श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट और श्री कुदलीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट तब विद्रोहियों के सामने आए और अपने संबंधित दल सदस्यों की यथोचित सहायता से उनकी ओर बढ़े। उन्होंने अपनी प्राणों की बिल्कुल भी परवाह नहीं की और अनुकरणीय

साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और उग्रवादियों को पीछे धकेलते हुए आगे बढ़ते रहे, जो उनकी ओर बढ़े रहे दल पर लगातार गोलीबारी कर रहे थे। श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट और श्री कुदलीप दहिया, सहायक कमांडेंट ने उग्रवादियों की तीव्र और अंधाधुंध गोलीबारी में अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना महान नेतृत्व और विशिष्ट साहस का प्रदर्शन किया और उग्रवादियों को अव्यवस्थित करने तथा उन्हें उनके ठिकाने से भगाने में सफल रहे। बहादुर अधिकारियों ने अपने सैन्य दल के साथ भाग रहे विद्रोहियों का पीछा किया और जीएनएलए के दो कैडरों को पकड़ने में सफल रहे। क्षेत्र की पूरी तरह से तलाशी लेने पर, उन्हें जीएनएलए विद्रोही का एक शव भी मिला, बाद में जिसकी पहचान चीमन सीएच. मोमिन, जिम्मी के सेकन्ड इन–कमांड (एरिया कमांडर) के रूप में हुई। पकड़े गए कैडरों की पहचान बिष्णु एम. संगमा और फातिमा एम. मारक के रूप में हुई। क्षेत्र से भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारुद बरामद हुआ।

यह अभियान किसी सिविलियन अथवा सैन्य दल को किसी क्षति के बिना विशिष्ट रूप से निष्पादित किया गया। सम्पूर्ण मुठभेड़ के दौरान, श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट और 210 कोबरा बटालियन के श्री कुलदीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट ने आगे रहकर अपने सैन्य दलों का नेतृत्व किया और अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च स्तरीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उन्होंने प्राण घातक स्थिति में अपने प्राणों को जोखिम में डाला और अधिक सहायता के बिना मुठभेड़ का सामना किया और 01 खूंखार जीएनएलए को मार गिराया तथा 02 विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया।

की गई बरामदगी :

- एके श्रृंखला की राइफल–01
- एके श्रृंखला की मैगजीन–06
- 7.62×39 एमएम के जिंदा गोलाबारुद–160 राउंड
- 7.65 एमएम की पिस्तौल–02
- 7.65 एमएम पिस्तौल की मैगजीन–03
- 7.65×25 एमएम के जिंदा गोलाबारुद–19 राउंड
- 08 जिंदा कारतूसों के साथ एक एसबीबीएल बंदूक
- विभिन्न क्षमता वाले 18 जिंदा गोलाबारुद
- .22 जिंदा गोलाबारुद के 07 राउंड
- एके गोलाबारुद के 24 खाली खोखे
- एचई ग्रेनेड–01
- वायरलेस सेट–03
- वायरलेस सेट चार्जर–02
- जिलेटिन मोम–बाल बियरिंग के साथ लगभग 400 ग्राम
- एक प्लास्टिक में पैक संदिग्ध विस्फोटक सामग्री

इस मुठभेड़ में श्री अमित शर्मा, उप कमांडेंट और कुलदीप सिंह दहिया, सहायक कमांडेंट ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.06.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 151–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अमरेन्द्र तिवारी,
सहायक कमांडेंट

02. अरविन्द ददोरिया,
उप निरीक्षक

03. हरीश कुमार,
हेड कांस्टेबल

04. संतोष कुमार पाण्डेय,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 27.11.2013 को पुलिस अधीक्षक, ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय से पुलिस थाना विलियम नगर जिला ईस्ट गारो हिल्स (मेघालय) के अंतर्गत गांव चियोक्ग्रे के आम क्षेत्र में सशस्त्र विद्रोहियों का एक शिविर होने की विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई। तदनुसार, सुनियोजित योजना बनाए जाने तथा विस्तृत विचार–विमर्श के बाद 210 कोबरा के सहायक कमांडेंट श्री अमरेन्द्र तिवारी की कमान में मेघालय पुलिस की स्वॉट टीम सहित 210 कोबरा की दो टीमों ने अभियान चलाया। दिनांक 27.11.2013 को 2300 बजे टीमें आधार शिविर से चल पड़ीं ताकि गुप्त तरीके से लक्षित क्षेत्र में प्रवेश किया जा सके। चारों ओर छाए घने अंधकार और नदियों के ठिठुरते पानी का मुकाबला करते हुए घने जंगल में रात भर चली छानबीन के पश्चात टुकड़ियां दिनांक 28.11.2013 को 0300 बजे संदिग्ध स्थल के पास पहुंची। संदिग्ध शिविर रणनीतिक दृष्टि से ऐसी जगह पर स्थापित किया गया था, जो घने जंगल से घिरी हुई एक ऊंचाई वाली जमीन पर अवस्थित था, पास में ही गांव था तथा उसके उत्तर में नदी थी, जो एक प्राकृतिक अवरोध का कार्य कर रही थी। क्षेत्र की शुरुआती टोह लेने के बाद भागने के संभावित मार्गों पर आठ अवरोध स्थापित किए गए। सुबह होते ही श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट की कमान में हमला दल सावधानीपूर्वक लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ा। वे शत्रुओं से घिरी हुई जगह की तरफ बढ़ने लगे जबकि वे बखूबी जानते थे कि उनके इस कदम से उनकी जान को खतरा हो सकता है। श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट ने हमले की अगुवाई करने की जिम्मेदारी ली तथा अपने आप को अग्रणी स्काउटों के बीचों–बीच खड़ा किया। उनकी बायीं ओर उप निरीक्षक/जीडी अरविन्द ददोरिया, तथा कांस्टेबल/जीडी संतोष कुमार थे, जबकि हेड कांस्टेगबल/जीडी हरीश कुमार उनकी दाहिनी ओर थे। दल के बाकी सदस्य उनके पीछे हो लिए। जैसे ही स्काउट कुछ आगे की ओर बढ़े, एक पेड़ के पीछे छिपे विद्रोहियों के संतरी ने उन पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी जबकि उनका दूसरा सदस्य इसकी सूचना देने के लिए शिविर की ओर भागा। स्काउटों ने तुरंत कार्रवाई की तथा संतरी के साथ मुठभेड़ शुरू हो गई। कुछ ही क्षण में लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित शिविर से कुछ अन्य सदस्यों ने भी अपने संतरी की सहायता में गोलियां चलानी शरू कर दीं। विद्रोहियों द्वारा चलाई जा रही गोलियों की परवाह किए बिना स्काउट, संतरी को निष्क्रिय करने के लिए गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति का अनुसरण करते हुए संतरी की ओर घुटनों के बल बढ़े। स्काउटों के जबरदस्त साहस और भयमुक्त होकर उन्हें आगे बढ़ता देखकर संतरी को अपनी जान का खतरा महसूस हुआ और वह घने जंगलों की ओर भाग खड़ा हुआ। संतरी के भागने से शिविर की ओर जाने वाला रास्ता खुल गया और तत्काल टुकड़ियों ने उस पर धावा बोल दिया। यह पता चलते ही कि शिविर से विद्रोही अलग–अलग दिशाओं में भागे हैं,

श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट ने अवरोध बन कर खड़े दलों को और अधिक सतर्क रहने तथा भागने वाले विद्रोहियों पर नजर रखने के लिए कहा।

चूंकि किसी भी अवरोध–दल ने भागने वाले विद्रोहियों की सूचना नहीं दी, इससे यह स्पष्ट था कि वे अभी भी घेराबंदी में हैं और कहीं छिपे हुए हैं। पूरे क्षेत्र में गहरा सन्नाटा पसर गया जो कुछ अनहोनी होने की आशंका जता रहा था। ऐसी स्थिति में बिलकुल अलग–थलग पड़ गए विद्रोहियों द्वारा समन्वित हमला किए जाने की संभावना को इंकार नहीं किया जा सकता था। अपनी अड़चनों पर काबू पाते हुए श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट ने अपनी टीम को चार समूहों में विभाजित किया और उन्हें अलग–अलग दिशाओं में तलाशी लेने का आदेश दिया। वे उप निरीक्षक/जीडी अरविन्द ददोरिया,, हेड कांस्टेबल/जीडी हरीश कुमार, कांस्टेबल/जीडी संतोष कुमार पाण्डेय तथा दो और कांस्टेबलों के साथ भागने के सर्वाधिक संभावित मार्ग की ओर बढ़े। जैसे ही उन्होंने ऊंची–ऊंची घास तथा बांसों के झुरमुटों, जिनके कारण देखने में कठिनाई उत्पन्न हो रही थी, को पार करना आरंभ किया, बांसों के झुरमुटों में छिपे विद्रोहियों ने अचानक उन पर जबरदस्त गोलीबारी शुरू कर दी । विद्रोहियों की गोलियों की परवाह किए बगैर श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट, उप निरीक्षक/जीडी अरविन्द ददोरिया,, हेड कांस्टेबल/जीडी हरीश कुमार और कांस्टेबल/जीडी संतोष कुमार पाण्डेय ने जवाबी गोलीबारी की और एक विद्रोही को मार गिराया। स्थिति को भांपते हुए, लगभग 4–5 विद्रोही नदी की दिशा में भागने लगे और साथ–साथ गोलियां भी चलाते रहे। श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट ने इस शुरुआती जीत को हाथ से जाने नहीं दिया और उनके द्वारा चलाई जा रही गोलियों की तनिक भी चिंता न करते हुए उनका पीछा किया। यह देखते हुए कि उनका पीछा किया जा रहा है, एक विद्रोही ने टुकड़ियों पर एक ग्रेनेड फेंका। जोखिम से भरे क्षेत्र का अनुमान लगाते हुए टुकड़ियों ने आड़ लिया और वे बाल–बाल बच गईं। विद्रोही अवरोधकों की ओर भागे तथा चुनौती दिए जाने पर उन पर गोलियां चलाने लगे। कट–ऑफ पार्टी ने जवाबी गोलीबारी की और विद्रोही, हमला दल और कट–ऑफ पार्टी के बीच घिर गए। विद्रोहियों ने अभी भी भागने की आशा नहीं छोड़ी और घनी झाड़ियों का लाभ उठाकर तथा ग्रेनेड फेंकने के साथ–साथ अंधाधुंध गोलियां चलाकर भागने का प्रयास किया । कुछ समय तक विद्रोहियों की ओर से लगातार गोलीबारी होती रही और टुकड़ियां गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति के तहत आगे बढ़ती रहीं। नदी के किनारे पहुंचने पर तीन शव मिले, जिनकी पहचान बाद में यूनाइटेड अचिक लिबरेशन आर्मी (यू ए एल ए) के दुर्दांत उग्रवादी, राकेन डी. संगमा, सिल्सरंग डी. मारक उर्फ रिक्कम आर. मारक और राकमान ए. संगमा के रूप में हुई, जिसके साथ हथियारों, गोलाबारूद और अन्य सामग्रियों सहित कोलंबस शंगडियार नामक एक घायल काडर को भी पकड़ा गया।

श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट, उप–निरीक्षक अरविन्द ददोरिया,, हेड कांस्टेबल/जीडी हरीश कुमार और कांस्टेबल/जीडी संतोष कुमार पाण्डेय ने पूरे अभियान के दौरान अपनी डयूटी के निर्वहन में उल्लेखनीय साहस और अत्यधिक विशेषज्ञता का परिचय दिया। उनके निर्भीक मुकाबले, अदम्य साहस और दिलेरी से मुठभेड़ की दिशा बदल गई, जिसके परिणामस्वरूप यूनाइटेड अचिक लिबरेशन आर्मी (यू ए एल ए) के तीन दुर्दांत सदस्य मारे गए। यद्यपि उनका सामना सीधे विद्रोहियों की गोलियों से हुआ, जिनसे उनकी जान को गंभीर खतरा था, फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और बहादुरी के साथ उनका डटकर मुकाबला किया।

की गई बरामदगी :

- 01 मैगजीन सहित 7.65 मि.मी. पिस्तौल
- 7.65 मि.मी. जिंदा कारतूस–05
- एके राइफल के खाली खोखे–10
- एचई नं. 36 ग्रेनेड–01
- चाइनीज ग्रेनेड–02
- एडैप्टर, माउस, यूएसबी केबल के साथ नया लैपटॉप (एचपी) –01
- एडैप्टर और माउस के साथ एचपी नोटबुक–01
- नोकिया मोबाइल फोन (नोकिया 1100)–01
- सिम कार्ड–02 (आइडिया और वोडाफोन)
- मानचित्र–03 (प्रस्तावित राभा हासोंग राज्य, गारो हिल्स कामरूप मानचित्र असम के ग्वालपाड़ा जिले में से प्रत्येक का एक)

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अमरेन्द्र तिवारी, सहायक कमांडेंट, अरविन्द ददोरिया,, उप निरीक्षक, हरीश कुमार, हेड कांस्टेबल और संतोष कुमार पाण्डेय, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.11.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 152–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. पंकज मिश्रा
उप कमांडेंट

02. मुकेश कुमार सिंह
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

यह सूचना मिलने के पश्चात कि माओवादियों का एक मजबूत दल पुलिस थाना अरकी, जिला खूंटी के अंतर्गत मनीबेरा वन क्षेत्र में मौजूद है तथा सुरक्षा बलों के कार्मिकों पर घात लगाकर हमला करने वाला है, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और राज्य पुलिस द्वारा संयुक्त रूप से एक अभियान चलाने की योजना बनाई गई। माओवादियों का एक मजबूत गढ़ माने जाने वाले इस क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाने के लिए श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट की कमान में 94 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की चार प्लाटूनों और श्री पी. आर. मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक, खूंटी की कमान में राज्य पुलिस के एक घटक को तैनात किया गया। संयुक्त दल आधार शिविर से दिनांक 14.01.2014 को 0400 बजे अत्यधिक ठंड वाले मौसम में अभियान के लिए रवाना हुआ। चूंकि इस क्षेत्र में माओवादी भारी संख्या में मौजूद होते हैं, इसलिए इस बात की पूरी संभावना थी कि टुकड़ियों पर घात लगाकर हमला किया जा सकता है। इस खतरे के बावजूद, श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट ने कन्वॉय का नेतृत्व किया ताकि टुकड़ियों को माओवादियों द्वारा चुनौती दिए जाने की स्थिति में वे मुकाबला करने के लिए आगे रहें। गम्हरिया गांव के निकट वाहन छोड़ने के बाद दल अंधेरे में, उबड़–खाबड़ क्षेत्र और छोटे मोटे सोतों वाली गहरी नदी होने के बावजूद कच्चे रास्तों से आगे बढ़े। कमांडरों ने गांव लाबेद के निकट वन क्षेत्र की पहले तलाशी लेने और यदि वहां पर माओवादी नहीं मिलते हैं, तब गांव मनीबेरा की ओर बढ़ने का निर्णय लिया था। दलों ने बेहद कठिन क्षेत्र में लगभग 6 किमी. की यात्रा की और लगभग 0630 बजे गांव लाबेद के समीप पहुंचे। जैसे ही दलों ने जंगल की तलाशी लेनी आरंभ की, उन्हें गांव और जंगल के बीच झुरमुटों में कुछ संदिग्ध गतिविधियां दिखाई पड़ी। माओवादियों की उपस्थिति की पुष्टि करने के लिए, कांस्टेबल/जीडी मुकेश कुमार, उप कमांडेंट पंकज मिश्रा और सहायक पुलिस अधीक्षक अभियान खूंटी श्री पी. आर. मिश्रा सहित बहादुर सैनिकों के एक छोटे हमला दल ने आगे से तथा बांयी और दांयी ओर से एक–एक दल ने आगे बढ़ना शुरू कर दिया। जैसे ही श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट की कमान में हमला दल झुरमुटों के समीप गया, उन्हें बंदूक से लैस एक माओवादी दिखाई पड़ा। चूंकि माओवादियों के मुख्य समूह का पता नहीं चल पाया था, इसलिए हमला दल संतरी को पकड़ने के लिए उसकी ओर बढ़ा। यह कार्य दिलेरी का था क्योंकि संतरी परिष्कृत हथियारों से लैस था और माओवादियों के मुख्य समूह की अवस्थिति का पता नहीं था। इसी बीच दूसरे दलों ने भी लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ना आरंभ कर दिया और दोनों ओर से मुख्य हमला दल की सहायता में जुट गए। जैसे ही हमला दल माओवादियों के निकट पहुंचा, उनकी गतिविधि पकड़ में आ गई और संतरी ने उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। कुछएक गोलियां चलाने के बाद, संतरी झुरमुटों की ओर भागा जहां माओवादियों का मुख्य समूह मौजूद था। मुख्य समूह सुरक्षित जगहों पर आड़ लेकर बैठा हुआ था और वे संतरी से लगभग 50 मीटर की दूरी पर थे। टुकड़ियों की हलचल को भांपते हुए

माओवादियों के समूह ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट, श्री पी. आर. मिश्रा, सहायक पुलिस अधीक्षक अभियान और कांस्टेबल मुकेश कुमार बेहद जोखिम वाली स्थिति में थे और वे माओवादियों की गोलियों से बाल–बाल बच रहे थे। अपनी जान जोखिम में होने के बावजूद, उन तीनों बहादुरों ने गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति अपनाई। शीघ्र ही सहायता दलों ने भी माओवादियों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी और माओवादियों को अपनी जान बचाने के लिए उस जगह से भाग जाने के लिए विवश कर दिया। जब माओवादी भाग रहे थे, उन्होंने श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट, श्री पी. आर. मिश्रा, सहायक पुलिस अधीक्षक अभियान और कांस्टेबल मुकेश कुमार पर जबरदस्त गोलीबारी की, लेकिन उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना माओवादियों का पीछा किया। अपनी जान को जोखिम में डालकर वे माओवादियों के समीप पहुंचे और उन पर जबरदस्त गोलियां चलाई। इस अदम्य और निर्भीक हमले में एक माओवादी घटनास्थल पर ही मारा गया जबकि अन्य कई माओवादी घायल हो गए। इस हमले से माओवादी भौंचक रह गए और अपनी जान बचाने की मंशा से माओवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी का सहारा लिया और एक के बाद एक ग्रेनेड फेंके। कुछ ही मीटर पर विस्फोट होने के कारण टुकड़ियों को आगे न जाने के लिए विवश होना पड़ा। माओवादियों ने इस स्थिति का लाभ उठाया और घनी झाड़ियों की आड़ लेकर भाग खड़े हुए परन्तु एक माओवादी को आगे बढ रही टुकड़ियों ने घेर लिया। घिरे हुए माओवादी को पकड़ने के लिए हमला दल आगे बढ़ा, लेकिन उन्हें घिरे हुए माओवादी और सुरक्षित दूरी पर पोजीशन लिए हुए उसके साथियों द्वारा की जा रही जबरदस्त गोलीबारी का सामना करना पड़ा। उप कमांडेंट पंकज मिश्रा, कांस्टेबल मुकेश कुमार और सहायक पुलिस अधीक्षक अभियान पी. आर. मिश्रा के नेतृत्व वाला हमला दल गोलियों की परवाह किए बिना आगे बढा और घिरे हुए माओवादी को पकड़ने में सफल हो गया। यह इन तीन अधिकारियों के अत्यधिक साहस और धैर्य का नतीजा था कि एक जीवित माओवादी पकड़ा गया जिसने बाद में माओवादी समूहों के बारे महत्वपूर्ण जानकारी का खुलासा किया। इस मुठभेड़ के पश्चात इस पूरे क्षेत्र की तलाशी ली गई और माओवादियों के छिपने के ठिकाने को नष्ट किया गया। इस क्षेत्र से निम्नलिखित सामान बरामद हुए :–

क्रम सं.	बरामद हथियार/गोलाबारूद और सामान	हथियार/यूनिट
01	12 बोर की सिंगल बैरल गन	02
02	12 बोर के जिंदा लाइव राउंड	06
03	खाली खोखा	01

माओवादियों की जबरदस्त गोलीबारी और अपनी प्राणों का अत्यधिक जोखिम होने के बावजूद इस पूरे अभियान में उपर्युक्त कार्मिकों ने अपनी डयूटी के प्रति जबरदस्त समर्पण का परिचय दिया। जान को जोखिम में डालकर उन परिस्थितियों में उनके द्वारा दिखाया गया धैर्य न केवल अनुकरणीय है बल्कि यह अत्यधिक साहस, शौर्य, निष्ठा, समर्पण और कर्तव्यपरायणता का भी परिचय देता है। माओवादियों और हमला दल के बीच बहुत कम दूरी होने तथा जबरदस्त गोलीबारी के कारण इस पूरे अभियान में जीवन और मृत्यु का अंतर बेहद कम रहा।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री पंकज मिश्रा, उप कमांडेंट एवं मुकेश कुमार सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.01.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 153–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अरुण कुमार सिंह,
उप कमांडेंट

02. गिरेन्द्र सिंह तोमर,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 24.02.2014 को, 218 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को पुलिस थाना घाघरा, जिला गुमला (झारखंड) के अंतर्गत इका गांव के आम क्षेत्र में माओवादी दस्ते के वरिष्ठ कमांडरों जैसे नकुल यादव, सुशील गंजू, मुनेश्वर और लालमन सिंह (सब–जोनल कमांडर) की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त हुई। यह भी जानकारी दी गई थी कि माओवादी गांव वालों की एक बैठक बुला सकते हैं तथा उन्हें संगठन से जुड़ने के लिए विवश कर सकते हैं। इन माओवादियों को पकड़ने या उन्हें समाप्त करने के लिए यह योजना बनाई गई कि एक छोटा दल क्षेत्र में गुप्त तरीके से भेजा जाएगा जो पहले माओवादियों का पता लगाएगा और तब उन पर हमला बोलेगा। तदनुसार, श्री ए.के. सिंह, उप कमांडेंट की कमान में 218 बटालियन तथा श्री पवन कुमार,

सहायक पुलिस अधीक्षक की कमान में राज्य पुलिस को लेकर एक छोटे दल का गठन किया गया तथा उन्हें इस अभियान की जानकारी कमांडेंट, 218 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा दी गई। 2000 बजे टुकड़ियां वाहनों में सवार होकर लक्षित क्षेत्र की ओर बढ़ीं। वाहन से 25 कि.मी. की दूरी तय करने तथा गांव गम्हरियां को पार कर जाने के पश्चात वे वाहन से उतर कर गुप्त तरीके से वन में प्रवेश कर गए। घने जंगलों, कठिन क्षेत्र, घुप्प अंधेरे और घने कोहरे का मुकाबला करते हुए टुकडियां पूरी सतर्कता के साथ अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ीं। ऐसी स्थिति में, घने जंगल में माओवादी समूह या उनके संतरी के साथ अचानक होने वाली मुठभेड़ से इन्कार नहीं किया जा सकता था। इस स्थिति से बचने के लिए श्री अरुण कुमार, उप कमांडेंट ने अपनी टुकड़ियां को अपने कदमों की आहट न होने देने का आदेश दिया जबकि वे स्वयं नाइट वीजन उपकरण के माध्यम से जंगल की निगरानी करने लगे। घना कोहरा चीजों को खतरनाक और जोखिमपूर्ण बना रहा था। 4 घंटे तक पैदल चलने तथा अत्यधिक गोपनीयता बनाए रखने के लिए गाँवों से बच निकलते हुए वे 0130 बजे इका गांव के निकट पहुंचे। अब जो कार्य सर्वप्रथम था, वह यह था कि पहले माओवादी दस्ते का पता लगाया जाए और तब उन पर हमला किया जाए। संपर्क मार्गों पर तीन अवरोध दल (कट–ऑफ) तैनात करके श्री अरुण कुमार, उप कमांडेंट बहादुर सैनिकों के अपने छोटे दल के साथ माओवादियों की उपस्थिति का पता लगाने के लिए गांव की तरफ बढ़े। घुप्प अंधेरे और घने कोहरे के कारण नाइट विजन उपकरण से भी देखने में दिक्कत आ रही थी। जब बहादुरों का यह छोटा दल गांव के पंचायत भवन के निकट पहुंचा, तब भवन के अंदर छिपे माओवादियों ने उन पर जबरदस्त गोलीबारी की। टुकड़ियां बाल–बाल बचीं क्योंकि कोई भी कार्मिक इस अंधाधुंध गोलीबारी की चपेट में नहीं आया। अचानक हुए इस हमले के लिए तैयार टुकड़ियों ने भी जवाबी गोलीबारी की तथा अत्यधिक कम दूरी से जबरदस्त मुठभेड़ आरंभ हो गई। यह जानते हुए कि माओवादियों का कमांडर घटना–स्थल से सबसे पहले भागेगा तथा अपने सदस्यों को टुकड़ियों से मुकाबला करने में लगाए रखेगा, श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट ने सहायक उप निरीक्षक/जीडी जी.एस. तोमर को साथ लिया तथा घुटनों के बल भवन के पीछे की ओर बढ़ने लगे। जब वह 10 मीटर ही जा सके थे, तब श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट ने यह नोट किया कि जैसा उन्होंने अनुमान लगाया था माओवादी अब भागने लगे हैं। यह जानते हुए कि वे खुले में हैं और किसी भी तरह की आवाज माओवादियों की गोलियों को आमंत्रण देगी, दोनों ने माओवादियों को भागने से रोकने के लिए गोलियां चलाईं। श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट और सहायक उप निरीक्षक/जीडी जी.एस. तोमर द्वारा चलाई गई गोलियों का नतीजा निकला और गोलियां कुछ माओवादियों को लगीं लेकिन जल्द ही वे स्वयं भी चारों तरफ से बरस रहीं गोलियों से घिर गए। इस विषम परिस्थिति में, उन्होंने अपना साहस जुटाया और माओवादियों पर जबरदस्त गोलियां बरसाते हुए अप्रतिम बहादुरी का परिचय दिया और उन्हें मार गिराया। उनकी इस दिलेरी से माओवादियों को सुरक्षित स्थान के लिए भागने हेतु विवश होना पड़ा और इस स्थिति का फायदा उठाकर वे दोनों पेड़ों की आड़ में हो लिए। यह समझते हुए कि श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट और सहायक उप निरीक्षक/जीडी जी.एस. तोमर उनके भागने में प्रमुख अड़चन हैं, दो माओवादी पेड़ के पीछे जाकर टुकड़ियों को व्यस्त रखने के लिए गोलियां और ग्रेनेड बरसाने लगे जबकि उनके अन्य साथी भागने लगे। स्थिति हाथ से निकलती हुए जानकर श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट ने पीछे की टुकड़ियों को आगे आने तथा माओवादियों का मुकाबला करने के लिए कहा और वे स्वयं तथा सहायक उप निरीक्षक/जीडी जी.एस. तोमर अपनी जान की परवाह किए बिना गोलियों की बरसात में घुटनों के बल रेंगने लगे ताकि सटीक गोलियां चलाने के लिए सही जगह मिल सके। जब वे वांछित स्थल तक पहुंच गए, तब उन्होंने माओवादियों पर गोलीबारी की तथा एक माओवादी को मार गिराया। अपने साथी की दुगर्ति देखकर दूसरा माओवादी उस स्थान से भागने लगा। यह देखकर वे दोनों रूके नहीं और उन्होंने माओवादियों का पीछा किया और उसे भी घायल कर दिया, लेकिन वह क्षेत्र, अंधेरे और कोहरे का लाभ उठाकर भागने में सफल हो गया। सुबह मुठभेड़–स्थल की विस्तृत तलाशी ली गई और एक एसएलआर राइफल, 95 राउंड गोलाबारूद, 49,000/– रु. नकद और अन्य आपत्तिजनक चीजों और दस्तावेजों के साथ लालमन सिंह (सीपीआई माओवादी का सब–जोनल कमांडर) नामक मारे गए माओवादी का शव बरामद हुआ।

इस पूरे अभियान की योजना अनुकरणीय तरीके से बनाई और निष्पादित की गई थी। टुकड़ियों द्वारा प्रदर्शित जबरदस्त प्रतिबद्धता, असाधारण धैर्य और अदम्य साहय के कारण माओवादियों के नापाक मंसूबे विफल कर दिए गए और उनका एक दुर्दांत कमांडर मारा गया। 218 बटालियन के श्री. ए. के. सिंह, उप कमांडेंट और सहायक उप निरीक्षक/जीडी गिरेन्द्र सिंह तोमर ने अभियान के दौरान जबरदस्त साहस, प्रतिबद्धता, शौर्य और असाधारण धैर्य का परिचय दिया और अपनी जान जोखिम में डालकर लालमन सिंह (सीपीआई माओवादी का सब–जोनल कमांडर) नामक एक दुर्दांत माओवादी को मार गिराया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अरुण कुमार सिंह, उप कमांडेंट और गिरेन्द्र सिंह तोमर, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25.02.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 154–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. संजय कुमार,
उप कमांडेंट

02. मनोज कुमार यादव,
सहायक कमांडेंट

03. दिलीप कुमार सिंह,
सहायक कमांडेंट

04. शब्बीर अहमद पोर,
कांस्टेबल

05. महेश चन्द मीणा,
उप निरीक्षक

06. दीप्ति रंजन बिश्वाल,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 22.07.2014 को सायंकाल अपने ही स्रोतों से खुफिया जानकारी मिली कि कुंदन पाहन उर्फ विकासजी, चंदन और तुलसी दास उर्फ विशालजी नाम के बड़े माओवादी नेता अपने सशस्त्र काडरों के साथ पुलिस थाना अरकी, जिला खूंटी के अंतर्गत गांव लेम्बा की पहाड़ियों में बैठक करने जा रहे हैं। पुलिस अधीक्षक (अभियान) रांची और अपर पुलिस अधीक्षक (अभियान) खूंटी से परामर्श करके 203 कोबरा और 133 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस द्वारा एक अभियान, जिसका कोड नाम "मूनलाइट" था, की योजना बनाई गई। तदनुसार, एक छोटे दल द्वारा अभियान चलाए जाने की योजना बनाई गई जिसमें 4 मारक दल शामिल किए गए, जिनमें से प्रत्येक दल की कमान एक सशक्त कमांडर के पास थी। मारक दल–1 की कमान श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट को सौंपी गई, जिसमें टीम कमांडर के रूप में श्री मनोज कुमार यादव, सहायक कमांडेंट अपने कोबरा कमांडो के साथ शामिल थे। मारक दल–2 की कमान श्री एस.के. झा, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण, रांची को सौंपी गई और इसमें श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट की कमान में 133 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियां शामिल थीं। मारक दल–3 की कमान श्री पी.आर. मिश्रा, सहायक पुलिस अधीक्षक (अभियान) खूंटी के पास थी और उसमें उनका क्यूएटी शामिल था। मारक दल–4 की कमान श्री हर्षपाल सिंह, सहायक पुलिस अधीक्षक (अभियान) रांची को सौंपी गई और इसमें 203 कोबरा की टुकड़ियां शामिल थीं। ये टुकड़ियां ए/203 कोबरा शिविर (पुराना जेल परिसर, रांची) में एकत्रित हुईं और इन्हें जानकारी दी गई।

कमांडरों द्वारा विस्तारपूर्वक और गहन जानकारी दिए जाने के बाद, ये टुकड़ियां 2330 बजे शिविर से रवाना हुई और गंतव्य स्थल अर्थात् गांव लेम्बा से 03 किमी. पहले पहुंच गईं। सावधानीपूर्वक उतर जाने के बाद टुकड़ियां सारी मुसीबतों अर्थात् दलदल, पहाड़ी क्षेत्र, कंटीली घास, भारी झुरमुटों और घुप्प अंधेरे का मुकाबला करती हुईं आगे बढ़ीं। चूंकि बैठक होने की जगह सही–सही ज्ञात नहीं थी, इसलिए टुकड़ियों ने क्षेत्र की तलाशी के लिए सुबह होने तक इंतजार किया। सुबह होते ही मारक दल क्षेत्र की तलाशी लेते हुए पहाड़ियों की ओर बढ़े। मारक दल–1 और 2 बीच में थे जबकि मारक दल–3 उनकी बायीं ओर तथा मारक दल–4 दाहिनी ओर था। जब मारक दल–1 क्षेत्र की तलाशी ले रहा था, उसी समय पेड़ों और झाड़ियों के पीछे छिपे माओवादियों के संतरी ने उनकी गतिविधियों को देखकर उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। मारक दल–1 और 2 ने तत्काल पोजीशन ली और जवाबी गोलीबारी की। इसके बाद जबरदस्त गोलीबारी होने लगी क्योंकि कुछ और माओवादी भी संतरी की सहायता करने लगे थे। इस भीषण गोलीबारी में, 203 कोबरा के श्री मनोज कुमार यादव, सहायक कमांडेंट को दायीं आंख के पास उस समय एक गोली लगी जब वे कवर से बाहर आकर माओवादियों की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे थे। उनके साथी उप निरीक्षक/जीडी महेश चन्द मीणा तत्काल अपनी कवर से बाहर कूद पड़े और उन्हें कवर के पीछे खींच लिया। यह देखते हुए कि समय निकलता जा रहा है और अन्य माओवादियों को घटना–स्थल से भागने का मौका मिल रहा है, 203 कोबरा के श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट ने अपने जवानों को गोली चलाते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाने का आदेश दिया। घायल होने के बावजूद श्री मनोज कुमार यादव, सहायक कमांडेंट ने उप निरीक्षक/जीडी महेश चन्द मीणा और कांस्टेबल/जीडी डी.आर. बिश्वाल को अपने साथ लिया तथा चल रही गोलियों की परवाह और अपनी जान की लेशमात्र चिंता न करते हुए माओवादियों की ओर बढ़े। जवानों की जबरदस्त बहादुरी से डरकर दो माओवादियों ने धंसी जमीन का फायदा उठाकर उस स्थान से भागना सुरक्षित समझा। यह देखते हुए श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट एक माओवादी के पीछे भागे, जो वहां स्थित एक स्कूल भवन की आड़ लेते हुए पहाड़ी की तरफ भाग रहा था। इसी बीच दाहिनी ओर मौजूद मारक दल–4 गोलियों की आवाज सुनकर स्कूल भवन को कवर करते हुए मुठभेड़ स्थल की ओर भागा। एक माओवादी, जो स्कूल भवन की आड़ लेते हुए पहाड़ी की तरफ भाग रहा था, एकाएक मारक दल–4 के सदस्यों अर्थात् 133 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी शब्बीर अहमद पोर के बिलकुल आमने–सामने आ गया। जवानों के एकदम सामने आने पर माओवादी ने अपने स्वचालित हथियारों से उन पर अंधाधुंध गोलियां बरसानी शुरू कर दी। इससे श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी शब्बीर अहमद पोर बाल–बाल बचे और बिना विचलित हुए माओवादी पर जवाबी गोलियां दागनी शुरू की जिसके कारण माओवादी को आड़ लेने के लिए भागना पड़ा। आगे से जवानों अर्थात् श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी शब्बीर अहमद पोर से तथा पीछे की ओर से श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट से घिर जाने पर माओवादी स्कूल भवन के अंदर दौड़ा तथा मजबूत दीवारों के पीछे एक कमरे में आड़ ले ली। कमरे में सुरक्षित महसूस होने पर माओवादी, जवानों पर अंधाधुंध गोलियां चलाने लगा। बाकी जवान स्कूल भवन की ओर दौड़े और उसे सभी ओर से कवर कर लिया। तब माओवादी को निष्क्रिय करने के लिए श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट ने यह निर्णय लिया कि स्कूल के पीछे मौजूद जवान उस कमरे को निशाना बनाकर भारी गोलीबारी करेंगे, जिसमें माओवादी छिपा हुआ है, जिससे उसका ध्यान बंट जाएगा, जबकि श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी शब्बीर अहमद पोर आगे से कमरे के नजदीक जाकर हमला कर देंगे। यह योजना सफल रही और तीनों जांबाज कमरे के नजदीक पहुंचे और कमरे के भीतर की ओर गोलियां चलाने लगे। जब कमरे के

अंदर से गोलियां चलनी रुक गईं, तब कुछ मिनट प्रतीक्षा करने के पश्चात् वे तीनों कमरे में सावधानीपूर्वक घुसे तथा उन्हें वहां निम्नलिखित हथियारों/गोलाबारुद और सामानों के साथ एक शव मिला, जिसकी पहचान बाद में सीपीआई (माओवादी) के सब–जोनल कमांडर और स्पेशल एरिया केमेटी चीफ नं. 2 तुलसी दास उर्फ विशाल जी के रूप में हुई :–

1. मैगजीन सहित एके 47 राइफल–01
2. मोटरोला वॉकी–टॉकी–01
3. 7.62x39 मिमी. के जिंदा रांउड–161
4. ग्रेनेड–01
5. 7.62x39 मिमी. के खाली खोखे–83
6. मोबाइल–03
7. चार्जर–02

सभी बाधाओं अर्थात् प्रतिकूल क्षेत्र, दलदली जमीन, अपर्याप्त कवर, शत्रुओं की भारी और जबरदस्त गोलीबारी ने जवानों के संकल्प की परीक्षा ली, लेकिन 203 कोबरा बटालियन के श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट, श्री मनोज कुमार, सहायक कमांडेंट, उप निरीक्षक/जीडी महेश चन्द मीणा, कांस्टेबल/जीडी डी.आर. बिश्वाल और 133 बटालियन के श्री दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी शब्बीर अहमद पोर ने अपने प्राणों को दांव पर लगाकर अत्यधिक जोखिम उठाते हुए शत्रु के पास पहुंचे और असाधारण साहस और पेशेवर दक्षता का परिचय देते हुए एक दुर्दांत माओवादी कमांडर को मार गिराया।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री संजय कुमार, उप कमांडेंट, मनोज कुमार यादव, सहायक कमांडेंट, दिलीप कुमार सिंह, सहायक कमांडेंट, शब्बीर अहमद पोर, कांस्टेबल, महेश चन्द मीणा, उप निरीक्षक और दीप्ति रंजन बिश्वाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 155–प्रेज/2015–राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. आलोक पंवार,
सहायक कमांडेंट

02. रविन्द्र कुमार,
कांस्टेबल

03. जतन लाल,
कांस्टेबल

04. गुरू प्रसाद के. एन.,
कांस्टेबल

05. मुकेश कुमार गुर्जर,
कांस्टेबल

06. विजय सिंह राठौर,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

उप महानिरीक्षक दांतेवाड़ा, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को पुलिस थाना चिंतागुफा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के अंतर्गत गांव रामाराम के निकट घने जंगल में माओवादियों के एकत्रित होने के बारे में जानकारी मिली जो अपना शहीद सप्ताह मनाने वाले थे। यह भी सूचना प्राप्त हुई कि माओवादियों ने इसके लिए एक स्मारक अर्थात् शहीद स्मारक भी स्थापित किया है। इस जानकारी के आधार पर, श्री डी. पी. उपाध्याय, उप महानिरीक्षक दांतेवाड़ा, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नेतृत्व में दिनांक 28.07.2014 को एक अभियान चलाया गया। इस अभियान की योजना बारीकी से बनाई गई, जिसमें तीन अलग–अलग दिशाओं से आने वाले 74 बटालियन, 150 बटालियन, 223 बटालियन और 206 कोबरा के जवानों को शामिल करते हुए तीन दल बनाए गए, जिन्हें गांव रामाराम के निकट घने

जंगल में आपस में मिलना था। एक बेहद कठिन भू–भाग और भारी वर्षा से उफन रहीं नदियों/नालाओं को पार करते हुए दल अंधेरे में साढ़े तीन घंटे चलने के बाद लक्षित क्षेत्र पहुंचे। जंगल क्षेत्र और गांव की तलाशी से किसी भी माओवादी की उपस्थिति का पता नहीं चल पाया, परन्तु एक विशालकाय माओवादी स्मारक ध्वस्त कर दिया गया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि माओवादियों को किसी प्रकार से जवानों की आवाजाही की भनक लग गई थी और वे वहां से चले गए थे। इसके बाद जवानों ने माओवादी स्मारक ढहा दिया और सुनियोजित ढंग से वापस लौटने की योजना बनाई। जब 74 और 223 बटालियन के जवानों वाला दल गांव रामाराम से बाहर आ रहा था, तब उन पर माओवादियों द्वारा गोलियों की बौछार हुई जो घात लगाकर गांव के बाहर बैठे हुए थे। जब मुठभेड़ की शुरुआत हुई, तब 150 बटालियन के क्यू ए टी का नेतृत्व श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट कर रहे थे। घात लगाए गए क्षेत्र से अपने जवानों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए उन्होंने भारी गोलीबारी के बीच बेहद प्रशंसनीय तरीके से अपने दल का नेतृत्व किया तथा माओवादियों के पास पहुंचने के बाद प्राणघातक हमले किए। किनारे से हुए इस हमले से माओवादी विचलित हो गए और घिरे हुए जवानों को मुठभेड़ स्थल से हटने का अवसर मिल गया। जवानों को सुरक्षित बाहर निकालने के बाद भी श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट रूके नहीं, बल्कि बड़ी हिम्मत के साथ शत्रुओं के ठिकानों पर हमला किया। अपनी जान की सुरक्षा तथा भारी गोलीबारी से बेपरवाह उन्होंने दूसरों को भी कार्य कर दिखाने के लिए प्रेरित किया। जवानों को गंभीर रूप से घायल करने की योजना विफल होते देख माओवादियों ने गुस्से में आकर श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट के दल पर जबरदस्त हमला बोल दिया। भारी गोलीबारी और ग्रेनेडों के फेंके जाने के कारण श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी रविन्द्र कुमार और कांस्टेबल/जीडी जतन लाल को चोटें आईं। माओवादियों ने तुरंत जवानों को घेरना शुरू कर दिया। इस मौके पर कांस्टेबल/जीडी गुरू प्रसाद, कांस्टेबल/जीडी मुकेश कुमार गुर्जर और कांस्टेबल/जीडी विजय सिंह राठौर ने समय की मांग को जाना और अपनी सटीक गोलीबारी और सीजीआरएल के इस्तेमाल से वहां मौजूद माओवादियों को जबरदस्त क्षति पहुंचाई। चोटों और विस्फोटों से माओवादियों का मनोबल टूटने लगा और वे उस जगह से भागने लगे। जवानों ने बाहर आकर माओवादियों का पीछा किया, परन्तु उफन रहे नाले के पार छिपे माओवादियों के दूसरे समूह ने अपने काडरों को बचाने के लिए जवानों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। यह देखते हुए कि ऐसे मौके पर भाग रहे माओवादियों का पीछा करना असंभव है, श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट ने अपने जवानों को नाले के पार छिपे माओवादियों पर हमला करने का आदेश दिया। चोटिल होने के बावजूद उन्होंने आगे बढ़कर नेतृत्व किया तथा कांस्टेबल/जीडी रविन्द्र कुमार, कांस्टेबल/जीडी जतन लाल, कांस्टेबल/जीडी गुरु प्रसाद, कांस्टेबल/जीडी मुकेश कुमार गुर्जर तथा कांस्टेबल/जीडी विजय सिंह राठौर ने इस कार्य में उनका बखूबी सहयोग दिया। यूबीजीएल की गोलीबारी से हुए हमले के कारण कुछ माओवादी, जो पेड़ों पर चढ़े हुए थे, चोट खाने के बाद गिरते दिखाई पड़े। जब गोलीबारी शांत हुई, तब इलाके की तलाशी ली गई और हथियार के साथ एक माओवादी का शव बरामद हुआ। उफन रहे नाले के दूसरी ओर तलाशी नहीं ली जा सकी, क्योंकि नाले को पार करना तथा कम रोशनी में घने जंगल में प्रवेश करना जवानों के लिए घातक सिद्ध हो सकता था।

अभियान के दौरान, अपने जवानों को उनसे घिरता हुआ देखकर श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट सीधे माओवादियों की ओर गए और जबरदस्त हमला बोला। किनारे से किए गए इस हमले से कम से कम 4 माओवादी या तो मारे गए अथवा उन्हें गंभीर चोटें आईं। अधिकारी द्वारा शत्रु के सामने आगे बढ़कर प्रदर्शित इस बहादुरी से उनके दल के अन्य साथियों को प्रेरणा मिली और उन्होंने भी अपने घायल होने की परवाह किए बगैर पूरी शक्ति के साथ मुकाबला किया। शत्रु के पास इन जवानों के संकल्प, प्रतिबद्धता और साहस का कोई उत्तर नहीं था और उन्होंने जवानों के इस आवेश और सटीक गोलीबारी से भागना ही सुरक्षित समझा। यद्यपि घटना–स्थल से एक ही शव बरामद हुआ, लेकिन खुफिया जानकारी से पता चलता है कि इस मुठभेड़ में 10 से अधिक माओवादी या तो मारे गए अथवा गंभीर रूप से घायल हुए थे।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री आलोक पंवार, सहायक कमांडेंट, रविन्द्र कुमार, कांस्टेबल, जतन लाल, कांस्टेबल, गुरु प्रसाद के.एन., कांस्टेबल, मुकेश कुमार गुर्जर, कांस्टेबल तथा विजय सिंह राठौर, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 156–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. बृजेन्द्र कुमार मिश्रा,
उप कमांडेंट

02. जय कुमार तिवारी,
कांस्टेबल

03. अमित जामवाल,
कांस्टेबल

04. बोरसे दीपक सुरेश,
कांस्टेबल

05. फिन्टूश कुमार,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

छत्तीसगढ़ का सुकमा जिला सदैव माओवादी गतिविधियों का केन्द्र–बिन्दु रहा है। पुलिस थाना भेजी, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के अंतर्गत गांव जग्गावरम के निकट माओवादियों की आवाजाही के बारे में खुफिया जानकारी मिलने के बाद, 208 कोबरा के श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने क्षेत्र, विगत की घटनाओं, आने–जाने के मार्ग और माओवादियों की आवाजाही के पैटर्न का विश्लेषण करने के पश्चात् सुनियोजित ढंग से एक अभियान की योजना बनाई। अभियान दिनांक 21.08.2014 को 2200 बजे चलाया गया जिसमें सी/208, डी/208 कोबरा, 219 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 2 कंपनियों और राज्य पुलिस के जवान शामिल हुए। योजना के अनुसार, कोबरा के जवानों को क्षेत्र में सीधे और गुप्त तरीके से हमला करना था, जबकि 219 बटालियन के जवानों को माओवादियों का ध्यान भटकाने के लिए कठिन क्षेत्र में छद्म अभियान चलाना था। कठिन क्षेत्र में सुनियोजित ढंग से कठिनाई से भरपूर वातावरण में पूरी रात चलते रहने के बाद कोबरा के जवान लक्षित क्षेत्र में पहुंचे और उन्होंने गांव जग्गावरम के आस–पास खड़े किए गए एक माओवादी स्मारक को ध्वस्त कर दिया। वापस लौटते समय श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने कुछ दूरी पर एक तालाब के किनारे कुछ गांव वालों को देखा। दूरबीन की सहायता से बारीकी से देखने पर पता चला कि गांव वालों के साथ सशस्त्र माओवादी भी मौजूद हैं। गांव वालों के मौजूद रहने के कारण जवान गोलियां नहीं चला सकते थे। श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने तत्काल अपने दल को तीन हिस्सों में विभाजित किया, जिसमें से एक दल बायीं और दूसरा दल दायीं ओर को सुरक्षित करने के लिए भेजा गया जबकि तीसरे दल, जिसकी कमान स्वयं उनके पास थी, माओवादियों की ओर सुनियोजित ढंग से बढ़ा। जैसे ये जवान आगे बढ़े, पेड़ों के पीछे तथा सुरक्षित स्थान पर मौजूद माओवादियों के एक संतरी ने जवानों की गतिविधियां देख ली और उन पर गोलियां चलाई। गोलीबारी की आवाज सुनकर माओवादी गांव वालों को छोड़कर जंगल की ओर भागे। आस–पास में गांव वालों की उपस्थिति होने से जवानों को गोलियां चलाने में दिक्कत हुई। माओवादियों को भागता देख श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने उनका पीछा किया जिनके पीछे उनका दल भी भागा। माओवादी जंगल में प्रवेश करके घात लगाकर बैठ गए और जैसे ही जवानों ने जंगल में प्रवेश किया वे उन पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाने लगे। इसमें कांस्टेबल/जीडी जय कुमार तिवारी, कांस्टेबल/जीडी अमित जामवाल, कांस्टेबल/जीडी फिन्टूश कुमार, कांस्टेबल/जीडी बोरसे दीपक और उनके कमांडर श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट बाल–बाल बच गए। खुले में होने तथा अपर्याप्त कवर होने के बावजूद जवानों ने अपनी जान की परवाह किए बिना माओवादियों पर गोलियां चलाईं। श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने सामने से जवानों का नेतृत्व किया तथा उन्हें माओवादियों पर गोलियां चलाते हुए आड़ में जाने का आदेश दिया ताकि माओवादी उन लोगों पर सटीक निशाना न लगा पाएं। इसके पश्चात् काफी कम दूरी पर जबरदस्त मुठभेड़ हुई। सुरक्षा बलों को कोई क्षति न होता देख तथा आस–पास और जवानों की मौजूदगी को देखकर माओवादी एक–एक करके जंगल के भीतर भागने लगे। यह भांपते हुए कि बाएं और दाहिने किनारे पर मौजूद जवानों को माओवादियों को घेरने में समय लग रहा है और माओवादियों ने भागना भी शुरू कर दिया है, श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने अपने जवानों को गोलियां दागते हुए आगे बढ़ने की नीति अपनाने का आदेश दिया। उनके कुशल नेतृत्व में जवान भी उनकी ओर की जा रही गोलीबारी की परवाह किए बिना जबरदस्त मनोबल का परिचय देते हुए आगे बढ़े। गोलीबारी के दौरान घायल माओवादी क्षेत्र से भाग रहे थे/उनको ले जाया जा रहा था जबकि अन्य माओवादी जवानों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए गोलियां चला रहे थे। जैसे ही जवान पास पहुंचे, बचे हुए माओवादी भी मुठभेड़ स्थल से भाग गए। जवान यहीं पर नहीं रुके, बल्कि माओवादियों का पीछा किया और उनके पीछे दौड़े। भाग रहे माओवादियों द्वारा रुक–रुक कर चलाई जा रही गोलियों की परवाह किए बिना जवानों ने पीछा करना नहीं छोड़ा और लगभग 200 मीटर पीछा करने के पश्चात् भाग रहे एक घायल माओवादी पर गोलियां चलाईं और उसे मार गिराया। यदि जवानों ने मुठभेड़ के बाद माओवादियों का पीछा न किया होता, तो निश्चित ही एक दुर्दांत माओवादी कमांडर घायल अवस्था में अन्य माओवादियों की तरह वहां से भाग गया होता। इस भीषण मुठभेड़ के दौरान दो माओवादी मारे गए जिनकी पहचान पोडियम गंगा उर्फ वीजू और पोडियम रामे (एक महिला माओवादी जो घायल हुई और जिसकी बाद में मृत्यु हो गई) के रूप में हुई लेकिन उनका शव बरामद नहीं हो सका।

भारी गोलीबारी होने के बावजूद, श्री बी.के. मिश्रा, उप कमांडेंट ने अपनी जान की परवाह किए बिना आगे बढ़कर अपने जवानों का नेतृत्व किया। उन्होंने स्वयं को कांस्टेबल/जीडी जय कुमार तिवारी, कांस्टेबल/जीडी अमित जामवाल, कांस्टेबल/जीडी बोरसे दीपक और कांस्टेबल/जीडी फिन्टूशकुमार के साथ आगे रखा। उन लोगों ने संयुक्त रूप से माओवादियों को गंभीर क्षति पहुंचाई। यह गोलीबारी लगभग 15 मिनट तक चली और तलाशी के दौरान भारी मात्रा में गोलाबारुद के साथ एक एसएलआर और अन्य माओवादी सामग्रियों सहित वर्दी में पोडियम गंगा उर्फ वीजू (कोन्टा क्षेत्र समिति का प्लाटून कमांडर) का शव बरामद किया गया। बाद में प्राप्त सूचना से पोडियम रामे नामक एक महिला माओवादी के मारे जाने का भी पता चला। अन्य माओवादी भी इस अभियान में घायल हुए थे, लेकिन वे स्थल से भागने में सफल हो गए।

उपर्युक्त कार्मिकों के साहसिक कार्य से निर्दोष लोगों की जान की रक्षा हुई, दुर्दांत माओवादी कमांडर मारे गए तथा अन्य माओवादी घायल हुए और इसके अतिरिक्त, अपनी किसी क्षति के बिना हथियारों एवं गोलाबारुद की बरामदगी हुई, जो अत्यधिक धैर्य, साहस, आत्म–विश्वास, जबरदस्त रणनीति सूझ–बूझ और उच्च कोटि के नेतृत्व और नियंत्रण का उदाहरण है।

की गई बरामदगी :

1. स्लिंग के साथ 7.62 मिमी. सेल्फ लोडिंग राइफल (बी.नं.–16269089)–01

2. एसएलआर मैगजीन–02

3. 7.62 मिमी. के जिंदा कारतूस–22 राउंड

4. 7.62 मिमी. का क्षतिग्रस्त राउंड–1

5. 7.62 मिमी. का खाली खोखा–01

6. 7.62x39 मिमी. के खाली खोखे–06

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बृजेन्द्र कुमार मिश्रा, उप कमांडेंट, जय कुमार तिवारी, कांस्टेबल, अमित जामवाल, कांस्टेबल, बोरसे दीपक सुरेश, कांस्टेबल और फिन्टूश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 157–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	अंजनी कुमार सहायक कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
02.	धनन्जय दास कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
03.	तन्मय भौमिक कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

अपने स्रोतों से विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त हुई, जो दिनांक 12.02.2014 को उप पुलिस महानिरीक्षक अभियान बीजापुर तथा पुलिस अधीक्षक बीजापुर द्वारा सत्यापित की गई, कि माओवादियों का एक समूह पुलिस थाना मिरतूर, जिला बीजापुर (छत्तीसगढ़) के अंतर्गत गांव तामोदी के निकट ठहरा हुआ है। तदनुसार, 204 कोबरा के सहायक कमांडेंट श्री अंजनी कुमार की कमान में क्षेत्र में तलाशी और ध्वस्त करने संबंधी अभियान की योजना बनाई गई। जवानों ने गोपनीयता बनाए रखने और अचंभित करने के लिए अंधेरे में दिनांक 13.02.2014 को 0430 बजे शिविर छोड़ दिया।

दो दिनों तक गुप्त तरीके से बढ़ते रहने के बाद जवान दिनांक 15.02.2014 की सुबह में गांव तमोदी के निकट पहुंचे। यह गांव घने और पहाड़ी जंगल के किनारे अवस्थित था। क्षेत्र का विश्लेषण करने के बाद, श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट ने गांव के पीछे पहाड़ी की तलाशी लेने का निर्णय लिया। जैसे ही जवान पहाड़ी पर ऊँचाई और कुछ दूरी तक चढ़े, झाड़ियों के पीछे छिपे माओवादियों के एक संतरी ने उन पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। जवान, कांस्टेबल/जीडी धनन्जय दास, कांस्टेबल/जीडी तन्मय भौमिक और सहायक कमांडेंट, अंजनी कुमार, बाल–बाल बचे और गोलियां उनके बिलकुल पास से निकल गईं। ये तीनों जवान हरकत में आए और छिपे हुए माओवादी पर गोलियां चलाते हुए घुटने के बल रेंगते हुए आड़ लेने के लिए आगे बढ़े। शीघ्र ही वहां उपस्थित कुछ अन्य माओवादी भी गोलीबारी में शामिल हो गए और जवानों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाने लगे। माओवादियों पर जवाबी हमला करने के लिए, श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट अपने जवानों के साथ गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति के साथ आगे बढ़े। अभी जवान कुछ ही कदम आगे बढ़े थे, जब माओवादियों ने अपने ठहरने के स्थान को सुरक्षित करने के लिए लगाए गए दो आईईडी विस्फोट किए। जवान बाल–बाल बचे और उन्होंने आगे बढ़ना रोक दिया। स्थिति का फायदा उठाकर माओवादियों ने जवानों के दायें–बायें से आगे बढ़ना शुरू किया ताकि उन पर अलग–अलग दिशाओं से हमले किए जा सकें। लेकिन माओवादियों की यह चाल कमांडर ने पकड़ ली और उन्होंने कांस्टेबल/जीडी तन्मय भौमिक को जवानों को घेरने वालों पर यूबीजीएल चलाने का आदेश दिया। भीषण गोलीबारी के बीच कांस्टेबल/जीडी तन्मय भौमिक आड़ से बाहर आए, सुरक्षित पोजिशन ली तथा माओवादियों पर लगातार दो ग्रेनेड फेंके। ग्रेनेडों से विस्फोट होने के कारण माओवादियों को मार्ग में रुकना पड़ गया। इस स्थिति का लाभ उठाकर श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी धनन्जय दास के साथ हो लिए तथा इस बात की परवाह किए बिना कि और आईईडी लगाए गए हो सकते हैं, अपने मार्ग पर घुटने के बल बढ़ने लगे और माओवादियों पर जबरदस्त हमला बोल दिया। इस भीषण हमले का नतीजा निकला और इन दो बहादुर जवानों ने एक माओवादी को मार गिराया। जवानों के साहस से आश्चर्यचकित और पराजित होकर माओवादी घने जंगल और क्षेत्र का लाभ उठाकर घटना–स्थल से भाग खड़े हुए। श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट ने अपने जवानों के साथ माओवादियों का पीछा किया लेकिन वे भागने में सफल हो गए। क्षेत्र की गहन तलाशी के पश्चात, मारे गए माओवादी का शव, एक .303 राइफल, एक देशी हथियार, 02 बैग पैक, .303 राइफल के 05 जीवित राउंड, एके 47 के 03 खाली खोखे, बैटरी, बिजली के तार और साहित्य बरामद हुए।

अभियान के दौरान, श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट, कांस्टेबल/जीडी धनन्जय दास और कांस्टेबल/जीडी तन्मय भौमिक ने महत्वपूर्ण और शौर्यपूर्ण भूमिका निबाही। पूरे अभियान की योजना एक बेहद पेशेवर तरीके से बनाई और निष्पादित की गई। भीषण गोलीबारी के दौरान उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना हमला करने का साहस दिखाया जो माओवादी को मार गिराने में बेहद महत्वपूर्ण साबित हुआ।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अंजनी कुमार, सहायक कमांडेंट, धनन्जय दास कांस्टेबल और तन्मय भौमिक, कांस्टेबल ने अदम्य, वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक का प्रथम बार/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15.02.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 158–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. अजित कुमार,
सहायक कमांडेंट

02. श्रीकान्त पाण्डे,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 03.7.2014 को पुलिस थाना खैरा, जिला जमुई (बिहार) में सुरक्षा बलों के खिलाफ कुछ अत्यधिक जघन्य अपराधों के लिए उत्तरदायी एक दुर्दांत माओवादी कमांडर सिद्धू कोडा, सदस्य, बिहार झारखंड सीमांत क्षेत्रीय समिति (बीजेएसजेडसी) के अपने प्लाटून के साथ मौजूद रहने की जानकारी मिली। 7वीं बटालियन के सेकंड–इन–कमांड श्री हीरा कुमार झा तत्काल हरकत में आए और जानकारी की आवश्यक पुष्टि के बाद उक्त माओवादी को पकड़ने के लिए एक अधिकारी और 42 जवानों के साथ घेराबंदी एवं तलाशी अभियान के लिए चल पड़े। उन्होंने कुछ और माओवादियों की उपस्थिति और संभावित संघर्ष की आशंका जताते हुए 7वीं बटालियन की एक और कम्पनी को पूर्व–निर्धारित क्षेत्र में पहुंचने के लिए बुलाया। अपने दल के साथ श्री हीरा कुमार झा कुछ दूरी सड़क मार्ग से और कुछ दूरी पैदल तय करते हुए लक्षित क्षेत्र तक पहुंचने के लिए 12 कि.मी की दूरी पूरी की जहां श्री अजित कुमार की कमान में 7वीं बटालियन की कंपनी प्रतीक्षा कर रही थी। यह दल लक्षित गांव के समीप 0045 बजे पहुंच गया।

रात में घेराबंदी तथा दिन में तलाशी' के स्वर्णिम नियम पर भरोसा जताते हुए हीरा कुमार झा, सेंकंड–इन–कमांड ने कंपनी के कंपनी कमांडर अजित कुमार, सहायक कमांडेंट को गांव के चारों ओर घेराबंदी करने का निर्देश दिया। यह गांव ऐसी जगह अवस्थित था जहां इसका छोर घने जंगल से लगा हुआ था। आदेशों का पालन करते हुए अजित कुमार ने अपने जवानों की सहायता से गांव की घेराबंदी की और विधिवत रूप से यह सुनिश्चित करने के पश्चात कि भागने के संभावित मार्ग बंद कर दिए गए हैं, उन्होंने अभियान के कमांडर हीरा कुमार झा को हरी झंडी दी, जिन्होंने अजित कुमार के साथ स्वयं यह सुनिश्चित किया कि कोई कमी न रह गई हो। तत्पश्चात, दोनों अधिकारियों ने तलाशी दल के साथ आगे बढ़ते हुए सुबह 0450 बजे गांव की तलाशी आरंभ की। जैसे ही तलाशी दल गांव के दूसरे मकान के पास पहुंचा, उनका स्वागत कुछ दूरी से की गई गोलीबारी ने किया। तलाशी दल ने तत्काल पोजीशन ली और जवाबी गोलियां दागीं परन्तु इस बार उनका सामना अन्य झोपड़ियों से की जा रही ताबड़तोड़ गोलीबारी से हुआ। सभी दिशाओं से गोलियां चलने से गांव अब एक युद्ध क्षेत्र में परिवर्तित हो चुका था। दोनों कमांडरों ने तत्काल स्थिति का जायजा लिया और अपने जवानों को छोटे–छोटे हमला दलों में बांटा तथा उन्हें "गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने" की रणनीति पर अमल करते हुए निर्धारित लक्ष्यों की तरफ बढ़ने का आदेश दिया। हीरा कुमार झा, सेकंड–इन–कमांड, अजित कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे वाला छोटा दल स्वचालित हथियारों से गोलियां बरसाते हुए झोपड़ी की तरफ आगे बढ़ा। इसी बीच, हमला दलों ने निरंतर गोलीबारी और अपनी चारों तरफ हो रहे विस्फोटों की परवाह न करते हुए अपने विशेष लक्ष्यों को ढूंढ निकाला। माओवादियों ने भी यह भांप लिया था कि उनका सामना दृढ़–संकल्प लिए हुए बहादुर जवानों से हो रहा है जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आम नागरिकों को ढाल बनाने की पुरानी सफल नीति का सहारा लेते हुए वे महिलाओं, बच्चों, युवाओं और वृद्ध जनों की आड़ लेकर झोपड़ियों से बाहर आए और साथ लगे जंगल की ओर अपना रास्ता ढूंढने लगे। इस स्थिति में जवानों को गोलियां चलानी बंद करनी पड़ीं, क्योंकि इससे दुर्दांत माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच फंसे निर्दोष नागरिकों की जान को खतरा हो सकता था। इसके साथ ही कमांडर भी उस अत्याचारी माओवादी कमांडर सिद्धू कोडा को पकड़ने का अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे, जो सुरक्षा बलों के लिए बड़ा कांटा बना हुआ था। हीरा कुमार झा और अजित कुमार ने सावधानीपूर्वक क्षेत्र का निरीक्षण किया और उनका ध्यान भाग रहे ए.के. 47 राइफलधारी एक माओवादी की ओर गया जो एक आम महिला को मानव कवच बनाए हुए था। अच्छी तरह से जानते हुए कि केवल बड़े माओवादी कमांडरों के पास स्वचालित हथियार होते हैं, अधिकारियों को यह समझने में जरा सी भी देर नहीं लगी कि भाग रहा यह माओवादी और कोई नहीं बल्कि सर्वाधिक वांछित माओवादी नेता सिद्धू कोडा है। तुरंत ही

एक वैकल्पिक योजना बनाई गई और हीरा कुमार झा ने अजित कुमार और कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे के साथ मिलकर जहां तक संभव हो सके उसके बिलकुल निकट जाकर उसे पकडने का निर्णय लिया, परन्तु इस योजना में जान जाने का गंभीर जोखिम था। तीनों उस क्षेत्र से हट गए और गांव के सूदूर अंत तक का घुमावदार रास्ता लेकर झाड़ियों के पीछे छिप गए। उन्होंने धैर्यपूर्वक माओवादी कमांडर को अपनी मारक दूरी में आने की प्रतीक्षा की। तथापि, जब वह माओवादी उनकी गोलीबारी के दायरे में नहीं आया, तब उन्होंने गोलियां न चलाने का विकल्प चुना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि किसी निर्दोष की जान न चली जाए भले ही वह माओवादी कमांडर भाग खड़ा हो। संकल्प से भरे होने के कारण उन्होंने स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने का निर्णय लिया। इसलिए अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करते हुए श्री हीरा कुमार, सेकंड–इन–कमांड ने माओवादी कमांडर का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करके उसका ध्यान भंग करने के लिए स्वयं बाहर आने का निर्णय लिया। इतनी कम दूरी पर जवान की हरकत देखकर माओवादी ने मानव कवच को धक्का दिया और अंधाधुंध गोलीबारी की। दोनों अधिकारियों, हीरा कुमार झा और अजित कुमार तथा कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे, जो इस मौके की प्रतीक्षा ही कर रहे थे, ने नियंत्रित तरीके से जवाबी गोलीबारी की। दोनों तरफ से हुई इस गोलीबारी में एक गोली हीरा कुमार झा, सेकंड–इन–कमांड की खोपड़ी से होकर निकल गई और वह बहादुर अधिकारी मौके पर शहीद हो गया। तथापि, इससे अजित कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे विचलित नहीं हुए और उन्होंने भाग रहे माओवादी पर गोलियां चलाना जारी रखा। यद्यपि माओवादी कमांडर को भी गोली लग गई थी, फिर भी वह घने जंगल में भागने में सफल हो गया। कंपनी कमांडर अजित कुमार और कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे ने भाग रहे माओवादी का पीछा किया लेकिन उन्हें आड़ लेनी पड़ी क्योंकि उनके पीछे से अन्य माओवादियों ने, जो अपने कमांडर के साथ गांव में ठहरे हुए थे, उन पर गोलियां चलानी शुरू कर दी थीं। तब दोनों का ध्यान भाग रहे अन्य माओवादियों पर गया। यह वह समय था जब उन्होंने देखा कि हथियार लिए एक महिला माओवादी एक गांव वाले की आड़ लेकर जंगल की तरफ भागने का प्रयास कर रही है। उन्होंने अपने आपको झाड़ियों के पीछे छिपा लिया और उसकी प्रतीक्षा करने लगे। जैसे ही वह महिला नजदीक पहुंची, दोनों व्यक्ति उस पर टूट पड़े तथा उसे .303 बोल्ट एक्शन राइफल के साथ पकड़ लिया। उसकी पहचान माओवादी कमांडर सिद्धू कोडा की पत्नी रीना के रूप में हुई जो बलों को चकमा देने में सफल रही थी। इस अभियान में, तीन माओवादी पकड़े गए। उनसे एक .303 बोल्ट एक्शन राइफल, एक 12 बोर पिस्तौल, एक दूरबीन, 30 कि.ग्रा. विस्फोटक, 3 आईईडी, 150 जिंदा राउंड, माओवादी साहित्य और अन्य आपत्तिजनक चीजें बरामद की गईं। एसआईबी पटना की तकनीकी जानकारी से बाद में इस बात की पुष्टि हुई कि अभियान में छह माओवादी गंभीर रूप से घायल भी हुए थे।

श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल श्रीकान्त पाण्डे, दोनों ने अभियान के दौरान जबरदस्त निर्भीकता, सूझबूझ और अदम्य साहस का परिचय दिया जिसके कारण तीन माओवादी पकड़े जा सके तथा विश्वसनीय रिपोर्टों के अनुसार दुर्दांत माओवादी कमांडर सिद्धू कोडा सहित कई माओवादी घायल भी हुए।

की गई बरामदगी :

03 नक्सली अर्थात् रीना (महिला नक्सली), राजू सोरेन, माधव सोरेन गिरफ्तार किए गए तथा बरामद .303 राइफल–1, 12 बोर देशी पिस्तौल–01, दूरबीन–01, विस्फोटक सामग्री के 3 कंटेनर–15–15 कि.ग्रा., .303 के जिंदा राउन्ड–58, 5.56 इंसास के जिंदा राउंड–92 और आईईडी–03 (घटना स्थल पर नष्ट)।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट एवं श्रीकान्त पाण्डे, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 04.07.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 159–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. सुनील कुमार शर्मा,
सहायक कमांडेंट

02. रंजीत मंडल,
सहायक कमांडेंट

03. गुलाब सिंह,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 31.08.2014 को यह खुफिया जानकारी मिलने के बाद कि विक्रम गोपी उर्फ बारुद (बानो और कोलीबेरा क्षेत्र का पीएलएफआई एरिया कमांडर) अपने दस्ते के 8–10 सदस्यों के साथ कवाजोर जंगल में ठहरा हुआ है और वह मध्याह्न भोजन तक रुकेगा, कमांडेंट–94 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और पुलिस अधीक्षक सिमडेगा ने एक छोटे दल द्वारा अभियान चलाने की

योजना बनाई। तदनुसार, ए/94 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 18 कार्मिकों के दल को श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट की कमान वाले राज्य पुलिस के 12 जवानों के साथ शिविर पर सुनियोजित ढंग से तुरंत हमला करने को कहा गया। क्षेत्र, झाड़—झंखाड़, तय की जाने वाली दूरी और भागने के मार्ग का विश्लेषण करने के पश्चात् वह दल मोटरसाइकिलों पर सवार होकर 1000 बजे चला तथा 1200 बजे लक्षित जंगल के समीप पहुंच गया। उन्होंने जंगल से कुछ दूरी पर मोटरसाइकिलें छोड़ दीं तथा दो भागों में बंट गए। योजना यह थी कि जंगल की दो दिशाओं अर्थात् पूर्व और पश्चिम से तलाशी ली जाए और इसलिए दोनों दलों की कमान क्रमशः श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट और श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट को सौंप दी गई। तत्पश्चात दोनों दलों ने गुप्त रूप से जंगल में प्रवेश किया और अपनी—अपनी दिशाओं से जंगल की तलाशी लेने लगे। लगभग 1425 बजे श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट की कमान वाले दल के एक सदस्य ने कुछ दूरी पर जंगल में तिरपाल का एक तंबू (छिपने का ठिकाना) देखा। उसने इसकी जानकारी अपने कमांडर से साझा की। श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट ने अपने दल को आड़ लेने को कहा और वे आगे की कार्रवाई की योजना बनाने लगे। उन्होंने श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट की कमान वाले दूसरे दल को यह जानकारी दी और उस स्थान की अवस्थिति से अवगत कराया तथा उनसे पश्चिम दिशा से क्षेत्र को कवर करने को कहा। ये दोनों दल एक—दूसरे के साथ लगातार संपर्क में रहे और दूसरे दल के लक्ष्य पर पहुंचने पर श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट ने अपने दल को छोटे दलों में विभाजित किया और उन्हें पूर्व दिशा की तरफ से इलाके की घेराबंदी करने का आदेश दिया। इसी प्रकार, श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट ने भी अपने दल को उप—समूहों में बांट दिया तथा पश्चिम की ओर से क्षेत्र को कवर किया। इलाके की घेराबंदी करने के बाद दोनों कमांडर शिविर की ओर बढ़े। जैसे ही श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट की कमान वाला हमला दल घुटनों के बल रेंगता हुआ उसके समीप पहुंचा, एक पेड़ के पीछे छिपे पीएलएफआई काडरों के एक संतरी ने उस पर अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी।

अचानक हुई इस प्राणघातक गोलीबारी में आगे मौजूद श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी गुलाब सिंह बाल—बाल बचे और गोलियां उन्हें छूकर निकल गईं। इस हमले की परवाह न करते हुए दोनों हरकत में आए तथा संतरी पर जवाबी गोलियां चलाईं। इस तेज और ठोस कार्रवाई से संतरी को अपनी लक्षित गोलीबारी रोक लेने पर विवश होना पड़ा जिससे बहादुर जवानों को आड़ लेने के लिए कुछ समय मिल गया। गोलियों की आवाज सुनकर शिविर में आराम कर रहे अन्य काडर भी बाहर आ गए और गोलीबारी में शामिल हो गए। बहुत ही कम दूरी से भीषण गोलीबारी शुरू हो गई। इस गतिरोध को समाप्त करने तथा शिविर को नष्ट करने के लिए श्री रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट ने पहले मुख्य संतरी को मार्ग से हटाने और तत्पश्चात् बनी जगह से शिविर में घुसने का रास्ता बनाने का निर्णय लिया। इस प्रकार की अंधाधुंध गोलीबारी और ग्रेनेडों के विस्फोटों के बीच सुरक्षित कवर से बाहर निकलना जोखिम से भरा कार्य था, फिर भी सभी आशंकाओं की अनदेखी करते हुए वे और कांस्टेबल/जीडी गुलाब सिंह अपने—अपने कवर से बाहर आए और अपनी दाहिनी ओर घुटने के बल रेंगने लगे। हमले की जगह मिलते ही उन्होंने संतरी पर सटीक गोली चलाई और उसे मार गिराया। इसी बीच, श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट की कमान वाले जवान भी पश्चिम दिशा से निकट पहुंच चुके थे और उन्होंने भी काडरों पर गोलियां दागनी शुरू कर दी थी। अपने आपको दलों के बीच घिरा हुआ पाकर काडरों ने भागने का प्रयास किया। प्रयास करने की मंशा से काडरों ने उस दिशा में भारी गोलीबारी की जिस तरफ सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट मौजूद थे और गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति अपनाई। गोलियों की बौछार से घिरे होने के बावजूद श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट ने अपना मानसिक संतुलन नहीं खोया। उन्होंने अल्प कवर के पीछे काडरों के नजदीक आने पर जवाबी हमला करने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। अपने हमले तथा उक्त दिशा से जवानों का कोई भी प्रत्युत्तर न मिलने पर उत्साहित हुए काडरों ने उस दिशा में घेराबंदी से बाहर निकल जाना सुरक्षित समझा। काडर, स्थान से भागने की आशा से अंधाधुंध गोलियां चलाते हुए उक्त दिशा में भागे। श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट ने पुनः अपनी रणनीतिक सूझबूझ का परिचय देते हुए अपने कवर से बाहर आए और जैसे ही काडर उनके समीप पहुंचे, वे भाग रहे काडरों के सामने आए और उन पर गोलियां चला दीं। इस गोलीबारी से एक काडर घायल हो गया जबकि तीन अन्य जमीन पर गिर पड़े। इस निर्भीक और साहसिक कार्रवाई से घबराकर और मृत्यु को सामने देखकर काडर अपनी जान की भीख मांगने लगे। यह जाल से बाहर निकलने का उनका अंतिम प्रयास था, परन्तु श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट की कमान में जवान उन काडरों पर टूट पड़े और उनके हाथों से हथियार छीन लिए। इस मुठभेड़ की समाप्ति पर तलाशी अभियान चलाया गया जिसमें एक पीएलएफआई काडर मृत पाया गया जिसकी पहचान पंचू बैदिक के रूप में हुई तथा एक अन्य काडर गंभीर रूप से घायल पाया गया जिसकी पहचान भरत सिंह उर्फ थरथरी के रूप में हुई। प्राथमिक उपचार देने के बाद उसे तुरन्त बानो अस्पताल ले जाया गया। तथापि, दिनांक 01.09.2014 को आरआईएमएस, रांची में भरत सिंह उर्फ थरथरी की मृत्यु हो जाने की सूचना प्राप्त हुई। गिरफ्तार किए गए तीनों पीएलएफआई काडरों की पहचान संजय सुरीन, भुवनेश्वर यादव और जीवन मसीहा टोपनो के रूप में हुई। छिपने के ठिकाने को नष्ट किया गया और मुठभेड़—स्थल से निम्नलिखित चीजें बरामद हुईं :—

क्रम सं.	हथियारों/गोलाबारुद का नाम	बरामद
1.	मैगजीन सहित .303 बोल्ट एक्शन देशी राइफल	7
2.	9 मिमी पिस्तौल	1
3.	रिवाल्वर	1
4.	7.62 मिमी की देशी पिस्तौल	1
5.	.303 और .315 के जिंदा राउंड	38
6.	9 मिमी के जिंदा राउंड	6
7.	7.62 जिंदा राउंड	13

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री सुनील कुमार शर्मा, सहायक कमांडेंट, रंजीत मंडल, सहायक कमांडेंट और गुलाब सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.08.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 160—प्रेज/2015——राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01.	सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
02.	अजित कुमार, सहायक कमांडेंट	(वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
03.	संदीप कुमार, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
04.	बलवन्त सिंह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
05.	बचन सिंह, कांस्टेबल	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
06.	सुभाष चन्द्र राय, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)
07.	हरि किशन, उप निरीक्षक	(वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 12.09.2014 को लगभग 1430 बजे अपने स्रोतों से श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट, ऑफिसर कमांडिंग ई/07 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को पुलिस थाना लोकईनानपुर, जिला गिरिडीह (झारखण्ड) के अंतर्गत गांव डलडलिया के निकट जंगल में दिनेश पंडित, सुरंग यादव और अन्य (जो लगभग 14 की संख्या में थे) सहित माओवादियों के एक समूह की आवाजाही की सूचना मिली। उन्होंने यह सूचना हजारीबाग में मौजूद अपने कमांडेंट को दी और भू—भाग, स्थलाकृति और उपलब्ध अन्य जानकारी का विश्लेषण करने के पश्चात एक अभियान की योजना बनाई गई।

तदनुसार, लगभग 1705 बजे टीएसी मुख्यालय टिसरी से श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट की कमान में बटालियन की क्यूएटी (डीसी—01, एसआई/जीडी—01, एचसी/जीडी—02, एचसी/आरओ—01 और कांस्टेबल/जीडी—09, कुल—14) टिसरी स्थित कंपनी के ठिकाने पर पहुंची और श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट की कमान में ई/7 की दो प्लाटूनों के साथ अभियान आरंभ किया गया। पुलिस थाना टिसरी के प्रभारी अधिकारी भी जवानों के साथ हो लिए। जवान छलावा रणनीति का इस्तेमाल करके शिविर से गुपचुप तरीके से बाहर निकले और गांव डलडलिया के निकट जंगल के सिरे तक पहुंचे। छिपने के संभावित ठिकाने पर हमला करने के लिए जवानों को दो समूहों में विभाजित किया गया, जिनमें से एक की कमान श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट तथा दूसरे की कमान श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट के पास थी। जवान अपने लक्ष्य की ओर गुप्त तरीके से बढ़ने लगे लेकिन माओवादियों की उपस्थिति का कोई अता—पता नहीं चल पा रहा था। विद्रोह—रोधी अभियानों में अपने लंबे अनुभव का सहारा लेते हुए श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट ने तब गांव डलडलिया की ओर से जंगल की तरफ जाने वाले मार्ग पर सुनियोजित ढंग से पोजिशन लेने का निर्णय लिया। अपने दिमाग में उन्होंने यह अनुमान लगा लिया था कि यदि माओवादी जंगल में हैं, तो अपनी दैनिक जरुरतों के सामान हेतु निश्चित रूप से वे गांव की तरफ आएंगे। एक टोही दल को स्थल का चयन करने हेतु भेजा गया और सूर्यास्त होने पर जवानों ने मार्ग को कवर करते हुए पोजिशन ले ली। जवानों ने अपनी सांसों की आवाज तक को दबाते हुए किसी भी आवाज के प्रति अपनी आंख और कान को खुला रखते हुए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। यह प्रतीक्षा लगभग 23.15 बजे जाकर समाप्त हुई जब आगे के कट—ऑफ दल के कमांडर श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट ने कुछ कदमों की आहट सुनी। इस संदिग्ध आवाजाही की सूचना वायरलेस सेट के माध्यम से सभी दलों को दी गई और सभी दलों को सतर्क कर दिया गया। नजदीक आने पर कदमों की आहट से पता चला कि आगे के दल में केवल 1—2 व्यक्ति हैं जबकि पीछे से आने वाला दल बड़ा है। कुछ समय बाद, श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट और कांस्टेबल/जीडी बलवन्त सिंह और कांस्टेबल/जीडी संदीप कुमार नामक उनके साथियों, जो मार्ग के दाहिनी

ओर केवल 10 से 12 मीटर की दूरी पर थे, ने दो छायाकृतियों को गांव डलडलिया की ओर आते देखा। आगे के दल को पार करते ही दोनों छायाकृतियां छिपे हुए जवानों के बीच रुकीं और उस जगह की छानबीन करने लगी। जब वे कोई अवांछित उपस्थिति न होने के प्रति आश्वस्त हो गईं, तब उनमें से एक ने सीटी बजाकर संकेत दिया और आगे बढ़ गई। इसके बाद मुख्य समूह, जो कुछ कदम पहले रुक गया था, आगे बढ़ा। जैसे ही संदिग्ध व्यक्तियों का मुख्य समूह जवानों के पास पहुंचा, कमांडर श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट और राज्य पुलिस ने उन्हें अपनी पहचान बताते हुए रुकने के लिए कहा, परन्तु संदिग्ध व्यक्तियों ने जवानों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। अपने जवानों पर आए संकट को ताड़ते हुए, श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट और उप निरीक्षक/जीडी सुभाष चन्द्र राय और कांस्टेबल/जीडी बचन सिंह नामक उनके दो साथियों ने माओवादियों पर गोलियां चलाना आरंभ कर दिया जो उनसे लगभग 10–12 मीटर की दूरी पर थे। पीछे की कट–ऑफ पार्टी, जिसका नेतृत्व उप–निरीक्षक/जीडी हरि किशन कर रहे थे, ने भी माओवादियों पर गोलियां दागनी शुरू कर दी। माओवादियों को भागने से रोकने के लिए उप–निरीक्षक/जीडी हरि किशन ने इलाके में सभी एहतियाती उपाय किए और गांव की ओर जाने वाले मार्ग के बीचों–बीच खड़े हो गए। जवाबी गोलीबारी का सामना कर रहे माओवादियों ने तुरन्त पेड़ों और उबड़–खाबड़ जमीन के पीछे पोजिशन ले ली। उस स्थान से भागने के प्रयास में उन्होंने जवानों पर अंधाधुंध गोलीबारी की। मात्र 10–12 मीटर की दूरी से एक भीषण संघर्ष शुरू हो गया जिससे जवानों की जान को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया। इस स्थिति से उबरने के लिए, श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट ने श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट को दाहिनी ओर से माओवादियों की ओर बढ़ने का आदेश दिया जबकि वे स्वयं बायीं ओर से आगे बढ़े। वे दोनों अपने साथियों के साथ घुटनों के बल चलते हुए किनारों से माओवादियों पर हमला करने के लिए आगे बढ़े। माओवादियों ने महसूस किया उनके भारी प्रतिरोध के बावजूद जवान उनकी ओर बढ़ रहे हैं, इसलिए उन्होंने अंधेरे में उस स्थान से भाग जाने में भलाई समझी। सुबह होते ही लगभग 06.15 बजे एक विस्तृत तलाशी अभियान चलाया गया। तलाशी के दौरान हथियारों सहित मृत माओवादियों के तीन शव बरामद हुए जिसके साथ–साथ कई जगहों पर खून के धब्बे दिखे जिनसे स्पष्ट हो रहा था कि इस मुठभेड़ में कुछ और माओवादी घायल भी हुए हैं। मृतक माओवादियों की पहचान दिनेश पंडित (एरिया कमांडर), सहदेव मुर्मू और जीवा लाल राय के रूप में हुई। तलाशी के दौरान निम्नलिखित हथियार और गोलाबारुद भी बरामद हुए :–

क्रम सं.	नाम	मात्रा
01.	मैगजीन नं. 816210 के साथ एसएलआर राइफल	01
02.	मैगजीन सहित .303 राइफल, मार्क–4	01
03.	मैगजीन सहित .315 बोर राइफल	01
04.	.303 के जिंदा कारतूस	38 राउंड
05.	.303 के खाली खोखे	02
06.	एक मैगजीन पाउच	01
07.	चार्जर क्लिप	05
08.	मैगजीन पाउच	01
09.	.315 बोर के जिंदा कारतूस	49 राउंड
10.	खाली खोखे	02
11.	7.62 मिमी का जिंदा कारतूस	09 राउंड
12.	7.62 मिमी के खाली खोखे	04

अभियान के दौरान, श्री एस.के. यादव, उप कमांडेंट ने बेहतरीन रणनीतिक सूझबूझ, साहसिक मनोवृत्ति और शौर्यपूर्ण कार्रवाई का परिचय दिया। तनावपूर्ण, जोखिमपूर्ण परिस्थिति तथा माओवादियों के इतने नजदीक होने के बावजूद उन्होंने स्थिति को नियंत्रण में रखा और उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता का उदाहरण पेश किया। इसी प्रकार, श्री अजित कुमार, सहायक कमांडेंट और उनके साथियों ने सराहनीय कार्य कर दिखाया। माओवादियों से बेहद निकट होने तथा उनका सामना करने वालों में सबसे आगे रहने के बावजूद वे तनिक भी विचलित नहीं हुए, धैर्य बनाए रखा, सतर्कता, तत्परता बनाए रखी, त्वरित कार्रवाई की तथा किनारे से हमला करके जवाबी हमले करते रहे। इसी प्रकार, उप निरीक्षक/जीडी हरि किशन और श्री एस.के. यादव, उप कमांडेंट के साथियों ने नजदीकी मुठभेड़ में जबरदस्त साहस का प्रदर्शन किया जहां उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना माओवादियों को सीधी टक्कर दी।

इस मुठभेड में सर्व/श्री सुरेश कुमार यादव, उप कमांडेंट, अजित कुमार, सहायक कमांडेंट, संदीप कुमार, कांस्टेबल, बलवन्त सिंह, कांस्टेबल, बचन सिंह, कांस्टेबल, सुभाष चन्द्र राय, उप निरीक्षक और हरि किशन, उप–निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक/पुलिस पदक का प्रथम बार नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12.09.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

सं. 161–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. हेमेन कलिता,
कांस्टेबल

02. मोहम्मद असफाक खान,
निरीक्षक

03. प्रवीण कुमार सैनी,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 10 मार्च, 2014 को अपने स्रोतों से त्राल शहर में आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में खुफिया जानकारी मिलने पर शहर के विभिन्न क्षेत्रों/भागों में तलाशी और घात लगाने के लिए 185 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 9 प्लाटूनें तैनात की गईं। तैनाती इस प्रकार से की गई थी कि 5 प्लाटूनें, पश्चिम दिशा से शहर से बाहर जाने वाले मार्गों पर घात लगाएंगी, जबकि 4 प्लाटूनें प्रत्येक लेन और छोटी लेन को कवर करते हुए पूरे शहर की तलाशी लेते हुए पश्चिम दिशा में जाकर मिल जाएंगी। तदनुसार, एफ कंपनी की एक प्लाटून, जो निरीक्षक/जीडी मोहम्मद असफाक खान की कमान में थी, को जांच और तलाशी हेतु गोल मस्जिद के आस–पास वाला क्षेत्र सौंपा गया।

लगभग 2010 बजे, उपर्युक्त प्लाटून सुनियोजित तरीके से त्राल एस बी आई होते हुए गोल मस्जिद की ओर बढ़ने लगी। इस प्लाटून के जवान कांस्टेबल/जीडी हेमेन कलिता और कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार सैनी थे, जो अपने कमांडर अर्थात् निरीक्षक/जीडी मोहम्मद असफाक खान की सीधी कमान में थे। जैसे ही जवान एक छोटी लेन के पास पहुंचे, उन्होंने फेरन पहने 4 लोगों का एक समूह देखा। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों को देखने के बाद वह समूह जल्दबाजी में छोटी लेन में जाने लगा। उस समूह की यह गतिविधि जवानों को संदेहास्पद लगी और कांस्टेबल/जीडी हेमेन कलिता और कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार सैनी ने उन्हें अपनी–अपनी जगह पर रुकने तथा फेरन उठाने का आदेश दिया। आदेशों की अवहलेना करते हुए वह समूह छोटी लेन में और आगे जाने लगा। भाग रहे लोगों को पकड़ने के लिए कमांडर और उनके दो जवानों ने उनका पीछा करना शुरू कर दिया। यह देखते हुए कि उनका पीछा किया जा रहा है, उस अज्ञात समूह ने अपने फेरन के अंदर ढ़के हथियारों से जवानों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी और भागने लगे। खुली जगह में बिना किसी कवर और छिपाव के होने के बावजूद, कांस्टेबल/जीडी हेमेन कलिता, कांस्टेबल/जीडी प्रवीण कुमार सैनी और निरीक्षक/जीडी मोहम्मद असफाक खान अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना जवाबी गोलीबारी करने लगे। जवानों की जवाबी गोलीबारी देखकर, दो आतंकवादियों ने एक दीवार के पीछे कवर ले ली तथा आगे बढ़ रहे जवानों पर गोलियां बरसाने लगे जबकि दो अन्य आतंकवादी भागते रहे। सुरक्षित दीवार के पीछे छिपे आतंकवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी में स्वयं को फंसता पाकर, जवान कवर के लिए भागे और एक भवन की गेट और चारदीवारी से बने गढ़ढ़े में पोजिशन ले ली। यथास्थिति बनी रही जहां गोलियां जवानों के साथ–साथ आतंकवादियों को भी आगे बढ़ने नहीं दे रही थीं। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए, निरीक्षक/जीडी मोहम्मद असफाक खान ने गोलियां चलाते हुए आगे बढ़ने की नीति का इस्तेमाल करके आगे बढ़ने का निर्णय लिया, हालांकि इस चाल में किसी कवर के अभाव में जान को खतरा शामिल था। अपनी जान को जोखिम में डालकर कमांडर और उनके दो बहादुर जवान आतंकवादियों पर भारी गोलीबारी करने लगे और अपने–अपने कवर से बाहर आ गए। सभी एहतियात को धता बताते हुए खुले में आने की जवानों की इस साहसिक और निर्भीक कार्रवाई से आतंकवादी बेहद डर गए और वे अपने कवर के पीछे से भागने लगे। आतंकवादी आगे बढ़ रहे जवानों पर ताबड़तोड़ गोलियां चलाने लगे और अपने कवर से भाग गए। जवानों ने भी उन पर गोलियां चलाईं और इतनी नजदीक से हुई गोलीबारी में एक आतंकवादी मारा गया, जिसकी पहचान बाद में अरशद भाई–छोटू, निवासी पाकिस्तान, डिप्टी कमांडर, जैश–ए–मोहम्मद के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादी से निम्नलिखित सामान भी बरामद हुए :

(i)	मैगजीन एके 47	:	4
(ii)	जिंदा कारतूस एके 47	:	220 राउंड
(iii)	जिंदा ग्रेनेड	:	7
(iv)	वायरलेस सेट (केनवूड)	:	1
(v)	खाली खोखे	:	5
(vi)	मोबाइल	:	2

तथापि, मृतक आतंकवादी का हथियार उसका साथी लेकर भाग गया, जो जवानों की साहसिक और निर्भीक कार्रवाई के बावजूद भागने में सफल रहा था।

इस मुठभेड़ में सर्व/श्री हेमेन कलिता, कांस्टेबल, मोहम्मद असफाक खान, निरीक्षक और प्रवीण कुमार सैनी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10.03.2014 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

सं. 162–प्रेज/2015––राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

01. जसवंत सिंह,
उप निरीक्षक

02. रेवना शिद्दप्पा के.,
सहायक उप निरीक्षक

03. मनोज राम,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए अलंकरण प्रदान किया गया

दिनांक 01 जुलाई, 2013 को लगभग 0330 बजे दो शीर्ष कमांडरों के साथ एचएम के ऑपरेशनल चीफ (जिला कमांडर), दक्षिण कश्मीर शबीर अहमद की गुलजार अहमद भट पुत्र गुलाम हसन भट, गांव मंडुरा, पुलिस थाना त्राल, जिला पुलवामा के मकान में मौजूद होने की विशिष्ट सूचना मिलने पर 185 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों द्वारा जम्मू एवं कश्मीर पुलिस/एसओजी के साथ एक घेराबंदी एवं तलाशी अभियान चलाया गया। 185 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप निरीक्षक/जीडी जसवंत सिंह, सहायक उप निरीक्षक/जीडी रेवना शिद्दप्पा के. और कांस्टेबल/जीडी मनोज राम को शामिल करते हुए दो तलाशी दल गठित किए गए। लगभग 0530 बजे, इन दोनों दलों ने लक्षित मकान की कड़ी घेराबंदी की ताकि आतंकवादी भाग न सकें। इसी बीच, घर के अंदर छिपे आतंकवादियों ने तलाशी दलों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं, जिसका जवाब जवानों द्वारा दिया गया। गोलीबारी में, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के कांस्टेबल मंजूर अहमद को गोली लगी और उन्होंने मकान के परिसर में एक पेड़ के पीछे शरण ली।

आतंकवादियों से आत्मसमर्पण करने तथा मकान मालिक के परिवार के सदस्यों को मकान से बाहर आने की अनुमति देने को कहा गया, जिन्हें उन्होंने बंधक बनाया हुआ था। आतंकवादियों द्वारा इस पेशकश को नामंजूर किए जाने के बाद परिवार के सदस्यों और जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के घायल जवान को सुरक्षित बाहर निकालने की योजना बनाई गई। जब यह दल मकान परिसर में प्रवेश कर रहा था, तब उनके ऊपर दो अलग–अलग दिशाओं से भारी गोलीबारी की गई। यह देखते हुए कि जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के घायल जवान को सुरक्षित बाहर ले जाया जा रहा है, एक आतंकवादी मकान से बाहर आया और पुलिस कार्मिक पर गोली चलाई जो तब तक मकान के बाहरी गेट तक पहुंच चुका था। इस मौके पर पूरे दल को भारी क्षति हो सकती थी यदि जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के कांस्टेबल मुश्ताक अहमद के साथ 185 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कांस्टेबल/जीडी मनोज राम ने फिदायीन की तरह कार्रवाई न की होती, उन्होंने दल की सुरक्षित रूप से गेट के बाहर आने तक उनकी रक्षा की और जवाबी गोलीबारी भी करते रहे। आतंकवादी और ये दो कांस्टेबल एक–दूसरे के सामने मात्र कुछ ही गज की दूरी पर रहकर एक दूसरे पर गोलियां चला रहे थे। इस अभियान में, जम्मू एवं कश्मीर पुलिस के कांस्टेबल मुश्ताक अहमद ने अपने प्राणों की आहुति दी और आतंकवादी मारा गया। कांस्टेबल/जीडी मनोज राम को भी उनके बायें हाथ की ह्यमेरस हड्डी पर गोली लगी। गोली से घायल होने के बावजूद तथा अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वे लगातार आतंकवादियों पर गोलियां चलाते रहे।

तत्पश्चात, दल पर उस समय पुनः दो दिशाओं से जबरदस्त गोलीबारी की गई, जब वे सामने से मकान में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़ रहे थे। 185 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप निरीक्षक/जीडी जसवंत सिंह, सहायक उप निरीक्षक/जीडी रेवना शिद्दप्पा के. ने आतंकवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा तथा दल के शेष सदस्य मकान में प्रवेश कर गए तथा मकान का दरवाजा तोड़ दिया, जहां परिवार के सदस्य फंसे हुए थे। गोलीबारी में, उप निरीक्षक/जीडी जसवंत सिंह को बायें पैर में गोली लगी, लेकिन गोली लगने से घायल होने के बावजूद और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने सहायक उप निरीक्षक/जीडी रेवना शिद्दप्पा द्वारा कंधे से कंधा मिलाकर दिए गए सहयोग से आतंकवादियों पर गोली चलाना जारी रखा, जिसके कारण परिवार के सभी सदस्य सुरक्षित बचा लिए गए।

यह भीषण मुठभेड़ सायंकाल देर तक चली और मकान की अंतिम तलाशी में एचएम के 3 दुर्दांत/अति वांछित आतंकवादियों अर्थात् शबीर अहमद उर्फ–आदिल, पुत्र गुलाम अहमद भट, निवासी हाइना, श्रेणी ए++, शाहनवाज अहमद मीर उर्फ–साहब टिंगा,

पुत्र अली मोहम्मद मीर, निवासी डडसारा, श्रेणी 'ए', एजाज अहमद लावे उर्फ माजिद, पुत्र मोहिदीन लावे, निवासी लर्गाम, श्रेणी 'बी' के शव और निम्नानुसार हथियार/गोलाबारुद बरामद हुए :

क्र. सं.	मद	मात्रा
1.	एके–47 राइफल	2
2.	एके–56 राइफल	1
3.	एके मैगजीन	6
4.	एके गोलाबारुद	90 राउंड
5.	पाउच	3
6.	पिस्तौल	01 (क्षतिग्रस्त)
7.	स्लिंग	3
8.	चीनी ग्रेनेड जिंदा	5 (मुठभेड़ स्थल पर नष्ट किया गया)
9.	मैगजीन स्प्रिंग	2
10.	वॉयर कटर	1
11.	कैंची	1
12.	हेडफोन	1
13.	टॉर्च	1 (क्षतिग्रस्त)
14.	डेटोनेटर	1 (स्थल पर नष्ट किया गया)
15.	चाकू	1
16.	बैग	1
17.	आर आर बैज	1
18.	पोस्टर	3
19.	1000 रु.	2 नोट (फटे–पुराने)
20.	500 रु.	8 नोट (फटे–पुराने)
21.	100 रु.	1 नोट (फटा–पुराना)

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री जसवंत सिंह, उप निरीक्षक, रेवना शिद्दप्पा के., सहायक उप निरीक्षक और मनोज राम, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पुरस्कार, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप इसके साथ नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 01.07.2013 से दिया जाएगा।

सुरेश यादव
राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी

———————

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 3rd December 2015

No. 112-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Zakir Hussain, Sub Divisional Police Officer (PMG)
2. Mohesh Chandra Borah, Sub Inspector (1st Bar to PMG)
3. Bhugeswar Saikia, Constable (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 02.06.2011 an information received that a large group of ULF extremists with heavily sophisticated weapons set up a camp in the village Tamuli Bogaon adjacent to Kakoojan reserve forest under Digboi PS and are roaming in that area. Accordingly, at 4 PM a joint operation was launched under command and control of Shri Zakir Hussain, APS, SDPO, Margherita alongwih OC Digboi PS and other security forces. The operational team was divided into small groups and carried out operations at different places of that area. One of the Police team led by Shri Zakir Hussain, APS and OC Digboi PS SI Mohesh Chandra Borah with his PS staff suddenly noticed that two youth with a motor cycle coming towards them from opposite jungle side. Noticing the Police group, the motorcyclist took a "U" turn and tried to escape. Immediately Shri Zakir Hussain, APS, commanded his team to chase them. As police chase the motorcycle, the motorcyclist opened indiscriminate firing with their automatic sophisticated weapons targeting operational group. Shri Zakir Hussain, APS and SI Mohesh Ch. Borah along with PSO retaliated in their self defence and continued chasing them tactically exposing themselves to the extreme danger of life and were able to nab both of them with motorcycle without any casualty of Police team. During the exchange of fire both the extremists sustained multiple bullet injuries. Huge Arms/Ammunition, explosives etc. recovered from their possession. The camp of ULFA was busted in this operation.

During examination the bullet injured extremists were identified as (1) Sgt. Maj. Akon Borgohain @ Sunami S/o Shri Bhubon Borgohain of Kolakata Gaon, PS Sapekhati, Dist: Sivsagar and (2) Sgt. Maj. Tikshu Baruah @ Abhoy Gogoi S/o Modin Baruah of Upper Mamoroni Gaon, PS: Digboi, Dist. Tinsukia. Both are hardcore ULFA cadres trained in Myanmar.

Recoveries made :

1. 1 (one) AK-56 Rifle
2. 2 (two) Nos. of AK series magazine
3. 25(twenty five) Rds. AK Series ammunitions
4. 1 (one) 9 MM pistol with magazine
5. 04 (four) Nos of 9 MM pistol ammunitions
6. 3 (three) Nos. of Chinese Bottle Grenades
7. 2 (two) Nos. detonators
8. One motor cycle bearing Registration No. AS-23-D-2663

In this encounter S/Shri Zakir Hussain, Sub Divisional Police Officer, Mohesh Chandra Borah, Sub Inspector and Bhugeswar Saikia, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 02/06/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 113-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Utpal Borah,
   Sub Inspector
2. Learnish Pegu,
   Sub Inspector
3. Bhupen Hatimuria,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 09.05.2012 at about 0900 hrs, on receipt of a secret information regarding movement of 5/6 suspected Maoist activists preparing for subversive activities against security forces in the general areas of Baskota Chuk, Mishing Borgora under Sadia PS. SI Utpal Borah, OC Sadiya PS, SI (P) Learnish Pegu and AP Bn personnel immediately left for the village. On reaching the spot, the Police team started search operation by splitting into small groups. During search operation, the operation team led by SI Utpal Borah and SI (P) Learnish Pegu noticed movement of some persons in the houses of Bal Bahadur Limbu and Jash Bahadur Limbu of Mishing Borgora. They hid themselves behind the trees and cautiously moved towards the house. As the operation team reached near the house, the extremists taking shelter in the house hurled a hand grenade on the Police party. Immediately after that the heavily equipped Maoist extremists tried to emerge from the house taking cover of thick vegetation and started indiscriminate firing on the Police team.

Police also retaliated the fire in self defence. In this exchange of fire Const Achinta Das got hit but continued firing disregarding the threat to his life. SI Utpal Borah showing true leadership ability provided cover to his team and directed SI(P) Learnish Pegu to rescue constable Achinta Das from the onslaught of the extremist's fire. SI(P) Learnish Pegu leading his team, crawled forward and brought Achinta Das to a safe distance continuously firing in self defence. Disregarding the grave threat to their personal lives at the call of the duty, SI Utpal Borah and his team exhibited exemplary courage and neutralized 04 (four) armed Maoist extremist in direct exchange of fire, who were later identified as (1) Siddhartha Buragohain, Age-30 yrs @ Chandra Baruah @ Lathi, S/o Rangman Buragohain, Telikola Gaon PS- Sadiya, Commander CPI(Maoist), Upper Assam Leading Committee (2) Rajib Gogoi, Age-35 yrs, @ Medang @ Vastav Baruah @ Mission @ Changmai, S/o Produnya Gogoi, village- Tupsinga, PS- Sadiya (3) Arup Chetia, Age-26 yrs, @ Iyan, S/o Sri Kumud Chetia of Tokjan Ahomgaon, PS- Sadiya (4) Kamala Buragohain, Age-24 yrs, S/o Budheswar Buragohain, village- Gorchinga, Mekurichuk, PS- Sadiya. SI Utpal Borah exhibited extraordinary courage and leadership in such situation and was able to boost the morale of his party. His slightest error in the operation would have resulted in irreparable damage to him and his party.

Under the above facts and circumstances, it is evident that the S/Shri(1) SI Utpal Borah, (2) SI (P) Learnish Pegu and (3) UBC Bhupen Hatimuria, responded promptly and showed conspicuous bravery and gallant leading the operations from the front and exhibited raw courage in neutralizing the extremists.

Recoveries made :

1.	AK-47 series rifles	02 nos.
2.	AK-56 series rifles	01 no.
3.	Magazine	06 Nos.
4.	Live ammunition AK series	104 Rds.
5.	Empty Cartridge	44 nos.
6.	Grenade	03 nos.
7.	Detonator	01 no.
8.	Demand letter	27 nos.
9.	Mobile Handset	04 nos.
10.	Pocket Diary	05 nos.
11.	Mobile SIM Cards	16 nos.

In this encounter S/Shri Utpal Borah, Sub Inspector, Learnish Pegu, Sub Inspector and Bhupen Hatimuria, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/05/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 114-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Arabinda Kalita,
   Superintendent of Police
2. Shiladitya Chetia,
   Addl. Superintendent of Police
3. Raju Bahadur Chetry,
   Sub Inspector
4. Soren Uzir,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21.09.2013, at about 7:30 PM, Shri Anil Kr. Agarwal, GM, NHPC Tawang was abducted by NDFB (S) extremists from 12 mile area under Chariduar P.S., Sonitpur. Investigation revealed that the driver of the vehicle bringing Shri Agarwal had connived in the abduction. In due course, senior officers of Assam Police were able to win over four cadres from the more than twenty members of NDFB (S) group which had held the NHPC GM captive.

On 11.11.2013 at about 3 PM, a thoroughly planned and meticulously rehearsed hostage-rescue operation was launched by Assam Police under DIGP (Northern range), Assam. An Assault Team, two support Teams and an Extraction Team were made and Assault team of 15 men led by Shri Arabinda Kalita, IPS, SP, Sonitpur and Shri Shiladitya Chetia, IPS, Addl. S.P. (HQ), Sonitpur was the second-in-command.

On foot from Bhalukpung railway station, the Assault Team did a four-hour long steep uphill climb in a treacherous terrain (at times using ropes), through a recognized habitat of wild elephants and other wild animals. Finally, the team reached the hill nearest to the hilltop in Maldang area on Assam-Arunachal border under Chariduar P.S., where the abducted person was being kept. Here, team leaders Shri Arabinda Kalita, IPS and Shri Shiladitya Chetia, IPS devised their final hostage rescue strategy with a quick on spot terrain study.

From Assault team of 15 men, for final hostage evacuation two buddy pairs were formed- (a) Shri Arabinda Kalita, IPS with Sub-Inspector (UB)Raju Bahadur Chetry and (b) Shri Shiladitya Chetia, IPS with Constable Soren Uzir. These four men left the rest of the team of 11 men who waited 30 meters from the extremist camp to provide assistance when the hostage was being brought out.

At about 7:30 PM, Shri Kalita and Shri Chetia along with their buddies started crawling to the extremist camp, up from a gorge and right under the nose of the sentry guard of the extremist camp. As per plan, the hostage Shri Anil Kr. Agarwal along with a defected cadre sneaked out of the camp to answer a nature's call. When the four police personnel took charge of the hostage, a volley of fire came upon them from the NDFB(S) extremists who sensed that their hostage was being rescued. The four policemen instinctively retaliated the firing while taking the hostage away through the exit route using themselves as a shield of the hostage from gunfire.

Since the extremists were by then, relentlessly lobbing grenades at the police team, Shri Shiladitya Chetia, IPS and Constable Soren Uzir counteracted with flanking fire and diverted the extremist attack upon themselves. This enabled Shri Kalita and Shri Chetry to evacuate the victim Shri A. K. Agarwal from the camp safely and reach the rest of the team. On reaching the team, Shri Kalita brought down heavy fire upon the extremist camp and began moving the victim away to hand him over to the support and extraction teams at a distance. To ensure that the victim could be moved to complete safety, Shri

Chetia and Constable Uzir continued taking rear guard action by now firing at the extremists from mortars. This lasted for more than twenty minutes until the extremists, finding their camp destroyed, fled away in the darkness.

As a consequence of this extremely brave and co-ordinated endeavour, Police could safely rescue Shri Anil Kr. Agarwal, GM, NHPC Tawang and bring him out to Bhalukpung (state Highway) on the same night. However, in the process, Shri Kalita, Shri Chetia, Shri Chetry and Constable Uzir sustained splinter injuries.

In this successful operation, Shri Arabinda Kalita, IPS, Shri Shiladitya Chetia, OPS, SI Raju Bahadur Chetry and Constable Soren Uzir displayed courage of highest order in the call of duty. Their death-defying valor and dedication to duty appeals to the glorious standards of above four men in uniform. Not only they had the indomitable courage to march four hours on foot through the extremist infested terrain but also took head on the extremists armed to the teeth and are in an advantageous, protected and mined location.

In this encounter S/Shri Arabinda Kalita, Superintendent of Police, Shiladitya Chetia, Addl. Superintendent of Police, Raju Bahadur Chetry, Sub Inspector and Soren Uzir, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/11/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

———————————

No. 115-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sushil Khopde,
   Dy. Inspector General
2. Upendra Kumar Sinha,
   Superintendent of Police
3. Arvind Kumar Gupta,
   Sub Divisional Police Officer
4. Sanjay Kumar Singh,
   Dy. Superintendent of Police
5. Mrityunjay Kumar Singh,
   Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

The districts of Buxar, Rohtas and Kaimur had been reeling under heinous criminal acts perpetrated with frightening regularity by Suresh Rajbhar of village Itwa, Rajpur PS Dist Buxar and his gang, having 10-12 hardcore recorded criminals of Bihar and UP. He was an accused in at least 46 heinous criminal cases of Buxar and its adjoining districts of Bihar and UP which comprises acts of murders, dacoity and kidnappings for ransom. Along with public, he was responsible for killing and making injuries to several policemen. He was absconder since 1979. A reward of Rs. 25000/- was declared by Govt. of Bihar for his arrest.

On 24.06.2010 at about 12.35 PM Raghunath Singh, SI of Police cum Officer in charge Rajpur PS, with his subordinate police officers and men, was engaged in verification of a secret information about hiding of Suresh Rajbhar and his associates in Lakshmanpur Dera, a small village of only 8 (eight) earthen houses, under Rajpur PS. They cordoned the suspected house and moved towards it. Sudden shower of bullets from the house hit SAP jawan Awadhesh Prasad Sah. This sudden attack and bullet injury to SAP jawan shook the policemen all at once. The criminals were in advantageous position, having positioned inside a earthen house with thick walls whereas the police personnel found themselves without any defence, in open.

Irrespective of substantial risk to their lives, the police party displayed splendid courage and extreme conviction. They changing their way, neared the house and made counterattacks, warning them to surrender. The desperados, paying no

heed to their warnings, accelerated their firings. Conceiving gravity of the situation, Shri Raghunath Singh, SI reported prevailing situation to his higher and asked for additional force. Arrival of SP Buxar, SDPO Buxar SDPO Dumaraon and other Police Officers with their force on the scene, enthused the Police Party, confronting the extremely violent criminals tooth and nail. After assessment of the situation, villagers in fear were evacuated from nearby houses. Police Officers and men were deputed on every route of their possible escape despite all precautionary measures, exchange of bullets was going on. The situation was very challenging and fraught with tense and terrifying risks. Criminals had damaged two police jeeps and its headlights with heavy fire shots just to interrupt police attacks and their mobility. Despite all these odds, the Police Team was firm and determined to perform the job they were entrusted.

Arriving on the scene, DIG of Police, Shahabad Range along with Dy. SP Sanjay Kumar Singh, Bhojpur and SI Mrityunjay Kumar Singh discussed further strategic plan to conduct the operation successfully. Blockades of all possible escaping routes were tightened. STF jawans were deployed on roofs of nearby houses. Two raiding cum assault teams were constituted to arrest unyielding and hardcore criminals. The first team headed by DIG, Shahabad consisting of Sanjay Kumar Singh, Dy. SP (Rural) Bhojpur, Mritunjay Kumar Singh, SI of Police (SOG) STF SC Santosh Kumar Singh and JC Sanjay Kumar Singh. Second Assault team was headed by Upendra Kumar Sinha, SP, Buxar, Arvind Kumar Gupta, SDPO, Buxar, Raghunath Singh, SI cum Officer in charge, Rajpur PS and JC Baijnath Kumar, STF. Both the teams, in a planned way moved towards the den of the criminals maintaining all precautionary measures. Sanjay Kr. Singh Dy. SP, Arvind Kumar Gupta, SDPO, Mrityunjay Kumar Singh, SI of Police and SI Raghunath Singh with STF were ordered by DIG to perform close action of the operation. The offenders were repeatedly being given warnings to stop firing and to surrender, but they fired vehemently upon the police parties, challenging them in most abusive language and threatened to annihilate them. In reply heavy firing were made and hand grenades were exploded by the police teams. The ultras were still unshaked and undeterred inside strong earthen walls of the house. A Police team consisting of DIG Sushil Khopde, Dy. SP Sanjay Kr. Singh, SI Mritunjay Kr. Singh, SC Santosh Kumar Singh and JC Sanjay Kumar Singh moved towards the den from north side whereas SP Buxar with Arvind Kr. Gupta SDPO Buxar, SI Raghunath Kumar Singh and JC, Baijnath Kumar moved from south west side. In the meantime, the criminal planned an evil strategy, sent one portion of the den on fire with intention to escape furtively creating confusion among police personnel. The situation was kept under control by both the teams. Headlights of gypsy car and landmines vehicle were switched on and focused on the encounter site to avoid confusion. As the police parties were engaged in controlling the situation, local supporters of the criminals started firing from west, north and south directions. Available SAP Jawans and additional force of STF Kaimur under leadership of SI Uday Shanker, faced them and control the situation on outer cordon. This drama continued for whole night. The ultras kept on firing intermittently as police tried to get closer.

As a last resort in the early morning, the DIG & SP again assessed the situation, regrouped the teams & planned fresh strategy. They tried their best to reach near the fortified den under cover of heavy firing of bullets. The criminals were at the height in counterattack. It was a highly volatile situation. The fighting escalated into a full scale war. DIG Shahabad and SP Buxar called out warnings again to surrender. At this they tried once again to flee in east and west directions under the shower of bullets, however their efforts were foiled.

As a strategy one of the criminals, introducing himself as Suresh Rajbhar, agreed to surrender on mobile phone of SDPO Buxar. On this, firing from police side stopped by the DIG & both the DIG and SP came out in front for surrender of criminals. But to utter amazement of Police Team, the criminals, in two groups, came out of the den from south east directions and began to fire indiscriminately and tried to flee. During this intensified firing, JC Sanjay Kumar Singh was hit in his leg. In retaliatory firing by both raiding parties, four fleeing criminals were hit and fell in the eastern field with their weapons.

In course of room intervention the police team exploded hand grenades avoiding apprehension of any further criminals attack resulting spot death of three criminals. They were found dead in the courtyard of the house. In total seven criminals were shot dead, two of which were found in police uniform.

This gruesome encounter continued for 23 hours in which the criminals fired around 500-600 rounds and a big volume of firearms were recovered from their possessions. The number of police officers and personnel employed in this major operation was 181. Total rounds of fire by the Police was 1280 in addition 11 hand grenades and 2 tear gas. This exemplifies their reckless criminality, defiance and propensity for violence with amazing fire power. Fire attacks by the supporters on police parties from outside and from every direction approves the fact that Suresh Rajbhar had organized a strong group of criminals. In such a grave situation surfacing at the critical moment, firing by the police was aptly necessary and of the barest minimum and also fully justified.

During supervision of the case it revealed that the den was in such condition that no punching of effective fire could discourage the criminals till the end of operation. It was also found that several holes were made in thick walls of the den to target the police from all directions. They watched the police strategies of attacks and their movements through the holes.

Exercising superior sense of service, DIG of Police, Shahabad Range, along with police party, handled the situation even in the midst of imminent danger to their lives.

Irrespective of substantial risk of their lives, the police party displayed commendable patience of job and exceptional devotion to duty. By dint of their positive and immediate responsive action, gritty determination, potentiality and combative spirit they faced stiff necked criminals, Suresh Rajbhar and his gang men from the front for about 23 hours at stretch. They, appealing them (criminals) to surrender, exercised maximum restraint. The police party was forced to counterattack in self defence, security of government arms and ammunitions and only when the ultras had increased their fire power to a horrifying level.

Recoveries made :

1. 3006 US Model Rifle Semi Automatic - 01
2. 3006 Prohibited Bore Regular Rifle- 01
3. .315 Bore Regular Rifles - 06
4. DBBL Gun 12 Bore 4057/3764- 01
5. .315 -179 Round Live Cartridges
6. .3006-102 Round Live Cartridges
7. 7.62 MM-3 round live cartridges
8. 12 Bore- 40 round live cartridges
9. .315 – 56 MT
10. 3006- 12 MT
11. Bindoliya- 07
12. Mobile -3
13. Mobile SIM-4

In this encounter S/Shri Sushil Khopde, Dy. Inspector General, Upendra Kumar Sinha, Superintendent of Police, Arvind Kumar Gupta, Sub Divisional Police Officer, Sanjay Kumar Singh, Dy. Superintendent of Police and Mrityunjay Kumar Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/06/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

———————————

No. 116-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Pramod Xess,
   Inspector
2. Manohar Pradeep Kerketta,
   Company Commander

Statement of service for which the decoration has been awarded

Inspector of Police, Saranggarh, Pramod Xess received information that some cadres of CPI (Maoists) had a meeting in which they were planning to incite people of village Pardhiyapali against the Govt. They were also planning to induct new members and attack the Police Out Post of Dongripali. After their meeting, they went towards Karramal forest and were staying near Butipani pond. On 27.01.2012, on receipt of this information, the necessary details of the terrain and topography, chalked out a strategy and planned an operation to apprehend the ultras. He formed two teams &briefed them.

The first team led by Inspector Xess went down to the Karrarnal forest to cut off the route of the Naxalites. The second team led by CC Kerketta reached Gomarda. The second team split into 3 sections to cordon the area. In the early morning at around 12 O'clock, the Naxalites started firing heavily on the second team.

One Naxalite carrying AK 47 was leading his comrades. CC Kerketta positioned himself strategically and was able to fire and inflict bullet injury on him. After this, the intensity of fire from Naxalites increased. Pramod Xess fired with his AK 47 and killed the naxalite on the spot. The other naxalites came to take the dead body and ammunition and again attacked with hand grenades. Inspector Xess and CC Kerketta guided the men ably and were in complete control of the situation. Firing from both sides went on for an hour. Naxalites were forced to recede. Some naxalites were found yelling and some were seen running with dead bodies of slain naxals on their shoulders. The police party, recovered one dead body of naxalite around 30 yrs. old alongwith Arms & Ammunitions. Inspector of Police Pramod Xess and Company Commander Manohar Pradeep Kerketta planned and executed the operation successfully. They displayed exemplary courage in leading the Police teams from front and inflicting heavy casualty on the naxals without any injury to the Police personnel.

Recovery:

1. AK 47 Rifle 01 No.
2. AK 47 live rounds 39 Nos.
3. AK 47 blank khokha -05 Nos.
4. INSAS Rifles Blank Khoka 02 Nos.
5. .303 live round 01 No.
6. AK47 Magzine 03 Nos.
7. Magzine Pouch Black Colour 01 No.

In this encounter S/Shri Pramod Xess, Inspector and Manohar Pradeep Kerketta, Company Commander displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/01/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 117-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Manish Kumar Sharma,
   Addl. Superintendent of Police
2. Uday Bhan Singh Chauhan,
   Superintendent of Police
3. Rajendra Prasad Sharma,
   Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the year 2007-08, when Raipur and Durg Police arrested a few top cadres of the Naxalites and recovered a huge cache of arms and ammunition in the city, Chhattisgarh police decided to continue its crusade to expose anti-national agenda of the Naxalites' on all fronts. Since then, Durg Police had been working relentlessly on unraveling malicious designs of urban network of the CPI (Maoist).

It was on 14th October 2010 at about 11 hrs when one of the informers informed the Addl. SP (Rural) Durg; Shri Manish Sharma that a dreaded Naxalite Nagesh, along with 2 or 3 associates were planning to make a deal to collect cartridges near Bogda Pulia (culvert), under PS Jamul of the city on the same night. Nagesh, a very hardcore Divisional Committee Member of North Bastar- Maad Division of the banned CPI (Maoist), was very notorious for his mindless cruelty.

Many cold-blooded murders including that of security personnel were executed by him. He was a wanted in more than eighty heinous criminal cases of killings and looting of polling parties. He was also carrying huge cash reward over his head. Relying upon the information received by Addl. SP, the Superintendent of Police directed him to constitute a team with requisite officers and men for nabbing the Naxalites. Sh. Manish Sharma and UBS Chauhan, City Superintendent of Police (CSP), Chhawani, District Durg, along with informer, carried out recee of the suspect area without further loss of time. Teams were constituted under the leadership of Addl. SP, CSP and SHO Jamul.

Sh. Manish Sharma, Shri UBS Chauhan and SHO R.P.Sharma meticulously planned the whole operation and decided to take front line of the operation including arrest. Other police personnel of the team were properly briefed and instructed to ensure that the Naxalites should not abscond during the operation and therefore, the force was accordingly strategically positioned.

When the police parties had taken their positions and were waiting for the suspects, at about 1.20 AM in the night of 14th and 15th, two male and one female were noticed carrying bag and walking towards Shivpuri Chowk from Bogda Pulia. The informer identified one of them as Nagesh as soon as they arrived and stood on the road from Shivpuri Chowk towards ACC Magazine. The front line officers, Sh. Sharma & Shri Chauhan, who were keeping an eagle's eye on their activities, cautiously started moving towards suspects to take control of them. On seeing them, offenders started shouting police-police and immediately opened fire on them. The police officers immediately took position and without fearing for lives started firing back in self defense. Firing continued for some time. When firing stopped from the suspects' side, police party carefully advanced and found a slain woman along with two pistols, two bags, two water bottles lying sideways and blood stains spread on the ground. On undertaking extensive search of the area, another dead body of a man, identified as dreaded Naxalite Nagesh, was found in the bushes. The third culprit escaped taking advantage of the dark.

The police party fired 14 rounds in self defense and a case under section 307, 34 IPC and 25, 27 of The Arms Act was registered at Jamul PS against the naxalites. During further investigation, the dead woman was identified as Tara Bai alias Urmila wife of dreaded Nagesh and an Area Committee member of North Bastar Division of Chhattisgarh. As many as 32 criminal cases of violence were registered in various PSs of district Kanker against her.

The entire operation was a huge success and morale booster for the police force. This was only because of the sheer courage, able leadership and conspicuous gallant act exhibited by Addl. SP Manish Sharma, CSP Shri UBS Chauhan and Insp. R.P.Sharma.

Recoveries made :

The police party recovered one 9mm pistol with magazine and 2 round, one 7.65mm pistol with magazine and 2 round, 2 walky-talky (motorola co.), 2 compass, lots of medicines, pocket diary, naxal literatures, cash rupees 49000/-, Digital diary (Casio Company) and lots of daily use materials.

In this encounter S/Shri Manish Kumar Sharma, Addl. Superintendent of Police, Uday Bhan Singh Chauhan, Superintendent of Police and Rajendra Prasad Sharma, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/10/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 118-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/2nd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Kailash Singh Bisht, Inspector	(2nd Bar to PMG)
2.	Satender Kumar, Head Constable	(PMG)
3.	Rajeev Kumar, Head Constable	(PMG)
4.	Birender Singh, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On the basis of the information developed by Special Cell, a team of Special Cell went to Mendhar and identified the place and house where Pakistani Terrorist Umar Khitab, Divisional Commander of JeM was hiding. A case vide FIR No. 166/2010 dated 05.09.2010 U/s 7/27 Arms Act, 120 B/212/IPC Act, PS Mendhar, Distt Poonch J&K was also registered and the joint team of Delhi Police Special Cell, 37 RR, SOG Mendhar and Police Station Mendhar armed with weapons, Bullet-proof jacket etc cordoned the house of Zubair S/o Khaliq R/o Mohalla Thhera Jatta, Bhattidar, Mendhar, J&K to apprehend the militants. At about 6:15 AM, on seeing security forces, the hiding terrorist opened fire on the police party and security forces and injured one Lance Naik Sajjan Singh of 37 RR. The bullets fired by JeM militants passed closed to the team members of Special Cell, Delhi Police. There was war like situation and this fierce encounter lasted for 2 hours. In this cross firing, Divisional Commander of JeM namely Umar Khitab R/o Pakistan was neutralized and one militant namely Zubair s/o Khaliq r/o Mohalla Thhera Jatta, Bhattidar J&K was apprehended. In this encounter, Inspector Kailash Singh Bisht fired 20 rounds, ASI Vikram fired 20 rounds, HC Satender Kumar fired 14 rounds, HC Nisar Ahmad Sheikh fired 10 rounds, HC Rajeev fired 16 rounds, CT Amar Singh fired 10 rounds and CT Birender Singh Negi fired 13 rounds from their AK-47 assault rifles.

Recovery:

1. 2 AK 47 Assault Rifles.
2. 1 Chinese pistol of 7.62 caliber
3. 1 Chinese hand grenade
4. Rs. 60,610
5. 35 pencil cell
6. 3 Nokia battery
7. 2 mobile phones, 1 with SIM card
8. 5 rounds of ammunition 9MM

In this encounter S/Shri Kailash Singh Bisht, Inspector, Satender Kumar, Head Constable, Rajeev Kumar, Head Constable and Birender Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/2nd Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/09/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 119-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Shabir Nawab,
   Addl. Superintendent of Police
2. Mohd Rafi Malik,
   Head Constable
3. Mohd Amin Reshi,
   Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19-01-2014, over a specific information that one terrorist namely Javeed Ahmad Mir @ Salfi S/o Mohammad Maqbool Mir R/o Bulbul Nowgam Anantnag of HM outfit has shifted his base camp from Anantnag to Kulgam in village Shempora Qazigund to carry-out some terrorist act on Srinagar-Jammu national highway, an operation was planned by Police and a team under the supervision of ASP Shabir Nawab and Dy. SP Feroz Ahmad SDPO Sadder and adequate men from ESU South Srinagar including Inspr. Riyaz Ahmad /NGO , HC Mohd Rafi Malik, HC Mohd Amin Reshi, Ct Gul

Mohammad was rushed to the spot. Prior to the commencement of the operation, assistance of Kulgam Police and 09 RR was also sought. The operational party was divided into three groups. First group comprising of Kulgam Police and 09 RR was given the task to lay the outer cordon of the target village while the second party comprising of a team of Srinagar Police and 09 RR cordoned the village where the target house was located. The third group comprising of ASP Shabir Nawab, Dy. SP Feroz Ahmad SDPO Sadder and Inspr. Rashid Akber, Inspr. Riyaz Ahmad, HC Mohd Rafi Malik, HC Mohd Amin Reshi was tasked to lay the inner cordon of the house in which the terrorist was hiding.

On 20/01/2014 at about 0030 hrs the operation was launched. Initially, the holed-up terrorist was asked to surrender, but he refused and instead made the family members of the house owner hostage. The team headed by ASP Shabir Nawab and Dy. SP Feroz Ahmad without caring for their lives evacuated the two hostage family members besides inmates of nearby houses safely amid firing from the hiding terrorist. The holed up terrorist was again asked to surrender, but he refused and fired on the operation party. At around 0200 hours intervention of the house was planned. The intervention party, having taken all precautions, started the process of intervention. However, as the intervention party reached near the target house, it again came under heavy fire from the spotted terrorist. Incharge advance party, ASP Shabir Nawab constituted two small teams and decided to enter the house from rear side as well as front side. The first team comprised of Dy. SP Feroz Ahmad alongwith HC Nisar Ahmad, Sgct Deepak Bhat, Ct Gul Mohammad. The second team led by ASP Shabir Nawab and with active support from HC Mohd Rafi Malik and HC Mohd Amin Reshi tried to enter the house from the rear side and crawled nearer to the window from where the terrorist had lobbed the grenades upon them. The terrorist opened the main door of the first floor and started firing indiscriminately in an attempt to break the cordon and run away. The team led by ASP Shabir Nawab and with active support from HC Mohd Rafi Malik and HC Mohd Amin Reshi retaliated the fire effectively without caring for their personal lives and eliminated the holdup terrorist who was later on identified as Javeed Ahmad Mir @ Salfi S/o Mohammad Maqbool Mir R/o Bulbul Nowgam Anantnag of HM outfit. The elimination of the terrorist was a big achievement for the Police and a severe jolt to the network of HM outfit. The terrorist was active in District Anantnag, Kulgam and District Shopian for a pretty long time.

It was due to self determination, high spirit of work and the operational capabilities of the police party that a closed gun battle ensued and the hiding militant was killed after a long operation, without there being any collateral damage.

Recovery made:-

1. AK-47 rifle 01 Nos
2. Magazine AK 02 Nos
3. AK live ammunition 48 Rounds
4. Pistol 01
5. Pistol Mag 01
6. Pouch 01
7. Indian currency Rs. 1670/-

In this encounter S/Shri Shabir Nawab, Addl. Superintendent of Police, Mohd Rafi Malik, Head Constable and Mohd Amin Reshi, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/01/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 120-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Sheikh Zulfkar Azad,
   Superintendent of Police
2. Mohd Altaf Dar,
   Sub Inspector

3. Ather Parvaiz,
Head Constable

4. Fayaz Ahmad Khanday,
Constable

5. Yashpal Sharma,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05/06-06-2013, over a specific information about the presence of terrorists in village Ichgoza in the house of one Abdul Ahad Wani R/ o Ichgoza, a joint operation by Police, 53 RR, 44RR and 182 CRPF was launched and the said house was cordoned. At the first instance the cordon around the said Mohalla was tightened and all the civilians were evacuated from the Mohalla. The terrorists hiding in the target house were asked to surrender but they ignored and instead, fired indiscriminately upon the searching party. The fire was retaliated by the forces in self defence and the encounter started during which one terrorist was gunned down in the compound of the target house, who was later identified as Altaf Ahmad Baba R/o Aglar Kandi, Div. Comndr of JeM outfit for South Kashmir .The another terrorist who was hiding inside the house fired indiscriminately upon the troops during the whole night. In the early hours of next morning, the terrorist was again asked to surrender, which he ignored and lobbed grenades towards the forces followed by indiscriminate firing which was retaliated in self defence resulting a fire fight once again which lasted for about two hours. Thereafter firing stopped from terrorists side and joint operational parties after waiting for about 30 minutes carried out the search of target house during which the said terrorist was found dead who was later identified as Mohd Abass Nengroo (JEM) R/o Hanjan Bala. During the said operation, 01 Army personnel of 53 RR got injured.

In the instant operation, Shiekh Zulfikar Azad, SP (Ops) Srinagar, SI Mohammad Altaf, HC Athar Parveez of ESU South Srinagar, Ct. Fayaz Ahmad and Ct. Yashpal Sharma participated in the said encounter with dedication and in an efficient manner, which resulted in elimination of two top ranked terrorists. Moreover, many civilian and children who were caught in cross firing were evacuated by these police officers without caring for their lives.

Recovery made:-

1.	Rifle AK 47/56	:	02 Nos.
2.	Mag AK 47	:	03 Nos.
3.	Rds AK 47	:	60 Nos.

In this encounter S/Shri Sheikh Zulfkar Azad, Superintendent of Police, Mohd Altaf Dar, Sub Inspector, Ather Parvaiz, Head Constable, Fayaz Ahmad Khanday, Constable and Yashpal Sharma, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 06/06/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 121-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Mohd Shafiq,
Dy. Superintendent of Police

2. Mohd Saleem,
Sub Inspector

3. Manzoor Ahmad Mir,
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 08-06-2014 Police Pulwama received information about presence of terrorist LeT outfit in village Reshipora Kakapora. Sh. Mohd Shafiq-KPS, Dy. SP Operation, Pulwama shared the information with 50 RR and 182,183 Battalion CRPF and rushed to spot for nabbing/ eliminating the hiding terrorists. To avoid any kind of collateral damage and civilian casualty, Mohd Shafiq-KPS DY. SP Operations Pulwama planned the deployment of Police, RR and CRPF in a professional manner and segregated it in different directions around the target site. A team under the command of DYSP Operations Pulwama including SI Mohd Saleem, Sgct Manzoor Ahmad Mir and others tightening the cordon around the target and started door to door search. On noticing presence of operational party, terrorists hiding in the Mohalla came out all of a sudden and fired indiscriminately upon operational party within the close range. However, showing exemplary courage, presence of mind and battle skills of highest standard , Sh. Mohd Shafiq, DY. SP Ops Pulwama along with SI Mohd Saleem and Sgct. Manzoor Ahmad Mir immediately took positions and retaliated the fire effectively and foiled the attempt of terrorists to break the cordon and flee - from the spot. Amid cross firing between the two sides, Sh. Mohd Shafiq, DYSP Ops along with SI Mohd Saleem and Sgct. Manzoor Ahmad Mir without caring for their personal lives evacuated all civilians from the encounter site and started final assault on the hiding terrorists. Thereafter, the operational party led by Sh. Mohd Shafiq, DYSP Ops along with SI Mohd Saleem and Sgct. Manzoor Ahmad Mir launched final assault on the hiding terrorists and fought bravely for about one and a half hour till they neutralized the two hiding terrorists. The killed terrorists were later on identified as Bilal Ahmad Bhat @ Saad S/o Abdul Rashid Bhat R/o Lelhar Pulwama Div. Comdr. for South Kmr and Mudasir Ahmed Sheikh @ Munna S/o Mohd Jabar Sheikh R/o Kisrigam Pulwama. The slain terrorist Bilal Ahmed Bhat @ Saad was active in district Pulwama for about 4 years and was involved in number of militancy related cases including attack on Silver star Hotel, Bye Pass Nowgam (19-10-2012) and killing of renowned cardiologist Dr. Jalaldin and his escort. The other slain terrorist Mudasir Ahmed Sheikh @ Munna was involved in attack upon the Police party at Kakapora on 29-03-2014. The elimination of both the LeT terrorists was a huge setback to LeT outfit in South/Central Kashmir.

During the whole operation, Sh. Mohd Shafiq, DYSP Ops Pulwama along with SI Mohammad Saleem and Sgct. Manzoor Ahmad Mir displayed conspicuous gallantry, unparalleled courage and devotion to duty of highest order and ensured safe evacuation of the civilians. The selfless devotion to duty and matchless courage exhibited by these officers/ officials resulted in elimination of two dreaded terrorists including Divisional Commander of LeT for South Kashmir.

Recovery:

1.	Rifle Balgarion	:	01 No.
2.	Mag AK	:	04 Nos.
3.	Rds AK 47	:	42 Nos.
4.	Pistol (Chinese)	:	01 No.
5.	Magazine(Pistol)	:	01 No.
6.	Rounds (7.2 Chinese)	:	01 No.

In this encounter S/Shri Mohd Shafiq, Dy. Superintendent of Police, Mohd Saleem, Sub Inspector and Manzoor Ahmad Mir, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/06/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 122-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Parvez Ahmad Dar,
   Sub Divisional Police Officer

2. Aijaz Rasool Mir,
   Dy. Superintendent of Police

3. Parvaiz Ahmad Dar,
SGCT

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 01.07.2013, over a specific information, a joint operation by Police and 185 Bn CRPF was launched around a house in village Mandura Tral. Two search parties were constituted by Shri Abdul Waheed, SP Awantipora, one headed by DySP Aijaz Rasool DySP (Ops) Tral and other by DySP Perveiz Ahmad SDPO Awantipora. Sensing the situation, the terrorists hidden inside the house fired indiscriminately upon the searching party from three rooms resulting SgCt. Manzoor Ahmad sustained bullet injuries, who took shelter behind a tree in the compound. Two CRPF personnel namely SI Jaswant Singh & Ct. Manoj Ram who were in outer cordon also sustained injuries. The fire was retaliated in self defense and the terrorists were asked to surrender and allow the family members kept locked in one room to come out of the house, which they denied. After evacuation the injured Police officials, police party as entered the house premises, they came under heavy volume of fire from 02 different directions. Dy. SP Aijaz Rasool alongwith other police personnel kept the terrorists engaged in firing while 03 other officials including Sgct. Parvaiz Ahmad gave shoulder to the injured police official.

On seeing the evacuation of the injured police official, one of the terrorist came out of the house instantly and fired upon the police party engaged in evacuation. Before suffer a heavy loss at this particular point, Const. Mushtaq Ahmad who was the part of the evacuation party acted like a fidayeen from police side who on one hand gave shield to the police party and on the other hand confronted the terrorist bravely without caring for his own life. The terrorist lobbed a grenade towards the police party, however constable Mushtaq Ahmad in a fraction of second kicked the grenade with his foot away from the police party which exploded at a few yards distance. Now the terrorist and the police official were face to face at a few yard distance firing at each other and during this process constable Mushtaq Ahmad was critically injured and later succumbed to his injuries. Under the heavy volume of fire, police party entered the room of trapped members after broking the door of house and get them free. The operation was concluded under the heavy volume of fire with the elimination of 03 hardcore terrorists.

Recovery:

AK 47 Rifles = 02 Nos. (One damaged)

AK 56 Rifle = 01 No.{ Reg. No. 8114004 without assembly)

AK Rd =03

AK Magzines =6 Nos

AK Ammunition =90 rds

Pouches = 03 Nos.

Pistol = 01 (Damaged).

Shelling = 03 Nos.

Chinese grenade live = 05 Nos. (Destroyed at encounter site)

Magazine spring = 02 Nos.

Wire cutter = 01 No.

Scissor = 01 No.

Headphone = 01.

Torch = 01 (damaged).

Detonator = 01 No. (Destroyed at site).

Knife =01 No.

Bag = 01 No.

RR Badges = 01 No.

Posters etc = 03 Nos.

Rupees 1000 = 02 pieces (worn out)

Rupees 500 = 08 pieces (Worn out)

Rupees 100 = 1 Piece (worn out)

In this encounter S/Shri Parvez Ahmad Dar, Sub Divisional Police Officer, Aijaz Rasool Mir, Dy. Superintendent of Police and Parvaiz Ahmad Dar, SGCT displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/07/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 123-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Chothe Manoj Ratan,
   Additional Superintendent of Police
2. Sadanand Singh,
   Constable
3. Pramod Kumar Rai,
   Constable
4. Ravindra Ram,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

The gallant act of the aforementioned officers at 15:15 hrs on 08.06.2012 followed by the most reliable information received by SI Jitendra Kumar Azad at 14:00 hrs on the same day with regard to extortion of levy targeting businessmen and contractors, unleashing terror among villagers by none but the Sub-zonal Commander Baijnath Yadav alias Sudhirjee, Sub-Zonal Commander Ashok Yadav alias Smartjee, Sub-zonal Commander Anil Kumar Yadav and their associates of P.L.F.I.(People's Liberation Front of India), a banned outfit having deadly arms. The officials after informing the higher Police Officers, performed detailed analysis of the information received and then meticulously planned an operation near Karmadih Tand Jungle, South of village Parsava near Panki-Balumath road. The operation involved Officers and Jawans of District Police.

Eventually at 15:15 hrs, on reaching the abovementioned place, the force was divided into two teams and was asked to approach from two different directions in order to arrest the extremists. The officers shouted at extremists explaining their identity as police and asked them to surrender. Instead of surrendering, one of the sentries of the extremists immediately started heavy shower of bullets with latest sophisticated arms intending to kill the police officers and jawans. His action was replicated by his associates and they also resorted to indiscriminate firing on the police force. The officers recurrently shouted at extremists asking them to stop firing and surrender but defiant and determined extremists continued to fire while running towards a nallah [drainage].

Forced by the situation, the leader A.S.P. Chothe Manoj Ratan directed the force to open fire in self defence, intending to protect the government arms and ammunitions and to take the ransacker extremists in command. Consequently firing was resorted to. Undoubtedly, the abovementioned officers and constables exhibited exceptional courage and zeal while bullets were passing over their heads. They defied the heavy shower of bullets and in a dare devil manner tactically moved towards extremists who were incessantly firing at police. Meanwhile by taking cover of firing provided by each other, extremist managed to escape deep inside the jungle with the help of the nallah [drainage]. After sanitizing the area, search operation was carried out which resulted into the recovery of dead body of one extremist with one loaded pistol in his right hand. Further searching of the area led to the recovery of one more loaded pistol, Letter-pads of P.L.F.I. (90 in Numbers), receipts of collection of levy worth Rs. One lac forty five thousands (Rs.1,45,000), mobile set with chargers, some eatables and energy drinks, etc. On further investigation, the identity of the dead extremist was established as Anil Kumar Yadav, a Subzonal Commander of banned P.L.F.I..Normally in Naxal affected areas, dead body of a killed extremit does not get recovered during such operations, but this was a rare occasion when not only the body of an extremist but several arms and ammunitions were also recovered only due to courage and tactful leadership exhibited by abovementioned officers.

In this connection Panki P.S. Case No. 53/2012 was registered on 08.06.2012 U/S 47,148, 149,307,353 of Indian Penal Code, 25(1-b)A,26,27 Arms Act and 17 C.L.A. Act.

Within five days of this operation, a team led by the above mentioned Police Officers arrested the escaped five extremist near Bankheta village near Panki Barrage which included Sub-zonal Commander Ashok Yadav alias Smartjee, Kamlesh Kumar Singh alias Golu, Birenletter Singh, Aklesh Singh alias Butan and Sandeep Yadav with several arms and ammunitions and letter-pads of banned P.L.F.I. (Panki P.S. Case No.55/2012 dated 13.06.2012). All these extremists had unleashed reign of terror in the district of Palamu and the adjacent districts of Latehar, Gumla and Khunti in Jharkhand.

A.S.P Chothe Manoj Ratan, Ct. Sadanand Singh, Ct. Parmod Kumar Rai and Ct. Ravindra Ram all Panki P.S. exhibited exemplary valour, presence of mind and ability to employ tactics with very meager force in a highly risky operation involving battle. Their courageous achievement had a highly elevating effect on morale of police force and a crushing effect on the morale of extremists.

In this encounter S/Shri Chothe Manoj Ratan, Additional Superintendent of Police, Sadanand Singh, Constable, Pramod Kumar Rai, Constable and Ravindra Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 08/06/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 124-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ravi Kumar Lohra,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 05.02.2011 at about 2100 hrs., the S.P., Khunti got information that prohibited Maobadi Organization terrorist Kundan Pahan, Anal Ji @ Patiram Manjhi, Navin Manjhi @ Bhuvan Ji and Prasad Ahir Vishal @ Tulsidas, Ram Mohan Munda, Jitlal Ahir @ Madhu Ahir, Dimba Pahan, Bhim, Krish, Shyam Pahan and 50 others are gathering at Marangburu under Araki P.S. for Armed meeting against Government and pressuring people to join naxal and kill them on denial. The S.P. Khunti chalked out plan and constituted three teams. First team led by Addl. S.P.(Operation) alongwith S.I. Krishna Murari, AC Exide Group 10 &12 of 203 Cobra Bn and Dy.SP Jharkhand Jaguar A-14. Team No. 02 led by S.D.P.O., Khunti with Inspector P.K. Mishra, Incharge 203 Cobra Bn with Assault group 13 & 15 & Jharkhand Jaguar AG-06. Team No. 3 lead by Dy. S.P. (Operation) alongwith O/C Khunti and Araki with B & C coy of CRPF 94 Bn. Team 1 placed at Marangburu Mountain, Team 2 at Milepidi and Sandidiri and Team 3 at Basudih and Tonpat Tola for doing search operation. S.I. Krishna Murari with bodyguard of ASP, Chandan KumarCT, Ravi Kumar Lohra CT, Md. Khurshid, CT and other parties proceeded at 2330hrs. After reaching Tayatodang by vehicle, they left the vehicle there and proceeded to Marangburu. At about 6.20 AM in the next day they reached at the highest peak of Marangburu Mountain and decided to move from two directions for search operation. Kobra AG-12 and S.I. Rishikesh Minz from one side and ASP (Operation), AC Cobra S.I. Krishna Murari and others from other side. At about 6.24AM while troops were searching, the extremist fired at police team. ASP (Operation) and S.I. Krishna Murari shouted, "we are police personnel you people are doing unlawful work." They started burst firing and shouted "you people are surrounded by Kundan Pahan, Anil Ji and Navin Da Group", so surrender,. The Police party took safe position and retaliated. The extremists started burst firing with mortar and hurled grenade. The Police also fired with mortar, UBGL and hurled grenade keeping the counter attack. Bullet hit on head of one extremist. The extremists continued burst firing through LMG and mortar. The police party did not afraid and kept on firing at them. In the meantime the police party heard some cry and their firing decreased then police party took position of whole pahari and extremists started to flee away. They managed to escape with the body and injured persons. During this operation, ASP (Operation), CT Chandan Kumar & CT Ravi Kumar Lohra both bodyguard of ASP, CT .B.Ravi Kumar, CTAnant Kumar of Kobra battalion and Amardip Kujur of Jharkhand Jaguar were injured. All were sent by helicopter for treatment.

It is really heroic deed of Constable Ravi Kumar Lohra. He is asset for the police force and ideal example of bravery. His heroic deed/performance enhanced the prestige of police force and the police force is proud of him.

Recovery:

One country made SBBL Gun

Non electric detonator 10 pieces

In this encounter Shri Ravi Kumar Lohra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 05/02/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 125-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanchaman Tamang,
Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 19/7/2012, SP Chatra and Prakash Ranjan Mishra, Dy. Comdt, 203 Cobra got a reliable information about movement of Ajay Ganju @ Paras, a very senior Maoist leader (Regional Commander & Bihar Regional Military Commission Member). As per information, Ajay Ganju (with a maoist team) was coming to his home Lakarmanna a very remote and hostile place in PS Kunda to meet his family members. The information was verified through human and technical sources. As Ajay Ganju was a dreaded Maoist working in the area for last 20 years and was promoted as Regional Commander due to his military/fighting capability, SP Chatra, Prakash Ranjan Mishra, Dy. Comdt and Karun Kumar Ojha, Asstt. Comdt discussed all probability. SI SanchmanTamang, O/C Lawalong PS of Chatra District and 2 teams of B/203 COBRA under command Prakash Ranjan Mishra, Dy Commandant with Karun Kumar Ojha, Assistant Commandant and SI SanchmanTamang, O/C Lawalong PS of Chatra District moved towards the target area at 0845 hrs after proper briefing to the participating troops and distribution of tasks to different groups. Vehicles were used upto Kunda. Troops moved towards the Village approx. 20 KMs from Kunda. Despite pitch darkness, tough terrain, bushes, nalas and rain, the troops moved very fast and reached near the village at 0345 hrs. The village was surrounded by forest and hillocks. After looking the nearest forest area by NVD, Prakash Ranjan Mishra ordered the cordon group to cordon the village. As soon as the cordon group started cording and SI SanchmanTamang, O/C Lawalong, Prakash Ranjan Mishra, Dy Commandant, Karun Kumar Ojha, Asstt. Commandant with few raid/search group started moving towards the cluster of houses, dogs inside the Village started barking and a volley of fire came from the near forest. Ignoring the fire, SanchmanTamang, Prakash Ranjan Mishra along with Karun Kumar Ojha and raid/search group moved very fast towards house of Ajay Ganju to surround & search his house and ordered the cordon group to cordon immediately. SanchmanTamang alongwith Prakash Ranjan Mishra reached very near to the house of Ajay Ganju when he saw a person running towards the forest. He alongwith Prakash Ranjan Mishra, Karun Kumar Ojha and CT Raman Kumar started chasing the person. The escaping person turned back and fired few rounds but SanchmanTamang survived narrowly but started chasing. A volley of fire came from forest aiming raid/search group which was retaliated back by HC/RO Prabhakar Singh, CT S Khalko and CT Ajit Ram Verma. This retaliation helped the raid/search group to advance. When SI SanchmanTamang &Prakash Ranjan Mishra with Karun Kumar Ojha and CT/GD Raman Kumar reached very near to the escaping person, he turned back & tried to aim on SI SanchmanTamang, Prakash Ranjan Mishra, Karun Kumar Ojha & CT/GD Raman Kumar and fired few rounds but they survived narrowly despite very less distance. Then he brought something from his pocket and tried to throw. He was about to enter in the forest from where Maoists were firing on troops. If the person would have entered in the forest he would have got the support of Maoists who were firing from there. There was no other option for raid/search group except to fire on the person. Analyzing the situation SI SanchmanTamang, Prakash Ranjan Mishra, Karun Kumar Ojha and CT/GD Raman Kumar fired on the escaping person. The person fell down. SI Sanchaman Tamang, Prakash Ranjan Mishra, Karun Kumar Ojha and CT/GD Raman Kumar waited for few minutes and then moved towards the person. Few personnel of cordon group also reached there and after searching they found the body of a person with a loaded 9 MM Pistol. One HE 36 Grenade was lying near few feet away which was tried by him to throw on the chasing party. If he was succeeded in his efforts, SanchmanTamang, Prakash Ranjan Mishra, Karun Kumar Ojha and CT Raman Kumar had no chance to survive. One HE 36 grenade, one loaded 9 MM Magazine and 2 mobiles were found in his pocket. Cordon group moved towards the area from where Maoists were firing. But Maoists managed to escape before reaching the troops there. Few fired cases of different bore weapons were found from the spot.

The person killed was identified by the villagers as Ajay Ganju @ Paras @ Fagu, the dreaded naxal regional commander and member of Bihar Regional Military Commission, who was a terror in many districts of Bihar and Jharkhand carrying 7 lakhs reward on his head and 84 cases were pending in different districts of Bihar and Jharkhand States. He was the key person in almost every naxal incidents of ambush, blast, attack and encounter in bordering area of Bihar and Jharkhand for last many years. Troops returned back to Kunda PS and handed over the body & items to Police Station. Then the troops moved to Chatra.

In the whole operation SI SanchmanTamang played very important role. His brave initiation, brave prompt action and extraordinary courage & bravery shown during Ops turned the operation into success and the dreaded maoist regional commander was killed. SI SanchmanTamang supported his team in the whole operation taking too much risk. He took grave risk to his life and death remained at a hairline distance during whole Ops.

In this encounter Shri Sanchaman Tamang, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/07/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 126-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Chandra Shekhar Singh, Head Constable	(Posthumously)
2.	Pramod Kumar Ray, Constable	(Posthumously)
3.	Dinesh Mahto, Constable	(Posthumously)
4.	Lalchik Baraik, Constable	(Posthumously)
5.	Rajesh Kachchhap, Constable	(Posthumously)
6.	Jagranath Oraon, Constable	
7.	Manoj Kumar Singh, Constable	
8.	Jamshed Khan, Constable	
9.	Prashant Kumar, Constable	

Statement of service for which the decoration has been awarded

At about 05:30am on 03-05-2011, based on reliable intelligence input troops of Senha and Kairo PS along with CRPF launched a joint anti extremist operation under the leadership of Sub Inspector Purnchandra Devagam. Before marching on the spot Senha police briefed with CRPF about the strategy to conduct the raid and search at the summit of Dhardhariya fall. As soon as the troop of Senha and Kairo landed one side of the plateau for appropriate action against the Maoists at the same moment there was multiple devastating blasts occurred and the whole area clouded with smoke and dust. When smoke became still, it was noticed that land mines were spread upto one and half kilometer in approx.500 number in a narrow lane. In the explosion many police officers and jawans fell on either sides of the narrow lane. On the other hand at the same moment the troop came under heavy and indiscriminate fire from the banned Maoists cadres, who were already on a dominating height. They were announcing and giving warning through the loudspeaker to surrender before them including all weapons and ammunitions. Immediately police force came in action and started opening fire in retaliation. Though in the exchange of fire some police officers badly injured even then they altogether with great vigour faced Maoists. Among the

Maoists there were some women also who were trying to come close to the police troop. On extensive enquiry it was found the notorious Maoists Nishant alias Arvind Kumar Singh, Nakul Yadav and some other were leading the Maoists group. The exchange of fire took place for about one hour, when frequency of fire reduced from Maoists side it was noticed that they left the spot and disappeared in the dense forest. Police Sub Inspector Purnchand Devagam informed the Police Superintendent Lohardaga and Senha PS respectively through his mobile and wireless sets. On getting the information police officers Lohardaga and Gumla reached on the spot with force to help the troop. When exchange of fire was stopped it was found that in exchange of fire Head constable Chandrashekhar Singh Cons. Pramod Kumar Rai, Const. Dinesh Mahto,Const. Lalchik Baraik and const. Rajesh Kachchhap became martyr while Purna Chandra Devagam officer in charge Senha PS and Kalyan Biruli officer in charge Kairo PS who were leading the troop injured badly. Besides two officers Jagrnath Oraon, Manoj Kumar Singh, Jamshed Khan, Prasant Kumar were also injured. All the above officers fought very bravely even on difficult situations and showed their courage.

Puranchandra Devagam Sub Inspector cum officer incharge of Senha PS, Kalyan Biruli Sub Inspector cum officer in-charge Kairo PS showed strong leadership in the face of imminent danger and kept on motivating the force with their ability to win as they moved on to challenge the Maoists. They not only commanded the force from front but also ensured controlled firing by the police team. Sub inspector Puranchand Devagam specially displayed an act of alertness, operational acumen, heroic courage, conspicuous gallantry and supreme devotion to duty along with rare presence of mind that's why he could save the lives of many police officers from the landmines and sudden firing of the Maoists.

It is indeed commendable that the gallant action took place against the backdrop of an adverse terrain as the Maoists cadres were at a dominating height with sufficient arms to blow up the entire team and when the force was most vulnerable as they clambered up to challenge the opponent. However, the force marched on undeterred with sheer will and determination drawing on every ounce of strength remaining in them after a long tedious march to the culmination point.

Recovery:-

1.	Live Ammunitions.	-01 no.
	l A.K.-47	-01
2.	Misfired Rounds	
	l .303	-05
3.	Empty Cases	-71 nos.
	i. 7.62mm	-01
	ii. 7.62mm x 39	-14
	iii. 5.56mm	-08
	iv. .303	-28
	v. .315 Bore	-20

In this encounter S/Shri Late Chandra Shekhar Singh, Head Constable, Late Pramod Kumar Ray, Constable, Late Dinesh Mahto, Constable, Late Lalchik Baraik, Constable, Late Rajesh Kachchhap, Constable, Jagranath Oraon, Constable, Manoj Kumar Singh, Constable, Jamshed Khan, Constable and Prashant Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/05/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 127-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/4th Bar to Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jharkhand Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Surendra Kumar Jha, Superintendent of Police	(PMG)
2.	Prakash Ranjan Mishra Addl. Superintendent of Police	(4th Bar to PMG)

3. Harshpal Singh (1st Bar to PMG)
Addl. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

After getting specific information on 22.07.2014 about presence of a strong Maoists team (15-20 Cadres) with Kundan Pahan @ Vikas (Regional Military Commission Member), Tulsi Das @ Vishal (Sub Zonal Commander), Chandan and Arjun in hilly and forest area of Lemba, an Ops was planned carefully by SSP Ranchi and SP Khunti keeping all aspects in mind like tough terrain and probability of ambush or IED blast during movement of police party. As per information, Maoists were planning subversive activities against police in the area. The place is located on the borders of Arki PS of Khunti district and Tamar PS of Ranchi District. It was planned to conduct Ops during Night but experienced maoist military commanders were present in that maoist team and there were chances of cross fire also, so it was decided to form a team with maximum officers, to control on fire during encounter in night. A joint team was formed under leadership of SP (Rural) Ranchi Shri Surendra Kumar Jha, ASP(Ops) Khunti Shri Prakash Ranjan Mishra and ASP(Ops) Ranchi Shri Harshpal Singh with QAT of 203 of Cobra u/c Dy Comdt Sanjay Kumar and Asstt Comdt Manoj Kumar Yadav, QAT of 133 Bn CRPF u/c Asstt Comdt Dilip Kumar Singh and QAT of Khunti district police officers and personnel were briefed properly about their role. The team moved for Ops at 2330 hrs on 22.07.2014 despite ptch darkness, hilly terrain and many nullahs falling en-route. The team reached in the area at night, further the team was divided into sub teams and diverted towards the target area to cordon the expected hide out where maoist team gathered. It was decided to cordon the area and search in the first light. Maoists suspected some movement and fired on police party, when search was started. After announcing to surrender and stop firing by police party, Maoists increased firing in which Asstt Comdt Manoj Kumar Yadav of 203 CoBRA was injured. Now police parties led by Shri Surendra Kumar Jha, Shri Prakash Ranjan Mishra and Shri Harshpal Singh, with the help of 3 QAT mentioned above, tried to encircle the Maoists from three sides but Maoists, taking advantage of heavy fire and bushes, moved towards village and school side. Few Maoists took position in school and fired on police parties who were chasing them. In this process, Shri Surendra Kumar Jha, Shri P R Mishra and Shri Harshpal Singh faced heavy fire from front and back side by Maoists but luckily survived. Despite threat of life, all three Commanders with QATs continued their advance and reached near Maoists who took position in school. Other Maoists also continued firing on these police parties to bring back their cadres scattered during fire. These parties announced loudly many times to make Maoists audible, to surrender them but Maoists continued firing. Maoists were in safe and defended position and police parties were very unsafe. After reaching near school firing stopped for few minutes, then the three commanders moved towards school with Dy Comdt Sanjay Kumar, Asstt Comdt, Dilip Kumar Singh, Sub Ins. Mahesh Chandra Meena and Const D R Viswal and decided to search the school. So they moved further from three sides to enter in the school but suddenly maoist fired heavily and volly of fire came from two sides on Shri Surendra Kumar Jha, Shri P R Mishra and Shri Harshpal Singh who were standing near gate but they survived narrowly. Shri Surendra Kumar Jha, Shri Prakash Ranjan Mishra and Shri Harshpal Singh, who were leading the QATs from the front, remained in life threatening situation for a long duration but they never lost their spirit, brave initiation and coolness. All three Commanders with QATs crawled to reach near the maoist from three sides, despite continuous fire by maoist on them. The three officers were under heavy fire while moving towards the maoist and might have lost their lives at any time during the period of move. Finally the maoist, taking position in school was shot by the fire from these police officers, who reached very near. Other Maoists started retreating after visualizing their defeat. Police parties chased them but taking advantage of series of hills. They managed to escape. After search, dead body of a maoist with AK-47, 4 magazines with 161 rounds and 1 grenade, kept in camouflage combat pouch were recovered. After identification by villagers, the killed maoist was identified as dreaded maoist Sub Zonal Commander Tulsi Das @ Vishal, who was very active for last many years and was a part of the maoist team in almost every incident done by Maoists in Khunti-Ranchi-Saraikela-Chaibasa bordering areas.

Recovery was:-

1.	AK-47 rifle	- 1 No.
2.	Live rounds (AK-47)	- 161 Nos
3.	Empty case (AK-47)	- 83 Nos
4.	Hand grenade	- 1 No.
5.	Magazine	- 4 Nos.
6.	Walky-talky (Motorola)	- 1 No.
7.	Mobile	- 3 Nos.

In the entire operation despite heavy fire from the maoist, scuffling with the Maoists and a very high probability of peril to their life the above personnel exhibited an exemplary courage towards carrying out their assigned duties related to

command/Control, carrying out orders and assigned task. The nerve exhibited by them under the life threatening circumstances is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, devotions, dedications an commitment to duty. In the entire operation due to very short distance between the maoist and volume of fire, death remained always a whisker away.

In this encounter S/Shri Surendra Kumar Jha, Superintendent of Police, Prakash Ranjan Mishra, Addl. Superintendent of Police and Harshpal Singh, Addl. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/4th Bar to Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 128-Pres/2015—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. T.C. Chacko,
   Dy. Superintendent of Police

2. Probinstar Kharbani,
   Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 07/07/2014 source information was received about the existence of a GNLA camp in the remote jungle of Durama range between Adugre, Jetragre and Jingamgre Village where Shri Sohan D Shira C-n-C of GNLA was present.

Accordingly, it was decided to launch a joint operation by Meghalaya Police SWAT team and CoBRA. A team consisting of 10 (ten) SWAT commandos and 2 (two) teams of CoBRA was formed under the leadership of Shri T C Chacko, MPS, Dy SP, ACB attached to operation wing.

After proper planning and briefing, the team left Williamnagar on foot at 11:55 PM on 08/07/2014. After traversing cross country through the toughest terrain through Durama Ranges the team reached the target area on the 3rd day i.e 11th July 2014 at about 06:30 AM. The team sighted a hut which looked like kitchen shed and 4- 5 armed cadres nearby. Suddenly a rain of fire came from the sentries placed all around using sophisticated automatic weapons i.e A K Series, HK, Pistol etc. The Police party also retaliated and the firing lasted for about 10 minutes. The Police team split into two and the SWAT under the command of Shri T C Chacko, MPS took the right flank whereas the CoBRA team under the command of Dy. Commandant Shri Rajan Singh took the left flank. The heavy firing made the police team to advance further. Shri T C Chacko, MPS alongwith his buddy BNC Probinstar Kharbani followed by the SWAT team advanced ahead from the right flank whereas Shri Rajan Singh alongwith his buddy advanced from the left taking cover fire from the rest of the party. The advancing buddy pair of Shri T C Chacko, MPS shot dead one militant who was later on identified as Tengsrang M Sanguma who was the nephew and the main bodyguard of Shri Sohan D Shira, C-n-C of the GNLA. The said slain GNLA militant was also the explosive expert of the GNLA. The party under the leadership of Shri T C Chacko, MPS leading from the front further proceeded ahead to the hillock from where heavy firing was on. Though the maximum fire power of the C-n-C was on top and inspite of the fact that the Police team was approaching from a disadvantageous position, Shri T C Chacko, MPS alongwith the buddy BNC Probinstar Kharbani, led the team ahead to the hill top forcing the rest of the militants to flee away taking advantage of the thick jungle and heavy fire.

Irrespective of the position from the hill top and a bird's eye view of the militants against the Police party, Shri T C Chacko, MPS and his team advanced fearlessly forward towards the camp of the GNLA cadres. Inspite of the continuous firing from the other side, Shri T C Chacko, MPS with his decision making ability and his colossal experience in the field of Counter Insurgency managed to stabilize the indiscriminate firing from the GNLA cadres, and also forced them to abandon the said camp leaving all the assets and valuable properties behind.

Recoveries made:

7.65 MM PISTOL WITH MAGAZINE-01 NO.

LIVE ROUNDS OF 7.65 MM-06 NOS

LIVE ROUND OF 9 MM-13 NOS

EMPTY CASE OF 7.65 MM-01 NO

HE MORTAR BOMB-05 NOS

RPG BOMB-01 NO.

PISTOL HOLDERS-13 NOS

12 BORE GUN CARTRIDGES-185 NOS

EMPTY CASES OF 12 BORE GUN-23 NOS

DETONATORS WITH WIRE-14 NOS

IED TIMERS-07 NOS

CIRCUIT-18 NOS

CIRCUIT PROTECTORS-02 NOS

COPPER ROLL- 01 ROLL

EPIC CARDS- 04 NOS.

In this encounter S/Shri T.C. Chacko. Dy. Superintendent of Police and Probinstar Kharbani, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 129-Pres/2015—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Goera T Sangma, Sub Inspector	(1st Bar to PMG)
2.	Dressing K Shabong, Constable	(PMG)
3.	Pyrkhat Minot Nongsiej, Constable	(PMG)
4.	Sanjay Kumar Ray, Constable	(PMG)
5.	Sushil Mahato, Constable	(PMG)
6.	Tushar F.N. Marak, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 21-08-2014 at about 6:30AM when the police team of SWAT Commandos and SI Goera T.Sangma of Williamnagar police station under the leadership of Shri T.C.Chacko, MPS was proceeding to conduct search of Tombolggre

and Songma Enggok Villages, based on the reliable inputs of presence of GNLA and ULFA militant in the area and on reaching the jungle near Songma Enggok Village, a group of militants numbering about 20(twenty) under the leadership of AnjanMomin @Jimmy of Bolkinggre Village, self-styled Area Commander of Williamnagar opened indiscriminate fire on the police party with sophisticated automatic weapons from a top hillock. The Police party swiftly retaliated and exchanged fire with the militants for about 10 minutes. The militants were already placed on dominating ground which left the Police team at a disadvantageous position, however in spite of the heavy firing, SI Goera T. Sangma and his team namely BNC Dressing K. Shabong, BNC Pyrkhatminot Nongsoej, BNC. Sanjay Kumar Ray, BNC Sushil Mahato and BNC Tushar F.N. Marak advanced ahead fearlessly to the hill top under cover fire from his team members who were also simultaneously advancing the position of the militants. The speed and the tactics with which the police team retaliated and busted the camp resulted in the death of 3(three) armed militants and forcing the rest of the others to flee by taking advantage of the thick jungle and deterrent firing. After the firing subsided the PO was searched and the following articles were recovered: 1(one) SLR Rifle with 5 (five) magazines and live ammunitions, 2 (two) pistols with 4 magazines and live ammunitions, 2(two) wireless sets and non-electric detonators and many other incriminating documents and articles.

Shri Goera T. Sangma and his team displayed the extraordinary courage, grit and determination during the gravest of life threatening situation in the operation on 21st of August 2014. His role was instrumental in busting the hideout of one of the most dreaded terrorist outfit in the region and delivered a massive blow to the structure and morale of the militant organization.

In this encounter S/Shri Goera T Sangma, Sub Inspector, Dressing K Shabong, Constable, Pyrkhat Minot Nongsiej, Constable, Sanjay Kumar Ray, Constable, Sushil Mahato, Constable and Tushar F.N. Marak, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 130-Pres/2015—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri T.C. Chacko,
Dy. Superintendent of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 20-08-2014 information was received that a group of heavily armed GNLA and ULFA militants numbering about 20 (twenty)under the leadership of Ajan Momin @Jimmy the self styled Area commander of William Nagar area are holed up in the General area of Arabela range between Songma Engokgre village and Tongbolgre village.

On receipt of the said information a police team consisting of 28 Meghalaya police SWAT cammandos, and SI G T Sangma was formed under the command of Shri T. C. Chacko, MPS, (ACB) attached to Ops Wing. After proper planning and briefing, the Operation team numbering 30 police personnel left William Nagar at about 11 PM on 20-08-2014.

The team traversed through rugged terrain and thick jungle for about 6 hours on foot under cover of the night without any form of artificial light to assist them in the challenging task which was assigned to them. After overcoming all the natural hazards at about 6.30 a.m. on 21-08-14, somewhere near Songma Engokgre village, suddenly two armed militants who were on sentry duty sighted the police party and started indiscriminate firing from a distance of about 100 meters followed by a volley of fire from the same direction by the rest of the militants who were sheltering there. From the sounds of the gunfire it could be ascertained by the operation team that the militants were using sophisticated rifles like AK series rifles, H&K rifles, SLR, INSAS etc. to deter the police party from advancing further to their location.

Although the Police team was at a lower ground and the militants were already occupying the dominating ground, Dy. SP T.C Chacko along with 8 other commandos without caring for their life advanced ahead towards the militants without any natural cover in spite of the onslaught of heavy rain of fire from their side, while the rest of the party gave cover fire. Realizing the need to dislodge them from their secure hideout the officers and the men braved the danger which lay ahead of them and rushed to the location of the camp from where they continued to engage with the militants who were trying to fight off the advancing police team. Shri T. C. Chacko, showed remarkable grit and determination in leading the team from the

front and it was due to his personal effort and leadership that 3 (Three) Armed militants i.e. 2(two) GNLA and 1(one) ULFA militant were killed on the spot and many sustained injuries in the fierce gun-battle which lasted for about 20 minutes. It was later confirmed by both technical and human intel reports that 3 (Three) more GNLA militants succumbed to their injuries in the jungle and nine others are injured out of which three are purportedly in a serious condition. After the entire place of occurrence was searched thoroughly, the following arms and ammunitions and incriminating materials were recovered from the slain militants and their hide out:

1. 1 (one) SLR rifle.
2. 5(five) Nos. of SLR magazines (four in good condition & one damaged due to penetration of bullet).
3. 49 (forty nine) Nos. of 7.62mm live ammunitions.
4. 1(one) pistol along with 1 (one) magazine.
5. 1(one) 7.65mm pistol written alongwith 3(three) nos. of magazines.
6. 4 (four) Nos. live ammunitions of unknown caliber.
7. 7(seven) Nos. live ammunitions of 7.65mm.
8. 1(one) No. live ammunition of unknown caliber.
9. 3 (three) Nos. of damaged empty cases.
10. 2 (two) Nos. of non electric detonators.
11. 1 (one) Nokia mobile phone alongwith sim airtel sim card.
12. 1(one) Nokia mobile phone along with aircel sim card.
13. 1 (one) Nokia mobile phone along with Vodafone and Idea sim cards.
14. 5 (five) Nos. extra sim cards (two Aircel, one Reliance, one BSNL and one Vodafone).
15. 1 (one) No. Wireless handset.
16 1 (one) made in China Walkie Talkie

The above display of conspicuous gallantry and exemplary leadership by Dy. SP T.C. Chacko not only led to the killing of a total of 6(six) militants and injuring 9(nine), but also saved the precious lives of the entire police team which came under sudden attack by heavily armed militants without sustaining any injury or causality to any of the police men. This operation has had a devastating blow on the GNLA outfit and the success of the operation bears ample evidence to the quality of leadership and outstanding courage displayed by the officer over and above the call of duty.

In this encounter Shri T.C. Chacko, Dy. Superintendent of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 131-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Punjab Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Gurlal Singh,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 11.06.2014, a secret information was received that Gursharanjit Singh @ Shera s/o Roop Singh Jat, r/o village Sewewala, PS Jaitu, Distt. Faridkot and Devinder Singh s/o Iqbal Singh r/o village Babiha Bhai Ka, PS Smalsar, Distt. Moga against whom a dozen cases of murder and other heinous crimes are pending and are evading arrest, are arriving at Bus Stand, Ludhiana to meet their other accomplices. Thus force was dispatched to Ludhiana under the supervision of

Sh. Sukhdev Singh Brar, PPS, DSP (SD), Jaitu. HC Gurlal Singh was also deployed at Bus Stand Ludhiana alongwith Insp. Lakhvir Singh In-charge, CIA Staff, Faridkot armed with AK-47. At about 5.00 PM above mentioned accused arrived at Bus Stand, Ludhiana in a grey colour Ritz Car which they had snatched from Muktsar City. But just as they arrived, they noticed police presence and immediately sped towards Bharat Nagar Chowk, Ludhiana. Insp. Lakhvir Singh and HC Gurlal Singh chased them in a private car for about 1/1.5 kms. The accused halted their car due to heavy rush of traffic on Jagaron Road, Near Batra Hotel, Ludhiana, alighted from the car armed with pistols and fired at HC Gurlal Singh and Insp. Lakhvir Singh. Accused Devinder Singh ran towards busy Shopping Mall, that was crowded with people at that hour. Devinder Singh was followed by HC Gurlal Singh, Devender Singh fired at HC Gurlal Singh with his automatic pistol. Two bullets passed by head of HC Gurlal Singh but luckily did not hurt. Without any fear HC Gurlal Singh continued to follow the accused. The accused entered a busy street, HC Gurlal Singh had two options to save himself from firing i.e. either to save his life or to apprehend the accused but HC Gurlal Singh opted for second option. HC Gurlal Singh fired back from his AK-47 taking care that public is saved, got closer to Devinder Singh who was indiscriminately firing at HC Gurlal Singh without any fear keeping his duty in mind, unmindful of the facts that he can be killed or injured. He was successful in getting closer to accused, injured him in arm and nabbed him single handedly. HC Gurlal Singh displayed exemplary courage without fearing for his life by putting his life in danger thus saving general public. This act of HC Gurlal Singh is highly admirable. Insp. Lakhvir Singh patted HC Gurlal Singh for his gallant act. An imported pistol .32 bore alongwith 22 live cartridges of .32 bore were recovered from the possession of Devinder Singh. Further investigation of Devinder Singh led to heavy recovery of arms and ammunition that included 02 pistols of .32 bore, 40 cartridges of .12 bore, 30 cartridges of .315 bore and 10 cartridge of .32 bore. The said Devinder Singh headed gang of supari killers involved in crimes in various district of Punjab.

HC Gurlal Singh did not feel frustrated even he was aware of the facts that the accused was armed with ammunitions. During the climax of this encounter, a posse of Police under the command of Dy. Supdt. of Police (SD) Jaitu Sh. Sukhdev Singh Brar, PPS arrived at the spot and patted HC Gurlal Singh for his highly successful task.

From the facts enumerated above, it can amply be concluded that HC Gurlal Singh exhibited exemplary courage, presence of mind, strong determination, high sense of leadership, responsibility and excellent skill to fight a pitched battle with the highly armed criminals.

In this encounter Shri Gurlal Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/06/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 132-Pres/2015—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Punjab Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Baljit Singh, (Posthumously)
   Superintendent of Police
2. Balbir Singh,
   Inspector
3. Tara Singh,
   Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27.07.2015 three heavily armed terrorists with ultra modern and highly sophisticated weapons crossed over to Dinanagar in District Gurdaspur in army uniform at around 5.00 AM. Firstly they targeted a Punjab Roadways bus with intention to kill the passengers, but the driver took the bus with passengers safely from the spot. Then, these terrorists snatched a maruti car and attacked police station Dinanagar by opening indiscriminate firing at the staff present there. Sh. Baljit Singh, SP on getting the information was first to reach the spot with his Punjab Police personnel. He took stock of the situation and managed forward front there and engaged terrorists in the cross firing, so that the terrorist does not escape. Unfortunately one of the fire of terrorists pierced the forehead of Sh. Baljit Singh, PPS, SP, who consequently fell down and succumbed to his injuries. In the meanwhile, some more police force including Inspector Balbir Singh reached the spot, who

along with his policemen took position on the roof top of the building adjoining to the building in which terrorists were hiding and heavily retaliated the firing of terrorists by endangering his personal safety and kept them engaged, so that they may not escape from the building and enter into thickly populated area. But during the cross firing one bullet hit left arm of Inspector Balbir Singh, but he courageously continued firing on terrorists. In the meanwhile, another bullet hit his left side of abdomen, consequently, he was brought to hospital for treatment. By that time heavy police force reached the spot, which cordoned the entire area. Since the operation was prolonging, it was necessary to culminate the same before the sun dusk because terrorists could flee by taking the advantage of the darkness. Considering on this point the police force changed its strategy and at about 3.00 PM when final assaults were being made, Head Constable Tara Singh took a bold decision and went to the roof top of another adjoining building and by taking forward position he hurled many grenades' on the terrorists. During this action heavy firing was done by the police force for diverting the attention of terrorists and to provide security cover to HC Tara Singh. As a result of this action, the building in which terrorists were hiding badly got damaged. This immensely helped in finally eliminating the terrorists. It was because of presence of mind, courage and concerted efforts of Sh. Baljit Singh, PPS, SP and Inspector Balbir Singh that terrorists remained holed up within the building and could not come out, otherwise that would have been fatal and would have resulted in more killing of the police personnel and general public. From the spot, 3 AK Rifles, 17 magazine of AK 47 rifle, 85 live cartridges, 220 empty cartridges, 01 grenade launcher, 01 unexploded grenade and 02 GPS devices were recovered. A case FIR No. 71 dated 27.07.2015 u/s 302, 307, 382, 120-B/34 IPC, 25 Arms Act, 4/5 Explosive Act, 3/4 Prevention of Damage to Public Property Act PS Dinanagar has been registered in this regard.

In this encounter S/Shri (Late) Baljit Singh, Superintendent of Police, Balbir Singh, Inspector and Tara Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27/07/2015.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 133-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Rajasthan Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Faiz Mohammed, (Posthumously)
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 15.11.2014, Faiz Mohammad alongwith other men was returning from Bhanwata Village after a burglary investigation in Police Jeep. On the narrow road, they came across a white Scorpio vehicle head-on. Perplexed with the situation, the Police men tried to figure out the occupants. Meanwhile the white Scorpio drove rashly, collided head on and challenged the Police personnel. It hit and brushed the Police vehicle and started firing indiscriminately on the Police Jeep. The persons in the white Scorpio vehicle were dreaded criminals Vijendra Singh and Madan Singh. The Jeep was hit with several bullets. The Police men boldly jumped out of vehicle and ambushed the white Scorpio and cold face them with the lathis and free combat.

The HC Faiz Mohammad without fear, pulled out criminal Madan Singh and held him under his arm firmly. In order to rescue Madan Singh, Vijendra Singh attacked the HC Faiz Mohammad. He smashed the face and jaws of HC Faiz Mohammad with the butt of the gun. The will to apprehend the criminal was very strong and HC Faiz Mohammad, did not release Madan Singh. In the ensuring fight Vijendra Singh fired point blank on the face of HC Faiz Mohammad, as a result of which he collapsed succeeded to the shot. Despite the shock, the Police men tried to apprehend the criminals, chased them, recovered several arms bullets, vehicle etc. and simultaneously rushed HC Faiz Mohammad to the hospital. The criminals were well equipped with several arms and fired several rounds.

The additional force and support was called in. A case FIR 375/14 under Sections 302, 307, 332, 353, 336, 337, 338,355,323, 324, 325, 326, 341, 34,120 B IPC, Sec 3 of PDPP Act, Sec 3,7, 25 Arms Act was registered and criminals were arrested. The HC Faiz Mohammad's daring act of bravery lead to the seizure of five fire arm more than hundred cartridges, forty seven mobile phones, hundred and ten Sim cards, bullet proof jacket, helmet and many criminal leads which lead to the arrest of several criminals which ensured and ensuing peace and rule of Law in the area.

The gallant act of Faiz Mohammad Head Constable has upheld the service motto of the Police Department and has boosted the morale of all other men in fighting the crime and criminals. He has served the society and the department loyally during his career and he did so bravely till his last breath in the line of duty.

In this encounter (late) Shri Faiz Mohammed, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/11/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 134-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Avanish Gautam,
   Sub Inspector

2. Akshay Sharma,
   Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Shri Avanish Gautam, SICP/S.O., P.S.Kavinagar, Ghaziabad, coordinating with Inspector SOG, was engaged in the task of working out the sensational incidence of kidnapping of Pasharv Jain, a school-going 09 years old child, on 18.10.2011, while going to his school, in densely populated Hapur Town, a industrial and business-hub, of adjoining newly carved out District Panchsheel Nagar and later, kidnappers demanding, ransom of Rs. 20,00,000/-, which created panic among the guardians of school-going children and citizens. Shri Avanish Gautam, having received information, from Inspector SOG, on 22.10.2011, about the movement of kidnappers, with kidnapped child Pasharv Jain, in village Dastoi, Muradnagar area, in a Scorpio vehicle, to receive the ransom money or to transfer him somewhere in Delhi, immediately sprung into action and deliberating with Inspector SOG, the strategy, to arrest the kidnappers, moved in police vehicles, with police team towards, village Dastoi. The police team, when reached in village Sadarpur-Duhai Minor Canal Bank road and Bapu-Dham residential project tri-junction, they strategically took position there and started waiting, for the arrival of kidnapper.

After some time, they saw the suspected Scorpio vehicle arriving from Duhai side and one Car also seen arriving from Gobindpuram side and both the vehicles stopped, in front of each other and Shri Avanish Gautam and Inspector SOG, then seeing occupant in Scorpio, alighting with a bag and moving towards Scorpio vehicle, to hand it over, they ensuring about clandestine deal, promptly, leaving their position, fearlessly, moved ahead, but the cunning and crafty kidnappers, seeing the police, abruptly opened incessant firing towards the police party and Sri Avanish Gautam, HC Akshay Sharma and one Constable were injured seriously. Shri Avanish Gautam, undeterred of dangerous firing by the kidnappers, dauntlessly led the police party and inspite of being injured, he himself, accompanied with injured HC Akshay Sharma, displayed an exemplary courage, great sense of dedication towards their duty and tactically pounced and police team followed them and forcefully arrested 06 kidnappers, alive, at about 03.30 AM. In the fierce face to face encounter with the kidnappers, two kidnappers, escaped in the darkness, though chased, but could not be apprehended, whereas, 06 arrested kidnappers were identified to be Lalit, Rajkumar, Kanhaiya, Shivram, Pappu and Iqbal, both residents of Tappal, Aligarh and found in possession of sophisticated firearms and ammunition, ransom money Rs. 17,00,000/-, to be given by Sri Amit Jain, father of kidnapee, Scorpio Car and Kidnapped Child Parshav Jain, found captive, in Scorpio, successfully rescued.

Recoveries made:-

1. One factory made automatic pistol with magazine and 04 live cartridges of 7.65 bore.

2. One factory made pistol with magazine and 05 live cartridges of .32 bore.

3. One country made pistol with magazine, 03 live cartridges and 01used cartridge of .32bore.

4. Three country made pistol with magazine, 09 live cartridges and 03 used cartridge of .315 bore.

In this encounter S/Shri Avanish Gautam, Sub Inspector and Akshay Sharma, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/10/2011.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 135-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Vinod Kumar Singh, Inspector General of Police	(PMG)
2.	Avinash Chandra, Superintendent of Police	(1st Bar to PMG)
3.	Abhay Kumar Prasad, Superintendent of Police	(PMG)
4.	Devendra Kumar Chaudhary, Addl. Superintendent of Police	(PMG)
5.	Dilip Singh, Sub Inspector	(PMG)
6.	Panna Lal Sub Inspector	(PMG Posthumously)

Statement of service for which the decoration has been awarded

The south eastern districts of Uttar Pradesh-Mirzapur, Chandauli and Sonebhadra are badly affected by criminal activities of left wing extremists(MCC & PWG). In these districts, naxalite gangs had committed scores of murders, kidnappings for ransom, dacoities and robberies. People were living under constant terror and threat from naxal gang attacks. On 09/03/2001 information was received from informer that over a dozen of naxalites under leaderships of area commanders were present in village Bhawanipur of police station Madihan, district Mirzapur. They were armed with deadly weapons and were planning to commit heinous crimes. Police forces of several police stations were immediately mobilised. The force verified the intelligence input and then cordoned the whole village. The Station Officer, Madihan, Shri Dileep Singh warned the naxal gangs to surrender on which the naxal gang members responded by firing indiscriminately on police party. Shri Dileep Singh, station officer Madihan, Constable Namvar Singh and others fired in self defense and to overpower the firing miscreants. During this exchange of fire, Shri Dileep Singh, S.I. and Const. Namvar Singh received serious bullet injuries. Despite being hit by bullets, Shri Dileep Singh and Const. Namwar Singh motivated their fellow men to strengthen the cordon and over power the naxal gangs. At this movement of crisis both of them showed extraordinary courage and leadership though they were bleeding profusely. Shri Avinash Chandra, S.P. Mirzapur responded immediately. He mobilised huge force and himself alongwith Shri Devendra Kumar Chaudhary, Addl. S.P. rushed for the scene of encounter. He informed his superior officers within one and half hour. The cordon of village Bhawanipur was reinforced. Firing of bullets would be heard from far away distance from the village. Shri Avinash Chandra planned, led and conducted the whole operation in such adverse situation when two policemen were already grievously injured by bullets from naxal gangs. He announced from mike of his vehicle asking the villagers in the village to come out. On repeated verbal assurance of safety, villagers including women, children and old men came out. They were kept at safe place in the dry canal passing nearby. But the naxal gang members kept on firing continuously to over power the police force. Different teams were made under leaderships of Shri Avinash Chandra, S.P. Mirzapur, Shri V.K. Singh, I.G. Varanasi Zone, D.I.G. Vindhyachal Range, D.I.G. Varanasi Range and Shri Abhay Kumar Prasad, S.P. Sonebhadra. These different teams moved cautiously for house to house search operations covering the entire village from different sides to over power and arrest the naxal gang member.

The first police party was led by Shri Avinash Chandra. It had Addl. SP, Mirzapur, Shri Devendra Kumar Chaudhary and S.I. Panna Lal, alongwith other men. These officers were crawling and moving forward towards the houses taking shelter of natural hide outs. They were attacked with bombs and firing from rifles and guns. At this junction they showed extra ordinary courage by firing from their weapons. Shri Avinash Chandra, Shri Devendra Kumar Chaudhary and S.I. Panna Lal fired from their rifles. These three officers showed courage, bravery and leadership of highest order in containing the naxal gang attack from one side. Shri Vinod Kumar Singh, I.G. Zone, Varanasi himself led one team

alongwith police party to cordon, search and arrest the naxal gang members. They were attacked by fire arms indiscriminately. This team fired in self defence and to contain the firing gang. A fierce encounter took place. Shri Singh motivated all the teams and was present throughout for ultimately successful operation. He was the prime mover behind the whole operation. DIG Vindhyachal Range led one of the team for conducting cordon and search operation from one side. Shri Abhay Kumar Prasad S.P. Sonbhadra, led one of the party in conducting house to house search. When he was fired upon, he showed high courage and led his team in containing the gang from over powering the police party. The whole operation lasted for six hours in full public view, which surrounded the whole village. In this encounter fifteen naxalites were killed.

Recoveries made:-

1- 03 SBBL Gun, 11 live Cartridges and 33 empty Shells of 12 Bore.

2- 02 DBBL Gun, 05 live Cartridges and 24 empty Shells of 12 Bore.

3- 03 country made pistol 06 live Cartridges and 16 empty Shells of 12 Bore.

4- 02 country made pistol 03 live Cartridges and 11 empty Shells of .315 Bore.

5- 02 Rifles 08 live Cartridges and 50 empty Shells of .303 Bore.

6- 01 Rifles 03 live Cartridges and 20 empty Shells of .315 Bore.

7- 02 Socket bomb.

In this encounter S/Shri Vinod Kumar Singh, Inspector General of Police, Avinash Chandra, Superintendent of Police, Abhay Kumar Prasad, Superintendent of Police, Devendra Kumar Chaudhary, Addl. Superintendent of Police, Dilip Singh, Sub Inspector and (Late) Panna Lal, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/03/2001.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 136-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/3rd Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Suvendra Kumar Bhagat, Senior Superintendent of Police	(PMG)
2.	Vijay Bhushan, Addl. Superintendent of Police	(3rd Bar to PMG)
3.	Satyendra Singh, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Lucknow the city known for its etiquette saw an expression of bizarre decline of civilization when the daughter-in-law of Mrs. Meher and Mr. Lav Bhargava's (prominent leader of congress party) modesty was outraged in public and the molestation bid when opposed by Mrs. Meher Bhargava was responded to, in cold blood through the bullet of the ruthless outlaw to which she succumbed. The outlaw however remained at large in spite of the reward of Rs. 50, 000 announced by the UP Govt. ridiculing the establishment in UP and in other parts of the country. Lot of political uproar and demonstrations engulfed the capital. The information of the dreaded criminal's movement from Triveni Nagar to Sitapur was received. Seeing the sensitivity of the case the blue print to nab the outlaw was prepared leading to the formation of two teams one under SSP STF Shri S K Bhagat, Addl. SP STF Shri Vijay Bhushan at Bitholi Triangle and the other under SSP Lucknow Shri Ashutosh Pandey stationed at HIM city on the Sitapur road.

On 20.05.2006 at 5.30 AM, the criminal with three of his accomplice in two motorcycles were seen approaching from Mohibullapur. Mr. Ashutosh Pandey with his team mates tried to stop them at HIM City but the criminals retaliated by

firing at Mr. Pandey who narrowly escaped. Mr. Bhagat and Mr. Bhushan with other team mates chased the criminal from the other side of the Divider. During the chase one motorcycle of criminals skidded and the panic stricken criminals fired at Mr. Bhagat and Mr. Bhushan and Commando Satyendra Singh who by that time had almost reached the criminals to nab them. The desperate firing by the skidded criminals and those fleeing away in other motorcycle left Mr. Bhagat and Mr. Bhushan and Commando Singh trapped in between. By the grace of almighty none of the bullets shot by the criminals could hurt Mr. Bhagat and Mr. Bhushan and Commando Satyendra. The team however continued their perusal without caring for their lives and limbs. In spite of increased firing from the criminal's end, with police warning falling to their deaf ears, Mr. Pandey, Mr. Bhagat and Mr. Bhushan and other team mates had no option but to retaliate, taking cover behind the divider and the vehicle. When the firing stopped the three officers and their team mates cautiously approached the wounded criminals, one of the criminals again fired which missed Mr. Pandey. The retaliatory precision firing using the field craft tactics finally silenced the wanted outlaw and his accomplice. They were later identified as Amit alias Sachin Pahadi and Vikas Kannojia. In the fierce face to face encounter in open Mr. Bhagat, Pandey and Vijay Bhushan displayed exemplary courage and bravery of the highest order. Inspector Brij Kishore Singh, Constable Usman Khan and commando Satyendra Singh also fired at the criminals without caring for their lives.

Recovery:

1. One country made pistol with cartridges and empty shell of .315 bore.
2. One country made pistol with cartridges and empty shell of 32 bore.
3. One Motor Cycle.

In this encounter S/Shri Suvendra Kumar Bhagat, Senior Superintendent of Police, Vijay Bhushan, Addl. Superintendent of Police and Satyendra Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/3rd Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20/05/2006.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 137-Pres/2015—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Girja Shankar Tripathi,
Sub Inspector

02. Vijay Pratap Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Satendra Tiwari was a hardened criminal on whom the state police had declared a reward of rupees fifty thousand. Shri Girja Shankar Tripathi, SI I/C SOG Varanasi received information about the criminal Satendra Tiwari, who was to come in the city, in Qualis car, immediately sprung into action and closed his team, on 11.02.09 and planning a strategy, to nab the criminal and executing it, organized 02 police teams. One team under his charge and another one under the charge of another SI and moved. One team headed by Shri Girja Shankar Tripathi arrived at Mohan Sarai By-pass and another team at Amra-Akhri crossing and started waiting for the arrival of Qualis car. One green colour Qualis car was seen arriving from Allahabad side towards Mohan Sarai By-pass at about 12.35 hrs, which was intercepted by Shri Girja Shankar Tripathi, I/C SOG, to stop, but, instead, the occupants of said car speeded it up, towards Mughalsarai. I/C SOG, immediately and strategically chased said car, but the miscreant, who was lone occupant of the said suspected car, opened fire, on the chasing police party, which hit and damaged the Government Bolero car and police party escaped, providentially, I/C SOG, alerted the another team and informed the superior officers. I/C SOG, unfazed of the incessant firing offensive of the miscreant, continued close chase and when the miscreant reached near Amra-Akhri crossing, where another police team was alert to intercept the miscreant, since before, seeing the police team ahead, the miscreant, abruptly, moved his Qualis car towards the city and I/C SOG vigilantly fired on his vehicle, which hit it and the Qualis car was imbalanced and moved into the road-side drain and stopped. Firing incessantly upon the police party, to kill, the miscreant alighted from the car and took position

behind it. I/C SOG and police teams, also vigilantly, alighted from their police vehicles and took position, behind them and challenged the miscreant to surrender, but instead, he intensified his firing, more incessantly and one of the fire-shot hit I/C SOG, which pierced the bullet-proof jacket, worn by him and he escaped, providentially.

I/C SOG, in this situation of 'do or die' but remained undeterred, of the offensive of the miscreant, encouraged the police team, launched a crusade against the miscreant, who was firing continuously, in front of the police party, with an intention to kill and yet, I/C SOG alongwith Shri Vijay Pratap Singh, Constable displayed an exemplary courage, gallant act of bravery and undertaking a great personal risk to their life and limb, left their position, moved ahead, with a definite intent, to arrest the miscreant, alive and challenged the miscreant, with restrained firing in self-defence, causing the miscreant, to fell down, injured and dead, who was identified to be said notorious criminal Satendra Tiwari @ Rinkoo.

Recoveries made:-

1. One factory made Pistol .9 MM bore with empty Cartridges

2. One factory made Pistol .32 MM bore with empty Cartridges

3. One Qualis Car No. U.P.-32/X-6558, used by the criminal, in the action

In this encounter S/Shri Girja Shankar Tripathi, Sub Inspector and Vijay Pratap Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/02/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 138-Pres/2015—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Naveen Arora, Senior Superintendent of Police — (1st Bar to PMG)

02. Shailesh Pratap Singh, Sub Inspector — (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

UP STF was assigned the task to nab the gangsters Ashutosh Rai and Ajay Singh, who escaped from judicial custody in 2003 carrying reward of Rs.50,000/- each on their head.

On 26.04.2010 at about 12:30 PM Shri Naveen Arora, SSP STF received an actionable intelligence that gangsters Ashutosh Rai and Ajay Singh with their accomplices were going to assemble at Express Highway Noida in a Sunny Nissan car No. 17 CD AF to strike a deal of sophisticated weapons. Shri Arora immediately divided the force into three teams and briefed them. They rushed to the place, spotted the suspected vehicle and tried to stop it on which they opened fire. A fire from miscreants aimed at Naveen Arora missed him miraculously and they fled towards Wajidpur under pass. On the direction of SSP Naveen Arora, his driver overtook them by taking dangerously sharp turn in the service lane near village Garhi. The said car rammed into a tree guard as the driver lost control over the vehicle. Suddenly a fire came from the driver's side and the bullet hit the Tavera's window, Mr. Arora ducked down to save himself. The criminals started firing indiscriminately upon the police party with intention to kill them. Mr. Naveen Arora, SSP STF and SI Shailesh Pratap Singh displayed exemplary courage and bravery of the highest order regardless of their safety and security to arrest the criminals. Bullet hits on their BP jacket as they were leading from front without cover. The STF team was left with no option but to open fire in self defence. Ajay and Ashutosh sustained injuries in the exchange of fire and succumbed on their way to hospital.

The STF team under leadership of Naveen Arora in the most composed reaction without caring for their lives, performed gallant action with presence of mind and daredevilry under stressful and adverse circumstances.

Recoveries made :

(a)	Carbine	- 01 No
(b)	Live Cartridges	- 03 Nos
(c)	Empty shell of .9mm	- 09 Nos
(d)	9mm Pistol	- 01 No
(e)	Pistol	- 01 No
(f)	Live cartridges .32 bore	- 04 Nos

In this encounter S/Shri Naveen Arora, Senior Superintendent of Police and Shailesh Pratap Singh, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26/04/2010.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 139-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Resham Pal Singh
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

In Oct 2014, 86 Battalion BSF was deployed in highly sensitive areas of Jammu on Indo-Pak International Border.

In the night intervening 06/07 Oct 2014, all Pak BOPs resorted heavy volume of unprovoked firing from BMG/UMG/HMG/Mortar on all BOPs of 86 Battalion BSF and border villages, which was retaliated by our troops using 81 mm Mor/51 mm Mor/MMG/LMG/AGS/CGRL.

In the night intervening 07/08 Oct 2014, Company Commander deputed ASI(GD) Resham Pal Singh as Naka Commander of Naka mound No. 6 to 10 of Border Out Post (BOP) Malabela, Ex-86 Battalion BSF keeping in view of his vast experience, professional competence and sensitivity of the BOP.

At about 2000 hrs, all of sudden, heavy volume of unprovoked fire of automatic guns and Mortar was started from Pakistan BOPs targeting own BOPs and border villages. Naka Commander, ASI(GD) Resham Pal Singh quickly assessed the ground situation and directed Naka No. 6 to open fire with 5.56 mm INSAS LMG and AGL. He himself kept on moving from one to another Naka and encouraging his troops to retaliate in defeating manner amid heavy firing from counterpart.

In this course of heavy exchange of fire, at about 2045 hrs, ASI(GD) Resham Pal Singh sustained bullet injury in his right lateral side chest. Exhibiting exemplary courage and camaraderie, he kept motivating his troops to continue fire and mount more pressure on counterpart. His sheer presence at each Naka point was motivating the troops to fight gallantly. The exchange of fire continued till 2300 hrs. Later on ASI(GD) Resham Pal Singh was evacuated to GMC, Jammu.

ASI(GD) Resham Pal Singh, despite having sustained bullet injuries, exhibited combat audacity, high degree of courage and exemplary leadership quality by continuously encouraging his troops to retaliate counterpart fire, which resulted in giving befitting reply to adversary and forced them to cease fire.

In this action Shri Resham Pal Singh, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 07/10/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 140-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Amar Pal Singh
Head Constable/Dvr

Statement of service for which the decoration has been awarded

151 Battalion BSF is deployed on Line of Control (LoC) with its Battalion HQ at Nishat (J&K) under Kashmir Frontier.

An adhoc K-2 Battalion, comprising of companies from different Battalions, including companies from 151 and 59 Battalions BSF, was deployed on Sri Amarnath Ji Yatra duty. On 11th Aug 2014, on de-induction from above duty, company of 59 Battalion was coming to BSF HQ at Panthachowk. The troops and stores were to be carried in five vehicles, which included two heavy vehicle (5 ton), two TATA-407 and one Mini Bus (Swaraj Mazda).

The vehicles carrying troops and stores left Chandanwari, at about 1915 hrs, under the command of Shri Bishan Lal, AC. The movement was planned during night hours keeping in mind operational and tactical considerations. The party Commander Shri Bishan Lal, AC was in rear most vehicle of convoy i.e. Mini bus bearing Regd No. WB-23A-1558, which was driven by Head Constable(Driver) Amar Pal Singh accompanied by Constable Prakash Chandra, 151 Battalion BSF.

At about 2200 hrs, when the convoy reached Pampore town area adjacent to stadium on National Highway, minibus came under heavy volley of indiscriminate fire of automatic weapon from militants from left side where stadium was situated. As a result of which Shri Bishan Lal, AC, HC(Driver Amar Pal Singh and 7 other personnel of 59 Bn BSF in the Minibus sustained bullet injuries.

Head Constable (Driver) Amar Pal Singh had sustained injuries in his hip from where blood was oozing profusely. But in utter disregard to his injury, HC(Driver) Amar Pal Singh accelerated the vehicle displaying highest level of skills and presence of mind and reached the campus in less than 15 minutes. All injured personnel after providing first-aid at BSF Hospital Panthachowk evacuated to 92 Base Hospital, Srinagar.

Presence of mind, patience and exemplary courage displayed by Head Constable (Driver) Amar Pal Singh, without caring for his personal life, made it possible to save the precious lives of eight officials, who sustained grievous bullet injures.

In this action Shri Amar Pal Singh, Head Constable/Dvr displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 141-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sri Krishan
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

192 Battalion BSF is deployed on Indo-Pak International Border in highly sensitive areas under Jammu Frontier.

In the night intervening 22/23 Aug 2014, at about 0035 hrs, Pakistan posts Jarwal and PH-5 resorted to heavy volume of unprovoked firing from automatic weapons like Rifle/UMGs/HMGs and Mortar targeting Border Out Posts (BOPs) of 192 Battalion and border villages to inflict causalities. Own troops retaliated the fire of adversary in befitting manner.

Keeping in view of sensitivity, Head Constable Sri Krishan was deployed at Border Out Post (BOP), Chhawani with 51MM Mortar. He observed movement of Pak Rangers in close proximity of the International Border and correctly appreciated their ulterior motive to inflict casualty on own troops. He, without caring for his personal safety and well-being immediately came out of the bunker amid heavy shelling and engaged them with effective fire on 51 MM Mortar. During

heavy exchange of fire, Head Constable Sri Krishan sustained splinter injury in his left leg below the knee. Despite bleeding profusely, he continued engaging counterpart exhibiting exemplary courage and camaraderie, which forced enemy to give up their evil intention of inflicting casualty on troops. HC Sri Krishan fired 8 HE bombs from 51 MM Mortar. After completion of task, he came to BOP Chhawani, from where he was evacuated to Government Medical College & Hospital, Jammu.

Head Constable Shri Sri Krishan, despite having sustained splinter injury in his leg, continued engaging the enemy with effective fire of 51 MM Mortar exhibiting high degree of courage, combat audacity and camaraderie, which forced enemy to abandon their deceitful intention and thereby saved precious lives of troops and villagers.

In this action Shri Sri Krishan Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 142-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanjay Dhar (Posthumously)
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

192 Battalion BSF is deployed in a hyper sensitive areas on Indo-Pak International Border under Jammu Frontier.

On 16th July 2014, at about 1130 hrs, Pakistan Rangers started unprovoked firing on our BOP Pittal from Pak Posts Jarwal and Pump House-5 with automatic weapons like small arms, UMG & HMG. At that time all personnel available on BOP Pittal were on stand-to position due to visit of DIG, Sector Jammu. Constable Somraj, who was performing duty on 80 feet high OP tower located inside the BOP, was targeted by Pak sniper. Though Constable Somraj was wearing bullet proof jacket, yet bullet hit just above the level of bullet proof jacked on his left shoulder. Despite of grievous bullet injury, he retaliated Pak fire and simultaneously shouted for help.

On hearing the call for help, ASI Madan Lal and Constable (Washer Man) Sanjay Dhar, amidst heavy volume of fire and unmindful of their own lives, rushed towards OP tower to rescue Constable Somraj. But unfortunately during the process of evacuation, ASI Madan Lal and Constable (Washer Man) Sanjay Dhar came under volley of burst fire of Pak ranger. ASI Madan Lal received bullet injury on his waist and Constable (Washer Man) Sanjay Dhar on his chest. Constable (Washer Man) Sanjay Dhar fell down on the ground. But before falling down, he ensured evacuation of Constable Somraj safely to a nearby barrack.

In the meantime, Inspector Madan Lal, Officiating Coy Commander also took position between fence and forward bunch, appreciated the situation and directed troops to take retaliatory action. During this he also sustained bullet injury on his left leg just above the knee.

All the injured personnel were evacuated to Unit Hospital and further GMC&H Hospital Jammu, where Constable Sanjay Dhar was declared brought dead.

During said exchange of fire, Constable (Washer Man) Sanjay Dhar exhibited grit and raw courage. He was amongst the first and foremost person. Who dared to rush towards OP tower to evacuate Constable Somraj. Although his basic duty was not to get into a combat situation, yet he set an example of valor and courage. Timely intervention and courage displayed by Late Constable (Washer Man) Sanjay Dhar made it possible to save the life of Constable Somraj at the cost of his own life

In this action (Late) Shri Sanjay Dhar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 143-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rajan Singh,
Deputy Commandant

02. Babloo Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

A highly reliable secret information received from SP East Garo Hills that heavily Armed cadres of GNLA had set up 03 general camps near village Jingamgre, Rongchekgre and Mandalgre Bandigre in the Durama Hill Range. The camp of Sohan D. Shira, C-In-C, CNLA was also located between Adugre, Jetragre & Jigamgre in the Durama Range under police station William Nagar, Distt- East Garo Hills, Meghalaya. Information was also received that there were about 150 new recruits of GNLA and about 20 new recruits of ULFA who were being trained by senior GNLA and ULFA Cadres in one of the general camp. An elaborate operation named "OPERATION HILLSTORM" was planned by Shri Joseph Keishing, Commandant-210 CoBRA and SP East Garo Hills in consultation with IGP, NES, CRPF and IGP (Ops) Meghalaya Police. According to the plan, whole operation was to be executed by 03 Assault teams and 07 Cut-Off teams of CoBRA and SWAT Commandos of Meghalaya Police to be assisted by other State and Central Forces.

As planned, Assault No. 01 comprising of Team No. 10, 13 & 15 of D & E Coy, 210 CoBRA alongwith one Team of SWAT Commando under Command of Shri Rajan Singh, Dy. Comdt. was assigned the task to storm the camp of Sohan-d- Shira, C-I-C of GNLA in Adugre village. Troops left base camp at around 2300 hrs on 08/07/2014 and used vehicle till Simsang river. After crossing Simsang bridge, troops moved on-foot and followed the route of Sampalgre, Khakwagre, Rongbokgre and bypass of Nobokgre and Sobokgre. After crossing a number of steep hills, river channels, thick vegetation and overcoming all obstacles troops reached BARV on 10/07/2014 at 1600 hrs as per schedule. On 11/07/2014 morning, troops started early at around 0510 hrs from BARV. Ops Comdr. Sh. Rajan Singh, Dy. Comdt. ordered that Team No. 15 and SWAT would assault the target and the left cut off would be done by Team No. 10 and 02 section of Team No. 13 under Command of Sh. Deshraj Meena, AC, while the right cut off to be placed by 01 section of team No. 13 U/C SI/GD Raju Yadav. When all the cut-offs were placed, assault team comprising of Team No. 15 and SWAT U/C Sh. Rajan singh, Dy Comdt steadily approached the target. At around 0615 hrs, when troops were about 110 Mtr. from the target, the scouts conveyed by hand signal about some insurgents with weapons. Ops Comdr. further alerted his troops, and crawled to the front. Ops Comdr observed that there were 02 huts and 01 person cooking in one of the hut, while another person was washing his face on a water channel and both of them were armed. Team 15 U/C Ops Comdr Shri Rajan Singh, Dy. Comdt. moved from left flank and by hand signal directed the SWAT U/C Sh. Chacko, Dy. SP to assault from right flank. At the same time he also directed the cut offs to take positions on left and right of target. At around 0630 hrs, the man who was washing his face on water channel somehow became suspicious about the presence of troops, and slowly moved to the hut where cooking was going on. Within fraction of seconds three insurgents surfaced from the huts and started indiscriminate firing on troops. Troops retaliated in controlled manner on the orders of Ops Comdr, his buddy CT/GD Babloo Kumar fired accurate UBGL on the target. Ops Commander alongwith his buddy without caring for their life started crawling, under heavy volley of fire from insurgents towards the target on opposite side of water channel. But, due to the large volume of fire from the insurgents, the forward movement became very tedious. Due to firing from the troops and continued advancement by crawling personnel, the insurgents started shifting their positions to right of the hill while continuing firing and taking cover of bushes and trees. On reaching the centre of the water body, ops Comdr Sh. Rajan Singh, Dy Comdt fired at the insurgents who were hiding behind bushes and trees, and hit one of them on his left thigh who fell down. The injured insurgent continued to fire towards the troops, but Sh. Rajan Singh, DC of 210 CoBRA Bn along with Sh.T. C. Chacko, DY SP succeeded in neutralizing him by their accurate firing. After firing subsided, Ops Comdr divided troops into 03 parties covering the whole 360° in three segments of 120° each and searched the whole area and recovered one 7.65 mm pistol in a cocked position with one round inside the chamber and five live rounds in the magazine from the slain insurgent and huge cache of arms and ammunitions, including 05 HE Mortar bomb, 01 RPG bomb, 13 rounds of 09 mm, 14 No detonators and IED times. Later on the dead body was identified as S/S Lt. Tengsrang M. Sangma, the nephew and a very trusted PSO of Sohan-D –Shira, C-In-C of GNLA and considered as the I.E.D expert of GNLA.

The operation was executed without any loss to civilian and troops. During the entire gunfight, Shri Rajan Singh, DC of 210 CoBRA Bn led his troops from the front and displayed leadership of the highest order. His buddy CT/GD Babloo Kumar also showed gallant act of the highest order. The two officials were though exposed to grave danger risked their life and took the gunfight in their strides and gunned down 01 hardcore GNLA insurgent and made huge recovery.

Recoveries made :

7.65 MM PISTOL WITH MAGAZINE-01 NO.

LIVE ROUNDS OF 7.65 MM-06 NOS

LIVE ROUND OF 9 MM-13 NOS

EMPTY CASE OF 7.65 MM-01 NO

HE MORTAR BOMB-05 NOS

RPG BOMB-01 NO.

PISTOL HOLDERS-13 NOS

12 BORE GUN CARTRIDGES-185 NOS

EMPTY CASES OF 12 BORE GUN-23 NOS

DETONATORS WITH WIRE-14 NOS

IED TIMERS-07 NOS

CIRCUIT-18 NOS

CIRCUIT PROTECTORS-02 NOS

COPPER ROLL- 01 ROLL

EPIC CARDS 04 NOS.

In this encounter S/Shri Rajan Singh, Deputy Commandant and Babloo Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 144-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Shinde Prashant Laxman,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On receiving an input about the presence of 6-7 NDFB/S (National Democratic Front of Bodoland/Songbijit) cadres in Sonairupai wild life sanctuary area under P.S–Mazbat, Distt-Udalguri (Assam), a Search and Destroy Operation was jointly planned by S.P Udalguri and Commandant 210 CoBRA. After detailed planning and briefing, operation was launched on 24/03/2014 at 2230 hours by the joint troops, which comprised of one team of CoBRA and six Assam Police personnel. The troops initially used vehicles and after de-boarding at a secluded place tactically moved towards the target avoiding the habitation. The area was forested with dense elephant grass and sparsely settled hamlets. Despite pitch darkness and difficult terrain, the troops maintained the surprise and reached in the vicinity of the target area. It was decided to search each hamlet in the area. In the process, at around 0345 hrs, as the troops neared a hamlet namely Bombay Centre, the scout namely Ct/GD Shinde Prashant Laxman through his night vision noticed suspicious movement of a person in a grove touching the hamlet. He informed this to his operational Commander Md. Arief, AC, who further alerted all the troops and planned a strategy to encircle and attack the insurgents. He divided his team in two, of which one was send towards the hamlet while the second was tasked to move towards the grove and catch the suspicious person. The suspicious person after halting for a minute in the grove moved further ahead and entered the adjoining thick bushes of elephant grass. The team followed him and as it entered the grove a volley of indiscriminate fire came at them from inside the bush. Prepared for such a surprise and sudden attack the team retaliated and a fierce gunfight ensued at a close distance. Unfortunately in the close encounter the scouts namely CT/GD Shinde Prashant Laxman of 210 CoBRA and CT Jayant Rai of 24 Assam IR BN got hit by bullets and sustained

injuries. Despite receiving bullets at right arm and left side of abdomen, CT/GD Shinde Prashant Laxman crawled bravely behind a tree and continued the engagement with the insurgents. To attack the insurgents hiding somewhere inside the thick bushes it was imperative to further narrow down the distance and locate their exact position. But the task of getting closer to a well entrenched enemy under heavy gun fire entailed risk of life. The only possible way was to subdue the enemy fire and advance under cover fire. Ct/GD Shinde Prashant Laxman realized the importance of his position in the team i.e. scout and opted to advance under cover fire ignoring his injuries. Under excruciating pain and daring the whizzing bullets all around, the brave trooper advanced towards the enemy adopting tactics of fire and move and launched an attack. His ferocious attack forced insurgents to re-plan their strategy and make a retreat. The dedication and determination of the brave trooper was such that when he found that he was unable to fire from his right shoulder due to injury he used his left shoulder but not once thought of stopping his attack. Due to his precise fire duly supported by other team members, the insurgents hiding somewhere inside the thick elephant grass could not hold their ground and fled away by taking advantage of darkness and thick elephant grass.

Later the area was thoroughly searched and troops recovered one 09 mm Carbine, One magazine of carbine, two rounds of 09 mm ammunition, 4 magazines of AK-47, 96 rounds of 7.62 x 39 mm, HE grenade-04 Nos, HE grenade igniter set- 03 Nos., empty case of 7.62 x 39 mm - 01 No., mobile set-04 Nos, Commando knife-01 No., NDFB/S demand letter-03 Nos, wallet with Rs. 2170 cash, Pan card-01 No. bearing name Mirthinga Boro, diary-03 Nos, mobile charger-03 Nos, some essential medicine, tactical vest-02 Nos, tactical haversack-02 Nos, and SIM cards-07 Nos.

CT/GD Shinde Prashant Laxman, though was wounded in the initial fire but overcome his pain and oozing blood and advanced towards the insurgents. During the entire operation, he displayed exemplary courage & bravery along with exceptional operational efficiency in the front line. Though seriously wounded and exposed to grave danger, his prompt reaction to the situation not only saved the lives of his colleagues but also forced the enemy to run for their lives from their well-entrenched position leaving behind a huge cache of arms and ammunitions.

In this encounter Shri Shinde Prashant Laxman, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/03/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 145-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Suresh Kumar,
Assistant Commandant

02. K. Venkatachalam,
Constable

03. Khot Sagar Ramchandra,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 01/07/2014, a reliable information was received from SP North Garo Hills, Meghalaya about the camping of GNLA insurgents in a hilltop of Bolsal Ading near village Rongkaminchi under police station Mendhipather District North Garo Hills (Meghalaya). Accordingly a joint ops was planned by Addl S P North Garo Hills and Shri Suresh Kumar, Asst. Comdt. 120 Bn CRPF. The joint team of 20 personnel of CRPF and 16 personnel of SWAT was briefed about the plan and how to execute it by their commanders at the base camp and the joint team left for operation on 02/07/2014 at 2355 hrs. To surreptitiously enter the target area the troops used civil pattern vehicles and got de-boarded at an isolated place 6 kms short of the target. From there they marched tactically on foot. After night long navigation in difficult jungle terrain braving pitch darkness and crisscrossing the rivers, troops reached in the vicinity of suspected site by 0400 hrs on 03/07/2014. The suspected camp was tactically located on a dominating ground covered by thick jungle and a cluster of huts nearby to cater to their demand of daily needs. After reconnaissance of the area, it was decided to target the camp from two directions. To attack the camp two teams one each of CRPF and SWAT was formed. The CRPF team was led by Shri Suresh Kumar, Asst.

Comdt. As the dawn struck, the assault team under the command of Shri Suresh Kumar, Asst. Comdt. tactically moved towards the target area. They advanced towards the well entrenched enemy knowing that the move is fraught with danger to their lives. Shri Suresh Kumar, AC took the responsibility of leading the assault and placed himself in the middle of leading scouts. To his left he had CT/GD K Venkatachalam while CT/GD Khot Sagar occupied the position to his right. The rest of the team followed them. As the scouts moved further ahead, a sentry of insurgents hiding behind a tree opened indiscriminate fire on them. The scouts had a narrow escape but unmindful of their own safety the three flung in action and fired back at the sentry. Soon other insurgents who were present nearby took position behind covers and opened indiscriminate fire at the troops. The troops, which were till then in open, crawled behind covers while firing simultaneously and a fierce gun battle at a few meters ensued. Knowing the fact that insurgents would not fight for long and will try to flee one by one, Shri. Suresh Kumar AC ordered his troops to advance using tactics of fire and move. Seeing the advance of troops, the insurgents resorted to lobbing of grenades coupled with heavy fire. To neutralize the insurgents, Shri Suresh Kumar, AC then planned to attack the enemy from flanks. He took along CT/GD K Venkatachalam and CT/GD Khot Sagar and together they crawled under heavy bullets to the right flank. On reaching the right flank, they launched a fierce assault at the insurgents resulting in injury to two of the cadres. But in the charged environment they missed out an insurgent who was hiding to their right. The insurgent opened fire at them which resulted in the injury to CT/GD K Venkatachalam and CT/GD Khot Sagar. Shri Suresh Kumar, AC charged violently at the insurgent using heavy gun fire. Seeing the ferocious attitude, the insurgent ran deeper in the jungle. Shri Suresh Kumar AC, chased him for a distance but had to return to administer first–aid to his injured partners. In-spite of having bullet injury and blood oozing out, both the constables were still fearlessly firing at the entrenched insurgents displaying bravery, courage and gallant. Shri Suresh Kumar, AC, without wasting any time pulled the two constables out from the danger zone without caring for his own life. He further deputed eight constables from his team who evacuated the injured to the road head after covering 5 kms in a hilly terrain. He further joined the gun-fight and ordered his team to move forward as the fire from insurgents had receded due to injuries sustained by them. The troops started moving ahead and the insurgents had to run for their lives. The troops chased them but they managed to escape in thick jungle taking advantage of terrain and their familiarity with it.

Shri Suresh Kumar, AC, during the operation had shown tremendous courage, patience and excellent qualities of an operational Commander by taking correct, prompt and timely action. First he fought ferociously with the insurgents and when his partners got injured, he evacuated them from the firing site safely showing his great concern to the human lives. He displayed remarkable presence of mind and proactive operational capabilities due to which insurgents suffered a huge loss and their camp was busted and at the same time lives of injured troopers was saved.

During search of the camp a huge cache of arms and ammunitions was recovered along with other incriminating and electronic items. The main recoveries were:- 3 Pistols, 7 magazines, 1 claymore mine, 144 rounds of assorted ammunitions, 7 wireless sets and 19 detonators. Apart from recoveries huge signs of blood stains at the encounter site and bullet penetrations holes in the magazines of arms suggested that some insurgents were seriously injured during the encounter.

During the entire gunfight, Shri Suresh Kumar, AC led the troops from the front and displayed leadership of the highest order. CT/GD Khot Sagar and CT/GD K Venkatachalam had also displayed courage and gallant action of the highest order despite sustaining severe bullet injuries.

In this encounter S/Shri Suresh Kumar, Assistant Commandant, K. Venkatachalam, Constable and Khot Sagar Ramchandra, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 146-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Rinchen Wangyal Dawa,
Commandant

02. Dharampal,
Assistant Commandant

03. Praveen Kumar,
Constable

04. Uttam Kumar Dhruwe,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

An operation to conduct massive combing in the jungles of Pidiya, a Maoist stronghold, under Police Station Jagargunda, District Sukma, Chhattisgarh, was planned by Shri R.W. Dawa, Commandant 201 CoBRA. Accordingly, three companies of 201 CoBRA alongwith State Police personnel stealthily entered in the jungle in the night of 02/11/2013 and started combing the area in the morning of 03/11/2013. After conducting a massive search in the area, the troops planned to withdraw from the area adopting a strategically different route. At about 1630 hrs, when troops were near village Koyem and negotiating a hillock, the Maoist hiding at the top opened heavy fire at them. The leading team under command Shri Dharampal, AC immediately retaliated and took positions behind available covers. Shri Dharampal AC, while reacting to the fire of Maoists, assessed the location of enemy and its strength and conveyed the same to his Commander Sh R.W. Dawa. To launch a strategic counter-attack, Sh. R. W. Dawa ordered one company to advance to the hillock at left and another to the hillock at right for further launching a concerted three directional attack. After ordering the troops to advance in two directions, he himself advanced further under incessant rain of bullets to support his troops in the front. On reaching the front, he assessed the situation and with the amount of fire coming at them could make out that the Maoists were not more than a platoon in strength. Considering the strength of the enemy as limited in number, he decided to take them head-on and alongwith Sh. Dharampal, AC, CT/GD Uttam Kumar Dhruwe and CT/GD Praveen Kumar crawled ahead under covering and supportive fire. The troops too followed their Commanders and the team began to move ahead using tactics of fire and move. Hardly had the troops advanced 20 meters towards the top, when the Maoists hiding in the left and right hillock also started firing at them. Sh. R W Dawa, Commandant, took no time to understand that it was a much-much bigger ambush than he had anticipated. It was a ploy of the Maoists to trap the troops advancing towards their deception party and attack them from sides. On any other force and commander their strategy would have worked but not before Sh. R W Dawa, Commandant and his troops. Well prepared for this contingency and surprise attack, Sh. R W Dawa, Commandant, ordered his two companies to hurry their advance and counter-attack the Maoists entrenched on left and right hillocks. The two companies braving the arduous uphill move under heavy fire of enemy reached nearer to the Maoists and launched the attack. A fierce gun-fight took place between them at a close distance. As the fire from left and right side receded, Sh R W Dawa ordered his team to advance and attack the deception party of Maoists. The troops crawled ahead and noticed that the Maoists are well entrenched behind temporarily built secured Morchas and firing incessantly from there. The incessant fire and occasional lobbing of grenades made it impossible for troops to advance further. To overcome the stalemate, Sh R.W. Dawa directed CT/GD Uttam Kumar Dhruwe to fire UBGLs at the Morchas, but that too proved ineffective due to boulders and trees and limited manoeuvrability of troops under intense fire. Seeing the tactics not working, Shri R W Dawa decided to form two buddy groups to launch flanking attack at the Morcha in front. The first group of Sh. R.W. Dawa and CT/GD Praveen crawled towards the right and the second group of Sh Dharampal AC and CT/GD Uttam Kumar Dhruwe crawled towards the left. Without caring for their lives, displaying great courage and conspicuous gallant these groups continued their advance under bullets to gain a different direction to attack. Once gaining an angle for attack, they opened heavy fire at Maoists. Realising being surrounded from three directions, the Maoists used every weapon of their armory coupled with lobbing of grenades but soon they gave up and started to retreat. After gaining some space to advance, the two groups undeterred by the heavy firing and grenade blasts displayed exemplary courage, bravery and launched the final assault on Maoists by firing and advancing towards them. The move involved risk to their lives but without giving a single thought to it the groups advanced and came close to the Maoist group. In the ensuing close gun-fight they shot down two Maoists while others began fleeing taking advantage of thick vegetation and undulating terrain. Sh. R W Dawa, Commandant and his three brave troopers did not want to lose this opportunity and began to chase them. During the chase one of the Maoist sprained his ankle and fell down. As Sh. R W Dawa moved ahead to overpower him, he fired a shot towards Sh R W Dawa but he had a miraculous escape. On seeing this Sh Dharampal AC pounced on the fallen Maoist with a lightning speed and apprehended him. By the time the firing at other hillocks had also stopped as Maoists found it safe to flee from their well laid ambush after realising that their planning has failed. The area was later searched and two dead bodies of Maoists with one INSAS Rifle, two SBML guns, 48 rounds of ammunitions and other incriminating items were recovered. It was later confirmed that in this fierce encounter 6-7 other Maoists had also sustained injuries but they managed to flee from the spot.

Shri R.W. Dawa, Commandant and Sh. Dharampal, AC have played vital role in the operation by planning and executing it strategically. They not only led the troops personally from the front but also fought valiantly. It is also worth mentioning that in any operation against Maoists, recovery of dead bodies with sophisticated weapon is a rare phenomenon and it was made possible in this case only by the valiant efforts of the recommended personnel.

In this encounter S/Shri Rinchen Wangyal Dawa, Commandant, Dharampal, Assistant Commandant, Praveen Kumar, Constable and Uttam Kumar Dhruwe, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 03/11/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 147-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Vikas Sadotra,
Constable

02. Chamcham Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On specific intelligence regarding presence of Maoists in the general area of village Pedia, under PS Gangaloor in Bijapur district, DIG (Ops) CRPF (Bijapur) in consultation with SP Bijapur planned an operation. The joint operation which comprised six assault groups was launched from six different bases on 17/05/2013. One such assault team under command Sh. S Elango, DIGP, left Dantewada base camp at around 2215 Hrs. on 17/05/2013. This assault team comprised troops of SAT CRPF Bijapur, 170 Bn CRPF, 199 Bn. CRPF and State Police. The team navigated whole night through the dense jungle avoiding the habitation and reached near village Vengpal the next morning. At about 0900 Hrs when troops were searching the village and its peripheral jungle, Maoists hiding in the jungle opened heavy fire on troops which was retaliated. However, the Maoists were able to flee taking advantage of dense jungle and terrain but huge incriminating articles were recovered from their hide-out in the jungle. A second encounter with the Maoists took place at around 1845 hrs when the troops were searching village Purangal. From the two encounters, it was evident that there was a strong presence of Maoists in the area. To counter attack the Maoists, the commander decided to lay silent in the jungle near the village for the night and lay trap for them. Next morning before the dawn, the troops were divided into small parties and send to lay ambushes on different routes converging towards the village. When one such party consisting of men from SAT CRPF was approaching a hill behind the village, Maoists who were waiting in an ambush opened heavy fire on them from the hilltop. The Maoists who were confident that the troops had not returned during night but were hiding in the jungle had laid a well planned ambush. They had occupied vantage heights around the village and expected withdrawal route of the troops. To counter attack the Maoists, CT/GD Vikas Sadotra and CT/GD Chamcham Kumar displayed raw courage and utter disregard to their personal safety and moved uphill to reach nearer to the Maoists and launch the final assault. The Maoists had minutely planned the ambush and were waiting for this movement of the troops, as another group of Maoists hiding in the adjacent hill also opened heavy fire at them. The two got caught in the fire from two directions and an imminent threat of life loomed over them. To counter the attack of second group, the commander then ordered another party to charge and engage them. Simultaneously, finding the increased volume of fire and grenades being lobbed at them, the two constables who were at front decided to fire from UBGLs. They without caring for the bullets thudding the ground all around, boldly stood out of their covers and fired from standing position as firing from lying position was difficult. The firing of UBGL shook the confidence of Maoists resulting in decreased amount of fire. Similarly, the engagement with second group of Maoists resulted in stopping of fire from that direction. Taking advantage, the two daredevils advanced tactically towards the Maoist positions. On reaching closer, they noticed a Maoist firing incessantly at the troops. Without losing the precious time, he was gunned down by the accurate and aimed fire of the two brave troopers. Seeing the fate of one of their cadres the Maoists began to flee from the area in the supportive fire of each other. The two chased them for a distance and injured a few more but they managed to escape taking the advantage of hilly terrain, dense jungle and their pre-decided escape routes. In the subsequent search of the area the dead body of a Maoist, later identified as Mundam Masu, (Militia Deputy Commander) aged-27 years, an active cadre was recovered. Search of the area also yielded Air Gun -01 No, Gelatin Stick -02 Pkt., Cordex Wire-15 Mtr, Arrow/Bows-12 Nos, Naxal Guide Books-08 Nos, Diaries-07 Nos, Photos-12 Nos, Utensils, Kit bags, Uniforms, Banners-03 Nos, Pamphlets, Literatures etc.

Maoists in a preplanned ambush, sitting in an advantageous position opened heavy fire on troops but CT/GD Vikas Sadotra of 170 Bn and CT/GD Chamcham Kumar of 168 Bn CRPF exhibited conspicuous courage and determination and initiated the counter attack. The valiant and timely action of these two personnel broke the Maoist ambush forcing them to flee, leaving behind a dead body, weapon and other equipments. The gallant act of these personnel, even when they were in the line of direct fire saved lives of many troops and defeated the nefarious plans of Maoists.

In this encounter S/Shri Vikas Sadotra, Constable and Chamcham Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18/05/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 148-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Harminder Singh,
Second-In-Command

02. Narendra Kumar,
Constable

03. Bhudev Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Background - Intelligence agencies were providing input of massive Naxal concentration in various camps in Burha Pahar on tri-junctions of Latehar –Garhwa of JKD and Balrampur of adjoining Chhattisgarh state. On analysis of input it was established that 300-350 Naxals had gathered in the area under leadership of Deo Kumar Singh @ Arbind Jee C/C member with dozens of top Naxal leaders. Naxals had established at least 03 camps in the area and were imparting training to hundreds of newly recruited cadres. (1) First camp near Chenrakona Nala with 80 + caders (2) Second camp on Chemo Saniya hills with 100-120 cadres and (3) Third camp near Latu on foothills of Burha Pahar with 60-70 cadres. Saniya camp was located strategically to repulse any attack in this remote area which was very difficult to access from any direction. So raiding and busting Saniya camp was of utmost importance and most challenging task to clear Burha Pahar from Naxal activity.

A Brief Account of Gallant Action :-

Accordingly operation was planned to bust the Saniya Camp first and clear the area for further onslaught on the remaining camps. 06 teams of 203 and 02 teams of 209 CoBRA and five assault groups of Jharkhand Jaguar were inducted and based at Mandal support camp on 07-08/04/2012 with an objective to raid and clear the Saniya forest area in "OCTOPUS PHASE"– II. Sh. Rajeev Rai, CO-203 under whose command strike forces were assigned task to raid the Naxal camp, briefed the entire party and minutely explained the Naxal strategy in this remote area. He also explained counter measures to be adopted. At around 0030 hrs on 09/04/2012, 04 strike parties (02 Teams CoBRA + 01 JJ each) under overall command of Sh. Rajeev Rai, Commandant 203 left for Chemo-Saniya axis and reached the pre-decided RV early morning. Reorganization as planned was done and since intelligence inputs suggested that naxals had planned to trap raiding party from behind, strong back support under command Shri Rajeev Rai, Comdt. 203 with strike-1 strategically placed on north eastern flank and Strike 3 was placed on north western flank of Saniya hill under command Sh. Anil Kumar, AC to repress any such attempt. Two strike parties, strike-2 under command Shri Harminder Singh, 2 -I/C- 203 CoBRA and strike-4 U/C 2-I/C-209 CoBRA Shri Binod Toppo were detailed to advance from two axis towards Naxal camp. The ops was planned in waves (two strikes advancing to move ahead dominate and occupy the area, then support strikes to advance further and clear dominate and occupy the area). By around 1030 hrs, Teams had checked half of the Saniya forest and stopped to reorganize to move in a co-ordinated manner. Sh. Rajeev Rai, Comdt-203 who alerted them to remain extra careful for the mines in that area as Int. reports has suggested that a killing field of 200′ X 200′ with mines was prepared by naxals to cause maximum damage in one go. As the teams tactically advanced, mine field was exploded by naxals due to which front portion of both the strikes were engulfed in dusts and smoke it covered 200′ X 200′ area. This explosion was followed by series of IEDs blast and heavy firing by naxals who had taken position all around the mushroom hill features. Sh. Harminder Singh, 2 I/C-203 and Shri Shailesh Kumar, AC advance party of Strike-2, Sh. Binod Toppo, 2-I/C and his advance party of Strike-4 came under the impact of IED explosion and firing of naxals. Sh. Harminder Singh, 2I/C 203 CoBRA held the nerve and ordered Sh. Vikash Singh, AC who was leading team no. 14 to give covering fire. Sh. Harminder Singh, 2I/C, Sh Shailesh Kumar, AC and CT/GD Dharminder Singh and other members of raiding party crawled backwards to safe and dominating position

and retaliated heavily. Similarly under covering fire Sh. Binod Toppo, 2-I/C and Shri Kumar Brajesh, AC and his party also retreated backwards to safety and retaliated effectively. Explosion of mines in killing field did not cause any grievous injury to anyone. Under such life threatening situation as the naxal continued exploding IEDs intermittently and firing heavily on the strike party, level of leadership and bravery showed by Sh. Harminder Singh 2I/C 203, Shri Shailesh Kumar, AC, Shri Vikash Singh, AC and CT Dharminder not only managed to deter the naxal onslaught but also retaliated heavily to put them on back foot. Right flank was totally dominated and in this exchange of fire 6-7 naxals were hit and were seen falling down. Intense battle continued with heavy exchange of fire from both side. Shri Binod Toppo, 2-I/C, 209, Shri Kumar Brajesh and CT Narender Singh had moved to left flank and were also fighting Naxals with utmost gallantry and bravery. During this fierce gun fight some more naxals were hit and were seen falling down. This disheartened the naxals and they started blowing IEDs, claymore mines and throwing country made grenades on the both strike teams. Amidst heavy encounter one naxal dasta (35–40) from western hills of Saniya village and forest was observed trying to cross Saniya village and advance towards encounter site to trap strike party engaged in fight from behind. This movement was spotted by Sh. Rajeev Rai, Comdt-203 CoBRA whose party was strategically placed. He immediately mounted CGRL and fired 04 HE bombs followed by immediate volley of bullets, in which five naxals in front portion of the dasta were seen blown up and remaining making huge hue and cry were compelled to retreat backwards. Sh. Rajeev Rai, Commandant-203 CoBRA moved ahead with his party to tackle the naxals. Naxals hiding in scattered houses and forest started firing heavily on the troops, as a result one CT/GD Bhudev Singh was hit in leg. Sh. Rajeev Rai, Comdt-203 CoBRA showing the highest level of leadership kept the troops in high gusto leading from the front and fighting gallantly without caring for personnel safety. In this offensive some more naxals were hit which disheartened the naxals and they fled away taking advantage of hostile terrain and thick vegetation. The whole area was searched thoroughly and First aid was given to CT/GD Bhudev Singh immediately. The entire encounter with Naxals continued for more than 06 hours in which all types of weapons were used including CGRL, AGL and UBGL. In this encounter firing from Naxals stopped completely by 1630 Hrs and injury report of eight personnel from Strike 1, 2 and 4 was received. Since Naxals had fled away it was decided to evacuate the injured personnel to Mandal base (which was 19 Kms from encounter site), before sunset as they could be further evacuated by help of chopper to Appollo Hospital Ranchi. The Naxal camp area could be searched subsequently. All the injured were evacuated by making make shift stretchers to Mandal camp on foot and from there they were shifted to Apollo hospital, Ranchi by Chopper. In such life threatening situation the troops without caring for their own safety and security rose to the occasion showing highest level of devotion to duty and busted the most impregnable Naxal camp in the historic gun battle ever fought. More than four hundred mines were exploded by Naxals and several hundred rounds were fired on strike party. Busting of Saniya camp had major impact on the Naxals as it forced them to wind up all their camps in the area and vacate the Burha Pahar area completely. Locals and Media report have suggested elimination of 15-20 Naxals (Shekhar 2-I/C, Babloo, Sarju, Balbir, Akshya Korba, Gopal etc. of ERB-1 (Coy) and grievous injuries to more than 20 cadres. Impact of this dominance over Naxals forced many new recruits fleeing away from training camps and rests were taken away forcibly by their parents. Thus the most difficult and remote area on Jharkhand and Chhattisgarh border which had remained under Naxal dominance was completely freed from all Naxal activity.

In this encounter S/Shri Harminder Singh, Second-In-Command, Narendra Kumar, Constable and Bhudev Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/04/2012.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 149-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Parwal Parimal, (Posthumously)
Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

F coy of 07 Bn CRPF was deployed under police station Goilkera in East Singhbhum district of Jharkhand. On the basis of an intelligence input an operation was planned and launched on 08/06/2009. Insp/GD Parwal Parimal was commanding the operation and for effective search in the area a base camp with two platoons was established at village Seregata. A thorough search of the area was conducted and three Maoists alongwith two motorcycles were apprehended. The troops took LUP in the area and decided to withdraw the next morning.

As planned the troops moved on foot in the wee hours of the morning from Seregata and reached village Sarugada, beyond which the road was blacktop. The troops boarded vehicles and moved ahead. At about 0610 hrs, as the troops crossed village Sarugada, they were ambushed by the Maoists. The Maoist initially blasted a powerful IED followed by intense firing and thereafter detonated a series of IEDs. The most powerful IED had exploded beneath the Tata Spacio vehicle propelling the vehicle into the air and blowing it apart. In these blasts nine police personnel sustained serious injuries and were trapped in the killing zone of the ambush. Insp/GD Parwal Parimal who was in the first vehicle immediately stopped his vehicle and ordered his troops to move tactically towards the blast site to evacuate the injured. The prime objective at that time was to stop the movement of Maoists who were moving in for the final kill and release their apprehended cadres. Insp/GD Parwal Parimal, displaying great tenacity and presence of mind immediately ordered his team to fire heavily at the Maoists thereby stopping them in their tracks. As the troops under their command began to advance, the Maoists retreated to their safer positions atop the hills and behind their secured morchas. Insp/GD Parwal Parimal, reorganized his troops, infused a new resolve in them and launched a second counter attack on the Maoists. The Maoists had tactically chosen the site as it was surrounded by hills and they had perched themselves on the hilltops behind secured positions and were firing heavily from there. Noticing that the Maoists were at dominating heights and watching the movement of the troops he planned to attack them simultaneously from different directions duly supported by area weapons. He ordered HC/GD (Now SI/GD) Kewalanand Dangwal to attack with his section from the back while he himself led the attack from the front. The Maoists were raining havoc on the troops from their almost impregnable defence compounded with blasting of mines in the front. Not caring for his life, Insp/GD Parwal Parimal advanced towards the hilltop with a small group of intrepid fighters. They crawled their way to close proximity of Maoists, utilizing the minimum cover available, and launched a fierce assault using incessant fire on them. The frontal attack paid dividend as some of the Maoists got injured while others were taken by surprise and pushed to the back foot. Insp/GD Parwal Parimal, who was leading the assault from the front, sustained severe gun injuries in this attack, but was not the one to give up easily. Caught in the incessant fire where the hail of bullets were hitting the boulder used by him as a cover and the ground all around, Insp/GD Parwal Parimal again led from the front braving the oozing blood and excruciating pain and ordered his team to fire 2" Mortars simultaneously at the Morchas for launching a final assault. The team members braving the all-around flying bullets crawled ahead under the support fire of Mortar. As the Mortar bombs began to explode, the Maoists were totally uprooted and they began to flee one after other carrying their injured cadres. Unfortunately Insp/GD Parwal Parimal who fought bravely and courageously during the close quarter encounter succumbed to his injuries and attained martyrdom in the battlefield.

Insp/GD Parwal Parimal fought with the Maoists with dedication, zeal and courage and saved the men, weapons & dead bodies of police personnel. He in the face of grave threat to his life organized the troops to launch a counter-attack. He personally led the troops and exhibited death defying valour forcing the Maoists to run away from their well entrenched positions with their injured cadres and thereby defeating their nefarious plan of inflicting heavy casualty on the Security Forces and releasing the Maoist cadres. Despite being hit by bullets Insp/GD Parwal Parimal kept the assault on and in the fierce gunfight he himself shot at and injured some Maoists.

In this encounter (Late) Shri Parwal Parimal, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 09/06/2009.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 150-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Amit Sharma, Deputy Commandant — (PMG)

02. Kuldeep Singh Dahiya, Assistant Commandant — (1st Bar to PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

Based on highly reliable secret information from SP East Garo Hills about a hideout of GNLA cadres in the jungle near Vill- Norek Bollonggre, under PS- Songsak, Distt- East Garo Hills, Meghalaya, a meticulous operation plan was drawn

up by CoBRA Commandos comprising of Team of 10 & 12 and Meghalaya Police SWAT teams under operational command of 210- CoBRA. Shri Amit Sharma, Dy Comdt. was detailed as Operational-cum Assault Commander and Shri Kuldeep Singh Dahiya, Asstt. Comdt as his Second-in-Command. Shri Amit Sharma, DC had a discussion with Commandant -210 CoBRA Shri Joseph Keishing and SP East Garo Hills on all the modalities like terrain, enemy, obstacles etc. at length. After conducting initial reconnaissance and analyzing the area, the assault team alongwith 07 cut-offs moved into the forest at about 2200 hrs. on 22/06/2014. After a cross country trekking in difficult and undulating terrain throughout the dark night, the combined teams reached in the vicinity of the target area at around 0430 hrs on 23/06/2014.

At first light around 0445 hrs, after placing the cut-offs at expected escape routes, the assault team U/C Sh. Amit Sharma, Dy. Comdt of 210 CoBRA BN tactically and stealthily moved towards the hideout. As the assault team reached near it's target, the sentry of the insurgents positioned and hidden behind a bush suddenly opened indiscriminate fire at the advancing troops with automatic weapons. The assault team retaliated and moved towards the sentry using tactics of fire and move. But, soon some other insurgents present in the vicinity also joined the gun battle and a fierce gun fight at close proximity ensued. Shri Amit Sharma Dy. Commandant after doing quick spot analysis ordered his troops to retaliate with full volume of fire so that the enemy could be pinned down and further strategy could be planned. As the exchange of fire continued he contacted his cut off parties and passed on the information about insurgents and their location. He also ordered Sh. Kuldeep Dahiya, Asstt. Comdt. placed at cut off No.03 to move in so that two pronged attack could be launched. Showing utter disregard to their personal lives, the cut off No.3 under Commander Sh. Kuldeep Dahiya, Asstt. Commandant crawled in under the heavy enemy fire and reached near Sh. Amit Sharma, Dy. Commandant.The insurgents had positioned themselves behind secured covers and any further advance when the enemy was firing intensely with his automatic weapon would have been detrimental to the troops. To counter the attack of the insurgents, Sh. Amit Sharma, Dy Commandant ordered Shri Kuldeep Singh Dahiya, Asstt. Comdt. to move to the left flank and lob successive grenades at the enemy position. The successive lobbing of grenades and firing of UBGLs yielded result and the insurgents began to retreat from their secured positions. Shri Amit Sharma, Dy. Commandant and Shri Kuldeep Singh Dahiya, Asst. Comdt then took the insurgents head on and moved towards them duly supported by their respective team members. They showed least concern for their lives and exhibited extraordinary courage and determination and kept on pushing/moving forward towards the militants who were continuously firing at the approaching team. Shri Amit Sharma, Dy. Commandant and Shri Kuldeep Dahiya, Asstt. Comdt exhibited great leadership and conspicuous courage, without any consideration for their safety from the intense and indiscriminate fire of the militants and succeeded in getting the militants disorganized and run from their hive. The gallant officers chased the fleeing insurgents alongwith their troops and succeeded in apprehending two GNLA cadres. When the area was thoroughly searched they also recovered a dead body of GNLA insurgent who was later on identified as Cheeman Ch Momin, 2nd –In-Command of Jimmy (Area Commander). The apprehended cadres were identified as Bishno M. Sangma and Fatima M. Marak. Huge arms and ammunition were also recovered from the area.

The operation was executed extraordinarily without any loss to civilian or troops. During the entire encounter, Shri Amit Sharma, Dy. Comdt and Shri Kuldeep Singh Dahiya, Asstt. Comdt of 210 CoBRA Bn led their troops from the front and displayed extraordinary courage, grit determination and leadership of the highest order. They risked their lives in a life threatening situation and without much support took the encounter on their strides and gunned down 01 hardcore GNLA as well as apprehended 02 insurgents.

Recoveries made:

1. AK SERIES RIFLE-01 NO .
2. AK 47 SERIES MAG-06 NOS.
3. 7.62x39 MM LIVE AMNS-160 RDS.
4. MM PISTOL-02 NOS.
5. 7.65 MM PISTOL MAG-03 NOS
6. 7.65x25 MM LIVE AMNS-19 RDS.
7. ONE SBBL GUN ALONGWITH 08 LIVE CARTRIDGES
8. 18 LIVE AMNS RDS OF DIFFERENT CALIBER
9. 07 RDS OF .22 LIVE AMNS
10. 24 NOS EMPTY CASE OF AK AMNS
11. HE GRENADE-01 NO.
12. WIRELESS SET- 03 NOS.

13. WIRELESS SET CHARGER-02 NOS

14. GELATIN WAX- APPROX 400 GRAMS ALONG WITH BALL BEARING

15. ONE PLASTIC PACKED SUSPECTED TO BE EXPLOSIVE SUBSTANCE

In this encounter S/Shri Amit Sharma, Deputy Commandant and Kuldeep Singh Dahiya, Assistant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/06/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 151-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Amrendra Tiwari,
Assistant Commandant

02. Arvind Dadoria,
Sub Inspector

03. Harish Kumar,
Head Constable

04. Santosh Kumar Pandey,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 27/11/2013, a reliable information was received from SP East Garo Hills, Meghalaya about the presence of a camp of armed insurgents in the general area of village Chiokgre under police station William Nagar District East Garo Hills (Meghalaya). Accordingly two teams of 210 CoBRA alongwith SWAT team of Meghalaya Police launched an operation under command Shri Amrendra Tiwari, Asstt. Comdt. of 210 CoBRA after elaborate planning and discussion. The teams left the base camp on 27/11/2013 at 2300 Hrs. to surreptitiously enter the target area. After night long navigation in difficult jungle terrain braving pitch darkness and crisscrossing the freezing rivers troops reached in the vicinity of suspected site by 0300 hrs on 28/11/2013. The suspected camp was tactically located as it was on a dominating ground surrounded by thick jungle, a village nearby and a river flowing to its north acting as a natural obstacle. After doing an initial reconnaissance of the area eight cut-offs were placed on suspected escape routes. As the dawn struck, the assault team under command Shri Amrendra Tiwari, Asst. Comdt. tactically moved towards the target area. They advanced towards the well entrenched enemy knowing the fact that the move is fraught with danger to their lives. Shri Amrendra Tiwari, AC took the responsibility of leading the assault and placed himself in the middle of leading scouts. To his left he had SI/GD Arvind Dadoria and CT/GD Santosh Kumar while HC/GD Harish Kumar occupied the position to his right. The rest of the team followed them. As the scouts moved further ahead, a sentry of insurgents hiding behind a tree opened indiscriminate fire on them while another cadre ran towards the camp to alert it. The scouts immediately retaliated and an encounter with the sentry ensued. Soon some other cadres from the camp located at a distance of around 100 meters also opened fire in support of their sentry. Without caring for the bullets of the insurgents, the scouts crawled towards the sentry adopting tactics of fire and move to neutralize him. Beaten by the raw courage and bold advance of scouts the sentry soon felt an imminent threat to his life and fled deeper into the jungle. The fleeing of sentry paved the way for the camp to be routed and soon the troops overran it. Finding that the insurgents had fled from the camp in different directions, Shri Amrendra Tiwari, AC informed all the cut-offs to remain extra alert and look for the fleeing insurgents.

As none of the cut-offs informed about the fleeing insurgents it was eminent that they were still inside the cordon and hiding somewhere. Dead silence prevailed over the area and seemed to be a harbinger of some destruction. A concerted attack from the insurgents who had their back against the wall could not be ruled out in that situation. Overcoming his inhibits, Shri Amrendra Tiwari AC divided his team into four groups and ordered them to search in different directions. He along with SI/GD Arvind Dadoria, HC/GD Harish Kumar, CT/GD Santosh Kumar Pandey and two more constables moved

towards the most probable escape route. As they waded through the tall grasses and thick bamboo vegetation which were affecting their visibility, the insurgents hiding inside the bamboo plantation suddenly opened heavy fire on them. Not caring for the bullets of insurgents Shri. Amrendra Tiwari, AC, SI/GD Arvind Dadoria, HC/GD Harish Kumar and CT/GD Santosh Kumar Pandey retaliated the fire and gunned down one of the insurgents. Seeing the fate, around 4-5 insurgents ran towards the river firing simultaneously at the troops. Shri Amrendra Tiwari, AC did not want to lose the initiative gained and chased them without caring for the bullets fired at them. Seeing that they were being chased, one of the insurgents lobbed a grenade at the troops. Judging the killing zone, the troops flung behind the covers and had a narrow escape. The insurgents ran towards the cut-off and after being challenged opened fire at them. The cut-off party retaliated the fire and the insurgents got trapped between the assault and cut-off. The insurgents still did not lose hope to escape and tried to make their way by taking advantage of thick undergrowth and incessant fire coupled with lobbing of grenades. Intermitting fire from the insurgents side kept coming for some time while the troops advanced using tactics of fire and move. On reaching closer to river bed troops recovered three dead bodies which were later identified as of United Achik Liberation Army's (UALA) hard core extremists namely Raken D Sangma, Silsrang D. Marak @ Rikkam R Marak and Rakman A. Sangma and one injured cadre namely Columbus Shangdiar besides recovery of arms, ammunitions and other items.

Shri Amrendra Tiwari, Asstt. Commandant, SI/GD Arvind Dadoria, HC/GD Harish Kumar, and CT/GD Santosh Kumar Pandey, during the operation displayed remarkable courage and extreme professionalism in the line of duty. Their bold encounter, raw courage and daredevil approach changed the tide of the fight resulting in killing of three hardcore cadres of United Achik Liberation Army (UALA). Though confronted with the direct fire of insurgents posing great threat to their lives they did not give up but responded gallantly.

Recovery:

1. MM PISTOL WITH MAG-01 NO.
2. 7.65 MM LIVE AMNS-05 NOS
3. EMPTY CASE OF AK RIFLE-10 NOS
4. HE NO. 36 GRENADE-01 NO.
5. CHINESE GRENADE-02 NOS
6. LAPTOP (HP) NEW WITH ADAPTOR, MOUSE, USB CABLE-01 NO.
7. HP NOTEBOOK WITH AN ADAPTOR AND MOUSE-01 NO.
8. NOKIA MOBILE PHONE (NOKIA 1100) 01 NO.
9. SIM CARD-02 NOS (IDEA & VODAPHONE)
10. MAP-03 NOS (ONE EACH OF PROPOSED RABHA HASONG STATE, GARO HILLS KAMRUP MAP GOALPARA DISTT. OF ASSAM)

In this encounter S/Shri Amrendra Tiwari, Assistant Commandant, Arvind Dadoria, Sub Inspector, Harish Kumar, Head Constable and Santosh Kumar Pandey, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/11/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 152-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Pankaj Mishra,
Deputy Commandant

02. Mukesh Kumar Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

After getting information that a strong team of Maoists was present in Manibera forest area, under PS- Arki, Distt-Khunti and was planning to attack /ambush SFs, an operation was jointly planned by CRPF and State Police. To conduct a surgical operation in the area which is considered a major stronghold area of Maoists, four platoons of 94 Bn. CRPF under command Shri Pankaj Mishra, Dy. Comdt and State Police component under command Shri P.R. Mishra, Addl SP Khunti, were detailed. The joint team moved for operation from the base camp on 14/01/2014 at 0400 hrs in extreme cold climate. As the Maoists have a strong presence in the area, there was every possibility that the troops may get ambushed. Despite the threat, Shri. Pankaj Mishra, Dy. Comdt. led the convoy so as to be the first to face the challenge thrown at the troops by the Maoists. After leaving the vehicles near village Gamharia, the teams moved cross-country despite pitch darkness, hilly terrain and a deep river with many rivulets. The Commanders had decided to first search the jungle patch near village Labed and if the Maoists could not be traced there then they would further move towards village Manibera. The teams navigated for approx 6 kms in a very tough terrain and reached near village Labed at around 0630 hrs. As the teams started combing the jungle they saw some suspicious movement in a grove between the village and jungle. To confirm the presence of Maoists, a small assault team of intrepid troopers including CT/GD Mukesh Kumar, Dy Comdt Pankaj Mishra and ASP Ops Khunti Shri P.R. Mishra advanced from the front and one team each from left and right flank. As the assault team under command Shri Pankaj Mishra, Dy. Comdt. moved closer to the grove it noticed a gun wielding Maoist. As the main group of the Maoists was untraceable, the assault team advanced towards the sentry to apprehend him. This was a daring act in the light that the sentry was sophisticatedly armed and the location of the main group of Maoists was not known. Meanwhile the other teams also advanced towards the target area and supported the main assault group from flanks. As the assault group reached closer to the Maoist, its movement got detected and the sentry opened indiscriminate fire at them. After firing few shots, the sentry rushed deeper into the grove where the main group of the Maoists was present. The main group had occupied positions behind secured covers and was approx 50 mtrs deeper from the sentry. On noticing the movement of troops, the group of Maoists also opened indiscriminate fire at them. Shri Pankaj Mishra,Dy. Comdt., Shri. P R Mishra, ASP Ops and CT Mukesh Kumar were in very risky position and survived narrowly from the bullets fired by the Maoists. Despite extreme threat to their lives, the three daredevils advanced using tactics of fire and move. Soon the supporting groups also opened fire at the Maoists and the Maoists were forced to flee from the area to save their lives. As the Maoists fled, they fired heavily at Shri Pankaj Mishra, Dy. Comdt., Shri. P R Mishra, ASP Ops and CT Mukesh Kumar but without caring for their own lives they literally chased the Maoists. They took risk of their lives and after reaching close to Maoists, opened heavy fire at them. In the bold and brave attack, one Maoist was neutralized on the spot while many others suffered injuries. The attack surprised the Maoists and in order to save their lives, the Maoists resorted to heavy gunfire and lobbed successive grenades. The blasts at a few meters forced the troops to halt their advance. The Maoists took advantage of the situation and fled under cover of dense foliage, but one of the Maoists got surrounded by the advancing troops. The assault team moved ahead to catch the surrounded Maoist but faced stiff resistance in the way of intense fire both from the surrounded Maoist and his teammates who had taken position at a safer distance. But the assault group led by Dy. Comdt. Pankaj Mishra, CT Mukesh Kumar and ASP Ops P.R.Mishra advanced without caring for the bullets and succeeded in apprehending the surrounded Maoist. It was due to extreme bravery and courage of these three officials that a Maoist was apprehended alive who later revealed some important information about the Maoists groups. After encounter the whole area was searched and a Maoist hide out was busted. Following recovery was made from the area:-

Sr.No.	Arms/Ammns and Articles recovered	A/U
01	12 Bore Single Barrel Gun	02 Nos.
02	12 Bore Live Rounds	06 Nos.
03	Empty Case	01 No.

In the entire operation despite heavy fire from the Maoists and a very high probability of peril to their lives, the above personnel exhibited an exemplary courage to their duty. The nerve exhibited by them under the life threatening circumstances is not only exemplary but also shows highest degree of courage, gallantry, devotions, dedications and commitment to duty. In the entire operation due to a very short distance between the Maoists and assault group and intense volume of fire, death remained always a whisker away.

In this encounter S/Shri Pankaj Mishra, Deputy Commandant and Mukesh Kumar Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14/01/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 153-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Arun Kumar Singh,
Deputy Commandant

02. Girender Singh Tomar,
Assistant Sub Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 24/02/2014, a specific intelligence input about presence of Maoist dasta with senior commanders like Nakul Yadav, Sushil Ganju, Muneshwar and Lalman Singh(Sub-Zonal commander), in the general area of village Icha under PS Ghaghra, Distt. Gumla (Jharkhand) was received by 218 Bn. CRPF. Input further suggested that the Maoists may convene a meeting of villagers and exhort them to join their organization. To nab or neutralize these Maoists it was planned to surreptitiously induct a small team in the area which will first locate and then attack them. Accordingly, a small team comprising troops of 218 Bn U/C Shri A.K.Singh, DC and State Police U/C Sh Pawan Kumar, ASP was formed and briefed about the operation by the Commandant , 218 Bn. CRPF. At 2000 hrs, the troops moved towards the target area in vehicles. They covered 25 kms in vehicle and after crossing vill- Gamharia, de-boarded it and surreptitiously entered the forest. Braving thick jungles, undulating terrain, pitch darkness and dense fog the troops moved towards their target with full alacrity. A sudden encounter with the Maoist group or their Sentry in the thick jungle could not be ruled out. To avoid this situation Sh. Arun Kumar, Dy. Comdt. ordered his troops to suppress the sound of their own footsteps while he himself monitored the scanning of jungle through Night Vision Device. The dense fog was making the things more dangerous and risky. After walking for 4 hours and avoiding villages for maintaining optimum secrecy, they reached near village Icha at 0130 hrs. Now the task ahead was to first locate the Maoist dasta and then launch an attack on them. After placing three cut-offs on the approaching routes, Sh. Arun Kumar, DC, along with his small group of intrepid troopers, moved towards the village to ascertain the Maoists presence. The pitch darkness and dense fog was hindering the visibility from the Night Vision Device also. As the small team of daredevils reached near the Panchayat Bhawan of the village, the Maoists hiding inside the Bhawan opened heavy fire at them. The troops had a miraculous escape as none got hit by this indiscriminate fire. Prepared for such a surprise attack, the troops too retaliated and a fierce encounter ensued at a close distance. Knowing that the Commander of the Maoists will be the first to flee from the site while other cadres would engage the troops, Sh. Arun Kumar Singh, DC took along ASI/GD G. S. Tomar and crawled towards the rear of the Bhawan. They had barely moved 10 meters when Sh. Arun Kumar Singh, DC noticed that the Maoists have begun fleeing, as anticipated by him. Despite knowing the fact that they were in the open and any sound made by them would be an invitation for the Maoists to fire at them, the two fired at the Maoists to stop their escape. The fire from Sh. Arun Kumar Singh DC and ASI/GD G S Tomar yielded result and some of the Maoists got hit but soon they themselves were surrounded by bullets dotting the ground all around. In this do or die situation, they backed themselves up and displayed unparalleled bravery by firing heavily at the Maoists and pinned them down. Their bold face-off forced the Maoists to duck for cover and taking the advantage the two moved behind a tree. Sensing that Sh. Arun Kumar Singh, DC and ASI/GD G S Tomar were a major hurdle in their escape, two of the Maoists positioned themselves behind a tree and rained bullets and grenades to engage the troops while others kept fleeing. Finding the situation getting deadlocked, Sh. Arun Kumar Singh, DC called the troops at back to come in front and engage the Maoists while he himself and ASI/GD G S Tomar, without caring for their lives, crawled under hail of bullets to gain an angle for accurate fire. Once they reached the desired location, they fired at the Maoists and gunned one of them down. Seeing the fate of his partner the second Maoist started fleeing from the area. The two did not stop there and chased the Maoist and injured him too but he managed to flee taking advantage of terrain, darkness and fog. Thorough search of the encounter place was carried out in the morning and a dead body of the killed Maoist namely Lalman Singh (Sub-Zonal Commander of CPI Maoist) along with one SLR Rifle, 95 rounds of ammunitions, Rs. 49,000/- cash and other incriminating items and documents were recovered.

The entire operation was planned and executed in an exemplary manner. The great determination, extra ordinary courage and conspicuous bravery shown by the troops resulted in foiling of the evil designs of the Maoists and elimination of their dreaded commander. Sh A. K. Singh, DC and ASI/GD Girender Singh Tomar, of 218 Bn exhibited grit, determination, valour and extraordinary courage during the operation and neutralized a dreaded Maoist namely Lalman Singh (Sub-Zonal Commander of CPI Maoist) by risking their own lives.

In this encounter S/Shri Arun Kumar Singh, Deputy Commandant and Girender Singh Tomar, Assistant Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25/02/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 154-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sanjay Kumar,
Deputy Commandant

02. Manoj Kumar Yadav,
Assistant Commandant

03. Dilip Kumar Singh,
Assistant Commandant

04. Shabir Ahmad Pore,
Constable

05. Mahesh Chand Meena,
Sub Inspector

06. Dipti Ranjan Biswal,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

In the evening of 22/07/2014 an intelligence input was received from own source that senior maoist leaders namely Kundan Pahan alias Vikasji, Chandan and Tulsi Das @ Vishalji alongwith their armed cadres are meeting in the Foot Hills of Village-Lemba under PS-Araki, Distt Khunti. An operation, code named "Moonlight", was planned by 203 CoBRA and 133 Bn CRPF in consultation with SP (Ops) Ranchi and Addl. SP (Ops) Khunti. Accordingly, a small team operation was planned which contained 4 strike groups each under command of an able commander. Strike-1 was put under the command of Shri Sanjay Kumar, DC and included team commander Shri Manoj Kumar Yadav, AC with his CoBRA commandos. Strike-2 was put under command of Shri S K Jha, SP Rural, Ranchi and included troops of 133 Bn CRPF under command of Shri Dilip Kumar Singh, AC. Strike -3 was put under command of Shri P R Mishra, ASP (OPS) Khunti and included his QAT. Strike-4 was put under command of Shri Harshpal Singh, ASP (OPS) Ranchi and included troops of 203 CoBRA. Troops assembled at A/203 CoBRA Camp (old Jail complex Ranchi) and briefing was carried out.

After thorough and extensive briefing by the Commanders, troops left the camp at 2330 hrs and reached the core area i.e. 03 Kms short of village Lemba. After making a stealth de-board, troops marched in spite of all odds i.e. swamp, hilly terrain, thorny vegetation with heavy undergrowth and absolute darkness. As the exact place of meeting was not known, the troops waited till first light to comb the area. In first light the strike parties moved towards the foothill combing the area. Strike -1 and 2 were in the middle flanked by Strike -3 on left and Strike -4 in right. As the Strike-1 was combing the area, a sentry of the Maoists hiding behind trees and bushes noticed it's movement and opened indiscriminate fire at it. Strike-1 and 2 immediately took position and retaliated to the fire. A fierce gunfight ensued as some other Maoists also joined the sentry. In this fierce gun fight, Shri Manoj Kumar Yadav, AC of 203 CoBRA got hit by a bullet near the right eye when he came out of his cover and advanced towards the Maoists. His buddy SI/GD Mahesh Chand Meena immediately flung out of his cover and pulled him behind the cover. Seeing the deadlock which was giving the time to other Maoists to flee from the area, Shri Sanjay Kumar, DC of 203 CoBRA ordered his troops to advance using the tactics of fire and move. Though injured, Shri Manoj Kumar Yadav, AC took along SI/GD Mahesh Chand Meena and CT/GD D.R. Biswal and advanced towards the Maoists without caring for the flying bullets and showing least concern to their own lives. Beaten by the raw courage of the troops, the two Maoists found it safe to flee from the area taking support of broken ground. Seeing it, Shri Sanjay Kumar, DC ran after a Maoist who was running towards the hill taking cover of a school building present there. Meanwhile Strike -4 which was on the right flank, on hearing the sound of gunfire, rushed towards the encounter site covering the school building. The Maoist who was running towards the hill under cover of the school building came head to head with the scouts of Strike-4 namely Shri Dilip Kumar Singh, AC and CT/GD Shabir Ahmed Pore of 133 Bn CRPF. On coming face to face with the troops, the maoist opened indiscriminate fire at them with his automatic weapon. Shri Dilip Kumar Singh, AC and CT/GD

Shabir Ahmed Pore had a narrow escape, but undeterred they fired back at the maoist forcing him to run for cover. On getting caught between the troops i.e. Shri Dilip Kumar Singh, AC and CT/GD Shabir Ahmed Pore from front and Shri Sanjay Kumar, DC from back, the Maoist ran inside the school building and took cover in a room and behind the secured walls. After getting securely entrenched in a room, the Maoist resorted to indiscriminate fire at the troops. Other troops rushed to the school building and covered it from all sides. To neutralize the maoist, Shri Sanjay Kumar, DC then decided that the troops at the back of the school will open heavy fire aiming at the room in which the maoist was hiding thereby diverting his attention while Dilip Kumar Singh, AC and CT/GD Shabir Ahmed Pore will advance closer to the room from the front and launch an assault. The plan worked and the three dare-devils reached nearer to the room and opened fire inside the room. When the fire from inside the room stopped, the three, after waiting for few minutes, entered tactically in the room and found one dead body which was later identified as of Tulsi Das @ Vishal ji, CPI (M) Sub Zonal Commander and Special Area Committee Chief- No. 2 alongwith following Arms/Amn and items:-

1. AK-47 rifle with magazine 01 No.
2. Motorolla walki –taki 01 No.
3. 7.62x39 mm live rounds-161 Nos,
4. Grenade-01 No,
5. 7.62x39 mm empty case-83 Nos,
6. Mobile-03 Nos,
7. Charger-02 Nos,
8. Uniform-01No,
9. Bag-01 No,

All the odds i.e. unfavorable terrain, swampy fields, improper cover, fusillade and heavy volley of fire from enemy had tested the resolution of the troops but Shri Sanjay Kumar, DC, Shri Manoj Kumar, AC, SI/GD Mahesh Chand Meena , CT/GD D.R. Biswal all of 203 CoBRA Bn, Shri Dilip Kumar Singh, Asstt. Comdt. and CT/GD Shabir Ahmed Pore of 133 Bn took highest degree of risk even at the peril of their lives, advanced to the closest quarter of the enemy and after displaying extra-ordinary courage and professional efficiency neutralized a dreaded maoist commander.

In this encounter S/Shri Sanjay Kumar, Deputy Commandant, Manoj Kumar Yadav, Assistant Commandant, Dilip Kumar Singh, Assistant Commandant, Shabir Ahmad Pore, Constable, Mahesh Chand Meena, Sub Inspector and Dipti Ranjan Biswal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 155-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Alok Panwar,
Assistant Commandant
02. Ravindar Kumar,
Constable
03. Jatan lal,
Constable
04. Guru Prasad K.N.,
Constable
05. Mukesh Kumar Gurjar,
Constable

06. Vijay Singh Rathore,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Input about congregation of Maoists in a heavy jungle near village Ramaram under PS Chintagupha, Distt. Sukma, Chhattisgarh to celebrate their martyr week was received by DIG Dantewada, CRPF. It was further learnt that the Maoists have erected a monument i.e. Shaheed Smarak for the purpose. On this input, an operation was launched on 28/07/2014 which was led by DIG Dantewada CRPF, Shri D P Upadhayay. It was a meticulously planned operation with three teams comprising troops of 74 Bn, 150 Bn, 223 Bn and 206 CoBRA launched from three different directions which were to converge in a heavy jungle near village Ramaram. The parties after traversing a very difficult terrain and flooding rivers/nallahs which were in spate because of heavy rain reached the target area after a tracking of 3 ½ hours during dark. Search of the jungle area and village did not reveal any maoist presence but a huge Maoist monument was decimated. It appeared that the Maoist had somehow got the wind of troops movement and had moved out. The troops thereafter destroyed the Maoist monument and planned their retreat in a tactical manner. When the troops moved out of village Ramaram a party comprising troops of 74 and 223 Bn came under heavy fire by the Maoists who were lying in ambush outside the village. Shri Alok Panwar, AC was leading the QAT of 150 Bn when the encounter started. To evacuate the troops out of ambush zone he led his QAT in most admirable way under intense fire and after reaching the flank of Maoists launched a brutal assault. The sudden assault on the flank disoriented the Maoists and the beleaguered troops got the chance to move out of the killing zone. After the safe evacuation of the troops Sh. Alok Panwar, AC did not stop but courageously attacked the enemy positions. Unmindful of his personal safety and intense fire he inspired others to act promptly. The Maoists defeated in their plan of inflicting serious injuries on troops got infuriated and launched a brutal assault on the party of Sh. Alok Panwar, AC. The intense fire and lobbing of grenades was such intense that Sh. Alok Panwar, AC, CT/GD Ravinder Kumar and CT/GD Jatan Lal sustained injuries. The Maoists soon began to encircle the troops. At this juncture, CT/GD Guru Prasad, CT/GD Mukesh Kumar Gujar and CT/GD Vijay Singh Rathore rose to the occasion and with their accurate fire and use of CGRL inflicted loss on converging Maoists. The injuries and blast dented the morale of Maoists and they began to flee from the area. The troops moved out to chase the Maoists but another group of Maoist hiding across an overflowing nallah in order to facilitate the escape of their cadres opened fire at them. Sh. Alok Panwar, AC ordered his troops to launch an attack on the Maoists hidden across the nallah as chasing the fleeing Maoists at that juncture was impossible. Despite injuries, he led the charge from the front duly supported by CT/GD Ravinder Kumar, CT/GD Jatan Lal, CT/GD Guru Prasad, CT/GD Mukesh Kumar Gujar and CT/GD Vijay Singh Rathore. In the assault supported by firing of UBGLs, some Maoists who had perched on the trees were seen falling after receiving injuries. As the fire subsided the area was searched and a dead body of Maoist alongwith a weapon was recovered. The other side of the overflowing nallah could not be searched as crossing the nallah and venturing into the thick jungle under fading light would have been detrimental to the troops.

During the operation, Sh. Alok Panwar, AC, on seeing the troops trapped in the ambush moved straight to the flank of Maoists and launched a brutal attack. In the flanking attack at least 4 of the Maoists were either killed or sustained severe injuries. Officer's bravery of highest order in front of the enemy inspired his other team mates and they retaliated with full strength unmindful of their own injury. The enemy had no answer to the grit, determination and valour of these troops and found it safe to flee from the fury and accurate fire of troops. Though only one dead body was recovered from the site but the intelligence inputs suggests that more than 10 Maoists were either got killed or sustained serious injuries during the encounter.

In this encounter S/Shri Alok Panwar, Assistant Commandant, Ravindar Kumar, Constable, Jatan lal, Constable, Guru Prasad K.N., Constable, Mukesh Kumar Gurjar, Constable and Vijay Singh Rathore, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 156-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Brijendra Kumar Mishra,
Deputy Commandant

02. Jai Kumar Tiwari,
Constable

03. Amit Jamwal,
Constable

04. Borse Deepak Suresh,
Constable

05. Fintus Kumar,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

Sukma District of Chhattisgarh has always been the epicenter of Maoist activities. On basis of intelligence about movement of Maoists near village Jaggawaram, under PS Bheji, District Sukma, Chhattisgarh, an operation was meticulously planned by Shri B.K. Mishra, DC of 208 CoBRA after analysis the terrain, past incidents, route-in/out and movement pattern of Maoists. The operation was launched on 21/08/2014 at 2200 hrs wherein troops of C/208, D/208 CoBRA, 2 Companies of 219 Bn CRPF and State Police participated. As per plan the CoBRA troops would launch a direct and surreptitious assault in the area while troops of 219 Bn launched a shadow operation in a different area to distract the Maoists. After whole night of tactical and arduous movement in a difficult terrain, CoBRA troops reached the target area and demolished a Maoist monument erected in the vicinity of village Jaggawaram. During retreat Shri. B K Mishra, Dy. Comdt. noticed some villagers near a pond at some distance. On keen observation through binocular it was noticed that the armed Maoists were also present with the villagers. Due to the presence of villagers the troops could not open fire upon them. Shri B K Mishra, Dy. Comdt. immediately split his party into three of which one was sent to cover left flank, one to right and the third which he himself commanded moved tactically towards the Maoists. As the troops moved ahead, a sentry of Maoist hiding behind trees and positioned at a vantage point noticed their movement and opened fire at them. On hearing the sound of fire the Maoists ran towards the jungle leaving the villagers behind. The presence of villagers in the vicinity hindered the troops in opening of fire. Seeing the Maoists running away, Sh. B K Mishra, Dy. Comdt. chased them followed by his team. The Maoists after entering the jungle laid on ambush and as the troops neared the jungle opened indiscriminate fire at them. The scouts namely CT/GD Jai Kumar Tiwari, CT/GD Amit Jamwal, CT/GD Fintush Kumar, CT/GD Borse Deepak and their Commander Shri B K Mishra, Dy. Comdt. had a narrow escape. Despite being in open and scant availability of covers, the scouts without caring for their lives opened fire at the Maoists. Shri B.K. Mishra, DC led the troops from the front and ordered them to keep firing at the Maoists while moving behind the covers so that the Maoists are not able to fire accurately at them. A fierce encounter at close quarter ensued. Failing to inflict any casualty on the Security Forces and noticing the presence of more troops in the vicinity, the Maoists started fleeing deeper inside the jungle one by one. Sensing that the left and right flanked troops are taking time to cover the Maoists and the Maoists have started fleeing, Shri. B K Mishra, DC ordered his troops to advance using tactics of fire and move. The scouts under their able commander without caring for the incessant fire aimed at them displayed doughty spirit and moved ahead. During the gun fight, the Maoists who were getting injured were fleeing/taken away from the area while others were firing to stop the advance of the troops. As the troops closed in, the left out Maoists also fled from the encounter site. The scouts did not stop there but chased the Maoists and ran after them. Despite occasional fire of fleeing Maoists, the scouts did not give up their chase and after running for about 200 meters fired at an injured fleeing Maoist and gunned him down. Had the troops not chased the Maoists after the encounter the Maoist a dreaded Commander must have fled the area in injured condition just as other Maoists had fled. During the fierce encounter two Maoists were killed who were identified as dreaded Maoist commander namely Podium Ganga @ Viju and Podium Rame (a woman Maoist who got injured and died later) but body could not be recovered.

Despite the heavy volume of fire, Shri B.K. Mishra, Dy. Comdt. led the troops from the front without caring for his own life. He positioned himself in the front along with CT/GD Jai Kumar Tiwari, CT/GD Amit Jamwal, CT/GD Borse Deepak and CT/GD Fintush Kumar. They jointly inflicted heavy casualties on Maoists. The exchange of fire lasted for around 15 minutes and during search the dead body of Podium Ganga @ Viju (platoon commander of Konta area committee) in uniform and a SLR Rifle with huge amount of ammunition and other Maoists material were recovered. Later information corroborated the death of a woman Maoist namely Podium Rame. Other Maoists had also suffered injuries in this operation but they managed to flee from the area.

This valorous act of above mentioned personnel saved the lives of innocent civilians, neutralized dreaded Maoists Commanders and injured several others besides recovery of arms, ammunition without own loss is an example of tremendous grit, courage, confidence, great tactical acumen and highest order of command and control.

Recoveries made :

1. 7.62 MM SELF LOADING RIFLE WITH SLING - 01
2. SLR MAG. – 02 NO

3.	7.62 MM LIVE AMNS	– 22 RDS
4.	7.62MM DAMAGE ROUND	- 01 NO
5.	7.62MM EMPTY CASE	- 01 NO
6.	7.62x39 MM EMPTY CASE	- 06 NOS

In this encounter S/Shri Brijendra Kumar Mishra, Deputy Commandant, Jai Kumar Tiwari, Constable, Amit Jamwal, Constable, Borse Deepak Suresh, Constable and Fintus Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 157-Pres/2015—The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01.	Anjani Kumar, Assistant Commandant	(1st Bar to PMG)
02.	Dhananjay Das, Constable	(PMG)
03.	Tanmay Bhowmik, Constable	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

A specific intelligence input was received from own sources, verified by DIGP Ops Bijapur and S.P. Bijapur on 12/02/2014 that a group of maoists are camping near village Tamodi under PS Mirtur, Distt. Bijapur (Chhattisgarh). Accordingly a Search and Destroy Operation in the area was planned under command of Sh. Anjani Kumar, Asst. Comdt. of 204 Cobra. The troops left the camp at 0430 hrs on 13/02/2014 under darkness to maintain secrecy and surprise.

After moving surreptitiously for two days, the troops reached near village Tamodi in the morning of 15/02/2014. The village was located in the edge of the dense and hilly jungle. After analysing the terrain, Shri Anjani Kumar, AC, decided to comb a hillock at the rear of the village. As the troops moved upward and deeper into the hillock, a sentry of the Maoist hiding behind bushes opened indiscriminate fire at them. CT/GD Dhananjay Das, CT/GD Tanmay Bhomik and AC Anjani Kumar, who were the scouts had a narrow escape as the bullets just missed them by a whisker. The three flung into action and while firing at the hidden maoist crawled their way behind the covers. Soon some other Maoists present also joined the gunfight and opened indiscriminate fire at the troops. To counter-attack the Maoists, Sh. Anjani Kumar, AC, advanced along with his troops adopting the tactics of fire and move. Hardly had the troops moved some paces, the Maoists blasted two IEDs planted to secure their camping site. The troops had a narrow escape and had to stop their advance. Taking advantage, the Maoists began advancing towards the flanks of the troops for launching a multi-directional attack. But the secret move of the Maoists was noticed by the Commander and he ordered CT/GD Tanmay Bhomik to fire UBGLs at the encircling troops. CT/GD Tanmay Bhomik in the midst of fierce fire, moved out of his cover, took a suitable position and fired two consecutive grenades at the Maoists. The blasting of the grenades stopped the Maoists in their track. Taking advantage of the situation, Shri Anjani Kumar, AC, took along CT/GD Dhananjay Das and the two crawled their way ahead without caring for the fact that more IEDs would have been planted and launched a fierce attack at the Maoists. The fierce attack paid dividend as one of the Maoist was gunned down by these two brave troopers. Surprised and beaten by the valour of troopers, the Maoists fled from the area taking advantage of dense jungle and terrain. Sh. Anjani Kumar, AC, along with his troops chased the Maoists but they managed to escape. After thorough search of area, a dead body of Maoist, one .303 rifle, one country made weapon, 02 No. of bag packs, 05 live round of .303 rifle, 03 empty case of AK-47, battery, electric wire and literature were recovered.

Shri Anjani Kumar, Assistant Commandant, CT/GD Dhananjay Das and CT/GD Tanmay Bhomik played a vital and gallant role during the operation. The whole operation was planned and executed in a tactically professional manner. During the fierce gun battle without caring for their lives they dared to assault and became instrumental in neutralizing the Maoist.

In this encounter S/Shri Anjani Kumar, Assistant Commandant, Dhananjay Das, Constable and Tanmay Bhowmik, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the Rules governing the award of 1st Bar to Police Medal/Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15/02/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 158-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Ajit Kumar,
Assistant Commandant

02. Srikant Pandey,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 03/07/2014, an input was received about the presence of a dreaded Maoist Commander Sidhu Koda, Member Bihar Jharkhand Simant Zonal Committee (BJSZC), responsible for some of the most heinous crimes against the security forces, along with his platoon in village Lakhari, under PS-Khaira, Distt. Jamui (Bihar). Shri Hira Kumar Jha, Second-in-Command of 7th Bn reacted promptly and after necessary corroboration of the input, embarked on a cordon and search operation along with an officer and 42 jawans to nab the said maoist. He also called for another Company of 7th Bn to reach at a pre-determined rendezvous apprehending presence of more Maoists and a probable engagement. Sh Hira Kumar Jha, alongwith his party traversed the distance of 12 kms to the RV partly by road and partly by foot, before arriving at the pre-determined RV where Company of 7th Bn under command of Sh Ajit Kumar was waiting. The party reached the vicinity of the target village by 0045 hrs.

Relying on the golden rule of "Cordon by Night and Search by Day", Hira Kumar Jha, Second-in-Command directed Ajit Kumar, AC, Coy Commdr of the company to lay a cordon around the village. The village was tactically situated with its fringes touching the dense jungle. Complying with the instructions, Ajit Kumar laid a cordon around the village with the help of his troops and after duly ensuring that the probable escape routes were properly plugged he gave a green signal to his operational Commander Hira Kumar Jha, who alongwith Ajit Kumar also personally ensured that no loopholes existed. Thereafter, leading from the front both the officers with the Search Party commenced search of the village at first light i.e. 0450 hrs onwards. As the Search Party approached the second house of the village, they were greeted by a volley of fire, from a distance. The Search Party immediately took position and retaliated the fire, but this time they were met with a barrage of fire from the other huts as well. With fire coming from all directions, the village now resembled a Battle Zone. Both the Commanders immediately gauged the situation and divided their troops into small Assault Parties and ordered them to move to assigned targets adopting tactics of "fire and move". A small group comprising of Hira Kumar Jha, 2-1/C, Ajit Kumar, Asst. Comdt. and Ct Srikant Pandey advanced towards the hut spewing bullets with an automatic weapon. Meanwhile, the Assault Parties had zeroed in on their specific targets, unmindful of the incessant fire and explosions all around them. The Maoists too sensed that they were up against determined and courageous troopers committed to achieving their target. Resorting to the time tested method of using civilians as shields, they moved out of the huts taking cover of ladies, children, young and old men and started making their way to the adjacent jungles. Under the situation, the troopers had to suspend fire as it involved the lives of innocent civilians, who were caught between the dreaded Maoists and the security forces. At the same time, the Commanders did not want to let go an opportunity to nab the tyrannical Maoist Commander, Sidhu Koda who had become a thorn in the flesh for the security forces. Hira Kumar Jha and Ajit Kumar, carefully, scanned the area and their gaze zeroed in on a fleeing Maoist brandishing an AK-47 and using a civilian woman as a human shield. Knowing very well that only senior Maoist Commanders possessed automatic weapons, it took no time for the officers to conclude that the fleeing Maoist was none other than the most wanted maoist leader Sidhu Koda. An alternative plan was immediately devised and Hira Kumar Jha alongwith Ajit Kumar and Ct Srikant Pandey decided to intercept the target by inching as close to him as possible; but this plan involved grave risk to life. The three of them withdrew from the area, took a circular route to the farthest end of the village and hid behind a bush. They waited patiently for the Maoist Commander to come within striking distance. However, when the Maoist did come within their firing range,

they chose not to fire inorder to ensure that no innocent lives were lost even if it meant letting go off the Maoist Commander. But determined as they were, they decided to make good the golden opportunity. Therefore, reworking on their strategy Shri Hira Kumar Jha, 2nd in Command, decided, to expose himself to draw the attention of the Maoist Commander and distract him. Seeing the movement of a trooper at such a close proximity, the Maoist pushed aside the human shield and opened indiscriminate fire. Both the officers Hira Kumar Jha and Ajit Kumar and Ct Srikant Pandey who were waiting for this moment retaliated with fire but in a controlled manner. In the exchange of fire that ensued, one bullet pierced the skull of Hira Kumar Jha, Second-in-Command and the valiant officer was martyred on the spot. However, this did not deter Ajit Kumar, Asst. Comdt. and Ct Srikant Pandey, who continued to fire at the fleeing maoist. Though the Maoist Commander also got hit , yet he managed to flee into the dense jungle. Coy Commdr Ajit Kumar and Ct Srikant Pandey chased the fleeing Maoist but had to take cover as they were fired from behind by other Maoists who had taken shelter in the village along with their Commander. The two of them thereafter turned their attention to the other fleeing Maoists; this was the time when they saw a weapon wielding lady Maoist trying to escape towards the jungle taking cover of a villager. They hid themselves behind a bush and waited for her. The moment she was at a striking distance both the men pounced upon her and nabbed her along with a .303 Bolt Action Rifle. She was identified as Rina w/o the Maoist Commander Sidhu Koda who had managed to give the forces the slip. In the operation, three Maoists were apprehended. One .303 Bolt Action Rifle, one 12 Bore pistol, one Binocular, 30 kgs of explosives, 3 IEDs, 150 live rounds, maoist literature and other incriminating items were recovered from them. Technical intercepts of SIB Patna later confirmed that six Maoists were seriously injured in the operation.

Both Sh Ajit Kumar, Asst Comdt and Ct Srikant Pandey had displayed raw courage, great presence of mind and exemplary valour during the operation leading to the apprehension of three Maoists and injury to many more, including the dreaded maoist Commander Sidhu Koda as per reliable reports.

Recoveries made :

Apprehended 03 Naxalities namely Rina (Mahila Naxal), Raju Soren, Madhav Soren and recovered .303 Rifle- 01 No., 12 Bore Country Made Pistol - 01 No., Binoculor - 01 No., 03 Container of Explosive item- 15-15 K.G., Liv Round of .303 - 58 Nos., Live Round of 5.56 INSAS - 92 Nos. and I.E.D.- 03 Nos. (Destroyed on Incident place).

In this encounter S/Shri Ajit Kumar, Assistant Commandant and Srikant Pandey, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 04/07/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 159-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

01. Sunil Kumar Sharma,
Assistant Commandant

02. Ranjit Mandal,
Assistant Commandant

03. Gulab Singh,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 31/08/2014, after getting intelligence input that Bikram Gope @ Barood, (PLFI Area Commander of Bano and Kolibera area) with 8-10 members of his dasta were camping at Kawajor forest and would halt till lunch, a small team operation was planned by Commandant- 94 Bn CRPF and SP Simdega. Accordingly, a team of 18 personnel of A/94 Bn CRPF, along with 12 personnel of State Police under Command of Shri Sunil Kumar Sharma, AC was tasked to surgically strike the camp forthwith. After analyzing the terrain, vegetation, distance to be covered and escape routes, the team moved in motorcycles at 1000 hrs and reached near the target forest by 1200 hrs. It left the motorcycles at some distance to the fringe of the jungle and got divided into two. The plan was to comb the jungle from two directions i.e. east and west and thus the two teams were placed under the command of Shri Sunil Kumar Sharma, AC and Shri Ranjit Mandal, AC respectively.

The two teams then moved stealthily inside the jungle and started combing the jungle from their respective directions. At about 1425 Hrs, the scout of the team under command Shri Ranjit Mandal AC noticed a tent (hideout) made up of tarpaulin in the forest at some distance. The information was shared by him with his commander. Sh Ranjit Mandal, AC ordered his team to take cover while he got busy planning the further course of action. He shared the information and grid reference of the location with the second team under command Shri Sunil Kumar Sharma, AC and told him to cover the area from west direction. The two teams were in constant touch with each other and as the second team reached near the target, Sh Ranjit Mandal AC divided its team into small groups and ordered them to cordon the area from east. Likewise Shri Sunil Kumar Sharma, AC also divided his team into sub-groups and covered the area from west direction. After cordoning the area, the two commanders moved towards the camp. But as the assault group under command Sh Ranjit Mandal, AC crawled near to it, a sentry of the PLFI Cadres hiding behind a tree opened sudden and indiscriminate heavy fire at it.

In that sudden deadly fire, Shri Ranjit Mandal, AC and CT/GD Gulab Singh who were in the lead survived narrowly as the bullets just missed them by a whisker. Undeterred by this attack, the two flung into action and fired back at the sentry. The quick and determined action forced the sentry to stop his aimed fire thereby giving some time to the brave troopers to move behind covers. On hearing the sound of fire, other cadres who were till then resting in the camp also came out and joined the battle. A fierce gun fight at close quarter ensued. To break the deadlock and overrun the camp, Sh Ranjit Mandal, AC decided to first neutralize the main sentry and then make his way inside the camp from the gap so created. Moving out of the secured cover under such indiscriminate fire and blasting of grenades was a risky preposition but throwing all precautions in air, he and Ct/GD Gulab Singh moved out of their covers and crawled to their right. After gaining an angle for assault they fired accurately at the sentry and neutralized him. Meanwhile the troops under command of Shri Sunil Kumar Sharma, AC also closed in from west direction and opened fire at the cadres. The cadres finding themselves caught between the troops made a bid to escape. In order to take their chances, the cadres opened heavy fire at the direction where Sunil Kumar Sharma, AC was present and advanced using tactics of fire and move. Shri Sunil Kumar Sharma, AC though engulfed in the barrage of bullets did not lose his composure. He waited patiently behind his minimal cover to counter attack the cadres as they close in. Emboldened by their attack and no response of the troops from that direction the cadres found it safe to get out of the cordon from the direction. The cadres ran towards the direction firing incessantly hoping to flee from the area. But Shri Sunil Kumar Sharma, AC proving his tactical acumen again, came out of his cover, as the cadres neared him, came face to face with the fleeing cadres and fired at them. In the fire one of the cadre got injured while other three flung to the ground. Scared by the bold and courageous act and imminent death looming over them, the cadres began pleading for life. This may had been a trap in the last bid to escape but the troops under command Shri Sunil Kumar Sharma, AC ferociously pounced at the cadres and snatched the weapons from their hands. At the end of the encounter a search was conducted in which one PLFI Cadre was found dead who was identified as Panchu Badaik and the other one was found severely injured who was identified as Bharat Singh @ Tharthari. After giving the first-aid to him, he was evacuated immediately to Bano hospital. However, Bharat Singh @ Tharthari was reported dead on 01/09/2014 at RIMS Ranchi. The three apprehended PLFI Cadres were identified as Sanjay Surin, Bhuneshwar Yadav and Jeevan Masiah Topno. The hideout was destroyed and the following items were recovered from the encounter site:-

SL	NAME OF ARMS/ AMMNS	RECOVERED
1.	.303 BOLT ACTION COUNTRY MADE RIFLE WITH MAGAZINE	07 NOS
2.	9 MM PISTOL	01 NO.
3.	REVOLVER	01 NO.
4.	COUNTRY MADE 7.62 MM PISTOL	01 NO.
5.	.303 and.315 LIVE ROUNDS	38 NOS
6.	9 MM LIVE ROUNDS	06 NOS
7.	7.62 LIVE ROUNDS	13 NOS

In this encounter S/Shri Sunil Kumar Sharma, Assistant Commandant, Ranjit Mandal, Assistant Commandant and Gulab Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31/08/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 160-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry/1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1.	Suresh Kumar Yadav, Deputy Commandant	(PMG)
2.	Ajit Kumar, Assistant Commandant	(1st Bar to PMG)
3.	Sandeep Kumar, Constable	(PMG)
4.	Balwant Singh, Constable	(PMG)
5.	Bachan Singh, Constable	(PMG)
6.	Subhash Chandra Roy, Sub Inspector	(PMG)
7.	Hari Kishan, Sub Inspector	(PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 12/09/2014 at about 1430 hrs, an information from own source about movement of a group of Maoists including Dinesh Pandit, Surang Yadav and others (approx. 14 in number) in the forest near vill Daldaliya, under PS Lokainanpur, Distt. Girdih (Jharkhand) was received by Shri Ajit Kumar, AC, Officer Commanding E/07 Bn CRPF. The information was shared by him with his Commandant at Hazaribagh and an operation was planned after analyzing the terrain, topography and other available inputs.

Accordingly at about 1705 hrs, QAT of Battalion (DC-01, SI/GD-01 HC/GD-02, HC/RO-01 and CT/GD-09 Total - 14) under the command of Shri Suresh Kumar Yadav, Dy Commandant from TAC HQR Tisri reached the company location at Tisri & with two Platoons of E/7 under command Shri Ajit Kumar, AC launched the operation. Officer-in-charge of Police Station Tisri also accompanied the troops. The troops stealthily moved out of the camp using deception tactics and reached at the fringe of the jungle near village Daldaliya. To launch an assault at the probable target hideout, the troops got divided into two groups one each under command Shri Suresh Kumar Yadav, Dy. Comdt. and Shri Ajit Kumar, Asstt. Comdt. The troops surreptitious moved to the target point but the signs of maoist presence could not be traced. Relying on his vast experience of counter-insurgency operations, Shri Suresh Kumar Yadav, Dy. Comdt. then decided to get tactically positioned on the track going from village Daldaliya to the jungle. In the back of his mind he had presumed that if there is a presence of maoists in the jungle then they would definitely move to the village supportive to them for their daily need items. A reconnaissance group was send for selecting the site and after the sun set troops took positions covering the track. The troops waited patiently keeping their ears and eyes receptive to any sound while muffling the sound of their own breath. The patient wait ended at around 23:15 Hrs when the commander of front cut-off party Sh. Ajit Kumar, AC heard the sound of some footsteps. The information of the suspected movement was shared with all through wireless set and all the parties got alerted. The sound of footsteps on getting closer suggested that in advance party there were only 1-2 persons while the following main group was big. After a while, Sh. Ajit Kumar, AC and his buddies namely CT/GD Balwant Singh and CT/GD Sandeep Kumar, who were just 10 to 12 mtrs on the right side of the track, noticed two silhouettes crossing towards village Daldaliya. The silhouettes after crossing the front party halted at the middle of the hidden troops and started scanning the area. After getting assured of any unwanted presence, one of them made a signal by whistle and moved ahead. The main group which had halted a few paces behind then moved ahead. As the main group of suspects neared the troops, the commander Sh. Suresh Kumar Yadav, DC and State Police challenged them to halt by disclosing their identity but instead the suspects opened indiscriminate fire towards the troops. Sensing threat to his men, Sh. Suresh Kumar Yadav, DC and his buddies namely SI/GD Subhash Chand Roy and CT/GD Bachan Singh opened fire at the Maoists who were just 10-12 meters away from them. The rear cut-off party which was commanded by SI/GD Hari Kishan also opened fire at the Maoists. In order to prevent the escape of Maoists, SI/GD Hari Kishan threw all precautions in area and placed himself at the middle of the track leading to the village. The Maoists after facing the retaliatory fire immediately took positions behind trees and broken ground. In a bid to escape from the area they opened indiscriminate fire at the troops. A fierce close quarter battle at a distance of merely 10-12 meters took place which posed serious life threats to the troops. To overcome this deadlock,

Shri Suresh Kumar Yadav, Dy.Comdt ordered Shri Ajit Kumar, AC to move from right flank towards the Maoists while he moved from the left flank. They both took along their buddies and crawled further to attack the maoists from flanks. As the maoists felt that the troops are advancing towards them despite their heavy resistance, they found it safe to flee from the area under cover of darkness. On first light at about 06:15 Hrs, a thorough search operation was launched. During search operation dead bodies of three maoists alongwith weapons were recovered besides presence of blood marks at lot of places suggesting that some more Maoists had sustained injuries during the encounter. The deceased maoist were identified as Dinesh Pandit (Area Commander), Sahdeo Murmu and Jeeva Lal Rai. Following Arms & Ammunition were also recovered during search:-

S.No.	NOMENCLATURE	QUANTITY
1.	SLR Rifle with Magazine No- 816210	01
2.	.303 Rifle, Mark-4 Body No- BH11791 with Magazine	01
3.	.315 Bore Rifle with Magazine	01
4.	.303 Live Ammunition	38 Round,
5.	.303 Empty Case	02 No,
6.	One Magazine Pouch	01 No
7.	Charger Clip	05 Nos
8.	Magazine Pouch,	01 No
9.	315 Bore Live ammunition	49 Round
10.	Empty Case	02 Nos
11.	7.62 mm Live ammunition	09 Rds
12.	7.62 mm Empty Case	04 Nos

During the operation, Shri S.K. Yadav, DC displayed good tactical appreciation, courageous attitude and gallant action. In spite of tense, risky situation and very close proximity to the Maoists, he kept the situation under control and displayed excellent leadership. Similarly, Shri Ajit Kumar, Asstt. Comdt and his buddies did a commendable job. In spite of being very close to the Maoists and being the first to face them, did not panic, remained calm, alert, maintained surprise, reacted promptly and counter-attacked by launching a flanking attack. Likewise SI/GD Hari Kishan and buddies of Sh. S K Yadav, DC displayed raw courage during the close encounter wherein they took the Maoists head-on despite the threat to their own lives.

In this encounter S/Shri Suresh Kumar Yadav, Deputy Commandant, Ajit Kumar, Assistant Commandant, Sandeep Kumar, Constable, Balwant Singh, Constable, Bachan Singh, Constable, Subhash Chandra Roy, Sub Inspector and Hari Kishan, Sub Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal/1st Bar to Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12/09/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 161-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Hemen Kalita,
   Constable
2. Mohd Ashfaq Khan,
   Inspector

3. Praveen Kumar Saini,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 10 Mar 2014, on receipt of intelligence, from own sources, regarding movement of terrorists in Tral town, 9 platoons of 185 CRPF were deployed, in various areas/parts of the town, for searching and laying ambushes. The deployment was made such that 5 platoons would lay ambushes on the escape routes running out of the town from west direction, while 4 platoons would sweep the town covering each lane and by-lane and converge towards the west direction. Accordingly one platoon of F Coy, under command Insp/GD Mohd Ashfaq Khan, was given the area around Gol Masjid, for checking and searching.

At about 2010 hrs, the aforementioned platoon was moving tactically via Tral SBI side towards Gol Masjid. CT/GD Hemen Kalita and Ct/GD Praveen Kumar Saini were the scouts of the platoon under the direct command of their Commander i.e. Insp/GD Mohd Ashfaq Khan. As the scouts neared a by-lane they noticed a group of 4 persons clad in pheran. On seeing the CRPF personnel the group began to hurry into the by-lane. The movement of the group made the scouts suspicious and Ct/GD Hemen Kalita and Ct/GD Praveen Kumar Saini ordered them to halt at their respective places and lift their pherans. Ignoring the orders, the group kept moving deep into the by-lane. In order to apprehend the fleeing persons, the commander and his two scouts began chasing them. Noticing that they are being chased, the unknown group opened indiscriminate fire from the weapons concealed under their pherans upon troops and started running. Despite being absolutely in the open, without any cover or concealment, Ct/GD Hemen Kalita, Ct/GD Praveen Kumar Saini and Insp/GD Mohd Ashfaq Khan, without caring for their own safety, retaliated the fire. On receiving the retaliatory fire from the scouts, two of the terrorists took covers behind a wall and rained heavy bullets at the advancing troops while other two kept fleeing. Finding themselves prone to the indiscriminate fire of the terrorists hiding behind a secured wall, the scouts dashed for covers and took position in a cavity created by the gate and boundary wall of a building. A deadlock ensued wherein the bullets were blocking any further move of troops as well as of terrorists. To break the deadlock, Insp/GD Mohd Ashfaq Khan decided to move further using the tactics of fire and move though this involved the danger of lives in the absence of any cover. Taking risk of their lives the commander and his two brave troopers fired heavily at the terrorists and moved out of their cover. This brave and courageous act of the troopers of coming in open after throwing all precautionary measures in air virtually scared the terrorists and they began to flee from behind their covers. The terrorists fired indiscriminately at the advancing scouts and ran out of their cover. The troops too fired at them and in the ensuing gun-fight which took place at a close range one terrorist got neutralized who was later identified as -Arshad Bhai-Chhotu, r/o Pakistan, Dy Cdr of Jaish-e- Mohammad. Following recoveries were also made from the slain terrorist.

i)	Magazines AK 47	:	4 Nos
ii)	Live rounds AK 47	:	220 Rds
iii)	Live grenades	:	7 nos
iv)	Wireless Set (Kenwood)	:	1 No
v)	Fired cases	:	5 Nos
vi)	Mobiles	:	2 Nos

The deceased terrorist's weapon, however, was taken away by his colleague, who managed to flee in spite of bold and courageous action of the troops.

In this encounter S/Shri Hemen Kalita, Constable, Mohd Ashfaq Khan, Inspector and Praveen Kumar Saini, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10/03/2014.

SURESH YADAV
OSD to the President

No. 162-Pres/2015—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

1. Jaswant Singh,
Sub Inspector

2. Revana Shiddappa K,
Assistant Sub Inspector

3. Manoj Ram,
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded

On 01 July, 2013, at about 0330 hrs, on specific information regarding presence of HM operational chief (Distt. Commander), South Kashmir, viz Shabir Ahmad, with top two Commanders, in the house of Gulzar Ahmed Bhat S/o Gh Hassan Bhat, vill Mandura, PS Tral, Distt Pulwama, a CASO was launched by the troops of 185 CRPF, alongwith JKP/SOG. Two search parties, including SI/GD Jaswant Singh, ASI/GD Revana Shiddappa K. and Ct/GD Manoj Ram of 185 CRPF were constituted. At about 0530 hrs, the target house was closely cordoned off by these two parties to prevent the terrorists from escaping. Meanwhile, the terrorists, hiding inside the house, opened fire indiscriminately upon the searching parties, which was retaliated by the troops. In the firing, Ct Manzoor Ahmad, of JKP got a bullet injury and he took shelter behind a tree in the house premises.

The terrorists were asked to surrender and allow the family members of the house owner to come out of the house, who were kept hostage. Since the terrorists declined the proposal, it was planned to evacuate the family members and injured JKP personnel. When the party entered the house premises, they came under heavy volume of fire, from two different directions. On noticing evacuation of the injured JKP personnel, one of the terrorist came out of the house, firing at police personnel, who by then had reached the outer gate of the house. The whole party could have suffered a heavy loss at this particular point, had Ct/GD Manoj Ram of 185 CRPF, alongwith Ct Mustaq Ahmad of JKP, not acted like fidayeen : they gave shield to the party till they came out of the gate safely and also retaliated the fire. The terrorist and these two Constables came face to face at a few yards distance, firing at each other. During the ops, Ct Mustaq Ahmad of JKP sacrified his life and the terrorist got killed. Ct/GD Manoj Ram also received a bullet injury on humerus bone of left arm. Despite the bullet injury and without caring for his safety, he continued to fire at the terrorists.

Thereafter, the party again came under heavy volume of fire from two directions, when they proceeded to enter the house from the front. SI/GD Jaswant Singh, ASI/GD Revana Shiddappa K of 185 CRPF engaged the terrorists in firing and rest of the team entered the house and broke the door of the house, where the family members were trapped. In the gun battle, SI/GD Jaswant Singh sustained a bullet injury on his left foot, but despite the bullet injury and without caring for his safety he continued to fire at the terrorists, with shoulder to shoulder support from ASI/GD Revana Shiddappa K, due to which all the family members were safely rescued.

The fierce encounter continued till late evening and during the final search of the house, dead bodies of 3 dreaded/most wanted terrorists of HM, viz Shabir Ahmad @- Adil, s/o Gh Ahmad Bhat, r/o-Hyna, category 'A++', Shahnawz Ah. Mir @- Sahab Tinga, s/o Ali Mohd. Mir, r/o Dadsara, category 'A', (3) Aijaz Ahmad Laway @- Majid, S/o Mohidin Laway, r/o Lurgam, category 'B' and arms/amn recovered, as follows :

Sl No.	Items	Qty
1.	AK-47 Rifles	02 Nos
2.	AK-56 Rifle	01 No
3.	AK Magzines	06 Nos
4.	AK Ammunition	90 Rds
5.	Pouches	03 Nos
6.	Pistol	01(Damaged)
7.	Sling	03 Nos
8.	Chinese Grenade live	05 Nos{Destroyed in encounter site}
9.	Magzine spring	02 Nos
10.	Wire cutter	01 No
11.	Scissor	01 No.
12.	Headphone	01 No.

13.	Torch	01 No.(Damaged)
14.	Detonator	01 No.(Destroyed at site)
15.	Knife	01 No.
16.	Bag	01 No.
17.	RR Badges	01 No.
18.	Posters etc	03 Nos
19.	Rupees1000	02 pieces (Worn out),
20.	Rupees 500	08 pieces (Worn out),
21.	Rupees 100	01 piece (Worn out)

In this encounter S/Shri Jaswant Singh, Sub Inspector, Revana Shiddappa K, Assistant Sub Inspector and Manoj Ram, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4 (i) of the Rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 01/07/2013.

SURESH YADAV
OSD to the President

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय, एन.आई.टी. फरीदाबाद में अपलोड एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा ई-प्रकाशित, 2016
UPLOADED BY DIRECTORATE OF PRINTING AT GOVERNMENT OF INDIA PRESS, N.I.T. FARIDABAD AND E-PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2016

www.dop.nic.in